धर्मो
रक्षति
रक्षितः

घरवापसी

पीराणा सतपंथ से सनातन

क.क.पा. सनातन जाति का स्वयं के बलबूते पर हुए घरवापसी का इतिहास।

एक शोषित, वंचित, गरीब, अशिक्षित और लाचार जाती का, ५५० वर्षों से अपने बलबूते पर चल रहे घरवापसी के यशस्वी संघर्ष का इतिहास।

संघर्ष के समय काल से लेकर विकास, प्रगति और समृद्धि के शिखरों को चूमती क.क.पा जाती का गरिमामय इतिहास को इस पुस्तक में खूब स्वमान और गौरव के साथ प्रस्तुत किया गया है।

इतिहासकार समिति

श्री अखिल भारतीय कच्छ कड़वा पाटीदार समाज
पाटीदार विद्यार्थी भवन, नखत्राणा, कच्छ, गुजरात ३७०६१५

INDEX

घर वापसी
पिराणा सतपंथ से सनातन

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

https://doi.org/10.5281/zenodo.20744947

हिन्दी अनुवाद
मूल गुजराती भाषा से हिंदी भाषा के अनुवादक
श्री जयंतीभाई भिमाणी, रायपुर
20-Aug-2024

वॉल्यूम 1

https://abkkpsamaj.org/books/

क. क. पाटीदार ज्ञाति का, पिराना सतपंथ धर्म को त्यागकर, पुनः सनातन हिंदू धर्म स्वीकार करना,

घर वापसी का 550 वर्षों का व्यवस्थित इतिहास।



सी. ए. श्री पटेल चंद्रकांत कांतिलाल छभैया
खंड 1 के लेखक

1

पृष्ठभूमि
इतिहास एक आकलन

1. **<u>खंड 1 की पृष्ठभूमि:</u>** इतिहास के दो (2) मुख्य पहलू हैं। जब तक दोनों पहलुओं का ठीक से अध्ययन नहीं किया जाता, इतिहास की सच्ची समझ अधूरी है। ये दो पहलू हैं;

    1.1. ऐतिहासिक घटनाओं

    1.2. इतिहास का एक आकलन

2. **<u>ऐतिहासिक घटनाएँ:</u>** आपको यह समझना होगा कि ऐतिहासिक घटनाओं को क्या कहा जाता है। ऐतिहासिक घटनाओं के उदाहरणों में किसी संस्था की स्थापना, मंदिर का निर्माण, किसी व्यक्ति का जन्म, किसी बैठक का समापन आदि शामिल हैं।

3. **<u>इतिहास का आकलन:</u>** सरल भाषा में जिस प्रकार ऐतिहासिक घटनाओं के विभिन्न बिंदुओं को तार्किक रेखाओं से जोड़कर इतिहास का चित्र तैयार किया जाता है उसे मूल्यांकन कहा जा सकता है। इतिहास के चित्र की संपूर्णता (घटनाओं को कितना कवर किया गया है) और चित्र का विवरण (घटना से संबंधित विभिन्न चीजें) यह अंदाजा देते हैं कि समाज कहां था और कहां जा रहा है। जिसमें अच्छे बुद्धिजीवियों की भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इतिहास से प्राप्त समझ या ज्ञान इस पहलू पर अत्यधिक निर्भर है। यद्यपि इतिहास का मूल्यांकन ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित होता है, फिर भी इतिहास के मूल्यांकन का महत्व कहीं अधिक है।

4. **<u>पुस्तक के बारे में:</u>** इस पुस्तक का खंड 1 मुख्य विषय है, क. क. पा. जाति के इतिहास का एक आकलन। ऐसी कई किताबें और दस्तावेज़ हैं जो ऐतिहासिक घटनाओं को दर्ज करते हैं। लेकिन यह पहली पुस्तक है जो उन घटनाओं का अध्ययन करती है, उनका आकलन तैयार करती है, उनसे संदेश और शिक्षाएं तैयार करती है और सनातन धर्म में घर वापसी के प्रयासों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करती है।

5. **<u>इतिहास की प्रस्तुति:</u>** घरवापसी की वापसी के 550 वर्षों के संघर्ष की घटनाओं को कवर करने वाले उस समय के कई दस्तावेज़ दर्ज हैं, जैसा कि पहले चर्चा की गई है। उन घटनाओं को ज्यों का त्यों इस पुस्तक में दोबारा लिखने का कोई कारण नहीं है। तो आप समझ गए होंगे कि इस किताब में हम उन घटनाओं का विस्तार से आकलन करेंगे, लेकिन इस तरह से कि एक आम आदमी समझ सके।

6. **<u>मूल्यांकन के अनुभाग (पहरो):</u>** 550 साल लंबे घर वापसी संघर्ष का इतिहास, आसान समझ के लिए, निम्नानुसार विभाजित है।

पृष्ठभूमि इतिहास एक सिंहावलोकन

प्रहर	समय अवधि	ऐतिहासिक मोड़
प्रहर 1	1475 से पहले	**समस्त सनातनी समाज – शांति और आराम का समय** शांतिपूर्ण सामाजिक जीवन जीने वाले लोगों के बीच झूठ बोलना, धोखा देना, छल–कपट। **विधर्मियों द्वारा किया गया एक विश्वासघाती षड़यंत्र**
प्रहर 2	1475 से 1513 38 वर्ष	**इमामशाह पिराना आया** भोलापन और अज्ञानता – आपदा को निमंत्रण **सनातन की विचारधारा को नष्ट करने की रणनीति** क्या? क्यों? कैसे? सभी प्रश्नों की विधिवत जानकारी
प्रहर 3	1500 से 1805 305 वर्ष	**धर्म की हानि होने पर दुर्गति होती है** सतपंथ के शासन से विचारधाराओं का विनाश.. गुप्त रूप से, इस्लाम का पालन करने वाली एक जाति **मुसलमान बनने की कगार पर पहुंच गई।**
प्रहर 4	1805 से 1960 155 वर्ष	**सतपंथ के विरुद्ध विद्रोह – जागृति – घर वापसी** 1805 से 1902 **विद्रोह** काल – **केशरा बापा** 1902 से 1925 **जागृति** काल – **नारायण बापा** 1925 से 1960 **घर वापसी** काल – **रतनशी बापा**
प्रहर 5	1960 से 1985 25 वर्ष	**जब धर्म मिला तो प्रगति हुई** परिश्रम से धर्म मिश्रित , सबने समझा मर्म.. प्रगति और समृद्धि से प्रभावित **सब जाग उठे सनातनी बनने को..**
प्रहर 6	1985 से 2023 38 वर्ष	**सफ़ाई अभियान** सनातन समाज को छिन्न–भिन्न कर दिया , **पुन: सतपंथ धर्म अपनाने का षडयंत्र** समाज को **स्वच्छ बनाने का अभियान** विफल हो गया।
प्रहर 7	2023 से निर्बाध	**सही अर्थ में घर वापसी** घर वापसी आंदोलन का अंतिम चरण.. **सतपंथ की मानसिकता से मुक्ति की शुरुआत..** संत ओधवराम बापा की इच्छा पूर्ण.. **सतपंथियों के लिए दरवाजे बंद कर दो ..**

प्रहर 1

वर्ष 1475 से पुर्व

समस्त सनातन सामाजिक शांति और आराम का समय

शांतिप्रिय सामाजिक जीवन जीने वाले लोगों के बीच

झूठ, छल-कपट एवं धोखे बाजी युक्त

विधर्मीयों द्वारा विश्वासघाती षडयंत्र

2

उत्पत्ति- उंझा एवं गुजरात क्षेत्र में निवास

7. **कुर्मी क्षत्रिय:** कड़वा पाटीदार (जिन्हें कुर्मी कणबी भी कहा जाता है) मूल रूप से कुर्मी क्षत्रिय हैं। इस विषय में शंका समाधान हेतु चुनार जिला भरेहता[1] गांव में दिनांक 25 एवं 26 मई 1906 को बैठक आयोजित की गई। संदेह करने वालों के निम्न प्रश्न थे;

7.1. यदि कणबी क्षत्रिय हैं, तो उन लोगों के आचरण और व्यवसाय अन्य क्षत्रियों के समान क्यों नहीं हैं?

7.2. वे सारे जनोई क्यों नहीं पहनते?

7.3. वे स्वयं खेती का छोटा-मोटा काम क्यों करते हैं और अन्य आधुनिक क्षत्रियों के साथ रोटी-बेटी का व्यवहार क्यों नहीं करते?

स्मृति, पुराण आदि ग्रन्थों के साथ-साथ मनु भी[2] और याज्ञवल्कय[3] आदि स्मृतियों के आधार पर यह सत्यापित है कि कणबी पहले से ही क्षत्रिय के रूप में सिद्ध हो चुके हैं और उपनयन संस्कार पर कोई आपत्ति नहीं है। विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें कणबी क्षत्रिय उत्पत्ति और इतिहास 105: पृष्ठ 39 से 44।

इस पुस्तक में कड़वा शब्द, लेउवा शब्द का अर्थ, इतिहासकारो और शात्रो द्वारा बताई गई उत्पत्ति की कहानियाँ आदि की भी जानकारी दी गई है। कणबी को मूल पुरुष कूर्म ऋषि कहा गया है 105: पृष्ठ 1 से 27।

8. **पंजाब में बसावट:** कडवा पाटीदार प्राचीन काल से ही अविभाजित रहे[4] पंजाब के इलाके में रहते थे. सनातन धर्म की मान्यता के अनुसार, पृथ्वी पर पहले मानव भगवान मनु और उनके पहले पुत्र इक्ष्वाकु थे, जिन्होंने अयोध्या में राज्य की स्थापना की थी, उस काल से लेकर पंजाब में बसने तक के इतिहास के लिए देखें कणबी क्षत्रिय उत्पत्ति और इतिहास 105 : पृष्ठ 49 से 53।

इस पुस्तक के पृष्ठ 51 पर कणबीयों की 52 गोत्र ऋषि आधारित शाखाओं में से उनका मूल स्थान पंजाब और उत्तरी हिंदुस्तान में असल स्थान की सूचि भी दी गई है 105: पृष्ठ 51 से 53।

1 भरेहता - काशी (वाराणसी) से 30 कि.मी. दुर एक गॉव
2 मनु - https://abkkpsamaj.org/go/fn2
3 यज्ञवल्क्य - https://abkkpsamaj.org/go/fn3
4 अभिभाजित - भारत पाकिस्तान के विभाजन से पूर्व

9 . **गुजरात में प्रवास:** समय के साथ पंजाब से गुजरात क्षेत्रों में बसावट फैलती गई। गुजरात के पौराणिक काल के इतिहास, अभिलेखों आदि से पता चलता है कि पाटीदारों का पंजाब से गुजरात में प्रवास हुआ। इसके इतिहास के लिए पढ़ें कणबी क्षत्रिय उत्पत्ति और इतिहास 105 : पृष्ठ 54 से 57 ।

10. **सद्गुणों से सुशोभित शुद्ध हृदय:** गुजरात में कडवा पाटीदारों का मुख्य व्यवसाय कृषि था। वे सनातन धर्म से प्रेम करते थे और सद्गुणों से विभूषित थे। वह उदार और हृदय से शुद्ध थे। उनका मन निर्मल एवं सरल था। सैकड़ों वर्षों तक उन्होंने उच्च संस्कारों और बिना किसी तामझाम के जीवन जीया। वह इस विश्वास के साथ रहता था कि यदि वह स्वयं अच्छा होगा, तो कोई भी व्यक्ति उसके साथ धोखा नहीं करेगा।



सुख और शांति की जीवन शैली को दर्शाती एक तस्वीर

11. **उदारता और दयालुता:** हिंदू संस्कृति की विशेषता उदारता और दयालुता की संस्कृति है। हजारों साल पुरानी इस संस्कृति में तप और साधना करने वाले ऋषि–मुनियों और साधु–संतों का जीवन भिक्षा और दान पर निर्भर था। इसलिए समाज में यह प्रथा थी कि आंगन में आने वाले साधु–संतों, साधु–संतों को कभी खाली हाथ वापस नहीं भेजा जाना चाहिए। वहीं ऋषि–मुनियों, साधु–संतों ने भी समाज की समस्याओं को दूर करने और समाज को बेहतर बनाने के लिए ज्ञान और बलिदान दिया।

"भोला और अच्छा" कैसे बन गए?

एक तरफ भिक्षा दान था और दूसरी तरफ ज्ञान दान था। अतः सामाजिक व्यवस्था में उदारता एवं दान का बहुत महत्व था। ऐसी व्यवस्था के लिए परोपकार और दयालुता की संस्कृति की आवश्यकता होगी जो हजारों वर्षों से हिंदू समाज में मौजूद थी।

इतनी उच्च संस्कृति के वाहक हिंदुओं को साधु–संतों की वाणी (अर्थात् ज्ञान) पर संदेह करने की कोई आवश्यकता नहीं है। सब कुछ ठीक ठाक चल रहा था. उनका मन भी शुद्ध और शांत हो गया। इसलिए सामान्य हिंदू किसी भी गहरी धोखाधड़ी, साजिश, विश्वासघात आदि को पहचानने की क्षमता खो बैठे। जिसके कारण वे भोले और अच्छे बन गये। क.क. पाटीदार जाति इससे अछूती नहीं थी। आज भी यही स्थिति है।

इससे क्या हुआ?

लेकिन समय बदल गया है। विदेशी और विधर्मी आक्रमणकारियों और षडयंत्रकारियों ने भारत पर आक्रमण करना शुरू कर दिया। हिंदुओं के इसी भोलेपन का फायदा छल से धर्म परिवर्तन कराने वालों ने उठाया। क्योंकि साधु वेशधारी व्यक्ति पर किसी को शक करने की आदत नहीं थी।

3

जाति की कमजोरी और इस्लाम का आगमन

12. **उच्च जीवन शैली:** आज से लगभग 550 वर्ष पूर्व कच्छ कड़वा पाटीदार जाति उंझा, अहमदाबाद, वीरमगाम, आणंद आदि में सुखी, शांतिपूर्ण, समृद्ध जीवन व्यतीत कर रही थी।

उनका सामाजिक, पारिवारिक, धार्मिक और आध्यात्मिक जीवन इतने ऊंचे और उत्कृष्ट स्तर पर पहुंच गया था कि झूठ, छल, षडयंत्र, धोखाधड़ी, धोखाधड़ी आदि बुराइयों का उनके जीवन में कोई स्थान नहीं था।

लेकिन कहते हैं न कि किसी भी महानता के साथ एक कमी भी आती है। जीवन के विकास क्रम में वे लोग इतना उच्च आदर्श जीवन जीते थे कि उनमें झूठ, छल, षडयंत्र, धोखाधड़ी, धोखा आदि बुराइयों को पहचानने की शक्ति ही समाप्त हो गई। सनातन हिंदू धर्म पर आधारित उनका जीवन बहुत अच्छा था। सामाजिक व्यवस्था भी इतनी अच्छी थी कि ऐसा गलत काम करने वाला व्यक्ति कभी भी समाज में सिर उठाकर नहीं रह पाता, जिसके कारण लोग गलत काम करने से बचते हैं। वह बहुत ही सादा और साफ़-सुथरा जीवन जीते थे।

13. **कमजोर होने का मुख्य कारण:** उनका जीवन बहुत आसान और स्वच्छ हो गया। ज्यादा नमक खाने से भी शरीर को नुकसान पहुंचता है. ऐसी किसी भी बात का अतिशयोक्ति भी एक प्रकार का जहर है। सभी चीजें शरीर के लिए तभी फायदेमंद होती हैं जब वे अनुपात में हों। उनकी सरलता अपेक्षाकृत अधिक थी जिसके कारण उनकी सरलता ही उनके लिए घातक बन गयी। परिणामस्वरूप जाति काफी भोली और अच्छी हो गई।



कमजोर कड़ी

वे इस हद तक नादान हो गये कि उन्होंने धर्म के बारे में सोचना भी बंद कर दिया। धर्म के नाम पर यदि कोई नकली व्यक्ति उनसे कुछ भी कह दे तो वे उसे सच मान लेते थे 88: पेज 17।

भोलेपन की पराकाष्ठा इस हद तक पहुंच गई है कि व्यक्ति इस सिद्धांत पर विश्वास करने लगता है कि यदि हमने किसी को नुकसान नहीं पहुंचाया है, तो कोई भी हमें नुकसान नहीं पहुंचाएगा। ये बात कई लोगों ने बुजुर्गों से सुनी होगी. यह सिद्धांत अवसाद के समय में मनोबल बनाए रखने के लिए ठीक है, लेकिन अन्य स्थितियों के लिए नहीं। इस संबंध में भारत का एक बहुत सुंदर उदाहरण है.. कि हमारे उस समय के प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू भी इसी सिद्धांत की बातों में आ गये थे. जिसके कारण नेहरू हिंदी चीनी भाई भाई के चीनी के नारे के पीछे के कुटील

चाल को नहीं पहचान सके और इसी कारण भारत चीन के खिलाफ 1962 का युद्ध हार गया।

जब विषय में समझने की शक्ति खत्म हो जाती है तो समझकर उस विषय पर निर्णय नहीं लिया जाता है। ऐसे अनुनय से काम नहीं चलता। तब प्रभाव काम करता है। चमत्कारों का प्रयोग प्रभावित करने का सबसे आसान तरीका बन जाता है।

चमत्कार कब सफल होते हैं?

<u>चमत्कार वार्ता के सफल होने के कारण – समझ और प्रभाव :</u>

जब कोई व्यक्ति इतना भोला हो जाता है कि उसे सही और गलत की समझ नहीं होती है, तो वह व्यक्ति दुसरे के प्रभाव पर कार्य कर रहा है।

समाज में नेताओं, धन और शक्ति की अनुकरण करना उनके लिए सही निर्णय है।

तो हम ये कह सकते हैं कि

जहां सच्ची समझ की कमी होती है, वहां प्रभाव काम आता है। और प्रभाव डालने के लिए चमत्कार बहुत उपयोगी साबित होते हैं। चमत्कारों के पीछे की सच्चाई को पहचानने की समझ के अभाव में ऐसे लोग चमत्कारों को आसानी से स्वीकार कर लेते हैं।

14. <u>भारत में इस्लाम का आगमन:</u> भारत का ज्ञान, इसकी समृद्धि और गौरव पूरे विश्व में फैल गया। भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। विदेशियों ने भारत के ज्ञान, धन और वैभव को लूटने के लिए आक्रमण करना शुरू कर दिया। इससे पहले सन् 712 में मुहम्मद बिन कासिम आया और फिर सन् 997 में मुहम्मद गजनी ने भारत को लूटा और अपने देश वापस चला गया। इन लोगों ने इस्लाम के प्रसार के लिए कोई विशेष प्रयास नहीं किये।



लेकिन साल 1192 में मोहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज चौहान को हराकर भारत में इस्लामिक राज्य की स्थापना की. गुजरात में इस्लाम राज्य की स्थापना वर्ष 1297 में हुई थी। हिंदू से लूटे गए धन और वैभव को अपने देश ले जाने की अपेक्षा यहीं लूटकर आनंद लेना अधिक पसंद करने लगे। अतः ये मुस्लिम राजा भारत में रहने लगे।

3 जाति की कमजोरी और इस्लाम का आगमन

मुस्लिम राजा अच्छी तरह से जानते थे कि अकेले बड़ी संख्या में स्थानीय हिंदुओं पर इस्लाम की शक्ति का स्थायी रूप से प्रयोग करना असंभव था। हिंदुओं को स्थायी रूप से गुलाम बनाने और उनके धन और वैभव को लूटने के लिए, अय्यासी करने के लिए एक ऐसी नींव रखने की जरूरत थी जिस पर इस्लामी राजा, ऐसे आराम कर सकें। अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए उन्हें ऐसे लोगों की आवश्यकता थी जो अपने मुस्लिम राजा के प्रति पूर्णतः वफादार हों। इसके लिए हिंदुओं को मुसलमान बनाना बहुत जरूरी था।

दूसरी ओर इस्लाम के प्रचारकों के लिए ग़ज़वा–ए–हिन्द[5] का मिशन था। जिसने धार्मिक रूप से हिंदुओं को जबरन मुस्लिम बनाने के अनैतिक कार्य की संज्ञा दी। अनैतिक कार्य की धर्म का मूल्य देकर इन सभी कारणों से किसी भी कीमत पर हिंदुओं को मुसलमान बनाने का काम शुरू हो गया।

इस्लाम मुख्यतः दो पद्धति से फैला

<u>14.1. तलवार के माध्यम से (सुन्नी मुस्लिम):</u> इसमें जबरदस्ती, जान से मारने की धमकी, डराना–धमकाना, लोगों को जबरन हिंदू बनाना शामिल है। इतिहास में इसकी बेहिसाब मिसालें हैं। इस विषय का विस्तृत इतिहास लगभग सभी को ज्ञात है, जिसकी चर्चा हम यहां नहीं करेंगे।



<u>14.2. रणनीति का अर्थ है अल–ताकिया (शिया मुस्लिम):</u> यह साधन बहुत खतरनाक है। इसके जरिये लोगों को इस तरह से धोखा दिया जाता है कि लोगों को पता ही नहीं चलता कि उनका धर्म बदल गया है. लोग विरोध करने के बजाय अपना धर्म बदलने को तैयार हैं. यह तरीका आज भी कई ईसाइयों और मुस्लिम प्रचारकों द्वारा हिंदुओं का धर्म परिवर्तन कराने के लिए अपनाया जा रहा है। साजिशें इतनी गहरी हैं कि सब कुछ दिखने के बावजूद सरकार और अदालतें भी इसे जल्दी नहीं पकड़ पाती।



5 गझवा–ए–हिंद – https://abkkpsamaj.org/go/fn5

3 जाति की कमजोरी और इस्लाम का आगमन

दुर्भाग्य वश युक्ति–प्रयुक्ति के माध्यम से धर्म परिवर्तन का भोग कडवा पाटीदार ज्ञाति भी बनी। लोग इतने भोले और अच्छे हो गये थे कि इतने गहरे षडयंत्र को पहचान ही नहीं पाये। ये साजिश क्या है, कैसे काम करती है और कैसे धर्म परिवर्तन कराया गया, नीचे बताया गया है।

इस किताब का मुख्य विषय लोगों को इस तकनीक के बारे में जानकारी देना है। कच्छ कड़वा पाटीदार (क.क.पा.) जाति इस साजिश का शिकार कैसे हुई और फिर कच्छ कडवा पाटीदार यह जाति 550 वर्षों तक संघर्ष करती रही और अंततः आज 95% से अधिक जाति के लोग मूल सनातन हिंदू धर्म में लौट आए हैं।

15. **इस्लाम के विरुद्ध समस्याएँ:** सूफी[6] संतों ने रणनीति के माध्यम से इस्लाम के प्रचार–प्रसार में प्रमुख भूमिका निभाई है। ये लोग भारत आए और इस्लाम का प्रचार करने के लिए, प्रेम–एकता–संप–संगठन, ऊपर वाला एक है, भगवान को किसी भी नाम से बुलाओ, फर्क सिर्फ भाषा का है, बाकी सब एक ही है, ऐसे अच्छे–अच्छे शब्दों का इस्तेमाल किया गया। हिन्दू उनकी बातें सुनते थे, बिना बात के पीछे का उद्देश्य समझे। और सूफियों ने हिंदू मुस्लिम भाई–भाई सबका खून एक है आदि की आड़ में अपने धर्म इस्लाम का प्रचार किया। लेकिन यह उतना सफल नहीं हो पाया जितना होना चाहिए था। (32)

इतिहासकार कहते हैं कि तमाम कोशिशों के बावजूद हिंदू मुसलमान नहीं बने। इस्लाम के सभी अच्छे आदर्शवादी लालच विफल होने लगे। लोभ–लालच से धर्म परिवर्तन कराना भी विफल होने लगा। यहां तक कि आम तौर पर अपनाए जाने वाले साम–दाम–दंड–भेद को भी असफलता के अलावा कुछ नहीं मिला।

सारी कोशिशें नाकाम होने के बाद बात उनके बुद्धिजीवी वर्ग तक पहुंची. बुद्धिजीवियों ने हिंदुओं की जीवन शैली का अध्ययन किया। बुद्धिजीवियों ने देखा कि हिंदू इस्लाम के प्रचार–प्रसार की सारी अच्छी–अच्छी बातें सुनते हैं, लेकिन अपने घर जाकर वे लोग हिंदू ही रह जाते हैं, धर्म परिवर्तन नहीं करते यानी मुसलमान नहीं बनते। ऐसा होने के पीछे के कारणों की गहराई से जांच करने पर इस्लाम के बुद्धिजीवियों को दो मुख्य कारण मिले 27: पृष्ठ 282 से 284।

6 सूफी – https://abkkpsamaj.org/go/fn6

3 जाति की कमजोरी और इस्लाम का आगमन

समस्याएँ हिन्दू धर्मान्तरण में बाधाऐं

<u>15.1. सनातन धर्म के मूल्य और आदर्श बहुत ऊंचे थे:</u> इस्लाम के प्रचारकों ने देखा कि हिंदू धर्म के मूल्य और आदर्श इतने ऊंचे थे कि इस्लाम उनकी बराबरी नहीं कर सकता। (आज भी कई विद्वानों का मानना है कि कोई भी अन्य धर्म सनातन धर्म के मूल्यों और आदर्शों की बराबरी नहीं कर सकता।) दूसरे शब्दों में कहें तो इस्लाम के प्रचारकों ने जो भी शिक्षा दी, हिंदू उन्हें पहले से ही जानते थे या उनका पालन करते थे। इस्लाम हिंदुओं के लिए कुछ भी नया नहीं ला सका। इसलिए इस्लाम हिंदुओं को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सका।



<u>15.2. हिंदुओं की रक्षा करने वाली सुदृढ सामाजिक व्यवस्था की ढाल:</u> दूसरा बड़ा कारण, जो उन्हें पता चला, वह हिंदू सामाजिक व्यवस्था की सुरक्षा कवच थी। यह ढाल क्या है, इसे समझने के लिए आज से लगभग 600 से 700 साल पहले की स्थिति की कल्पना करनी होगी।



अगर आप आज से 600 साल पहले की कल्पना करें तो आपको पता चलेगा कि ज्यादातर लोग गांवों में रहने वाले, खेती करने वाले साधारण लोग थे। उस समय प्रत्येक गाँव में सामान्यतः एक जैसी व्यवस्था होती थी।

उस समय कृषि मुख्य व्यवसाय था। आवश्यकतानुसार खेती में एक–दूसरे की मदद करने के लिए लोग एक–दूसरे की खेती में काम करने जाते थे। जिसे कच्छी भाषा में 'वेरी' कहा जाता है। इसी प्रकार विवाह और मृत्यु में सारी व्यवस्थाएं परिवार और समाज के लोग मिलकर करते हैं, चाहे वह मेहमानों के आवास की व्यवस्था हो या फिर खाना बनाने की व्यवस्था हो। आज के आधुनिक युग में पैसा खर्च करके श्रम पाया जा सकता है, पैसा खर्च करके आवश्यक सुविधाएं तैयार की जा सकती हैं, उन दिनों आर्थिक स्थितियाँ एवं अन्य सुविधाएं नहीं थीं। लोग अपनी आजीविका के साथ–साथ पारिवारिक जीवन के लिए भी एक–दूसरे पर अत्यधिक निर्भर थे।

ऐसे में यदि कोई हिंदू इस्लाम से आकर्षित होकर इस्लाम अपना लेता है तो उसके समाज के लोग उसे तुरंत बहिष्कृत कर देते हैं। जिसके चलते पहले तो परिवार और समाज से मिलने वाला सारा सहयोग बंद कर दिया जाता था और फिर उसे हिंदू धर्म में वापस लाने के लिए उनके साथ असहयोग भी किया जाता था।

परिणामस्वरूप, उस व्यक्ति के पास अंततः हिंदू धर्म में वापस लौटने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं बचता है। इस प्रकार सामाजिक व्यवस्था हिन्दू समाज की ढाल कवच बनी और उसकी रक्षा की।

इस्लाम के प्रचारकों के लिए इस ढाल कवच को तोड़ने के लिए किसी रणनीति की सख्त जरूरत महसुस होने लगी।

नोट : भारत में इस्लाम के प्रचारकों के बड़े पैमाने पर असफल होने का मुख्य कारण हिंदू धर्म की **समाज–व्यवस्था का ढाल** है। इस्लाम का इतिहास कहता है कि अतीत में इस्लाम ने जिस भी देश पर आक्रमण किया, वह कुछ ही वर्षों में मुसलमान बन गया। सबसे से अधिक 18 वर्षों में ईरान मुस्लिम देश बनने लगा।

सामाजिक व्यवस्था कवच

लेकिन सैकड़ों वर्षों तक भारत पर शासन करने के बाद भी भारत पर विजय न प्राप्त कर पाने का मुख्य कारण हिंदू **सामाजिक व्यवस्था का सुरक्षा ढाल कवच** है।

उदारता, स्वतंत्रता, रियायतें आदि के आदर्शवादी सिद्धांतों में फंसकर यदि हिंदू समाज किसी को भी धर्म परिवर्तन करने की इजाजत देता है, तो हिंदू धर्म छोड़कर धर्म परिवर्तन करने वालों को डरने की कोई जरूरत नहीं होगी। हिंदू धर्म छोड़ने वालों का सिलसिला कभी नहीं रुकेगा. ऐसा होने से रोकने के लिए सामाजिक व्यवस्था की ढाल ने ही हिंदुओं की बहुत रक्षा की है.

कृपया ध्यान दें कि आज भी हिंदू विरोधी तत्वों का पहला आक्रमण हिंदू सामाजिक व्यवस्था पर ही होता है। उसे ऐसे उपदेश देते की उसे पहले स्वयं को देखना चाहिए। हमें ये नहीं सोचना चाहिए कि समाज क्या कहेगा. इस तरह के झूठ और भ्रम से लोगों को अपनी सुरक्षा कवच उतारने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। ऐसी बातें सिनेमा और टी. वी धारावाहिक कार्यक्रमों में विशेष रूप से देखा जाता है। इससे बचना चाहिए और भावी पीढ़ी को उचित समझ देनी चाहिए।

इसलिए हम सभी को सामाजिक व्यवस्था को मजबूत करने पर ध्यान देना चाहिए और आने वाली पीढ़ी को समाज का महत्व समझाना चाहिए।

16. <u>इस्लाम के प्रचारकों की युक्तियाँ/रणनीतियाँ – विचारधारा का विनाश:</u> इस्लाम के प्रचारकों को एक युक्ति या रणनीति की आवश्यकता थी जिसके माध्यम से वे ऊपर उल्लिखित दो मुख्य समस्याओं पर काबू पा सकें। उनकी यह रणनीति इतने गुप्त तरीके से काम करती है कि आम आदमी को इसकी भनक तक नहीं लगती, क्योंकि अगर उनकी रणनीति की पोल खुल गई तो कोई हिंदू उनकी रणनीति का शिकार नहीं बनेगा.

जब दुश्मन की संख्या हमसे अधिक हो जाती है और उससे सीधे आर–पार की लड़ाई लड़ना उचित नहीं होता है, तो आक्रमणकारियों द्वारा अपनाई जाने वाली रणनीति का उपयोग इस्लाम के प्रचारकों द्वारा किया जाता था।

3 जाति की कमजोरी और इस्लाम का आगमन

इस रणनीति का नाम है **विचारधारा का विनाश** जिसे अंग्रेजी में **आइडियोलॉजिकल सबवर्सन** कहा जाता है।

यह रणनीति इस्लाम के प्रचारकों के लिए बिल्कुल उपयुक्त थी। क्योंकि हिन्दू समाज अपनी उच्च जीवन शैली के कारण बहुत भोला और अच्छा हो गया था । इसके अलावा, सैकड़ों वर्षों की इस्लामी लूट से पीड़ित, लंबे समय तक सत्ता और शासन से अलग–थलग या इस्लामी राजा पर निर्भर रहने के कारण, हिंदू समाज उत्पीड़ित और शोषित हो गया। ऐसे में वह अपने साथ खेले जा रहे खेल को पहचानने की शक्ति खो बैठा। और अगर किसी को समझ भी आया तो उनमें ऐसे खेलों (अलग–थलग और सत्ता पर निर्भर होने) के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने की हिम्मत नहीं थी.

प्रहर 2

1475 से 1513

38 वर्ष

इमामशाह पिराना आया

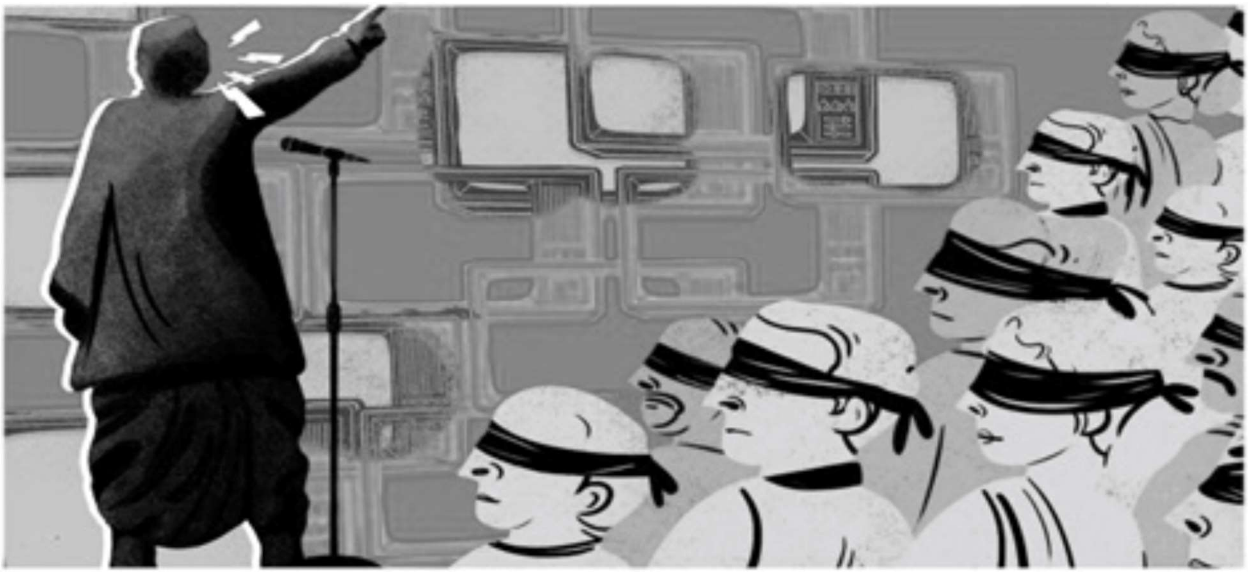
भोलापन और अज्ञानता – आपदा को निमंत्रण

सनातन की विचारधारा को नष्ट करने की क्या है रणनीति?

क्यों ? कैसे ? सभी प्रश्नों की विधिवत जानकारी

4

वैचारिक तोड़फोड़
(Ideological Subversion)



17. **<u>विचारधारा का विनाश (वैचारिक तोड़फोड़) क्या है:</u>** जब हमलावर को ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ता है जहां वह बहुत कम संख्या में है या कमजोर स्थिति में है और प्रतिद्वंद्वी बहुत मजबूत है, तो हमलावर के लिए सीधे लड़ना बुद्धिमानी नहीं है ऐसी स्थिति में। ऐसे में हज़ारों वर्षों से आक्रमणकारी अनजाने में जो रणनीति अपनाते आ रहे हैं उसे विचारधारा विनाश कहा जाता है।

VERY IMPORTANT / बहुत ही महत्वपूर्ण

यह अध्याय बहुत महत्वपूर्ण है. विचारधारा का विनाश के माध्यम से कैसे क.क. पाटीदार। जाति परिवर्तन की गंभीरता को समझने के लिए और मृत्यु के कगार पर पहुँची यह जाति किस प्रकार सनातन धर्म में वापस लौटी, यह समझने के लिए इस अध्याय को मन-मस्तिष्क उतारकर ध्यानपूर्वक पढ़ना बहुत आवश्यक है।

4 वैचारिक तोड़फोड़ (Ideological Subversion)

<u>विचारधारा का विनाश/वैचारिक विध्वंस</u>

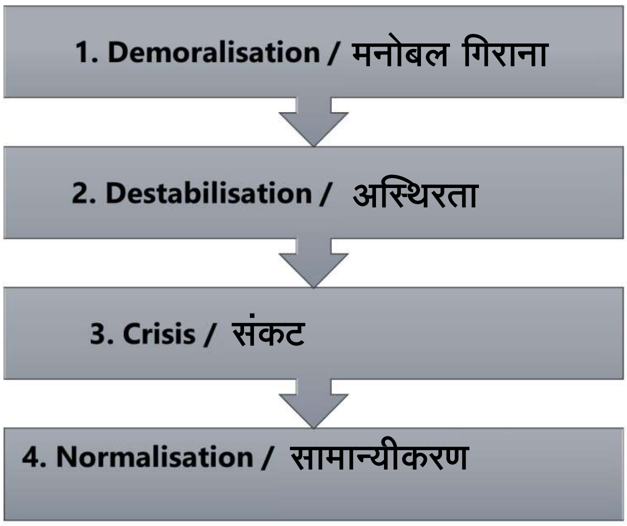
सभ्यता, धर्म, संस्कृति और राष्ट्र के पतन के कारणों पर शोध करने वाले विशेषज्ञों का कहना है कि...

युद्ध की सर्वोच्च कला है कि युद्धा लड़ना ही नही बिल्कुल भी लड़ना नहीं है। परन्तु शत्रु की शक्ति, गौरव, महत्ता और मूल्य के स्रोतों को भ्रष्टाचार या अन्य माध्यमों से नष्ट करते रहना। इस विनाश को तब तक जारी रखें जब तक दुश्मन की वास्तविकता की धारणा भ्रष्ट या नष्ट न हो जाए। इस विनाश को उस सीमा तक ले जाओ कि दुश्मन तुम्हें दुश्मन की तरह देखना बंद कर दे।

परिणामस्वरूप, आपका शत्रु आक्रमणकारी की सभ्यता, धर्म और महत्वाकांक्षाओं को एक विकल्प के रूप में देखने लगता है। यह वांछनीय नहीं लग सकता है, लेकिन कम से कम इसे अपनाकर स्वीकार करने लगे।

यह वैचारिक विनाश के चरम प्रयोजन की स्थिति है। जो विचारधारा के विनाश का अंतिम चरण है। इसके बाद आप बिना एक भी बंदूक की गोली चलाए बड़ी आसानी से दुश्मन को तुरंत हटा सकते हैं।

<u>विचारधारा का विनाश कैसे काम करता है ?:</u> पेशेवर प्रचारक जो इस विषय के विशेषज्ञ हैं, उनका कहना है
18. कि विचारधारा का विनाश, जिसे अंग्रेजी में आइडियोलॉजिकल सबवर्सन कहा जाता है, का कार्य चार चरणों
की अवधि में किया जाता है।



19. <u>मनोबल गिराना (निराशा)/Demoralisation</u>: सरल शब्दों में, मनोबल गिराने का अर्थ है दबाव डालना या इस तरह से कार्य करना जिससे प्रतिद्वंद्वी का मनोबल गिर जाए और उसे अस्थिर स्थिति में डाल दिया जाए। जिसे तीन तरह से किया जा सकता है.



1) **प्रत्यक्ष/Overt:** प्रत्यक्ष अर्थात खुले तौर पर किया गया प्रयास।

2) **वैध/Legiminate**: इन प्रयासों को आम तौर पर वैध या उचित माना जाता है। यदि कानून का उल्लंघन नहीं किया गया है तो यह उचित है।

3) **आसान अवलोकन/Easily Observable**: इस प्रकार के कार्यों को आसानी से देखा और पहचाना जा सकता है। अगर हम समय निकालें और इसमें कुछ प्रयास करें। सरकारी नियमों और देश की कानूनी व्यवस्था के अनुसार, इन कृत्यों को गैर-अपराध के रूप में परिभाषित किया गया है। गलतफ़हमियाँ फैलाना और शब्दों की परिभाषाओं को बड़े हेर-फेर से बदलना आदि इसमें किया जाता है।



प्रसार बहुत धीमी प्रक्रिया है. इसका समयावधि कम से कम 3 (तीन) पीढ़ियों का होता है। नई विदेशी (आक्रामक/विधर्मी) विचारधारा को समझाने, उस विचारधारा को लोगों के मन में स्थापित करने और उसके अनुसार उनके व्यक्तित्व को आकार देने और उसके बाद ही पूरे **समाज को भरने में कम से कम 3 पीढ़ियाँ लग जाती हैं।** क्योंकि तब तक इन 3 पीढ़ियों से आगे अगली (पुरानी) पीढ़ी, जो सब कुछ जानती है, जीवित नहीं रहेगी। **यदि आवश्यक हो (यदि मूल जागृति अभी भी चल रही हो) तो इस समयावधि को 3 पीढ़ियों से आगे बढ़ाया जा सकता है।** अर्थात् जब सत्य समझाने वाला कोई नहीं बचता तो लोगों को गुमराह करने के लिए विभिन्न प्रभावों का प्रयोग किया जाता है। चाहे वह आउटरीच, प्रचार, सीधा संपर्क या कोई अन्य तरीका हो, सभी तरीकों को अपनाया जाना चाहिए। और लोगों की राय बदलें. इस बारे में आगे स्पष्टीकरण दिया गया है कि कैसे बदली हुई राय को किसी (आक्रामक) के लाभ के लिए बदला जा सकता है।

20. **<u>निराशा के मुख्य क्षेत्र:</u>** यह सबसे महत्वपूर्ण एवं प्रमुख चरण है। इसी चरण में विचारधारा के विनाश की नींव रखी जाती है। लोगों के मूल विचारों और अभिप्राय को नया रूप देने या नया विचारिक स्वरूप देने के लिए उनका उपयोग करने के मुख्य क्षेत्र निम्नलिखित हैं।

1. Demoralisation Areas / निराशा क्षेत्र

- 1. Religion / धर्म
- 2. Education / शिक्षा
- 3. Social Life / सामाजिक जीवन
- 4. Power Structure / शक्ति संरचना
- 5. Law and Order / कानून एवं व्यवस्था
- 6. Leadership / नेतृत्व

<u>अब हम देखेंगे कि उपरोक्त प्रत्येक क्षेत्र में क्या किया जा रहा है।</u>

20.1. Religion/धर्म: इस विषय में धर्म को नष्ट करना, धर्म का उपहास करना, मूल धर्म को हटाना या प्रतिस्थापित करना तथा उसके स्थान पर किसी संप्रदाय या पंथ की स्थापना करना। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि इस नये पंथ या सम्प्रदाय में दोष हैं या यह अविकसित है या आस्था के स्थान पर अन्धविश्वास है।

मुख्य बात यह है कि लोगों की आस्था, मूल्य, आदर्श और सिद्धांत (धार्मिक हठधर्मिता) धीरे-धीरे उनके मूल या मूल धर्म पर से ख़त्म हो जाएँ। जिसकी सहायता से लोग अपने मूल धर्म से मुक्त रहे, यह महत्वपूर्ण है। यहां धर्म के अंतिम उद्देश्य, जो लोगों को सीधे ईश्वर से जोड़ना है, की उसके उद्देश्यों की हानि हो उस पर ध्यान दिया जाना है।

ऐसा करने के लिए, नकली संगठनों को स्वीकृत और सम्मानित धार्मिक संगठनों को बदलकर। इसमें लोगों को सच्चे या मूल धर्म से दूर रखने के साथ-साथ लक्ष्य से भटकाना भी शामिल है।

इसके बाद उन्हें दूसरे पंथ या सम्प्रदाय में जाने के लिए प्रेरित किया जाता है।

क.क. पाटीदार यह देखने के लिए कि इस मुद्दे ने कैसे प्रभावित किया, बिंदु (68) देखें।

20.2. शिक्षा: इस चरण में रचनात्मक, व्यावहारिक, कार्यकुशल, विवेकपूर्ण शिक्षा से दूर रहने के लिए आवश्यक भ्रम फैलाया जाता है। गणित, विज्ञान, भाषा, अपना गौरवशाली इतिहास और मूल धर्म के ग्रंथों के बजाय लोगों को सामान्य बातें बताई जाती हैं जो उन्हें भटकाती हैं। जैसे सुबह जल्दी नहाना, प्राकृतिक या नैचुरल खान–पान सीखना, व्यापार में ईमानदारी, कोई भी साधारण बातें सिखाई जाती है।

ऊपर वर्णित मूल (सच्ची) शिक्षा से लोगों को दूर रखने के लिए व्यर्थ की बातें करके सच्ची शिक्षा देने का दिखावा किया जाता है जिसे आम लोग जानते और मानते हैं।

20.3. सामाजिक जीवन: इस चरण में पारंपरिक संस्थाओं/संगठनों/समाजों के स्थान पर नकली संगठनों को खड़ा किया जाता है । लोगों ने जो पहल की है, उसे दूर किया जाना चाहिए. उन कड़ियों को हटा दें जो स्वाभाविक रूप से लोगों, समूहों और समाज को एक साथ बांधती हैं, और जो लोग समाज को चलाने और बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हैं। और इसके स्थान पर इस समाज या संगठन को एक विशेष रूप से तैयार नौकरशाह के नाम पर विशेष लोगों के नियंत्रण और अधिकार में छोड़ दिया जाए ।

आपसी लोगों के बीच सामाजिक जीवन और मित्रता के स्थान पर ऐसी संस्थाएँ स्थापित की जाती हैं जिनमें अपने ही लोगों को नियुक्त किया जाता है।

उदाहरण के लिए, परंपरागत रूप से पारिवारिक विवादों का समाधान परिवार के सदस्यों द्वारा किया जाता है। लेकिन यहां यह अधिकार जमात–खाना (उर्फ खाना) के प्रमुख को दिया गया है। इसलिए सभी को खाना के मुखिया के साथ अच्छे संबंध बनाकर रखने चाहिए. ताकि इसका महत्व बढ़े और लोगों पर नियंत्रण रखा जा सके।

20.4. शक्ति संरचना: एक पारंपरिक रूप से स्थापित प्रशासनिक प्रणाली, जिसमें प्रबंधन परंपरा के अनुसार संचालित किया जाता है और जिसमें व्यक्ति लोगों द्वारा चुने गए उत्तरदायित्व रखते हैं या ऐसे व्यक्ति समाज द्वारा चुने जाते हैं, ऐसी प्रणाली के स्थान पर विशेष रूप से बनाई गई एक प्रणाली जिसमें व्यक्ति का चयन उपर से किया जा सके ।

सामाजिक प्राधिकार संरचना का क्षरण धीरे–धीरे अक्षम/अयोग्य लोगों द्वारा किया जाता है जिनके पास आवश्यक कौशल की कमी होती है और लोगों का विश्वास भी प्राप्त नहीं होता है। लेकिन ऐसे लोगों के पास ताकत होती है भले ही जनता ने के द्वारा सत्ता न दी गई हो ।

उदाहरण के लिए, ऐसा ही एक समूह है मीडिया। उन्हें किसने नियुक्त किया ? किसी को भी नहीं। लेकिन मीडिया है. मीडिया के पास इतनी ताकत क्यों है ? उनके पास यह शक्ति है जो आपके दिमाग को प्रभावित करती है और काफी हद तक उनका एकाधिकार है। अपने मन और विचारों से अपनी इच्छानुसार गेम खेल सकते हैं। लेकिन उनकी नियुक्ति किसने की ? उनमें यह निर्णय लेने की मनोवृत्ति होती है कि आपके लिए क्या अच्छा है या क्या बुरा।

नोट: उपरोक्त बिंदु के संबंध में सामाजिक व्यवस्था को समझाने के लिए यह सिर्फ एक उदाहरण है। कोई विशेष मीडिया टिप्पणी नहीं. विशेष अनुरोध है कि कोई भी व्यक्ति उपरोक्त संदर्भ को अन्यथा न ले ।

ऐसे कई उदाहरण हैं. जैसे हिंदू संगठनों में आरएसएस, बीजेपी, वीएचपी, बजरंग दल, साधु संगठन आदि. मुस्लिम संगठनों में मुल्ला, पीएफआई, एसडीपीआई, वक्फ बोर्ड और उनके फ़रमानो शामिल हैं। ईसाई संगठनों में चर्च, धार्मिक शिक्षा संस्थान और अस्पताल आदि। मुझे लगता है कि मैं जो कहना चाहता हूं उसका आपने अनुमान लगा लिया होगा. इसलिए मैं यहां अधिक नहीं बताऊंगा। आगे हम इसके ठोस उदाहरण देखेंगे.

क.क. पाटीदार ज्ञाति के उपर इसका कैसा प्रभाव पड़ा, इसके लिए बिंदु (76 और 77) देखें।

20.5. कानून और व्यवस्था: इस चरण में, कानून प्रवर्तन और कानून और व्यवस्था प्रबंधन संरचनाएं नष्ट हो जाती हैं।

पिछले 50 वर्षों की फ़िल्में देखें। कई फिल्मों में पुलिस की छवि को कितनी बुरी तरह से चित्रित किया गया है। एक पुलिस अधिकारी को भ्रष्ट, गुस्सैल, आम लोगों को राहत न देना, अपने अधिकार का दुरुपयोग करना आदि दिखाया जाता है। जब अपराधी एक शक्तिशाली, प्रभावशाली व्यक्ति की तरह दिखता है। इस प्रकार की एक सामान्य छवि बनती है। पुलिस बिक चुकी है या दबाव में है और अपना काम ठीक से नहीं कर रही है। इसी तरह राजनेताओं के अपने स्वार्थ के लिए बिकने या कमजोर होने के कई मामले आए दिन व्यवस्था की कमजोर करने किस्से हमारे सामने आते जाते है

नतीजा यह होता है कि दीपक जैसी स्पष्ट बात होने पर भी लोगों को न्याय नहीं मिल पाता। पुलिस और अदालतों के चक्कर खिलाया जाता है, परेशान किया जाता है, थकाया जाता है और अंततः चुप करा दिया जाता है। इस तरह पुलिस और राजनेताओं के साथ–साथ प्रशासन की मदद से आम और निर्दोष लोगों को दबाया जाता है। ऐसा करके वह अपनी अघोषित सत्ता बनाये रखता है

जिन लोगों पर आपकी रक्षा करने की जिम्मेदारी है, जिन लोगों पर कानून व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी है, उनसे इस हद तक नफरत की जानी चाहिए कि लोग उन पर भरोसा करने के बजाय उन पर अविश्वास करें।

जब असमानता का उपयोग नैतिकता के मानक को अपनाने में किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक आतंकवादी अच्छा है, केवल इसलिए कि उसे इतना प्रताड़ित किया गया कि उसे बंदूक उठानी पड़ी। ऐसा कहकर वह अपनी क्रूरता का बचाव करता है. जब किसी आम आदमी के साथ ऐसा होता है तो वही लोग उसके लिए फांसी की सजा की मांग करने से भी नहीं हिचकिचाते.

बुनियादी नैतिक मूल्यों को किसी के लाभ के लिए सूक्ष्मता से तोड़ा–मरोड़ा जा सकता है। कोई व्यक्ति अपराधी नहीं है भले ही आचरण ऐसा हो जिससे अपराध साबित हो। हकीकत में वह सिर्फ अपना बचाव करने वाला व्यक्ति है, ऐसी झुठी बाते कही जाती है। हमेशा सच्चे लोगों पर संदेह करते रहते हैं, निर्णय लेने वालों को भ्रम की स्थिति में रखते हैं।

दूसरा उदाहरण यह है कि यदि कोई पूर्णतः झूठा प्रमाणपत्र भी लाता है तो भी वह सत्य है। और अगर कोई उनकी ईमानदारी को दुनिया के सामने उजागर करने वाला कोई दूसरा प्रमाणपत्र लाता है, तो वे झूठ फैलाते हैं कि उन्हें पैसे देकर खरीदा है।

क.क. पाटीदार ज्ञाति के ऊपर इसकी कैसा प्रभाव पड़ा, इसके लिए बिंदु (76 और 77) देखें।

20.6. <u>नेतृत्व:</u> इस चरण में, ऊपर बिंदु (19) में उल्लेखित समयावधि (कम से कम तीन पीढ़ियों के), गुरुओं, नेताओं और बुद्धिजीवियों (जैसे ब्राह्मण) और पारंपरिक स्वदेशी धर्म के उनके अनुयायियों के बीच संबंध धीरे–धीरे नष्ट कर दिए जाते है ।

इससे मूल धर्म के सच्चे ज्ञान के स्रोत से सम्बन्ध टूट जाते है।

इसके स्थान पर नये नेतृत्व (मूल धर्म का सच्चा नेता) की स्थापना की जाती है। जब इस नेतृत्व के पास सवालों के जवाब और समस्याओं के समाधान के रूप में कोई सच्चा उद्देश्य या मूल विचारधारा होती है, तो ऐसे सुझाव दिए जाते हैं जो नई विधर्मी विचारधारा के अनुकूल होते हैं। साथ ही लोगों की मूल विचारधारा को संदेह की दृष्टि से देखना। उसके लिए मूल विचारधारा से अप्रासंगिक होने पर भी ऐसे सच्चे और झूठे उदाहरण लोगों के सामने प्रस्तुत करना। और अनुयायियों के समाज में एक बाहरी विचारधारा (मूल विचारधारा के नाम पर) को सूक्ष्मता से अनुकूलित करना। जिससे लोगों के मन में अपनी मूल विचारधारा के प्रति निराशा फैल जाए और धीरे–धीरे वह अस्थिरता हमेशा के लिए स्थापित हो जाए।

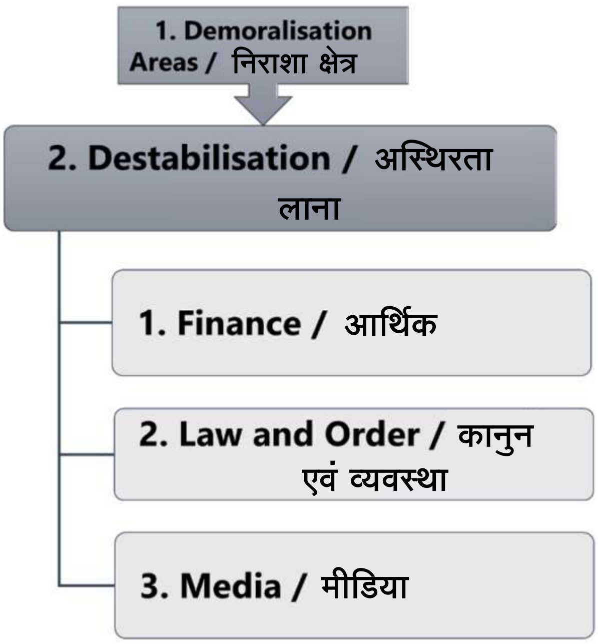
क.क. पाटीदार ज्ञाति के ऊपर इसकी कैसा प्रभाव पड़ा, इसके लिए बिंदु (76 और 77) देखें।

20.7. **<u>संपूर्ण निराशा की नियति / संपूर्ण मनोबल गिराने की स्थिति:</u>** उपरोक्त चरणो और पड़ाव पार करने के बाद तो देश, समाज और सभ्यता उस स्थिति में पहुंच जाती है, जहां केवल पूर्ण निराशा का वातावरण नियति ऐसी स्थिति में जहां कुछ काम नहीं कर रहा हो. जब लोग निश्चित रूप से यह नहीं कह सकते कि क्या सही है या अच्छा है और क्या गलत है या बुरा है। सही और गलत का भेद धुंधला हा जाता है। यहाँ तक कि मौलिक विचारधारा वाले नेता/नेता/साधु भी इतने प्रभावित हैं कि यदा–कदा विधर्म के पक्ष में बोलने लगते है।

उदाहरण के लिए, राम चरित मानस के प्रसिद्ध कथावाचक मुरारी बापू कभी कभी अपनी कथा मे या अली या अली की धुन सुनाते है जिससे । आम हिंदू लोग असमंजस में हैं कि वे मूल हिंदू विचारधारा को माने या विधर्मी इस्लामी विचारधारा को। उसने यह सोचने की हमारे लिए क्या अच्छा और बुरा है
जब ऐसा होता है, तो निराशा फैलाने का चरण पुरा होता है ।

21. **<u>अस्थिरता:</u>** शब्द अस्थिरता का तात्पर्य लोगो द्वारा पारंपरिक रूप से स्वीकार किए गए सभी रिश्तों, संपर्कों, नारों, संघों, संस्थानों आदि को अस्थिर किया जाए। इसके लिए कोई भी बाहरी व्यक्ति नहीं आता है। लेकिन अपने ही लोग ये काम अंदर के लोगों के लिए करने लगते है।





4 वैचारिक तोड़फोड़ (Ideological Subversion)

इस चरण में कार्य क्षेत्र छोटा हो जाता है। पिछले चरण में उल्लिखित प्रत्यक्ष, वैध और स्पष्ट कार्यों पर किसी का ध्यान भी नहीं जाता है, यानी बिंदु (19) में उल्लेखित निराशा का वातावरण बताना। लोगों ने इसे जीवन का एक हिस्सा मान लेते है।



उदाहरण के लिए विधर्म का प्रचार करना कोई अपराध नहीं है। इसी प्रकार सरकारी कानून की दृष्टि से सनातन समाज में सतपंत धर्म का प्रचार या समर्थन करना सरकारी अपराध नहीं बल्कि नैतिक अपराध है। लेकिन जब समाज में सही तरह से अस्थिरता फैला दी जाती है, समाज में ऐसा माहौल बना दिया जाता है कि समाज में जो भी धर्म का पालन करना चाहे उसे अनुमति दे दी जाती है, और फिर हिंदू समाज में विधर्म या सतपंथ का प्रचार किया जाता है, तब लोग आसानी से स्वीकार करने लगते है, फिर ऐसे कृत्यों को नैतिक अपराध भी नही माना जाता है।

इस अवस्था में जिस कार्य को पहले नैतिक अपराध माना जाता था, अब उसे स्वीकृति मिल जाती है।

<u>21.1. वित्त/आर्थिक:</u> इस चरण में समाज, जाति या देश आर्थिक रूप से बर्बाद कर दिया जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो आर्थिक संकट की स्थिति में धकेल दिया जाता। आर्थिक बोझ डालना, जैसे आस्था और अंधविश्वास के माध्यम से धार्मिक शुल्क लगाना, आर्थिक रूप से समाज की कमर तोड़ने वाला है। यह डर दिखाया जाता है कि पैसा न चुकाने वालों को स्वर्ग में जगह नहीं मिलेगी, नर्क में जाना पड़ेगा आदि।

आदर्शवादी बातों से लोगों को यह समझाते हुए कि धर्म चलेगा, गरीबों का काम चलेगा, दान की माँग निरन्तर जारी रखो। एक के बाद एक छोटे–बड़े कार्यक्रम चलते रहने चाहिए। स्वयंसेवकों को प्रेरित करें और उनसे निःशुल्क काम लें। योजनाबद्ध प्रचारकों के लिए दान के पैसे से जलसा आयोजित करते है और लोगों के बीच खुद को उच्च एवं महत्वपूर्ण बनाते है।

<u>21.2. कानून एवं व्यवस्था:</u> इस चरण में कानून एवं व्यवस्था की स्थिति को भी नियंत्रित किया जाता है। आर्थिक बल या जन संख्या के बल पर पुलिस, न्यायालय और राजनीतिक क्षेत्र में संदेह (पुलिस भ्रष्ट है, न्याय नहीं मिलेगा आदि) का वटवृक्ष खड़ा है, जैसा कि पिछले बिंदु (20.5) में बताया गया है।

परोक्ष रूप से लोगों के मन में भय या आतंक पैदा किया जाता है, कि कानून व्यवस्था हमारे हाथ में है। अगर तुम हमारे खिलाफ पुलिस या अदालत के दरवाजे पर जाओगे तो तुम्हारा कुछ भला नहीं होगा, या तुम कुछ भी नहीं बिगाड़ पाओगे। अत: एक अन्तर्निहित सन्देश दिया जाता है कि आप यह विश्वास करते रहें कि हम जो कहते और दिखाते हैं वह सत्य है।

21.3. <u>मीडिया:</u> इस चरण में मीडिया का भी मैनेज किया जाता है। सार्वजनिक मीडिया को पैसे से खरीदा जाता है। मीडिया पत्रकारों पर लगातार समर्थक मुद्दों से भरे साहित्य और प्रचार सामग्री का प्रहार किया जाता। मीडिया घरानों को अपने अनुकूल लेख लिखा जाता है और समाचार प्रकाशित करने के लिए बड़े-बड़े विज्ञापन दिये जाते है। पेड न्यूज की अवधारणा का भी उपयोग किया जाता है। जनता में उनकी विचारधारा सही और अच्छी है और जो लोग उनका विरोध करते हैं वे गलत और स्वार्थी हैं, जिससे आम लोगों को यह संदेश जाता है कि जो लोग हमारा विरोध करते हैं उसका कुछ भी चलना नहीं है ।

22. <u>**अस्थिरता फैलती है:**</u>

22.1. <u>रिश्तों में कट्टरता:</u> रिश्तों में कड़वाहट/कट्टरता इस हद तक आ जाती है कि परिवार के सदस्य भी एक-दूसरे से सामंजस्य नहीं बिठा पाते। पिता और पुत्र यह तय नहीं कर सकते कि कौन सा धर्म या विचारधारा सही है। यदि पुत्र सनातन में जाना चाहे तो पिता उसे सतपंथ छोड़ने नहीं देना। यदि पति सनातन में जाना चाहता है तो पत्नी को तलाक देने की बात सामने आती है, जिससे झगड़ा शुरू हो जाता है।

छोटे-बड़े मामलों में भी समाज में विरोध का माहौल फैल जाता है। एक दूसरे से लड़ते है, नजरें नहीं मिला पा रहे. विवाद अदालत में जाता है. सामान्य रिश्तों में परिस्थिति के कारण झगड़ों की मात्रा बढ़ जाती है। लड़ने वाले लोगों को नायक का दर्जा दिया जाता है, आपकी विचारधारा बुनियादी तौर पर गलत है, ऐसा सच बोलने पर मुश्किल खड़ी हो जाती है।

22.2. <u>मवालीपन:</u> इस समय मवाली (स्लीपर सेल) सक्रिय होते हैं. बिंदु देखें (192). सनातन स्वांग में पिछले कुछ वर्षों में बच्चों ने धीरे-धीरे खुद को सनातन समाज के सदस्य के रूप में स्थापित कर लिया है। सार्वजनिक तौर पर ये सनातन समाज के सदस्य हैं, लेकिन अंदर से ये सतपंथ में आस्था रखते हैं। पिराणा को गुप्त रूप से दान देते है। जब गांव में सतपंथ को नुकसान पहुंचाने वाला कोई निर्णय लेने की बात आती है तो आदर्शवाद, आस्था-अंधविश्वास आदि की आड़ में लोगों को समझा-बुझाकर सतपंथ कायम रखते है। ताकि समाज में सतपंथ की समस्या हमेशा बनी रहे।

इसी प्रकार, सतपंथी एक एक सनातनी नेता को खोजते है और उनसे व्यक्तिगत रूप से बहुत मीठी बातचीत करते है। उदाहरण के लिए, मैं इतिहास का छात्र हूं, मैं इतिहास को समझना चाहता हूं, मैं भी आपकी राय से सहमत हूं, हमें समस्या के समाधान के लिए एक साथ आना होगा, आदि कारण बनाकर। उसके बाद वह कहता है कि हमें उस काम के लिए मिलना चाहिए, हमारे कुछ सवाल हैं, उसे समझना चाहिए, और सनातन के भाई की कमजोरियों का पता लगाने की कोशिश करते है, उसे धोखा देना और उस पर प्रभाव डालना। यदि कोई कमजोर बिंदु दिखे तो उसे पकड़कर सनातनी नेताओं की आवाज दबाने के रास्ते तलाशने है। मवाली जो वर्षो से मौन थे कि ऐसे समय मे सनातन विचारधारा वाली समाजो में नेतृत्वकर्ता बनकर आगे आने लगते है ।

वर्षों से मौन बैठी माताएं ऐसे समय में समाज में मूल विचारधारा की नेत्री और नेतृत्वकर्ता बनकर सामने आती हैं। मूल विचारधारा को कमजोर और पंगु बनाने के लिए आवाज उठाते है और लोगों को अपने समर्थन में एकजुट करते है, ताकि समाज पतन की स्थिति में आ जाए।

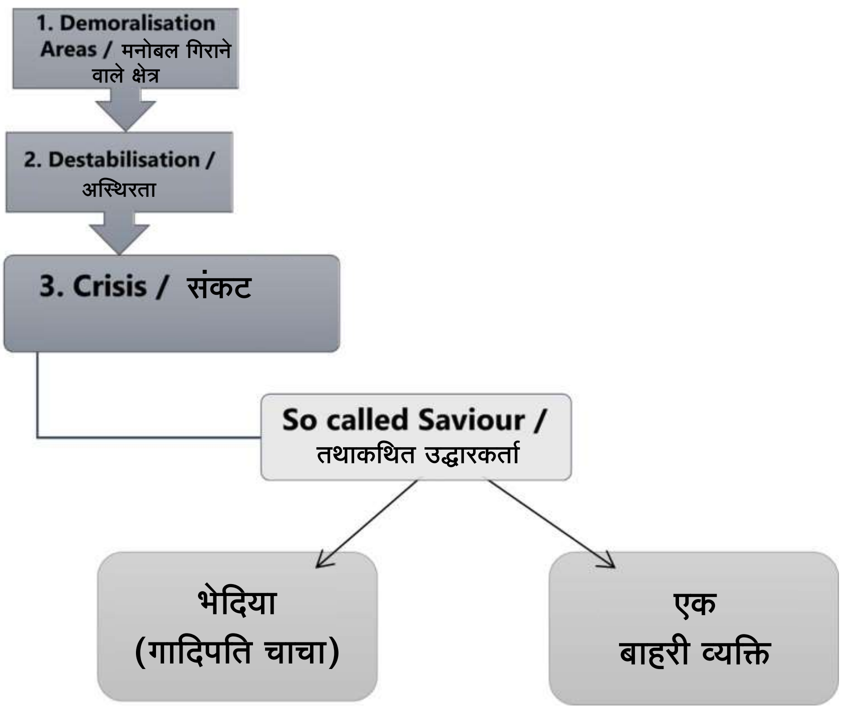
इस चरण में समाज को तोड़ने का काम करने वाला व्यक्ति समाज के भीतर ही मौजूद होता है। बाहर से लाने की जरूरत नहीं होती है, ऐसा अंदरूनी व्यक्ति समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति होने की छाप रखता है। ऐसे व्यक्ति को आर्थिक मदद भी दी जाती है. अगर आप इस पर विचार करेंगे तो आपको यह भी दिखेगा कि किसी समाज या धार्मिक संस्था में किसी पद पर आसीन होने के बाद अचानक उसकी आर्थिक समृद्धि बहुत बढ़ जाती है। क्या ऐसा आदमी तुम्हें कभी सच बताएगा ?

22.3. **<u>परिणाम:</u>** इस चरण के अंत में अस्थिरता इतनी बढ़ जाती है कि यह समाज को संकट की स्थिति में डाल देती है।

23. **<u>संकटकाल:</u>** संकट तब होता है जब कोई समाज या संगठन अपने अपेक्षित कार्य नहीं कर पाता, वह ढह जाता



जाता है। इस अवस्था में सामान्य लोग ऐसा संकट थक जाते हैं। लोगों की आर्थिक स्थिति भी खराब हो जाती है. अन्य समाजों की तुलना में यह बहुत पिछड़ जाता है।



लोग संकट से बचाने वाला/उद्धारकर्ता चाहते हैं। जिसके लिए हमें किसी बड़े नेता का इंतजार रहता है जो समाज को ऐसी संकटपूर्ण स्थिति से बाहर निकाल सके। यदि धार्मिक संगठन हैं तो इस आशा से प्रतीक्षा की जाती है कि साधु–संत जैसा कोई अवतार आएगा और उन्हें मुक्ति दिलाएगा।

23.1. यह चरण आम तौर पर तब शुरू होता है जब लोगों द्वारा निर्मित संस्थाएं काम करना बंद कर देती हैं। जनता द्वारा चुना गया नेता काम नहीं कर सकता फिर शुरू होता है बाहरी संगठनों का हस्तक्षेप. एक बाहरी व्यक्ति उनका नेता बन जाता है और आम लोगों के लिए निर्णय लेने लगता है।



जिस तरह से कथाकथित, राजनेता आदि गलत तरीके से हस्तक्षेप करते हैं। साधुओं के नये–नये संगठन, जिसे जानते समझते भी नही है, आगे आते हैं और दावा करते हैं कि आपकी सभी समस्याओं का समाधान हमारे पास है। जबकि हकीकत में वह लोग केवल अपनी मनगढ़ंत विचारधारा का प्रचार करते हैं। इस चरण में धर्म और विचारधारा के उलझे हुए मिश्रण को येनकेन प्रकारेण स्थापित का प्रयास किया जाता है।

23.2. जहां फर्जी संस्थाएं, संगठन और व्यक्ति सक्रिय हो जाते हैं और दावा करते हैं कि उनके पास समाधान लाने के लिए आवश्यक सभी शक्तियां हैं। मना करने के बावजूद फिर भी अपने चमचों के जरिए सिफारिशें भेजते रहते है।

अक्सर ऐसे लोग आधे–अधूरे बुद्धिजीवी ही होते हैं। विदेश से पढ़ाई की कोई साधारण डिग्री भी नहीं होती है, ऐसा व्यक्ति जब समाज के कार्य क्षेत्र में आता है तो वह समझता है कि उसके पास समाज की सभी समस्याओं का समाधान है।

23.3. **संकट मोचक/उद्धारक:** यहां तथाकथित संकटमोचक का प्रवेश होता है। जो लोगों को संकट से बचाएगा. यह व्यक्ति समाज का आदमी भी हो सकता है, पहले बिंदु (22.2) में उल्लिखित एक मवाल, एक गादीपति मुजावर काका 85: पृष्ठ 23 या कोई अन्य व्यक्ति बाहर आया हुआ हो सकता है।

विचारधारा के विनाश की लगातार मार से समाज या जाति बहुत कमजोर हो जाती है। हताशा/निराशा की इस अवस्था के कारण वर्षों से भ्रम में पड़ी जाति अपनी मूल विचारधारा से भटक जाती है। उसके लिए क्या सही है क्या गलत इसका निर्णय करने की शक्ति उसमें नहीं रहती है.

दूसरी ओर, अस्थिरता के चरण के कारण समाज और लोग दबाव में आ जाते हैं। जब लोगों को आशा की कोई किरण नजर नहीं आती तो **कोई आकर कहे कि मैं आपकी समस्या का समाधान कर दूंगा तो लोग ऐसे आदमी को तुरंत स्वीकार करने लगते है।** तो तथाकथित संकट मोचक को वह सारी शक्ति स्वतः मिल जाती है जो वह चाहता है।

संकट मोचक को शक्ति

यदि ऐसा हुआ तो जाति, समाज या देश पूरी तरह से विचारधारा के विनाश के चक्र में फंस जायेगा। निकलने की कोई उम्मीद नहीं रहती है.

चाल

उदाहरण के लिए, हिंदू लोहाना जाति के एक वर्ग ने सैकड़ों वर्षों तक सतपंथ धर्म का पालन कर रहा था। उस समय उनके सतपंथ के ग्रंथों में सर्वत्र इस्लाम के अल्लाह, अली, निष्कलंक नारायण आदि के साथ-साथ हिंदू देवी-देवताओं का भी उल्लेख था। उनके पूर्वजों को यह कहकर सतपंथ का अनुयायी बनाया गया कि सतपंथ ही कलियुग का सच्चा हिन्दू धर्म है। इसलिए अधिकांश लोग सतपंथ को हिंदू धर्म का एक हिस्सा मानते थे। लेकिन दूसरी ओर सतपंथ के ग्रंथ कुछ और ही कहते हैं। उनके समाज में उनकी वास्तविक पहचान को लेकर बहुत बड़ा संकट उत्पन्न हो गया। ऐसे संकट के समय आगा खान बाहर से आए और खुद को निष्कलंकी नारायण के रूप में स्थापित करने में सफल रहे। लोहाना जाति के लोगों के हाथ से उनके समाज का नियंत्रण छिन गया। आज वह समाज खोजा मुस्लिम समाज के नाम से जाना जाता है।

24. **<u>सामान्य स्थिति बहाल करना:</u>** इस चरण में विदेशी/विधर्मी विचारधारा की स्थापना होती है। दूसरे शब्दों में कहें तो जाति, समाज या देश का मन, वचन और कर्म पूरी तरह से बदल जाता है। लोग मूल विचारधारा से स्थायी रूप से विमुख हो जाते हैं।

Stage 4

4 वैचारिक तोड़फोड़ (Ideological Subversion)

1. Demoralisation / मनोबल गिराना
2. Destabilisation / अस्थिरता
3. Crisis / संकट
4. Normalisation / सामान्यीकरण

24.1. समाज/जाति/देश की बागडोर तथाकथित रक्षक के हाथ में आने के बाद समाज को अस्थिर करने और संकट में डालने वाले कारकों को दूर किया जाता है। लोगों का सामान्य जीवन धीरे–धीरे सामान्य (हमेशा की तरह) चलने लगता है। कोई झगड़ा, विवाद न हो। लेकिन **एक बड़ा अंतर है. और अंतर यह है कि समाज/जाति/देश अपनी मूल विचारधारा से पूरी तरह विमुख हो जाता है और आक्रमणकारियों/विधर्मियों की विचारधारा को अपना लिया है।**



24.2. अब मावलों का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। चूंकि उन लोगों ने अपना काम पूरा कर लिया है, इसलिए अब उनकी जरूरत नहीं है. नई शक्तियों को स्थिरता की जरूरत है, ताकि वह अपनी ताकत बरकरार रख सके. पुरानी विचारधारा को उखाड़ फेंकने का काम कार्य किया जाता है। मिलावटी भ्रष्ट शिक्षण को अब विधर्मी विचारधारा की शिक्षा में बदल दिया जाता है। इसलिए इस नई विधर्मी विचारधारा को अपनी विचारधारा का गौरव देकर नई पीढ़ी को कट्टर बनाया जाता है। ताकि नई पीढ़ी नई विधर्मी विचारधारा की रक्षा के लिए हर संभव प्रयास करने को तैयार हो। उनके सामने अनगिनत सबूत भी रखे जाएं तो भी वे इसे मानने को तैयार नहीं हैं।

24.3. आइए हम सतपंथ को मानने वाले खोजा समाज का उदाहरण लें। एक बार जब आगा खान ने खोजा समाज पर कब्ज़ा कर लिया तो सबसे पहला काम उसने खोजा समाज के मवाला को ख़त्म करना था। आगा खान की शक्ति मुंबई में उसके 4 कट्टर और मजबूत विरोधियों की हत्या के बाद ही मजबूत हुई थी 141:पृष्ठ 32। सतपंथ अर्थात कलियुग का सच्चा हिंदू धर्म, इस धर्म के ग्रंथों से धीरे-धीरे हिंदू देवी-देवताओं को हटा दिया गया। हिंदू धर्म से सारे रिश्ते मिट गए. इसी क्रम में, 1975 में, आगा खान ने इमामशाह और पीर सदरुद्दीन द्वारा लिखित विष्णु के दशावतार ग्रंथ को धार्मिक ग्रंथ के रूप में अमान्य करने के लिए पेरिस में एक सम्मेलन बुलाया। और उसके स्थान पर इस्लामी कुरान को मुख्य धार्मिक ग्रंथ के रूप में स्थापित किया गया 140: पृष्ठ 105 और 106।

25. महत्वपूर्ण: एक बात जो हमें यहां ध्यान में रखनी चाहिए वह यह है कि लोगों को वैचारिक तोड़फोड़ की रणनीति या रणनीति का व्यवस्थित ज्ञान और समझ हो भी सकती है और नहीं भी, जैसा कि ऊपर बताया गया है। लेकिन वे मनुष्य की प्रतिक्रिया करने की सामान्य प्रवृत्ति की समझ का लाभ उठाकर इस पर काम करते हैं।

आइए ये भी समझें कि ऐसा कैसे होता है. लोगों के दिमाग पर लगातार पकड़ बनाए रखने के लिए निरंतर प्रचार, मीडिया का व्यापक उपयोग, विचारधारा का निरंतर प्रवाह आदि का उपयोग किया जाता है। चाहे प्रचार सच हो या ग़लत, प्रचार सुनने के बाद लोग जिस भी तरह से प्रतिक्रिया करते हैं या व्यवहार करते हैं, उसका फ़ायदा उठाया जाता है। (जैसे आजकल राहुल गांधी विदेश जाते हैं, भारत का संविधान ख़तरे में है, भारत में बोलने की आज़ादी नहीं है वगैरह-वगैरह, वो लगातार झूठ या फ़र्ज़ी बातें बोलते हैं।)

ऐसा कहा जाता है कि लोगों को धार्मिक स्वतंत्रता है, जो जिस धर्म का पालन करना चाहे कर सकता है.. लोग अपना पसंदीदा धर्म चुन सकते हैं.. लेकिन क्या सच में ऐसा है? दरअसल लोगों से धर्म चुनने की इच्छा या शक्ति छीन ली गई है। किसके द्वारा? किसकी वजह से इस युक्ति या राजनीति के कारण। और इसके बजाय लोगों को यह विश्वास दिलाया जाता है... मीडिया, प्रचार कार्यों और कानून और व्यवस्था की अक्षमता के माध्यम से... कि यह विधर्मी विचारधारा ही सच्चा धर्म है और इसके लिए बिल्कुल सही है।

26. नियमों में असमानता: एक और महत्वपूर्ण बात जो हमें समझने की जरूरत है वह यह है कि विचारधारा के विनाश की प्रक्रिया में जरूरी नहीं कि जाति के सभी सदस्य अलग-अलग चरणों में शामिल हों। कुछ लोग आगे के चरण पर हैं और कुछ पीछे के चरण पर हैं. लेकिन भले ही लोग अलग-अलग चरणों में फंसे हुए हों, जाति स्तर पर अधिकांश लोग आवश्यक रूप से एक विशेष चरण/होतें हैं। तो वहीं, कहीं न कहीं यह देखा जाता है कि कुछ लोग किसी विषय को लेकर कट्टर होते हैं, जबकि कुछ लोग सौम्य होते हैं, जो अलग-अलग अवस्थाओं का संकेत है। फिर बड़ा समुदाय क्या अनुशरण करता है उस पर विचार किया जाना चाहिए।

इसलिए कभी–कभी समाज को कुछ मामलों में या कुछ क्षेत्रों में सख्त नियम अपनाने पड़ते हैं, जबकि अन्य क्षेत्रों में लचीलापन दिखाना पड़ता है। ऐसे में सभी को एक ही डंडे से चलाया नहीं जा सकता, लेकिन जैसे–जैसे विधर्मी विचारधारा का प्रभाव कम होता जाता है, नियम अधिक समान होते जाते हैं। यह सामाजिक या जातीय विकास की प्रक्रिया का मूल सिद्धांत है। जिसे सभी लोगों को ध्यान में रखना चाहिए और उन पर लागू नियमों का सख्ती से पालन करना चाहिए।

27. **परिवर्तनों पर/ट्रैकिंग तालिका:** ऊपर बताए गए सभी चरणों से निम्नलिखित तालिका तैयार की गई है, ताकि हम प्रत्येक चरण में होने वाले परिवर्तनों और उनके प्रभाव की निगरानी यानी ट्रैक कर सकें।

परिवर्तनों/ ट्रैकिंग तालिका का निरीक्षण करें	
वैचारिक तोड़फोड़	**विनाश विवरण**
1. मनोबल गिराने वाले क्षेत्र	**19**
1.1. धर्म	**20.1**
1.2. शिक्षा	**20.2**
1.3. सामाजिक जीवन	**20.3**
1.4. शक्ति संरचना	**20.4**
1.5. कानून एवं व्यवस्था	**20.5**
1.6. नेतृत्व	**20.6**
2. अस्थिरता	**21**
2.1. वित्त	**21.1**
2.2. कानून एवं व्यवस्था	**21.2**
2.3. मीडिया	**21.3**
3. संकट	**23**
3.1. तथाकथित उद्धारकर्ता	**23.3**
अंदरूनी सूत्र	
एक बाहरी व्यक्ति	
4. स्थिति का सामान्यीकरण	
4.1. एक नये समाज की स्थापना – 2 चरणों में	

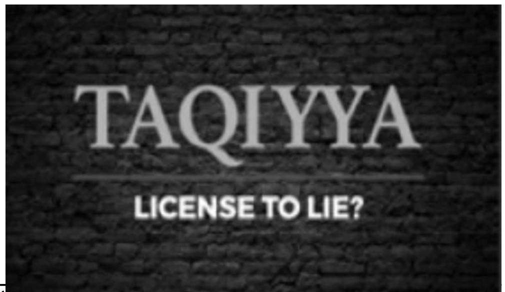
विशेष नोट: कृपया उपरोक्त तालिका पर विशेष ध्यान दें। आगे चलकर इतिहास को ठीक से समझने के लिए इस तालिका का कई बार संदर्भ लिया जाएगा।

5

सतपंथ - इस्लाम की रणनीति को लागू करने का एक उपकरण

28. **<u>साधन की आवश्यकता:</u>** इस्लाम के प्रचारकों ने विचारधारा के विनाश की रणनीति तैयार कर ली थी। लेकिन इसे लागू करने के लिए किसी व्यवस्था या साधन की जरूरत थी. जैसा कि पहले बिंदुओं (15.1) और (15.2) में कहा गया है, खुले इस्लाम का प्रचार विफल रहा। इसलिए उनके पास अप्रत्यक्ष रूप से इस्लाम का प्रचार करने के अलावा कोई रास्ता नहीं था। इसलिए उन्होंने ऊपर बताई गई विचारधारा के विनाश की रणनीति अपनाई।

29. **<u>अल–तकिया:</u>** कोई भी धर्म धर्मग्रंथों और आस्था के बिना जीवित नहीं रह सकता। तो यहां इस्लाम के अल–ताकिया हथियार का इस्तेमाल किया गया. इस हथियार के अनुसार, हिंदू धर्मग्रंथों को भ्रष्ट किया गया और फिर से लिखा गया। इन धर्मग्रंथों के नाम, उनमें मौजूद हिंदू देवताओं, हिंदू धार्मिक नायकों और खलनायकों और प्रमुख हिंदू कहानियों के नाम भी वही रखे गए। अंतर केवल इतना है कि इन धर्मग्रंथों में हिंदू देवताओं के मुख से परोक्ष रूप से हिंदू धर्म को अपमानित किया गया है और इस्लाम को श्रेष्ठ और सार्वभौमिक दिखाया गया है।



इस्लाम, सामान्यतः,अपने धर्म में अन्य धर्मों के देवताओं को कभी भी बर्दाश्त नहीं करता है। लेकिन यहां हिंदू धर्म के देवताओं का बहुतायत से उपयोग किया जाता था। इस्लाम का अल–तकिया ऐसा करने की इजाजत देता है। अल–ताकिया (संक्षेप में ताकिया) का उपयोग करने से मूर्ति पूजा, हिंदू भजन, हिंदू धर्म का प्रचार आदि जैसे सभी काम करने की अनुमति मिलती है। तकिया के बारे में अधिक जानकारी के लिए, सतपंथ छोड़ो 27 पृष्ठ 321 से 332 देखें (विशेषकर पृष्ठ 328 से 330 देखें)।

30. **<u>हिंदू धर्मग्रंथों का अध्ययन:</u>** इस्लाम के प्रचारकों ने हिंदू सनातन धर्म के धर्मग्रंथों का अध्ययन करना शुरू किया। इस्लाम के बुद्धिजीवियों ने हिंदू धर्म का गहराई से अध्ययन करना शुरू किया और हिंदू धर्मग्रंथों, रीति–रिवाजों, मान्यताओं, परंपराओं आदि का भी अध्ययन किया 156:पृष्ठ 29 ।

31. **<u>हिंदू धर्मग्रंथों की रचना के गुण:</u>** हिंदू धर्म के मूल ग्रंथों वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, गीता, श्रीमद्भागवत आदि की रचना के पीछे कुछ प्रमुख खुबियाँ हैं, जो शास्त्रों को मजबूत करते हैं भ्रष्ट होने से बचाते है, वो निम्न अनुसार है ।

31.1. संस्कृत भाषा: हिंदू धर्म के मूल ग्रंथ संस्कृत भाषा में हैं। संस्कृत भाषा में महारत हासिल करना आसान नहीं है। अरब देशों/विदेशों के मुसलमानों के लिए संस्कृत भाषा में महारत हासिल करना बहुत कठिन था। अत: संस्कृत भाषा में नकली भ्रष्ट ग्रन्थ तैयार करना उनकी सामर्थ्य से बाहर था।

31.2. काव्य रचना: हम सभी जानते हैं कि महाभारत विश्व का सबसे महान काव्य है । हिंदू धर्मशास्त्र मूलतः काव्यात्मक रूप में रचित हैं। यह बहुत ही बढ़िया तकनीक (शैली) है. यदि धर्म के महान ग्रंथों को किसी भी तरह से भ्रमित या भ्रष्ट हुए बिना, लोगों के दिमाग में हमेशा के लिए अंकित करना है, तो कविता या गीतों का माध्यम एक बहुत ही सरल और उत्कृष्ट माध्यम है। और यही हिंदू धर्म की एक विशेषता भी है. आगे बढ़ने से पहले इसके पीछे के कारणों पर गौर करना जरूरी है.

यह एक आम सोच है कि अगर हम कोई कहानी या किताब पढ़ते हैं जो हमें सालों पहले पसंद थी और आज, सालों बाद कोई हमसे उस किताब के कुछ वाक्य दोहराने के लिए कहता है, तो याद करते समय मूल वाक्यों और शब्दों में बदलाव आ जाएगा। हम उन वाक्यों को बिना किसी गलती के नहीं कह सकते। लेकिन हम सालों पहले सुना हुआ कोई पुराना गाना या कविता परफेक्ट तरीके से गाएंगे या कहें वो भी बहुत कम गलतियों के साथ. साथ ही उन गानों और कविताओं को सुनने वाले व्यक्ति को गाने के शब्द भी बहुत आसानी से याद हो जाते हैं और वह काफी लंबे समय तक याद रख सकते हैं।

इतना ही नहीं, कविता और गीत ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरित करने का एक तरीका भी हैं। यहां तक कि एक अनपढ़/अशिक्षित व्यक्ति भी इस प्रणाली का उपयोग करके ज्ञान प्राप्त कर सकता है और उसका प्रसार कर सकता है। इसलिए हिंदू धर्म में भजन, दोहा, चौपाई आदि बहुत लोकप्रिय हैं। अतः हमारे पूर्वज भले ही अशिक्षित रहे हों, परन्तु अज्ञानी कतई नहीं थे। उनके पास बहुत उच्च स्तर का ज्ञान और धार्मिक ज्ञान था। इस प्रणाली/व्यवस्था के अनुसार पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित या प्रसारित ज्ञान में भ्रष्टता या मिलावट की संभावना बहुत कम हो जाती है।

ऊपर बताए गए कारणों से हिंदू धर्म के भजन, दोहे, चौपाई आदि इतने प्रभावशाली हैं कि न केवल आम हिंदू बल्कि अन्य धर्मों के व्यक्ति पर भी गहरी छाप छोड़ते हैं। जब कोई व्यक्ति ऐसे भजन, गीत आदि को अपने अव्यक्त मन में दोहराता है और हिंदू धर्म का उच्च ज्ञान धीरे–धीरे उसके मन में समाहित हो जाता है। हिंदू भजनों की प्रभावशीलता को देखने के बाद, कव्वाली बाद में विशेष रूप से शिया संप्रदाय में शुरू हुई, हालांकि यह कट्टरपंथी इस्लाम में गीतों पर पाबंदी थी।

नोट:
भजन और संगीत ज्ञान को पीढ़ी से पीढ़ी तक स्थानांतरित

भवई और नाटक आदि उन दिनों मनोरंजन के प्रमुख साधन थे, जिनमें मनोरंजन के साथ गौरवशाली इतिहास को पिरोने वाले नाटकों का प्रदर्शन किया जाता था। मनोरंजन के साथ–साथ हिंदू धर्म का गौरव और धार्मिक ज्ञान भी शामिल था। अतः हिंदू नाटक, भवाई, रामलीला, आख्यान आदि भी हिंदू धर्म को बनाए रखने में बहुत प्रभावशाली और असर कारक थे।

जानकारों का मानना है कि मुसलमानों, खासकर हिंदू से मुस्लिम बनने वाले लोगों को हिंदू धर्म के प्रभाव से दूर रखने के लिए ही इस्लाम में संगीत, नाटक, सिनेमा, टीवी आदि पर प्रतिबंध लगाया गया था।

हस्तांतरण करने की जबरदस्त पद्धति

विशेष: इस विधि का प्रयोग अनपढ़ लोग भी कर सकते हैं।

31.3. छंद, ताल,स्वर ,अक्षरों की गणना आदि: हिंदू धर्मग्रंथों को भ्रष्टाचार या मिलावट से बचाने के लिए रचना के समय ग्रंथों में एक और उपाय जोड़ा जाता है। जानकार कहते हैं कि प्रत्येक मूल शास्त्र के जप की एक विशिष्ट छंद या शैली होती है। इसमें महर्षि पाणिनी द्वारा प्रतिपादित व्याकरण के कठोर नियम भी लागू होते हैं।

साथ ही अक्षरों की भी विशेष गिनती होती है। जैसे एक श्लोक या ऋचा में 32 अक्षर होते हैं (आधे अक्षरों को छोड़कर)। यदि कोई ऐसी व्यवस्था को बदलने की कोशिश करता है, तो गीत की छंद, लय, सामंजस्य टूट जाता है या शब्द गणना टूट जाती है। धर्मग्रंथों के लिए की गई जबरदस्त और कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बारे में सोचें, जो आज हजारों साल बाद भी अभेद्य हैं। सिवाय केवल हिंदुओं के अज्ञान के।

हिंदू धर्मग्रंथों में अक्षरों की गिनती होती है, लेकिन उन्हें पढ़ने का काव्यात्मक तरीका होता है। साथ ही पाठ करते समय छंद, स्वर, मात्रा, व्यंजन, वाक्य, पद, कर्म, जात, माला आदि के आधार पर हाथ हिलाने की एक निश्चित विधि होती है।

अगर एक भी गलत मात्रा होगी तो एक नजर में पता चल जाएगा कि यहां कुछ बदला गया है।

उदाहरणार्थ : श्रीमद्भगवद्गीता के सभी 18 के 18 अध्याय में श्लोक 32 अक्षरों के हैं। इसी प्रकार विष्णु सहस्रनाम के श्लोक भी 32 अक्षरों के ही हैं।

धर्मग्रंथों को भ्रष्टाचार से बचाने का एक सशक्त उपाय

32. **<u>मूल ग्रंथों को भ्रष्ट करने में असमर्थता:</u>** मूल हिंदू ग्रंथों के निर्माण में किए गए सुरक्षा उपायों और संस्कृत भाषा पर निपुणता की कमी के कारण, इस्लाम के प्रचारक मूल ग्रंथों को भ्रष्ट नहीं कर सके। उन्हें किसी ऐसे साधन की आवश्यकता थी जिससे वे भ्रष्ट साहित्य तैयार कर सकें। तब वो लोग कोई और रास्ता ढूंढने लगे.

33. **<u>बारमती / महापंथ / माता पंथ / बीजमार्गी साहित्यो:</u>** कच्छ और सौराष्ट्र के मेघवाल, जिन्हें आम लोग दलित या हरिजन समाज जैसे सम्मानजनक नामों से जानते हैं, इस मेघवाल समाज में एक बारमती संप्रदाय है जो महापंथ या बीजमार्गी पंथ का पालन करता है। इस्लाम के प्रचारकों की नजर इस संप्रदाय की पूजा पद्धति पर पड़ी। बारामती संप्रदाय की मान्यताएं, भजन, परंपराएं आदि इस्लाम के प्रचारकों के लिए काफी उपयुक्त थीं। पहली नज़र में इसके सही होने के पीछे मुख्य कारण हैं, जो एक आम आदमी भी समझ सकता है।

33.1. <u>कंठस्थ परंपरा:</u> बारामती संप्रदाय में जो भी साहित्य[7] मौजूद है वह ज्यादातर कंठस्थ परंपरा से है। उनके ग्रंथ छपे नहीं थे। परंपरागत रूप से यह ज्ञान पूर्वजों से मौखिक रूप से प्राप्त होता रहा है। इससे समय के साथ और क्षेत्र के अनुसार इस ज्ञान में बदलाव आया है। लोग ऐसे बदलावों को स्वीकार भी कर लेते हैं, इसलिए बदलावों पर किसी को संदेह नहीं होता.

33.2. <u>काव्यात्मक / दोहे के रूप में:</u> चूंकि उनके ग्रंथ काव्यात्मक रूप में थे, इसलिए उन्होंने उन ग्रंथों का लाभ मिलता था जैसा कि पहले बताया गया है (31.2)। 140:पेज 91

33.3. <u>भाषा:</u> इन साहित्यों की भाषा संस्कृत नहीं है। इसके बजाय, यह एक मूल भाषा है जिसे गाँव के आम लोग समझ और बोल सकते हैं। साहित्य गुजराती, कच्छ। सिन्धी भाषाओं का मिश्रण है। स्थानीय भाषा होने के कारण यह इस्लाम के प्रचारकों के लिए बहुत सुविधाजनक हो गया।

33.4. <u>बन्धनकारी नियमों का अभाव:</u> जैसा कि बिंदु (31.3) में बताया गया है, बारामती साहित्य में मिलावट को रोकने के लिए कोई सुरक्षा उपाय नहीं थे। चूँकि साहित्य मिश्रित भाषा में भी है, जिसमें स्थानीय भाषा के साथ–साथ 2 से 3 अन्य भाषाएँ भी शामिल होती हैं, इसलिए शब्दों में हेरफेर करने के कई विकल्प होते हैं। ताकि यदि कोई धर्मग्रंथों को भ्रष्ट करे तो उसे कोई आसानी से पकड़ न सके।

33.5. <u>गुप्त ज्ञान:</u> बारामती संप्रदाय का धार्मिक ज्ञान गुप्त रखा जाता था। आस्थावान लोगों के सामने धर्म की गुप्त बातें बताई जाती थी, और रहस्यमय अनुष्ठान किए जाते थे। जिससे एक आम आदमी को पूरे बाते या विधियाँ की पूरी और पुख्ता जानकारी नहीं हो पाती. पर्याप्त जानकारी और सबूतों के अभाव में, लोगों के पास जो कुछ भी उन्हें बताया जाता था उसे स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

7 साहित्य –ग्रंथ सूची/संदर्भ सूचीमें दिए गए क्रम को (36)(88:पृष्ठ 128) (90) (111:पृष्ठ 5 और 6) (6:पृष्ठ 25)

5 सतपंथ - इस्लाम की रणनीति को लागू करने का एक उपकरण

बारामती संप्रदाय के धर्मग्रंथों का ज्ञान इस्लाम के प्रचारकों ने किसी भी तरह से हासिल कर लिया था। चूँकि उस समय भारत के कई इलाकों में और विशेषकर सिंध प्रांत में मुसलमानों की सत्ता थी, इसलिए उनके क्षेत्र में रहने वाले मेघवाल समुदाय पर दबाव डालकर यह जानकारी हासिल करना कोई मुश्किल काम नहीं होता था।

34. **सतपंथ की स्थापना:** शिया–इस्लाम का एक संप्रदाय जिसका अरबी नाम सीरत अल–मुस्तकीम है 27: पृष्ठ 276 से 286 और जिसका अर्थ है सीधा रास्ता या सच्चा रास्ता, इसके मुख्य सिद्धांतों को अपनाए। वह संप्रदाय सतपंथ धर्म बना जिसमें ऊपर बताये अनुसार बारामती सम्प्रदाय के साहित्य का प्रयोग किया गया था। **इस्लाम की शाखा शिया है, इसकी उपशाखा इस्माइली है और एक पंथ निज़ारी, और निगारी बग उपसंप्रदाय है सतपंथ या शिया–इस्लाम के सिद्धातों अनुसार है।**

अध्ययन करने से पता चलता है कि सीरत अल–मुस्तकीम जैसे कि हिंदू मूल्यों और आदर्शों को शिया–इस्लाम के मुख्य सिद्धांतों में समायोजित किया गया है (विवरण बाद के अध्यायों में शामिल है)। जैसे कि

34.1. ईश्वर ने इस्लाम के आगमन से पहले प्रचलित सभी धर्मों को निरस्त कर दिया है। और आजकल तो एक ही सच्चा धर्म है और वह है इस्लाम (यानि यहाँ सतपंथ)।

34.2. ईश्वर ने कुरान को छोड़कर अन्य सभी धर्मग्रन्थों को भी अमान्य घोषित कर दिया है। सतपंथ में कुरान को अथर्वेद (अथर्ववेद का अपभ्रंश) नाम दिया गया है।

34.3. कलियुग में केवल एक ही भगवान है और वह है मुर्तजा अली[8] तालिब हैं जिन्हें सतपंथ में निष्कलंक। नारायण नाम दिया गया है।

34.4. कुरान में बताए गए सिद्धांत के अनुसार एक ईश्वर (अल्लाह) में विश्वास करता है। लेकिन हिंदुओं के कई देवता हैं। तो सतपंथ में चार युगों के आदरणीय पात्रों की सूची 27:पेज 290 तैयार कर हिंदू देवताओं के अवतारों को सतयुग, त्रेता और द्वापर युग में विभाजित किया। और कलियुग में इस्लाम का एक ही भगवान है मुर्तजा अली उर्फ निष्कलंककी नारायण. इस्लाम के रीति–रिवाज, जैसे दफन संस्कार, एक ही वेद – अथर्वेद (कुरान) द्वारा नियंत्रित होते थे। ऐसे सिद्धांत हिंदू धर्म में कहीं भी मौजूद नहीं हैं।

34.5. कलियुग के गुरु याने सैयद इमामशाह बावा हैं

34.6. गुरु मंत्र का अर्थ है पीर शाह

34.7. इस संसार में देवता और दानव दोनों ही होते हैं। इसलिए दैत्य का वध करने के लिए भगवान हमेशा किसी न किसी रूप में इस धरती पर अवतरित होते हैं। और वे 27:पृष्ठ 294 एक ही कुल (कलियुग में सैयद वंश – हिंदुओं के लिए हरिवंश नाम) में पैदा हुए हैं। यह परंपरा सतयुग से निरंतर चली आ रही है, जो आज भी जारी है।

34.8. आदि आदि

8 अली – https://abkkpsamaj.org/go/fn8·

35. **<u>सतपंथ के शास्त्रों की रचना बारामती शास्त्रों के आधार पर की गई:</u>** कच्छ और सौराष्ट्र के मेघवाल समाज में प्रचलित बारामती या महापंथ या बीजमार्गी संप्रदाय के साहित्य को भ्रष्ट या मिलावट करके सतपंथ के सिद्धांतों को कवर करने वाले साहित्य तैयार किए गए जैसा कि ऊपर बताया गया है।

इसके लिए बारामती संप्रदाय में प्रचलित प्रमुख साहित्य जैसे..

35.1. सृष्टि एवं महापंथ की उत्पत्ति कथा
35.2. ज्योत पूजा
35.3. घस्पाट पूजा
35.4. बाराई/वारी यज्ञ
35.5. पावन का पानी पीना
35.6. आगमवाणी – कलियुग के अंत में लड़ा जाने वाला महायुद्ध
35.7. छत्तीस धोक/36 नियमों की शिक्षापत्री
35.8. बारामती भजन,
35.9. आदि–आदि.. ग्रंथ हैं.

साहित्य के मूल ढाँचे को लेकर, आवश्यकतानुसार उचित परिवर्तन करके, अलग–अलग समय में और खास तो इमामशाह के बाद सतपंथ के भ्रष्ट शास्त्रों की रचना की गई। गिनान (ज्ञान शब्द का अपभ्रंश) ग्रंथ बारामती संतों, जैसे देवायत पंडितो के ज्ञानगो अश भजन के माध्यम से दिया जाता था उसमें बदलाव गोरवाणी के गिनान, अमृतवाणी के गिनान द्वारा दिए गए भजनों में थोड़े बदलाव के साथ तैयार किए गए थे।

आप समझ गये होंगे कि ये सभी ग्रन्थ काव्यात्मक दोहे[9] हैं, जैसे कि गोदवाणी का गिनान, अमृत वाणी का गिनान बैचार द्वारा तैयार किया गया है। इन सभी ग्रंथों में सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ जो तैयार हुआ वह सतपंथ दशावतार ग्रंथ है। हम इसके बारे में अधिक जानकारी आगे देखेंगे।

36. **<u>सतपंथ के संस्थापक:</u>** जैसा कि ऊपर बताया गया है, सतपंथ के साहित्य को तैयार करने में दो प्रमुख हस्तियों की भूमिका रही।

36.1. <u>पीर सदरुद्दीन:</u> पीर सदरुद्दीन[10] का जन्म: सब्ज़वार गांव, वर्तमान ईरान देशमें ईस्वी सन 1290 में हुआ था, पीर सदरुद्दीन की मृत्यु 12 ई.स.[11]। 1380 10 में और उनका शव पाकिस्तान के भावलपुर प्रांत के उच गांव में दफनाया गया है। उनकी दरगाह पर उच शरीफ के नाम से जाना जाता हैवहीं उनके एक बेटे पीर कबीरुद्दीन की कब्र भी वहाँ है, दरगांह हैं।

9 दोहा = भजनों में लय/छंद खोजने वाले 2 वाक्यों का लिंक। जैसे..
लूट सके तो लूट ले, राम के नाम पर लूट.
तुम्हें बार–बार इसका पछतावा होगा, जब तुम अपना जीवन खो दोगे।
10 सदरुद्दीन –https://abkkpsamaj.org/go/fn10
11 ई. एस. = ईस्वी सन = ग्रेगोरियन कैलेंडर = वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित कैलेंडरपीर

36.2. <u>सैयद इमामशाह बावा:</u> सैयद इमामशाह[14] पीर सदरुद्दीन[12] के पोते थे। बावा जिनका पूरा नाम सैयद इमामुद्दीन अब्दुर रहीम है। उनके पिता का नाम पीर कबीरुद्दीन[13] 136: पेज 65 42 था। उनका जन्म सन् 1452 में और मृत्यु ई.स. 1513 में हुई थी, उनका शव पिराना दरगाह में दफनाया गया है।

36.3. <u>ग्रंथों की रचना:</u> सदरुद्दीन और इमामशाह द्वारा रचित सतपंथ के प्रमुख ग्रंथ हैं ;

1. गायत्री
2. अथरवेद
3. दुआ / पूजा के मंत्र
4. बुध अवतार
5. दशावतार (छोटा)
6. दशावतार (बड़ा)
7. गिनान
8. मोमिन चेतवानी – सो मुनिवरभाई बड़ी
9. खट निरंजन और खट दर्शन
10. गिरभावली छोटी और बड़ी
11. भुज निरंजन
12. 52 बोध, 100 क्रिया, सहिसम्रानी
13. श्लोक छोटे आदि आदि



37. आगे बढ़ने से पहले आइए अगले अध्याय में देखें कि ब्रेनवॉशिंग क्या है।

12 पीर सदरुद्दीन की कब्र – https://abkkpsamaj.org/go/fn12
13 पीर कबीरुद्दीन – https://abkkpsamaj.org/go/fn13
14 सैयद इमामशाह – https://abkkpsamaj.org/go/fn14

6

ब्रेनवॉशिंग कैसे होती है?

38. **ब्रेनवॉशिंग क्या है:** ब्रेनवॉशिंग का अर्थ है किसी व्यक्ति पर इस तरह से प्रभाव डालना कि उस व्यक्ति का विवेक भ्रष्ट हो जाए और इसके साथ ही उसका दिमाग इतना भ्रमित हो जाए कि वह सही और गलत के बीच अंतर नहीं कर सके। जिसके कारण वह स्वयं निर्णय लेने में असमर्थ हो जाता है। ताकि वह दूसरे व्यक्ति के हाथ की कठपुतली बन जाए। स्थिति का आकलन करने और निर्णय लेने में असमर्थ होने के कारण, वह किसी और के संकेतों पर कार्य करना शुरू कर देता है।

भले ही वह दूसरों के निर्देशों का पालन कर रहा हो, लेकिन पीड़ित को पता भी नहीं चलता कि वह किसी और की बुद्धि के अनुसार चल रहा है।

ब्रेनवॉश किए गए व्यक्ति के मन और बुद्धि पर किसी और का नियंत्रण होता है, जिसके जरिए वह व्यक्ति किसी और के एजेंडे पर काम कर रहा होता है और उसे पता भी नहीं चलता।

39. **ब्रेनवॉशिंग कैसे होती है?** हम समझ गए हैं कि ब्रेनवॉश करने का अर्थ है किसी व्यक्ति की निर्णय लेने की शक्ति को किसी और के हाथों में सौंपना। लेकिन यह कैसे होता है यह समझने के लिए हमें पहले यह समझना होगा कि एक इंसान निर्णय कैसे लेता है।

40. **बुद्धि और मन पर नियंत्रण:** मनुष्य की निर्णय शक्ति दो बातों पर निर्भर करती है।

1) बुद्धि
2) मन

मनुष्य या तो बुद्धि से सोचकर निर्णय लेता है, या फिर मन की सुनकर निर्णय लेता है, और कभी–कभी दोनों के आधार पर निर्णय लेता है।

अब यदि हमें किसी मनुष्य की निर्णय शक्ति को नियंत्रित करना है तो जाहिर सी बात है कि हमें उसकी बुद्धि और मन को भी नियंत्रित करना होगा। लेकिन ऐसा कैसे होता है? देखते है।

6 ब्रेनवॉशिंग कैसे होती है?

41. **<u>बुद्धि और मन पर नियंत्रण कैसे पाएं:</u>** हम समझते हैं कि मनुष्य कोई भी कार्य बुद्धि और मन से ही करता है। तो अगर आप किसी आदमी से अपना काम करवाना चाहते हैं, तो वह आदमी की

1) बुद्धि भ्रष्ट करना
2) मन को भ्रमित करें

दूसरे शब्दों में, यदि बुद्धि पर पर्दा (भ्रष्ट) हो और मन दिशाहीन हो तो मनुष्य सत्य को समझने में असमर्थ हो जाता है। जिससे उसका दिमाग उसे गलत जगह पर खींच ले जाता है और उसकी बुद्धि उसे समझ नहीं पाती है। अंत में वह सही काम करने के बजाय गलत काम करने लगता है।

42. **<u>यदि आप उन्हें मना नहीं सकते, तो उन्हें भ्रमित करें:</u>** यदि आप किसी व्यक्ति के मन और बुद्धि को नियंत्रित नहीं कर सकते, तो कम से कम उसे भ्रमित करें। भ्रमित व्यक्ति भी अंधे के समान होता है। इसे आसानी से डायवर्ट किया जा सकता है. इस सिद्धांत का प्रयोग भी व्यापक रूप से किया जाता है।



43. **<u>भोलापन और अज्ञानता के माध्यम से ब्रेनवॉश करना:</u>** मन और बुद्धि को भ्रष्ट करने के लिए दो कारक आवश्यक हैं।

43.1. **<u>भोलापन:</u>** एक भोला आदमी आसानी से धोखा खा जाता है। वह आदमी दूसरों पर शक कर ही नही सकता। वह क्या मत सोचिए कि बात सही है या गलत, बात के पीछे क्या मकसद हो सकता है आदि। ऐसा व्यक्ति जो भी कहा जाए, उस पर आसानी से विश्वास कर सकता है। मैं आपको फिर से याद दिला दूं कि जैसा कि पहले बिंदु (13) में बताया गया है, कच्छ कड़वा पाटीदार जाति बहुत भोली हो गई थी, जिससे इसके पतन की गुंजाइश बन गई थी।

43.2. <u>**अज्ञानता:**</u> अज्ञानी और अंधा एक तरह से समान होता हैं। देसी भाषा में एक कहावत है कि अंधा और अभोई (अज्ञान) एक समान होते हैं। इसलिए यदि तुम किसी मनुष्य को गुमराह करना चाहते हो, तो उसे अज्ञानी बनाओ।

यदि आप किसी व्यक्ति को अज्ञानी बनाना चाहते हैं..

1) **मनुष्य को इतिहास से वंचित करो (इतिहास को भूला दो)**
– जैसे सतपंथ के कई युवा नहीं जानते कि सतपंथ इस्लाम की एक शाखा है।

2) **यदि यह नहीं कर सकता, तो इसका इतिहास बदल (भ्रष्ट) कर दो।**
– उदाहरण जैसे – यह गलत प्रचारित किया गया कि इमामशाह ने हिंदुओं को मुसलमान बनने से बचाया। जबकि वास्तव में इमामशाह ने सतपंथ धर्म का प्रचार केवल हिंदुओं को धोखा देकर मुसलमान बनाने के लिए किया था।

– जैसे इमामशाह ने भगवान विष्णु के अवतारों के बारे में बहुत ही सरल भाषा में बताया है। जबकि वास्तव में उसने हिंदुओं को मुसलमान बनाने के लिए अवतारों को भ्रष्ट कर दिया है।

जब किसी भोले–भाले और अज्ञानी व्यक्ति के सामने ऐसी बातें रखी जाएं तो उसे उसे सत्य समझकर सहजता से स्वीकार कर लेना चाहिए। जब कोई व्यक्ति इस प्रकार का व्यवहार करने लगता है तो वह व्यक्ति किसी के हाथ की कठपुतली बन जाता है। उस आदमी को ब्रेनवॉश आदमी कहा जाता है. यह ब्रेनवॉशिंग के अंतिम चरण में पहुंच जाता है। **इस तरह इंसान का ब्रेनवॉश किया जाता है.**

44. <u>**ब्रेनवॉश का दुरुपयोग:**</u> जैसा कि ऊपर बताया गया है, जब कोई किसी दूसरे के हाथ की कठपुतली बन जाता है, तो षडयंत्रकारी व्यक्ति ऐसे व्यक्ति से बहुत ही चतुराई से इस तरह बात करता है कि उसका दिमाग उस काम का विरोध नहीं कर पाता और उसकी बुद्धि को यह एहसास हो जाता है कि वह जो कुछ भी कर रहा है, गलत है। फिर भी वह कार्य सही एवं आवश्यक है। इस स्तर पर एक ब्रेनवॉश व्यक्ति के साथ दुर्व्यवहार किया जा सकता है और उसे इसका एहसास भी नहीं हो सकता है।

दूसरे शब्दों में, ब्रेनवॉश किए गए व्यक्ति को उसके हितों से दूर रखा जाता है, गलत और न करने जैसे कार्य तरफ मोड़ दिया जाता है। और वह आदमी ऐसे गलत काम में जी जान से लग जाता है।

यदि मन अधर्म में लगा हो और बुद्धि पर पर्दा पड़ा हो तथा सत्य को दबाया गया हो तो वह व्यक्ति अधर्म में ही ओतप्रोत लगा रहता है। सतपंथ के प्रचारकों ने इस सिद्धांत का बहुत उपयोग किया है। जिसके बारे में हम आगे देखेंगे।

7

श्रीमद्भागवतजी ग्रंथ के अनुसार अधर्म क्या है?

45. **<u>अधर्म किसे कहते हैं?</u>** हिंदू धर्म के मूल श्रीमद्भा भागवतजी[15] में अधर्म क्या है इसकी व्याख्या की गई है 15 में दिया गया है।

<u>श्रीमद्भाभागवतजी के स्कंद 7, अध्याय 15, में वर्णित श्लोक..</u>

विधर्म अधर्मशाखा: ।
पंचेम धर्मज्ञोऽधर्मवत्त्यजेत् ।। 12 ।।
विधर्म अधर्मशाखा: ।
पंचेम धर्मज्ञ ऽ धर्मवत्त्यजेत् ।। 12 ।।



अर्थ: अधर्म की पाँच शाखाएँ हैं।

1) विधर्म
2) परधर्म
3) मतिभ्रम (आभास)
4) उपमा, और
5) छल

धर्मात्मा मनुष्य को अधर्म की भाँति इन सबका त्याग कर दे

धर्मबाधो विधर्म: स्यात्पराधर्मोत्यचोदित: ।
उपधर्मस्तु पाखंड ।। 13 ।।
विधर्म और विधर्म: सच्चे धर्म ।
उपधर्मस्तु पाखंडो दंभो वा शब्दभिच्छल: ।। 13 ।।

अर्थ:

1) ऐसा कार्य जो धार्मिक ज्ञान के साथ किया जाता है लेकिन जिससे किसी के धर्म का उल्लंघन होता है वह विधर्म है ।
2) किसी अन्य व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति के लिए प्रचारित धर्म परधर्म है ।
3) विधर्म या पाखंड का नाम उपधर्म या उपमा है ।
4) धर्मग्रंथों के वादों की एक अन्य प्रकार की व्याख्या धोखा है ।

15 श्रीमद् भागवतजी – https://abkkpsamaj.org/go/fn15

7 श्रीमद्भागवतजी ग्रंथ के अनुसार अधर्म क्या है?

नोट: उपरोक्त श्लोक में भ्रम का अर्थ नहीं दिया गया है, लेकिन हम यह समझ सकते हैं कि कोई भी अन्य धर्म, मिथ्या रूप से, मूल/सच्चा धर्म होने का मिथ्या भ्रम देता है, वह भी अधर्म है।

46. **<u>हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार अधर्म की परिभाषा में सतपंथ कहां है ?</u>** जैसा कि ऊपर बताया गया है, सतपंथ की तुलना अधर्म की शाखाओं से की जाती है ;

1) विधर्म
2) परधर्म
3) मतिभ्रम
4) उपमा, और
5) धोखा

लगभग सभी शाखाएँ सतपंथ पर लागू होती हैं या नहीं ? यह आपको सोचना है ?

8

सतपंथ दशावतार धर्मान्तरण का ग्रन्थ

47. **<u>हिंदू-मुस्लिम के बीच एकमार्गिय पुल:</u>** इस्लाम के प्रसार में आने वाली समस्याओं के बारे में हमने पिछले बिंदु (15) में जो सीखा है, उससे एक बात स्पष्ट है कि इस्लाम के प्रचारकों को हिंदू दुनिया से इस्लामी दुनिया के लिए। इसके लिए एक पुल या नाव की आवश्यकता थी। जो सेतु या नाव तैयार की गई थी उसका नाम सतपंथ था। यह पुल तभी काम कर सकता है जब लोग यानी हिंदू पहले इसकी ओर आकर्षित हों। यदि हिंदुओं को पहले से पता होता कि यह पुल उन्हें इस्लाम की दुनिया में ले जाएगा, तो कोई भी इसे पार नहीं करेगा।

तो ऐसी युक्ति की आवश्यकता थी कि इस सेतु/नाव का स्वरूप हिंदू धर्म का हो। लेकिन जैसे-जैसे यह आगे बढ़ता है, इसका अंत मुस्लिम जगत में होता है। तब हिंदुओं को वापस हिंदू दुनिया में लाने का कोई रास्ता नहीं रह जाता है। 120 : पेज 48

हिंदू-मुसलमानों के बीच प्रेम, एकता, सद्भाव, सहयोग, सद्भावना, भाईचारा, ईश्वर एक है आदि आदर्शवादी सिद्धांतों की मदद से हिंदुओं को इस्लाम के धर्मस्थलों की ओर आकर्षित करने का काम पहले चरण में शुरू किया गया था। यह क्यों होता है ?

48. **<u>दशावतार ग्रंथ की रचना:</u>** ऐसे सेतु की खोज में इस्लाम के प्रचारकों ने हिन्दू धर्मग्रंथों का गहन अध्ययन किया। सामग्रियों में से बारमनी संप्रदाय का साहित्य, बिंदु (33), पहले से ही चुना गया था और उपकरण (विचारधारा का विनाश – बिंदु (17) इस पर काम करने के लिए तैयार थे । ऐसी सामग्रियों और यंत्रों का उपयोग करके कुछ ऐसा तैयार किया गया जिससे विचारधारा के विनाश का पहला कदम यानी हिंदू धर्म को भ्रष्ट करने का मूल पाठ तैयार किया गया। पहले पीर सदरुद्दीन ने छोटा दशावतार की रचना की और फिर उनके पोते सैयद इमामशाह बावा ने इसका विस्तार किया और बड़ा दशावतार (13) (45) (125) (139) का निर्माण किया ।

यह पुस्तक हिंदू भगवान विष्णु के दस प्रमुख अवतारों पर आधारित है। इस ग्रंथ का नाम दशावतार है। इस पुस्तक को कहीं-कहीं श्रीमद् दशावतार[16] और कहीं-कहीं श्रीमद्भभागवत दशावतार[16] भी कहा जाता है। ध्यान रहे नाम भी कितना भ्रामक है।

16 श्रीमद्भागवत दशावतार – वर्ष 2002 से 2017 तक 6 विभिन्न संस्करण – सतपंथ प्रकाशन समिति, पिराना – संगीतकार सैयद इमामशाह बावा। दा. टी. (47) (49) (124)।

8 सतपंथ दशावतार - धर्मान्तरण का ग्रन्थ

यहां मजेदार बात यह है कि हिंदू धर्म में दशावतार नाम का कोई ग्रंथ नहीं है। विभिन्न हिंदू पुराणों में भगवान विष्णु के विभिन्न अवतारों का वर्णन किया गया है, लेकिन हिंदू धर्म में दशावतार या ऐसी कोई पुस्तक नहीं है। इस्लाम में है।

49. **ग्रंथ की कहानी क्या है ?** दशावतार ग्रंथ में भगवान विष्णु के दस प्रमुख अवतारों का वर्णन है। इन अवतारों की भूमिका दो प्रकार से समझी जा सकती है।

49.1. **सहयोगी अवतार:** (कुल 7 अवतार)

1) मत्सय
2) कुर्म
3) वराह
4) नरसिंह
5) वामन
6) परशुराम
7) राम



49.2. **ब्रेन वॉशिंग अवतार:** (कुल 3 अवतार)

8) कृष्ण
9) बुद्ध
10) नकलंकी (कल्कि की जगह)

नोट: हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार अंतिम अवतार, कल्कि अवतार को निष्कलंकी अवतार द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है।

50. **सहयोगी अवतारों की भूमिका:** अध्ययन से यह समझ में आता है कि सहयोगी अवतारों की मुख्य भूमिका क्या है ?

1) हिंदू स्वरूप बनाए रखते हुए इस्लाम के आदर्शों, सिद्धांतों, नियमों और मान्यताओं को स्वीकार करना।
2) जहां हिंदू नियम इस्लामी नियमों के सीधे टकराव में हों, वहां इस्लामी नियमों का पक्ष में खड़ा रहना।
3) अंतिम 3 यानि ब्रेनवॉश करने वाले अवतारों की मदद करना।

इन सभी अवतारों में, चाल के हिस्से के रूप में, षडयंत्रो के मात्र रुप अवतारों को हिंदू धर्मग्रंथों पर आधारित करना और उनमें इस्लामी तत्वों को शामिल करना है। हम यहां इन सहयोगी अवतारों की उलझन के बारे में विस्तार से नहीं बताएंगे। विस्तृत जानकारी के लिए सतपंथ छोड़ो पुस्तक 27 पढ़ें।

इसकी झलक देने वाला एक भाषण प्रकाशित हुआ है. क.क. पाटीदार जाति के मौलिक सुधारक श्री नारायण रामजी लिम्बानी ने जाति के दूसरे सम्मेलन में एक बहुत ही बढ़िया भाषण दिया 6: पृष्ठ 207 से 214 34: पृष्ठ 256 से 265 114: पृष्ठ 58 से 65 कराची 07 से 09 अक्टूबर 1922 तक। 6: पृष्ठ 207 से 214 प्रकाशित है।

जिसके मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:

1. सतपंथ धर्म का उद्देश्य क्या है ?
2. कैसे हिंदुओं के भोलेपन का गलत फायदा उठाया और हिंदुओं के धर्मग्रंथों का बदलाव किया।
3. सतपंथ का अथर्ववेद हिंदुओं का सच्चा अथर्ववेद नहीं है।
4. भगवान विष्णु के दसवें अवतार को ''हजरत अली'' के रूप में दर्शाया गया है।
5. नकलंक नारायण अवतार मुसलमानों में हुआ।
6. इमामशाह ने स्वयं को नकलंक नारायण का वंशज दर्शाया।
7. इमामशाह ने भी स्वयं को इन्द्र बना लिया।
8. सतपंथ के दस अवतारों का झूठ पकड़ा गया।
9. सतपंथ को सनातन धर्म में शामिल करने के प्रपंच कैसे हैं ?
10. इमामशाह के पुत्र नूर मुहम्मद शाह को भगवान विष्णु का रूप दिखाया।
11. आदि आदि

50.1. <u>अवतारों को जोड़ने वाला एक महत्वपूर्ण बिंदु:</u> जैसा कि पिछले बिंदु (34.7) में कहा गया है, शिया इस्लाम का मानना है कि ईश्वर इस दुनिया में किसी न किसी रूप में हमेशा मौजूद रहता है। उनका मानना है कि यदि एक क्षण के लिए भी ईश्वर न हो तो पृथ्वी उसी क्षण नष्ट हो जायेगी। इसलिए भगवान निरंतर एक ही कुल में जन्म लेते हैं। उस कबीले को अली राजवंश कहा जाता है। और इसी बात को हिंदुओं के गले उतारने के लिए इसे हरिवंश नाम दिया गया है. लेकिन हिंदू धर्म में विष्णु का जन्म समय-समय पर अलग-अलग कुलों में हुआ है। जैसे श्री राम सूर्यवंश में थे और श्री कृष्ण चंद्रवंश में थे। कभी-कभी भगवान का जन्म भी नहीं होता - नरसिम्हा अवतार। परंतु एक ही कुल में जन्म लेने के सिद्धांत को मुसलमानों को अस्वीकार करना पड़ा। इसलिए विष्णु ने अपने दशावतार में सभी को एक कुल में दर्शाया। बाद में नारायण रामजी के भाषण के दबाव में आकर 34:पृष्ट 256 से 265 80 114:पृष्ट 58 से 65 6:पृष्ट 207 से 214 यह कहा गया कि भगवान ने कुल बदल दिया। लेकिन एक ही वंश में लगातार जन्म लेने की बात चलती रही. ऐसा क्यूँ होता है ? शास्त्रों में ऐसे कई स्थान हैं। दूसरे उदाहरण के तौर पर इन अवतारों के वंशजों के नामों में भी काफी गड़बड़ी की गयी है। अधिक जानकारी के लिए पढ़ें सतपंथ, पृष्ठ 293 27 ।

51. **<u>ब्रेनवॉशिंग अवतार:</u>** ब्रेनवॉशिंग क्या है और इसका उपयोग कैसे किया जाता है, यह हम पहले बताए गए बिंदु (38) में देख चुके हैं। तो चलिए सीधे मुद्दे पर आते हैं।

<u>इन अवतारों का मुख्य कार्य यह है ;</u>

1) लोगों के मन और बुद्धि को भ्रष्ट करना (हिंदू धर्म में – ब्रेनवॉशिंग की मदद से)।
2) हिंदू धर्म के मूल्यों और आदर्शों को निरस्त, तुच्छ और हीन दिखाना।
3) लोगों को हिंदू धर्म के प्रति उदासीन बनाना।
4) इस्लाम के मूल्यों और आदर्शों को हिंदुओं से बेहतर और श्रेष्ठ दिखाना।
5) लोगों के मन में इस्लाम के प्रति सम्मान और श्रद्धा पैदा करना।
6) अंत में, लोगों को इस्लाम में परिवर्तित या धर्मांतरित करना।

52. **<u>ब्रेनवॉशिंग अवतारों की योजना:</u>** जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, ब्रेनवॉशिंग के लिए तीन अवतारों का उपयोग किया गया है। जिसे नीचे दिए गए चित्र से आसानी से समझा जा सकता है ।



52.1. **<u>इन अवतारों को भ्रष्ट करने के पीछे की रणनीति:</u>** इस रणनीति की वास्तविक शुरुआत ऊपर वर्णित कृष्ण अवतारों में दी गई तालिका के क्रम 2 में कुंती माता के बारे में बिंदु से वास्तविक शुरुआत होती है।

8 सतपंथ दशावतार - धर्मान्तरण का ग्रन्थ

भोले–भाले लोगों को धोखा देने के लिए हजारों वर्षों से अपनाई जाने वाली रणनीति। इसका प्रयोग सतपंथ के प्रचारकों द्वारा भी किया जाता था। उस के अनुसार :

1) सबसे पहले हिंदू धर्म में एक नकली समस्या पैदा करना, और

2) उपाय के रूप में सतपंथ धर्म का परिचय देना। ताकि भोले–भाले लोग आपकी बातों के जाल में आ जाएं। इसके बाद;

(क) हिंदू धर्म में सदियों पुरानी मान्यता को तोड़ने के लिए – कलियुग में हिंदू धर्म को कमजोर, हीन और रद्द घोषित करना। और

(ख) सतपंथ धर्म के प्रति लोगों को आकर्षित करना और उसमें लोगों की आस्था को परिवर्तित करना, सतपंथ को अच्छा, उच्च, श्रेष्ठ बताना और कलियुग का सच्चा धर्म बताना। यह भी दिखाओ कि सतपंथियों के लिए धर्म कितना लाभदायक है।

एक नकली समस्या बनाएँ – समाधान का उपाय सतपंथ द्वारा दिखाना

आइए देखें कि इस रणनीति का उपयोग यहां कैसे किया गया...

53. **आवश्यक स्पष्टीकरण:** सतपंथ के दशावतार के विभिन्न खंडों में कई छोटी–छोटी बातों में अंतर मिलेगा। सतपंथ के संप्रदायों और उनके धर्म वादों के अनुसार तथा एक ही वाद के भीतर भी समय–समय पर कुछ परिवर्तन/मतभेद होते रहते हैं। लेकिन इन सभी परिवर्तनों और मतभेदों में, विष्णु के अवतारों और उनके उद्देश्यों (हिंदुओं को परिवर्तित करने के लिए) में समानताएं हैं। भाषा या शब्दों में परिवर्तन हो सकता है, किसी कारणवश घटना का वर्णन भिन्न हो सकता है, परंतु उनके मूल उद्देश्य में कोई अंतर नहीं होता।

शायद कोई सतपंथी कहे कि हमारा दशावतार ग्रंथ अलग है और इस ग्रंथ में वर्णित बातें हम पर लागू नहीं होती, तो इस बात का ध्यान रखें कि इसमें क्या कहा गया है।

54. **मुख्य संदेश पर जोर:** सतपंथ शास्त्र और ऊपर वर्णित तीन ब्रेनवॉशिंग अवतारों का कर्णोपकर्ण[17] में कंठस्थ परंपरा के अनुसार प्रचलित जानकारी के अनुसार संक्षिप्त का वर्णन किया गया है। कृपया इस विवरण के शब्दों को समझने के बजाय, शब्दों के पीछे के संदेश को समझने का प्रयास करें।

इस पुस्तक में सतपंथ के कृष्ण, बुद्ध और निष्कलंकी अवतार के बारे में सब कुछ शामिल नहीं है। लेकिन हिंदू धर्मग्रंथों को भ्रष्ट करके कैसे ब्रेनवॉश किया जा रहा है, इसे समझने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बिंदु शामिल हैं।

17 कर्णोपकर्ण = कणोकन = मौखिक रूप से प्रेषित

55. <u>कृष्ण अवतार:</u> सतपंथ का कृष्ण अवतार[18] को किसी भी बातचीत से पहले एक जरूरी चेतावनी





यहां वर्णित कृष्ण अवतार, पहली नज़र में, हिंदू धर्मग्रंथों के कृष्ण अवतार के समान लग सकता है, लेकिन नीचे उल्लिखित महत्वपूर्ण बिंदु हिंदू धर्मग्रंथों में कहीं नहीं हैं। इन बातों का उल्लेख केवल सैयद इमामुद्दीन अब्दुर रहीम और उनके दादा पीर सदरुद्दीन द्वारा रचित सतपंथ दशावतार ग्रंथ[19] में मिलता है।

पुनः स्पष्ट किया गया है कि.. यहां वर्णित अवतार हिन्दू धर्मग्रंथों के अनुसार नहीं, बल्कि सतपंथ ग्रंथों के अनुसार हैं। भ्रम में मत रहो।

55.1. <u>ग्रंथों का आधार:</u> शतपंथ में कृष्ण के अवतार को समझने के लिए नीचे उल्लिखित मुख्य तीन ग्रंथों को आधार माना जाता है।

संदर्भ पाठ : वर्ष 1926 – पिराणा सतपंथ की पोल और सत्य का प्रकाश – नारायण रामजी लिम्बानी

संदर्भ पाठ : वर्ष 1978 – सतपंथ प्रकाश अर्थ .. दस अवतार – सतपंथी सैयद अहमद अली खाकी
(**नोट** : यह पुस्तक और उपर्युक्त संदर्भ पुस्तक 88 (पिराणा की पोल) लगभग समान हैं। केवल उपवाक्यों के क्रम में एक से तीन क्रम का अंतर है)

18 (45) (47) (88) (139)
19 ग्रंथ/पुस्तक का यू. आर. एल. और अधिक जानकारी के लिए ग्रंथ सूची/संदर्भ सूची अनुभाग।

8 सतपंथ दशावतार - धर्मान्तरण का ग्रन्थ

संदर्भ पाठ : वर्ष 2009 – सतपंथ श्रीमद्भागवत दशावतार – नानकदासजी महाराज (**नोट:** इस पुस्तक में वर्णित श्लोकों में भिन्नता है और उन्हीं श्लोकों की व्याख्या नीचे दी गई है। कृपया ध्यान दें।)

इन तीन खंडों यानी पूरी किताब की ऑनलाइन सॉफ्टकॉपी का लिंक इस किताब के ग्रंथ सूची /संदर्भ सूची अध्याय में मिलेगा। वहां से आप यह पुस्तक निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

क्रं	विचारणीय लेख..	संदर्भ पाठ 88 कलमा नं.	संदर्भ पाठ 139 कलमा नं.	संदर्भ पाठ 124 कलमा नं.
1.	अवसर: भीम और दुर्योधन का युद्ध उस समय भीम भुजादार ने जमीन तोड़ी, वहां भगवान श्री बुद्ध ने शक्ति का रूप धारण किया और वहां मृत भाई को पहचान लिया. टिप्पणी: कृष्ण अवतार में बुद्ध अवतार कहाँ से आया?	547 पृष्ठ: 293 (कृष्ण) 1002 पृष्ठ: 328 (बुद्ध)	544 पृष्ठ: 255 (कृष्ण) 1005 पृष्ठ: 378 (बुद्ध)	594 पृष्ठ: 298 (कृष्ण) 986 पृष्ठ: 393 (बुद्ध)
2.	अवसर: कौरवों से युद्ध जीतने के बाद जब पांडव कुंती माता के सामने उपस्थित होते हैं, तो कुंती माता क्या कहती हैं? पांडवों ने क्या कहा? टिप्पणी: मूल हिंदू धर्मग्रंथों में ऐसा कुछ नहीं है। हालाँकि, ऐसे लेखन के पीछे की रणनीति नीचे विस्तार से दी गई है।	556 पृष्ठ: 293	553 पृष्ठ: 256	612 पृष्ठ: 304

क्रं	विचारणीय लेख..	संदर्भ पाठ 88 कलमा नं.	संदर्भ पाठ 139 कलमा नं.	संदर्भ पाठ 124 कलमा नं.
3.	अवसर: पंडितों/ब्राह्मणों से पाप दूर करने का उपाय पूछा जाता है, जब.. तब विद्वान पंडित ने कहा, यदि कौरव अश्वमेध यज्ञ करेंगे तो वे मारे जायेंगे। टिप्पणी: कौरवों की हत्या का पाप दूर करने के लिए ब्राह्मणों ने अश्वमेध यज्ञ करने को कहा।	561 पृष्ठ: 294	558 पृष्ठ: 256	617 पृष्ठ: 304
4.	अवसर: ब्राह्मणों की सलाह के अनुसार किए गए अश्वमेध यज्ञ से भगवान कृष्ण अप्रसन्न थे फिर करसनजी (कृष्णजी) ने शरीर छोड़ दिया, फिर श्री करसनजी स्वधाम चले गये टिप्पणी: क्रोधित होकर भगवान कृष्ण ने अपना शरीर त्याग दिया।	569 पृष्ठ: 294	566 पृष्ठ: 257	625 पृष्ठ: 308
5.	अवसर: यज्ञ चल रहा है और भगवान कृष्ण अपना शरीर त्याग कर बुद्ध अवतार लेते हैं। पांडवों के जीवनकाल के दौरान. तब देवता यज्ञ से (संसार से) किर्तर उठे, उस देवता ने बुद्ध का अवतार लिया टिप्पणी: मूल हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार वास्तव में भगवान कृष्ण और भगवान बुद्ध के बीच कोई संबंध नहीं है और दोनों के बीच लगभग 2500 वर्षों का अंतर है।	570 पृष्ठ: 294	567 पृष्ठ: 257	625 पृष्ठ: 308

55.2. <u>कृष्ण अवतार का सार जानना होगा:</u> इस तालिका की पंक्ति 2 में उल्लिखित रणनीति पर चर्चा करने से पहले, आइए देखें कि सतपंथ के कृष्ण अवतार के बारे में वरिष्ठ जाति सुधारक श्री नारायण रामजी लिम्बानी का क्या कहना था।

114: पेज 58 से 65 6: पेज 207 से 214 **07 से 09 अक्टूबर 1922 तक कराची में आयोजित कच्छ कड़वा पाटीदार जाति के दूसरे सम्मेलन की रिपोर्ट में श्री नारायण बापा का भाषण प्रकाशित है। कुछ महत्वपूर्ण अंश यहां नीचे उल्लिखित हैं।**

इस्लाम के अनुयायी, पीर ने पूरी तरह से झूठी और अप्रमाणित काल्पनिक कहानियाँ लिखकर और उनमें मुस्लिम तत्वों को शामिल करके, हिंदुओं को परिवर्तित करने और अपना नया संप्रदाय स्थापित करने का प्रयास किया। फिर उसने भोले–भाले और धार्मिक रूप से अज्ञानी हिंदुओं की तलाश की और उन्हें टेढ़े रास्ते में शामिल किया, कब्रिस्तान पंथ की पुस्तकों में वेदों के नाम जैसे काल्पनिक शब्दों का इस्तेमाल किया , हिंदू तीर्थ स्थलों और महापुरुषों के नाम जोड़े , और अपनी हस्तलिखित पुस्तकों में हेरफेर किया । पिराना कब्रिस्तान पंथ की किताबें। नौकरों को सौंपते हुए उन्होंने कहा, यह अथर्ववेद है! अब इस लेख के अथर्ववेद की बारी है और इसमें जो लिखा है वह सत्य है और पिराना के सतपंथियों को उसके अनुसार कार्य करना चाहिए। पीर सादरदीन ने उन अज्ञात हिंदुओं से, जो धीरे–धीरे उनके जाल में फंसते जा रहे थे, शीघ्रता से मुसलमानों का अनुसरण करने को कहा :–

जिस अवतार को हिंदू धर्मग्रंथों और पुराणों में नकलंकी अवतार कहा जाता है, वह वास्तव में हो चुका है और जिसे दसवां अवतार बताया गया है, वह औपचारिक रूप से मक्का में हज़रत अली के रूप में प्रकट हुआ है। ईश्वर ने मुसलमानों में अवतार क्यों लिया इसका कारण उसके भ्रमित एवं अज्ञानी हिन्दू सेवकों ने इस प्रकार बताया कि:–

भगवान कृष्ण जो भगवान के अवतार थे, उन्होंने पांडवों को उपदेश देने के लिए पांडवों और कौरवों के बीच युद्ध कराया और पापी कौरवों का वध किया और अज्ञानतावश पांडव यह नहीं समझ पाए कि हमारे हाथों से हमारे परिवार के सदस्यों का विनाश हुआ है, इसलिए भगवान श्रीकृष्ण ने पांडवों को गीता के रूप में उपदेश दिया, संदेह दूर हो गया। लेकिन उस समय के ब्राह्मणों ने उल्टा सीधा समझाया और महाभारत युद्ध के पाप से मुक्त होने के लिए यज्ञ किया, इसलिए पांडवों ने राजसूय यज्ञ किया। तो (पिर्सदर्दी के अनुसार) **भगवान कृष्ण ब्राह्मणों से नाराज हो गए और कहा कि – मैं एक हिंदू के रूप में दसवां अवतार लेने जा रहा था, लेकिन ब्राह्मणों ने पांडवों को यज्ञ करने के लिए मना लिया, इसलिए अब मैं दसवां अवतार हजरत अली के रूप में लूंगा। अरब के मक्का शहर में! अभी मुसलमानों द्वारा ईश्वर के अवतार पर विश्वास करने की बारी है।**

भाई बंधु! आपको इस बारे में कैसा महसूस होता है ? मक्का शरीफ में श्री कृष्ण का अवतार और वह भी हजरत अली के रूप में! क्या आप इससे सहमत हैं ? क्या कोई सोचता है कि यह सच है ? जैसा कि उन लोगों को लगता है कि हमारे धर्मग्रंथों में ईश्वर के अवतार ही मुख्य हैं, उन्होंने ईश्वर के दस अवतारों का एक धर्मग्रंथ बनाया और अंत में उसकी पूंछ पर उस कब्रिस्तान की सभी चिताएं लटका दीं। उनके द्वारा लिखी गई अवतारों की कहानियाँ पूर्णतया झूठी एवं मनगढ़ंत हैं। इतना ही नहीं बल्कि मेरे लिए यह स्पष्ट करना जरूरी है कि यह हिंदू धर्म का कितना अपमान करता है। साथ ही ध्यान से सुनिए कि भोले-भाले हिंदू भाइयों को विश्वास में लेने के लिए क्या-क्या तरकीबें निकाली गई हैं और वे उसकी पूंछ पर क्यों लटक गए हैं...

(इसके बाद सतपंथ के दशावतार की जालसाजी का रहस्योद्घाटन किया गया है।) 80,114

55.3. **एक नकली समस्या पैदा करना:** कौरवों के खिलाफ युद्ध जीतने के बाद जब पांडव कुंती माता के पास गए, तो कुंती माता ने पांडवों को डांटते हुए कहा कि

कौरवों को मारकर पांडवों ने कुल को कलंकित किया है। अतः स्वजनों की हत्या के पाप से मुक्ति पाने के लिए कोई उपाय करें।

इससे पांडवों के लिए एक समस्या खड़ी हो गई। परन्तु यह समस्या मूल हिन्दू धर्मग्रन्थों में नहीं है। यह सतपंथ के दशावतार में है। दूसरे शब्दों में, यहां एक बनावटी समस्या पैदा की गई है।

जैसा कि ऊपर बिंदु (52.1) में बताया गया है .. यह रणनीति थी ...

पहली चाल – हिंदू धर्म में एक बनावटी समस्या पैदा करना।

56. <u>बुद्ध अवतार:</u> उपरोक्त बिंदु (55.3) में बताई गई समस्या के समाधान/उपाय के लिए बुद्ध अवतार प्रस्तुत किया गया था।



सावधान

भ्रमित मत बनो <u>यह अवतार हिन्दू धर्मग्रन्थों के अनुसार नहीं है</u>

सतपंथ के बुद्ध अवतार पर कोई भी बात शुरू करने से पहले एक आवश्यक चेतावनी कि उनका बुद्ध अवतार हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार बिल्कुल भी मेल नहीं खाता। बौद्ध धर्म गौतम बुद्ध या सिद्धार्थ बुद्ध के बिल्कुल भी अनुकूल नहीं है। यह अवतार केवल पीर सदरुद्दीन और इमामशाह द्वारा रचित सतपंथ दशावतार ग्रंथ में है। इसका उल्लेख किसी अन्य धर्मग्रन्थ में नहीं है। तो गलतफहमी में मत रहो।

56.1. <u>संक्षेप में बुद्ध अवतार:</u> जैसा कि ऊपर उल्लिखित सतपंथ कृष्ण अवतार के बिंदु (55.1) के उप-बिंदु (4 और 5) में बताया गया है, पांडव ब्राह्मणों के हाथों यज्ञ कर रहे हैं। और उस यज्ञ को रोकने के लिए भगवान कृष्ण बुद्ध का अवतार लेते हैं और पांडवों के पास जाते हैं।

सबसे पहले बुद्ध अवतार और भीम के साथ लंबी बातचीत होती है, जो हिंदू धर्म की मान्यताओं और परंपराओं पर **संदेह पैदा** करती है । इसमें विशेष रूप से हिंदू धर्म के बौद्धिक वर्ग और हिंदू धर्म को संरक्षित करने वाले ब्राह्मणों को बहुत हल्के ढंग से चित्रित किया गया है।

फिर, उस संदेह को पुष्ट करने के लिए युधिष्ठिर, सहदेव, कुंती और द्रौपदी के साथ बातचीत होती है। जिसमें बुद्ध अवतार पाण्डवों के **मन में यह बात बिठाता है** कि कृष्ण की बात न मानकर, हल्के, अज्ञानी, तुच्छ तथा बुद्धिहीन ब्राह्मणों की बातों में आकर यज्ञ किया है। तब गुरु ने विश्वासघात का पाप किया है और उसे दूर करने के लिए उन्हें गाय की हत्या करनी पडेगी। पांडवों के हाथों गाय की हत्या से पांडव गुरु विद्रोह के पाप से मुक्त हो गये

इसके बाद कलियुग के प्रकोप से बचाने के लिए 68 तीर्थस्थलों, गंगा जैसी पवित्र नदियों, जो हिंदू धर्म में आस्था के केंद्र हैं, को पिराना में रखा गया। और उन खाली 68 तीर्थों में अब भूत भैरव निवास करते हैं। तो अब कलियुग में मंदिर जाना और मूर्ति पूजा करना भैरव भूत की पूजा मानी जायेगी।

ये सभी बातें सतपंथ के ग्रंथों में वर्णित हैं, जिनकी विस्तृत जानकारी नीचे दी गई है।

56.2. <u>ग्रंथो का आधार:</u> सतपंथ के बुद्ध अवतार को समझने के लिए नीचे दिए गए कृष्ण अवतार में वर्णित उन्हीं ग्रंथों को फिर से आधार बनाया गया है। अर्थात उन्हीं तीन ग्रंथों का आधार लिया गया है।

संदर्भ ग्रंथ 88 : वर्ष 1926 – पिराना सतपंथानी पोल और सत्य का प्रकाश – नारायण रामजी लिम्बानी (पृष्ठ 295 से 328)

संदर्भ ग्रंथ 139 : वर्ष 1978 – सतपन्थ प्रकाश अर्थात .. .. दस अवतार – सतपन्थी सैयद अहमद अली खाकी (पृष्ठ 285 से 382)

(**नोट:** यह पुस्तक और ऊपर उल्लिखित संदर्भ पुस्तक 88 (पिराना की पोल) लगभग समान हैं। केवल कलामाओं के क्रम में एक या दो क्रम का अंतर है। इसलिए, इसके कलामाओं का क्रम नीचे नहीं दिया गया है.)

संदर्भ ग्रंथ 124 : वर्ष 2009 – सतपंथ श्रीमद्भागवत दशावतार – नानकदासजी महाराज (पृष्ठ 314 से 396)

(नोटः इस पुस्तक में वर्णित श्लोकों और नीचे दी गई व्याख्या में कई अंतर हैं। कृपया ध्यान रहें।)

इन तीन खंडों यानी पूरी किताब की ऑनलाइन सॉफ्टकॉपी का लिंक इस किताब के ग्रंथ सूची /संदर्भ सूची अध्याय में मिलेगा। वहां से आप यह पुस्तक निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

क्रं	कलमा का संक्षिप्त विवरण	संदर्भ पाठ 88 कलमा नं.	संदर्भ पाठ 124 कलमा नं.
1.	**अवतार का रूप**		
	बुद्ध जैसा फ़ारसी अवतार	1,2	
	मुगल रूप	4	
	शरीर सड़ गया है, क्षीण हो गया है	8,9	5, 6, 45

20 ग्रंथ/पुस्तक का यू. आर. एल. और अधिक जानकारी के लिए ग्रंथ सूची/संदर्भ सूची अनुभाग।

क्रं	कलमा का संक्षिप्त विवरण	संदर्भ पाठ 88 कलमा नं.	संदर्भ पाठ 124 कलमा नं.
2.	**हिंदू धर्म को नीचा दिखाया गया**		
	कलियुग में सभी देवता और ऋषि–मुनि गुप्त हो गये हैं	13	10
	ब्राह्मण के कहने पर पांडव भूल गए और यज्ञ किया	23	16, 20
	कलियुग में ब्रह्म को भुला दिया गया है	45	43
	ब्राह्मण.. पेट बेचो काजे.. पुराना थाला वेद	70, 74	71, 72
	ब्राह्मण ब्राह्मण के पास गया	72	70
	ब्राह्मण कपट में निर्लज्ज होता है	79	77
	जो लोग वेद पढ़ते हैं, तीर्थ जाते हैं, जल (नदी) पत्थर (मूर्ति) की पूजा करते हैं, वे पवित्र नहीं होंगे।	81	79
	द्वापर में तीनों वेद अंततः पूर्ण हुए और श्रीहरि के आठ अवतार हुए	91	89
3.	**हिंदू समाज और परंपरा के बारे में;** **– सच और झूठ को मिलाकर लोगों के मन में हिंदू धर्म के प्रति संदेह पैदा किया जाता है**		
	महाजन में चांडाल कौन है?	117	119
	मनुष्यों में चांडाल कौन है?	123	125
	पशु–पक्षियों में चांडाल कौन? 2) कुत्ता, गधा, सियार और कौआ	143, 145	145, 147
	स्त्रियों में चांडाल कौन है?	146	148
	मनुष्य में मध्यम कौन है?	161	163
	मनुष्यों में श्रेष्ठ कौन है?	188	190
	दुनिया की सबसे अच्छी महिला कौन है?	209	211
4.	**यह कहने का प्रयास किया गया है कि कलियुग में हिंदू धर्म की मान्यता सही नहीं है**		
	कलियुग में जितने ब्राह्मण होंगे , उतना धर्म नहीं होगा	225	227
	ब्राह्मण धोखेबाज है.. .	228	230
	ब्राह्मण– दासियाँ दासियों के समान होंगे	242	244
	कलियुग में क्षत्रिय कैसा होगा?	250	252
	क्षत्रिय गाय चुराकर मुसलमान को दे देगा	252	254
	कलियुग में महाजन कैसा होगा?	263	265

क्रं	कलमा का संक्षिप्त विवरण	संदर्भ पाठ 88 कलमा नं.	संदर्भ पाठ 124 कलमा नं.
	भवैया को भांड से प्यार होगा (अच्छा नहीं)। (ताकि हिंदू शौर्य के नाटक और गाने न सुनें)	342	343
	तुलसी, गाय, ब्राह्मण– कपटपूर्वक पूजे जायेंगे	350	351
	कुड़ा देव मंदिर धाम से कुड़ी लक्ष्मी तक	383	384
5.	**बुध अवतार अर्थात सतपंथ के अनुसार– भगवान कृष्ण के मुख से; – लोगों को हिंदू मूल्यों और मान्यताओं से अलग करना..**		
	ऐसा भगवान स्वयं कहते हैं. यदि तुम आकर हमारे लिये दीदार करो तो तुम्हें अनन्त यज्ञ फल मिलेगा	395	396
	ब्राह्मण को माँगोगे तो नारायण नहीं मिलेंगे	439	441
	यज्ञ अनुष्ठान की महिमा नहीं रहेगी	443	451
	यज्ञ बंद करवाया	464	466
	कुरूक्षेत्र का पाप हमारे (कृष्ण के) सिर है (अर्थात वह ब्राह्मण कृष्ण की लीला को नहीं समझ पाया)	493	495
	एक भटकता हुआ ब्राह्मण देवता दर्शन को नहीं पहचानता था, इसलिए वह कलयुग में भिक्षा मांगकर खाता था	502	503
	पांडवों ने नहीं मानी कृष्ण की बात, इसलिए गुरु को लगा विश्वासघात का पाप	512	532
	मिथ्या ब्राह्मण – मिथ्या यज्ञ	531	532
	कलियुग में योगी ब्राह्मण कौन है?	536	538
	हम ही राम हैं और हम ही रहमान हैं (124 में : कान)	546	547
6.	**पांडवों के (तथाकथित) पाप का प्रायश्चित करने के लिए एक गौ हत्या करना**		
	पांडव कृष्ण से पूछते हैं कि – हमारी मुक्ति क्यों होगी ?	549	550
	कृष्ण: जब से कलियुग शुरू हुआ, भगवान ऋषिवर गायब हो गए	551, 602	552, 602
	कलियुग का वर्णन आरम्भ होता है	565	572
6.1.	**हिंदू धर्म का अपमान किया गया**		
	वह ब्राह्मण नहीं है	582	582
	भूतकाल (लोगों का समूह) ईज तीर्थ , शुक्र बीज + पश्चिम दिशा	626, 627	626, 627
	केवल अथर्ववेद	641	641
	मूर्तिपूजा के बारे में: माने पत्थर और भूत (नरक में जायेंगे)	645	645

क्रं	कलमा का संक्षिप्त विवरण	संदर्भ पाठ 88 कलमा नं.	संदर्भ पाठ 124 कलमा नं.
	ब्राह्मण हलाका: ब्राह्मण थला वेद पढ़ते हैं और अथर्ववेद का निषेध करते हैं।	646	646
	ब्राह्मण लोभी और अपवित्र	647	647
	गाय : यदि गाय विष्ठा खा ले तो उसका गला काट दिया जाता है	649, 804	649
	मुस्लिम में विष्णु: विष्णु को मलार्चा + अली + अथर्वेद (124 में : नारायण) के रूप में मानें	653, 655, 656	653, 655, 656
	पश्चिम दिशा– अरब देश	703	704, 705, 822, 825, 847
	अली: मानव भेष है – अली के नाम पर (264 में : बेदाग)।	704	706
	कुंवारी क्षेत्र	708	710
	इमामशाह: – गुरु ब्रह्मा	709	711
6.2.	**गाय का वध (वध) करना – हिंदुओं के लिए पवित्र गाय को मारने के लिए कहा गया..**	736, 737, 782, 783	765, 769
	यदि बहुत से लोग एकत्रित होकर आपके पाप को दूर करने के लिए आपकी निन्दा करें तो पाप कम हो जायेगा	741, 742	
	हमारी सभा का भोजन (मुस्लिम सभा)	776	807, 812
	मन में संदेह न रखें	786	
	हरिवंशी ब्राह्मण – अर्थात अली वंश के सैय्यद	789	
	यज्ञ के लिए कामधेनु गाय ले आये	800	
	यदि तू मन में शंका रखेगा तो तू गोहत्या का दोषी होगा	805	753
	पांडवों ने गाय को मार डाला	806, 807	
	गौ मेध यज्ञ किया गया		765-769
	राजा युधिष्ठिर ने गाय का सिर उठाया, खाल कुन्तिमा ने लिया, चारों पांडव चार पैर लेकर हस्तिनापुर में घूमने लगे	809 से 812	
	गाय के शरीर की हड्डियाँ और अवशेष – हीरे, मोती, माणिक	814, 816, 819	
	द्रौपदी ने प्रश्न उठाया	820	
	जैसे ही दुनिया निंदा करती है, पांडवों के पाप उतर जाते हैं	830, 847, 850, 856	

क्रं	कलमा का संक्षिप्त विवरण	संदर्भ पाठ 88 कलमा नं.	संदर्भ पाठ 124 कलमा नं.
7.	**जनोई का अपमान हुआ**		
	–ताकि हिंदू नीचे उतरें		
	कलयुग में ब्राह्मणों ने अशुद्ध गाय की आंत को निगल लिया और गाय की आंत को जनोई बना दिया।	872, 873	
	ब्राह्मण, क्षत्रिय की बेटी वहाँ दौड़ती है, वहाँ गोबर मिलता है	880	
	फोगाट कलियुग में गायों की पूजा करती हैं	882	
	अथर्वेदी नाम अली... हमारा	904	
	मुर्तजा अली	912	
	इमाम इल्ली अल्लाह	916	
8.	**हिंदू धर्म के 68 पवित्र तीर्थ स्थान और पिराना में गंगा नदी का निवास**		
	–हिन्दू आस्था और विश्वास पर हमला		
	68 तीर्थ लगी प्य	924	836
	गंगा और सर्व तीर्थ	925	837
	68 तीर्थ: कलयुग में नहीं रहेंगे	929	841
	68 तीर्थ: कपटपूर्ण कमाई से पूजा करने वालों का पाप हमारे सिर पर आये	937, 938	950
	नदियाँ: विकर्म करके हममें स्नान करो	940	
	इमामपुरी – जहाँ प्रसिद्ध ब्रह्माजी विराजमान हैं	946	858
	कलियुग के अंत में इंद्र का नाम इमामशा रखें	947	859
	सभी तीर्थयात्री वहाँ गये	953	861
	हिंदू मंदिरों और तीर्थस्थलों में भैरवों और भूतों का वास है		
9.	**– मूर्ति पूजा से पुण्य नहीं मिलता**		
	– लोगों का मन हिंदू मंदिरों और तीर्थों के प्रति जागृत होता है		
	सारे मंदिर खाली थे	954	866
	ब्राह्मण बुद्धि को भ्रष्ट होने से बचाते हैं – तीन वेदों और 68 तीर्थों की महिमा गाते हैं और थाल वेदों का पाठ करते हैं।	955	
	भैरव भूत 68 तीर्थों में निवास करते हैं	967, 977	883, 887
	भटकते हुए हिंदू–भैरव भूत की पूजा करो , सिर मुंडाकर आओ	973	
	कलयुग में पत्थर के देवता की पूजा की जाती है , वह सारी पूजा को भैरव भूत तक ले जाते हैं	974	
	कलियुग में यदि वैदिक रीति से पूजा की जाय तो भैरव भस्म हो जायेंगे	979	885
	पत्थर , मूर्ति , तीर्थ , चरित्र (चित्र) को भैरव भूत कहा जाता है	984	

56.3. <u>बुद्ध अवतार के पीछे का उद्देश्य:</u> सतपंथ के बुद्ध अवतार में हिंदू रीति–रिवाजों, परंपराओं, मान्यताओं, आस्था के केंद्रों, देवी–देवताओं के अवतारों का खंडन किया गया है। और यह सब कृष्ण अवतार (यानि बुद्ध अवतार) के मुख से हुआ है। यदि कोई अन्य व्यक्ति अपने देवताओं का अपमान करता है, तो कोई भी इसे बर्दाश्त नहीं करेगा, लेकिन यदि वह अपने ही भगवान के मुख से अपने ही धर्म को तुच्छ समझता है, यदि वह अपने ही अन्य देवताओं का अपमान करता है, तो लोग इसे आसानी से स्वीकार कर लेंगे।

ऐसी विधि का प्रयोग करके बुद्ध अवतार के माध्यम से हिंदुओं को अपनी आस्था, परंपरा को अपनी ही नजर में निचा गिराकर और अपने ही धर्म के प्रति हीन भावना पैदा की गई। बिंदु देखें (52)

56.4. इस प्रकार इस अवतार के माध्यम से सबसे पहले हिंदू अपने मूल धर्म यानी सनातन हिंदू धर्म से विमुख हुए। ताकि उनकी अपने धर्म पर मजबूत पकड़ ढीली हो जाए. यदि वह अपने हिंदू धर्म के प्रति उदासीनता दिखाएगा तो आगे चलकर उसे इस्लाम में परिवर्तित करना आसान होगा।

57. **<u>अली उर्फ निष्कलंकी अवतार:</u>** बुद्ध अवतार से प्रभावित होने के बाद हिंदू अपने धर्म के प्रति श्रद्धा खो देता है। परिणामस्वरूप यह हिंदू आटे की तरह नरम हो जाता है। एक बार नरम हो जाने पर, व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार किसी भी तरह से बरगलाया जा सकता है, ताकि निष्कलंकी नारायण अवतार उसके सामने आसानी से प्रस्तुत किया जा सके।





8 सतपंथ दशावतार - धर्मान्तरण का ग्रन्थ

सतपंथ के निष्कलंकी अवतार पर किसी भी चर्चा से पहले एक आवश्यक चेतावनी। इस निष्कलंकी अवतार का नाम हिंदू धर्म के कल्कि अवतार से मेल खाने के लिए रखा गया है। लेकिन असल में इसके अलावा दोनों में कोई समानता नहीं है.

हिंदू धर्म की उत्पत्ति का श्रीमद्भभागवत ग्रंथ और सतपंथ के निष्कलंकी अवतार में वर्णित कल्कि अवतार (गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित मूल 18 पुराणों के अनुसार) से कोई लेना-देना नहीं है। यह अवतार विशेष रूप से पीर सदरुद्दीन और इमामशाह द्वारा रचित सतपंथ दशावतार ग्रंथ में तैयार किया गया है। इसका उल्लेख किसी अन्य धर्मग्रन्थ में नहीं है। तो आप भ्रमित मत बनो।

कुछ सतपंथियों के मुख से यह सुनने को मिलेगा कि वे कल्कि के एक ही अवतार को मानते हैं, केवल नाम भिन्न है, निष्कलंक अवतार।

यह केवल हिंदुओं को धोखा देने के लिए है।

57.1. <u>संक्षेप में अली उर्फ निष्कलंकी या निष्कलंकी अवतार:</u> जैसा कि पहले कहा गया है, सतपंथ के निष्कलंक अवतार या निष्कलंक अवतार का हिंदू कल्कि अवतार से कोई लेना-देना नहीं है। तो सबसे पहले एक नजर डालते हैं कि इस निष्कलंकी अवतार में क्या है।

1) ब्रह्माजी ने पैगम्बर मुहम्मद का नाम धारण किया और धरती पर आये।
2) हरि (विष्णु) ने अरब देश में निष्कलंक नारायण के रूप में अवतार लिया।
3) कलियुग में गुरु ब्रह्मा ने पीर समस (शम्स) का अवतार लिया।
4) दैत्य कलिगो/कलिंग महान चीन में अवतरित हुए।
5) कलिंगा के लोग काशी विश्वनाथ: का जाप कराते हैं।
6) कलिंगा की पत्नी का नाम सुरजा रानी और पुत्र का नाम कमलाकुंवर था।
7) वहां पीर समस तोते का रूप धारण करता है और सुरजा रानी और कमलाकुंवर से मिलता है।
8) और सुरजा रानी से कहती है कि निष्कलंकी अवतार तुम्हारे पति कलिंग को मार डालेगा।
9) सतपंथ धर्म को समझाकर सुरजा रानी और कमलकुंवर सहित कुल 8 लोगों को सतपंथी बनाया।
10) और **एकांत में (गुप्त रूप से)** सतपंथ का पालन करने और पीर शाह का जाप करने को कहता है।

11) फिर पीर समस भविष्यवाणी करते हैं कि महादहन (महान युद्ध) होगा और कलियुग में आने वाले भयानक बुरे समय का विस्तार से वर्णन करते हैं।

12) उनमें से केवल सच्चा भक्त सतपंथी बच सकता है।

13) पीर शाह जाप की महिमा बताते हैं और पीर शाह के अलावा अन्य जाप दैत्यों को कलिंग जाने के लिए कहते हैं।

14) कलियुग में नबी मुहम्मद पैगम्बर इमाम शाह के रूप में गुरु बनकर पिराना में पधारे हैं। इसके अलावा दूसरों को गुरु न मानें

15) कलियुग में अथर्ववेद (कुरान) के अनुसार चलना। उसके अतिरिक्त अन्य धर्मग्रन्थों पर विश्वास न करें।

16) **कलियुग में 1 वर्ष 10 दिन का होगा और 5 वर्ष एक रात में बीत जायेंगे।**

17) कलिंग की विशाल सेना का वर्णन. करोड़ों पराक्रमी योद्धाओं का वर्णन।

18) निष्कलंक नारायण की सेना का वर्णन। दुलदुल घोड़ा, जुल्फिकार तलवार आदि का वर्णन।

19) उनकी सेना में 64 लाख जोगणियां, नबी मुहम्मद, अनंत करोडी देवता, 99 करोडी ऋषिवर, प्रह्लाद, हरिश्चंद्र, 5 पांडव, 999 निदिया, नवकुल नागा, गोरखनाथ, 7 समुद्र, हनुमान, 9 ग्रह, ब्रह्मा–विष्णु–महेश शामिल थे। लाखों–करोड़ों अन्य योद्धा आदि–आदि शामिल हो गये।

20) कुंवारिका क्षेत्र यानी पिराना में दोनों सेनाएं आमने–सामने होंगी।

21) तब इमामशाह के दिन सुनहरे होंगे।

22) सुरजा रानी और कमलाकुंवर निष्कलंकी नारायण के साथ मिल गईं।

23) उनके अनुसार, सुरजारानी हाथों में फूल लेकर कलिंग से मिलने जाएंगी। और फर चक्र बनकर कलिगा का गला काट देगा और उसे मार डालेगा।

24) तब कलिगा का सेनापति और अन्य दैत्य युद्ध करेंगे।

25) अंत में निष्कलंकी नारायण (यानी अली) लड़ाई जीतेंगे।

26) कलियुग में कमला कुँवर **12 करोड़ सतपंथियों को अमरापुरी /जन्नत ले जायेंगी ।** (कलमा नं. 557/553/647)

27) निष्कलंकी अवतार कुंवारी धरती से विवाह करेंगे।

28) उसके बाद सभी सतपंथी सवा लाख वर्ष तक पृथ्वी पर शासन करेंगे।

29) कलियुग में मंदिर जाना और मूर्ति पूजा वर्जित है।

30) ब्राह्मणों और हिंदू धर्म की मान्यताओं, परंपराओं आदि को निरस्त दिखाया गया है। और इस्लाम को श्रेष्ठ बताया गया है।

57.2. <u>**शास्त्रों का आधार:**</u> सतपंथ के निष्कलंक अवतार को समझने के लिए नीचे उन्हीं ग्रंथों का उल्लेख पुनः किया गया है जिनका उल्लेख पहले कृष्ण और बुद्ध अवतारों में किया गया था। आधार उन्हीं तीन ग्रंथों से लिया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ 88 21 : वर्ष 1926 – पिराना सतपंथ की पोल और सत्य का प्रकाश – नारायण रामजी लिम्बानी (पृष्ठ 329 से 359)

संदर्भ ग्रन्थ 139 21 : वर्ष 1978 – सतपन्थ प्रकाश अर्थात .. .. दस अवतार – सतपन्थी सैयद अहमद अली खाकी (पृष्ठ 463 से 533)

(**नोट:** यह पुस्तक और उपर्युक्त संदर्भ पुस्तक 88 (पिराना की पोल) लगभग समान हैं। केवल उपवाक्यों का क्रम एक से चार क्रमों के बीच है। इसलिए, **इसके उपवाक्यों का क्रम नीचे नहीं दिया गया है।**)

संदर्भ ग्रन्थ 124 21 : वर्ष 2009 – सतपंथ श्रीमद्भागवत दशावतार – नानकदासजी महाराज (पृष्ठ 474 से 548)

(**नोट:** इस पुस्तक में वर्णित कलमाओं और नीचे दी गई व्याख्या में कई अंतर हैं। कृपया ध्यान दें।)

इन तीन खंडों यानी पूरी किताब की ऑनलाइन सॉफ्टकॉपी का लिंक इस किताब के ग्रंथ सूची /संदर्भ सूची अध्याय में मिलेगा। वहां से आप यह पुस्तक निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

क्रं	अनुभाग	संदर्भ पाठ 88 कलमा नं.	संदर्भ पाठ 124 कलमा नं.
1.	पूर्व भूमिका	1 से 10	1 से 6
2.	सुरजा रानी और कमला कुँवर को सतपंथ का उपदेश	11 से 58	7 से 64
3.	सतपंथ शिक्षा पात्री (मूल पाठ में नहीं, बाद में जोड़ा गया)	नही है	65 से 163
4.	कलियुग का वर्णन	59 से 137	164 से 188
5.	मुखी का कार्य विवरण (मूल पाठ में नहीं, बाद में जोड़ा गया)	नही है	189 से 239
6.	इमामशाह की प्रशंसा एवं वर्णन।	138 से 153	240 से 247

21 ग्रंथ/पुस्तक का यू. आर. एल. और अधिक जानकारी के लिए ग्रंथ सूची/संदर्भ सूची अनुभाग।

क्रं	अनुभाग	संदर्भ पाठ 88 कलमा नं.	संदर्भ पाठ 124 कलमा नं.
7.	कलियुग की प्रस्तावना –कलियुग में 10 दिन का 1 वर्ष होगा और 1 रात में 60 महीने (5 वर्ष) बीत जाएंगे। –कलियुग का अंत निकट है।	154 से 240 213 214	248 से 327 320
8.	इस्माइली को युद्ध की धमकी देने के लिए चीन भेजा गया (ग्रंथ में हनुमान को 124)	241 से 268	328 से 361
9.	सुरजा रानी और कमला कुँवर ने कलिंग से युद्ध न करने का अनुरोध किया	269 से 289	362 से 386
10.	निष्कलंकी सेना का वर्णन	290 से 449	387 से 533
11.	इमामशाह की दरगाह सोने से बनी है और पाप–पुण्य तोल रही है	450 से 457	534 से 544
12.	कलिंग का युद्ध एवं जनरल द्वारा युद्ध	458 से 559	545 से 648
13.	पवित्र नारायण का कुंवारी पृथ्वी से विवाह और सतपंथियों का शासन	560 से 603	649 से 730
14.	मूर्ति पूजा न करना तथा मन्दिर आदि में न जाना हिन्दू परम्परा का निषेध है	604 से 793	731 से 739
15.	अथर्ववेद का अर्थ है कुरान	765 / 760	नही है
16.	निष्कलंक नारायण के गुरु, माता–पिता, पत्नी आदि	794 से 808	
			740 से 771

57.3. <u>असल कल्कि अवतार:</u> श्रीमद्भागवत ग्रंथ के स्कंद 12 में असल (गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित) 22 कलियुगों का वर्णन है। इस मूल पाठ में निष्कलंकी नारायण, पीर समस, सुरजा रानी, कमलाकुंवर, दैत्य कालिंगो आदि का कोई उल्लेख नहीं है। पीर सदरुद्दीन और इमामशाह द्वारा सतपंथ का एक निष्कलंकी अवतार तैयार किया गया है, जिसके नाम हिंदू धर्मग्रंथों के अनुरूप हैं।

22 श्रीमद्भागवत ग्रंथ का 12वां स्कंद : https://abkkpsamaj.org/go/fn22 (पेज 769 से आगे)

निष्कलंकी अवतार का असली नाम क्या है ?

नकलंकी अवतार को निष्कलंकी अवतार भी कहा जाता है। उनका असली नाम मुर्तज़ा अली तालिब है।

अली इस्लाम के संस्थापक पैगंबर मुहम्मद के चचेरे भाई और दामाद हैं। पैगंबर मुहम्मद की बेटी बीबी फातिमा की शादी अली से हुई थी।

अली अर्थात् निष्कलंक नारायण

57.4. निष्कलंकी अवतार के पीछे का उद्देश्य: जैसा कि ऊपर उल्लिखित बुद्ध अवतार में बिंदु (56.3) में दिखाया गया है, बुद्ध अवतार के माध्यम से हिंदुओं को उनके मूल धर्म यानी सनातन हिंदू धर्म से अलग कर दिया गया था। ताकि उनकी अपने धर्म पर मजबूत पकड़ ढीली हो जाए. अगला कदम ऐसे ढीले पड़ चुके हिंदुओं को इस्लाम में परिवर्तित करना था। जो निष्कलंक नारायण अवतार के माध्यम से किया गया था। बिंदु देखें (52).

इस अवतार के माध्यम से आपको इसका एहसास होगा ;

1. अली ने स्वयं को निष्कलंकी नारायण का नाम देकर हिंदुओं को संदेह से दूर रखा।
2. हिंदू धर्म के सभी देवी-देवता और पांडव जैसे ऐतिहासिक महापुरुष शक्तिशाली दैत्य कालिंगो के खिलाफ निष्कलंकी नारायण की सेना से लड़े थे। (अर्थात जो लोग हिंदू धर्म को मानते हैं, वे अली के पक्ष में हैं, ऐसा कहा गया)।
3. पैगंबर मुहम्मद सहित खास शिया इस्लाम के इमाम और अन्य महापुरुष भी कलियुग में निष्कलंकी नारायण के करीब हैं। (अर्थात् इस्लामी महापुरुषों को वर्तमान/कलियुग में मानना चाहिए)।
4. कालिंगो की पत्नी सुरजारानी और पुत्र कमलाकुंवर भी गुप्त रूप से निष्कलंकी नारायण के पक्ष में हैं। (दूसरे शब्दों में, जो सतपंथ का विरोध करता है वह गुप्त रूप से अपने घर में सतपंथ का अभ्यास कर सकता है।)
5. सुरजा रानी के हाथों अपने पति की मृत्यु। (यहाँ विरोधियों में डर पैदा किया गया कि सतपंथ नहीं मानेगा तो आपके परिवार में ऐसा ही होगा।)
6. सतपंथी कलियुग के अंत में अमरापुरी/जन्नत जाकर राज्य करेंगे। (सतपंथ को मानने का प्रलोभन)
7. हिन्दू मान्यताओं और देवताओं को ख़त्म कर दिया, इस्लामिक मान्यताओं और रीति-रिवाजों को कायम रखा। गुरु का अर्थ है नबी मुहम्मद और अथर्ववेद का अर्थ है कुरान। (अर्थात कलियुग के भगवान, अली, गुरु नबी मुहम्मद पैगंबर और शास्त्र का अर्थ कुरान है। यहां हिंदू धर्म को पूरी तरह से इस्लाम में परिवर्तित कर दिया गया था।)

57.5. निष्कलंकी नारायण अवतार के माध्यम से हिंदू धर्म को सौम्यता से इस्लाम में परिवर्तित किया गया है। और इसके पीछे के खेल को भोले–भाले लोग नहीं पहचान सकते।

चमत्कारों की आड़ में अंधविश्वास और कट्टरता का भरपूर प्रयोग किया जाता है।

58. **दशावतार – सतपंथ का केन्द्रीय ग्रन्थ:** यह दशावतार ग्रन्थ सतपन्थ मत का केन्द्रीय ग्रन्थ है। इस पुस्तक के सिद्धांतों के आधार पर सतपंथ संप्रदाय के नियमों और संविधानों का निर्माण किया गया है। इन नियमों और संविधानों का प्रचार करते हुए अन्य ग्रंथों का निर्माण किया गया है। जैसे, गोरवाणी का सतपंथ का गिनान 6 (अर्थात गुरुवाणी नं. 6 का ज्ञान) 88:पृ. 488 126:पृ. 285 । इस जिनान के चौथी कडी में लिखा है कि :

अथर्ववेद मां एम भांखिया, सब हिंदू होरी मुसलमान

इसी प्रकार नवरात्रि में गाए जाने वाले गरबा कोभी भ्रष्ट किया गया 88:पृ. 122 120:पृ. 43 । उनमें से एक कडी नीचे दिखाया गया है, जिससे आपको बहुत कुछ समझ आ जाएगा.

वही गई पूजा गउ तणीऐ हिंदूओ – पूजा अलीजी ने नाम

कलेक्टेनिया पुस्तक (157: पेज 55 से 85) में पेज 55 से 85 तक ऐसी 28 भ्रष्ट गरबियाँ अंग्रेजी में अनुवादित मिलेंगी।

इस प्रकार सतपंथ के अन्य ग्रन्थ मूलतः दशावतार ग्रन्थ में दिये गये सिद्धान्तों से बने हुए हैं। अत: दशावतार ग्रन्थ सतपंथ का केन्द्रीय ग्रन्थ है।

9

हिंदू देवता होते हुए भी इस्लाम को धर्म क्यों कहा जाता है?

59. **हिन्दू देवताओं के बावजूद इस्लाम को धर्म क्यों कहा जाता है?** कई लोगों के मन में यह सवाल उठ सकता है कि;

1) यद्यपि सतपंथ में इस्लामी तत्व हैं, इसमें राम, कृष्ण, ब्रह्मा, विष्णु, महादेव आदि जैसे हिंदू देवताओं का भी उल्लेख है। तो क्या हम पुख्ता तौर पर कह सकते हैं कि सतपंथ इस्लाम का हिस्सा है?

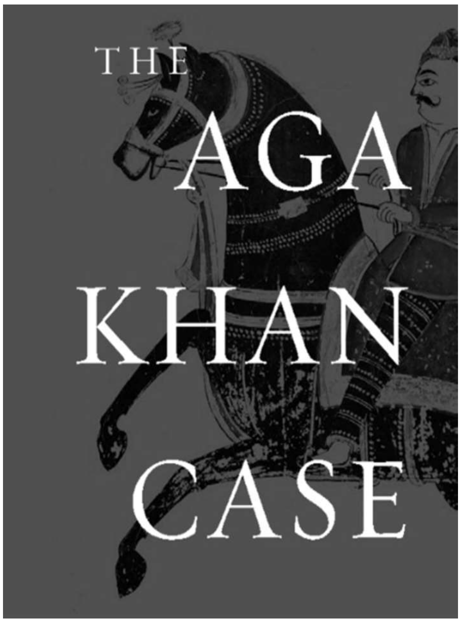
2) सतपंथ हिंदू धर्म का हिस्सा क्यों नहीं है?

3) इस्लाम अपने धर्म में किसी भी तरह का बदलाव स्वीकार नहीं करता। लेकिन सतपंथ में हिंदू देवताओं का खूब जिक्र मिलता है. इस्लाम इसे कभी स्वीकार नहीं करेगा तो फिर ऐसा क्यों हुआ?

4) आदि-आदि

सतपंथ में हिंदू तत्व भी हैं और मुस्लिम तत्व भी। अगर कोई यह उजागर कर दे कि सतपंथ एक मुस्लिम धर्म है, हिंदू तत्व उंगली उठाकर कहता है कि हम हिंदू हैं..., देखिए हम राम, कृष्ण, ब्रह्मा, विष्णु, महेश सबको एक साथ मानते हैं। आप हमें गलत तरीके से बदनाम कर रहे हैं, आप समाज को तोड़ रहे हैं. ऐसी बातों से कोई अजनबी आसानी से भ्रमित हो सकता है। तो ऐसे सवालों के जवाब जानना जरूरी है.

60. **आगा खान केस 1866:** इस तरह के प्रश्नों का उत्तर बम्बई उच्च न्यायालय ने वर्ष 1866 के एक अदालती मामले (88: पेज 116) के फैसले में बहुत अच्छी तरह से दिया है। इस अदालती मामले को खोजा केस या आगा खान केस जजमेंट 25 के नाम से भी जाना जाता है।



टीना पुरोहित द्वारा लिखित द आगा खान केस 141 नामक पुस्तक 2012 में हावर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा प्रकाशित की गई थी, जिसमें इस मामले के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई थी। (द आगा खान केस, टीना पुरोहित द्वारा, 2012, हार्वर्ड यूनिवर्सिटी) 141। इस पुस्तक के महत्वपूर्ण पृष्ठ सतपंथ छोड़ो पुस्तक में 27: पृष्ठ 280, 320, 457 से 491 भी संलग्न हैं।

9 हिंदू देवता होते हुए भी इस्लाम को धर्म क्यों कहा जाता है?

इस मामले के तथ्य यह हैं कि..

1) **सवाल:** बॉम्बे हाई कोर्ट के सामने सवाल था कि सतपंथ हिंदू धर्म है या मुस्लिम धर्म ?
2) **हिंदू पक्ष का दावा:** तथाकथित हिंदुओं का तर्क था कि सतपंथ में हिंदू देवताओं की पूजा की जाती है. अतः सतपंथ हिन्दू धर्म है।
3) **मुस्लिम पार्टी का दावा:** मुसलमानों का तर्क था कि सतपंथ इस्लामी तत्वों से भरपूर था. सतपंथ के संस्थापक सैयद पीर सदरुद्दीन और सैयद इमामशाह बावा हैं, जो मुसलमान हैं। इस्लाम की आयतें भी हैं, जिनमें अली की पूजा की गई है। अत: सतपंथ ही इस्लाम धर्म है।
4) **एक बात पर सहमत:** जब दोनों पक्षों की बात सुनी गई तो अंग्रेज जज / जज अर्नाल्ड को एहसास हुआ कि भले ही दोनों पक्षों में मतभेद है, लेकिन दोनों पक्ष एक बात पर सहमत हैं और वह है सतपंथ दशावतार ग्रंथ के बारे में।
5) **दशावतार का महत्व:** सतपंथ दशावतार एक ऐसा ग्रंथ है जो दोनों पक्षों द्वारा मान्य है। दोनों दल दशावतार को अपना प्रमुख धार्मिक ग्रंथ मानते हैं। किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसकी मुक्ति के लिए मृत्यु शय्या पर दशावतार ग्रंथ का पाठ किया जाता है।
6) **दशावतार ग्रंथ का अध्ययन:** इसके लिए न्यायाधीश ने दशावतार ग्रंथ को मुख्य आधार माना। सदुरुद्दीन और इमामशाह दोनों द्वारा लिखित दशावतार ग्रंथों का अध्ययन किया। इनमें एक विशेष इमामशाह द्वारा लिखित महान दशावतार ग्रंथ का विशेष अध्ययन किया गया, जिसमें हिंदू देवताओं के अवतारों का विस्तार से वर्णन किया गया है।
7) **न्यायालय का निष्कर्ष:** दशावतार ग्रंथ का अध्ययन कर न्यायाधीश इस निर्णय पर पहुंचता है कि..

A) दशावतार ग्रंथ में कुल 10 में से, पहले 9 अवतार हिंदू भगवान विष्णु के हैं, उसके बाद 10वां अवतार मुर्तज़ा अली तालिब का है, जिन्हें नकलंकी या निष्कलंकी नारायण कहा जाता है।

B) हालाँकि दशावतार ग्रंथ में पहले 9 अवतार हिंदुओं के हैं, लेकिन उन सभी अवतारों का उपयोग केवल हिंदुओं को इस्लाम की ओर आकर्षित करने के लिए किया गया है। वे सभी अवतार रद्द कर दिये गये हैं। उन्हें केवल प्रणाम करना है, पूजा नहीं।

C) अंतिम और मूल अवतार यानी 10वां अवतार शिया मुसलमान अली का है। जिसकी पूजा की जानी है. यह अवतार कलियुग यानि वर्तमान समय में है।

D) जैसा कि 10वें अवतार में लिखा गया है, पिछले 9 अवतारों और हिंदू धर्म के वेदों और ग्रंथों, ब्राह्मणों, 68 तीर्थ स्थानों, गंगा नदी, गाय और अन्य धार्मिक मान्यताओं, रीति-रिवाजों, परंपराओं आदि पर विचार किया गया है। कलियुग में इसे रद्द किया गया है इसलिए इसका कोई विशेष महत्व नहीं है.

E) 10वें अवतार में शिया इस्लाम के प्रमुख देवता अली तालिब को ही माना और पूजा जाता है।

F) अली को हिंदू नाम, नकलंकी नारायण सिर्फ इसलिए दिया गया है ताकि अली नाम से कतराने वाले हिंदुओं का मन आसानी से अली को स्वीकार कर सके, अन्य हिंदुओं की आलोचना से बच सके।

G) सतपंथ, हिंदू धर्म नहीं। बॉम्बे हाई कोर्ट ने अपने फैसले में कहा, सतपंथ शिया इस्लाम का हिस्सा है।

आगा खान और खोजा

जिस प्रकार इमामशाह ने सतपंथ धर्म के माध्यम से पाटीदारों को मोमना/मुमना मुसलमान बनाया.. उसी प्रकार इमामशाह के दादा पीर सदरुद्दीन ने उसी सतपंथ धर्म के माध्यम से लोहानाओं को खोजा मुसलमान बनाया।

इन खोजा मुसलमानों के धार्मिक गुरु को आगा खान कहा जाता है।

61. **<u>मामले के 2 (दो) मुख्य बिंदु:</u>** इस निर्णय पर आते समय न्यायाधीश को निम्नलिखित 2 मुख्य बिंदुओं से निपटना पड़ा। टीना पुरोहित की पुस्तक आगा खान केस में इन मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई है, लेकिन इन मुद्दों का एक संक्षिप्त सारांश एक अच्छे लेख खोजा केस ऑफ 1866 – ए पैराफ्रेज़ 52: पेज 5 और 6 में भी मिलता है । वे मुद्दे इस प्रकार हैं.

61.1. <u>ताकिया:</u> ताकिया एक इस्लामी रणनीति/चाल है। ताकिया का पालन करने वाले व्यक्ति को अपना धर्म छिपाने और यहां तक कि इस्लाम के अलावा कोई अन्य धर्म अपनाने का दिखावा करने की अनुमति है।

इस्लाम का प्रसार और बचाव करते समय, ताकिया का अभ्यास करने वाले व्यक्ति को इस्लाम में निषिद्ध सभी चीजों/कार्यों को करने की अनुमति मिलती है। ऐसा करते समय तकियाह व्यक्ति के मन में आने वाले सभी गलत विचारों और गंदे कामों को करने की इजाजत भी देता है।

धर्म के नाम पर ऐसे काम करने की इजाजत दी जाती है जो धर्म से प्रेम करने वाले और नैतिकता में विश्वास रखने वाले सामान्य लोगों की बुद्धि और कल्पना से परे हैं, जैसे अपहरण, हत्या, झूठ बोलना, विश्वासघात करना, धोखा देना, बलात्कार करना, झूठा विश्वास दिलाना, झूठी बातें करना। , झूठ बोलना आदि यह बात आम आदमी की समझ से परे है क्योंकि असल में धर्म लोगों को ऐसी चीजों से दूर रखने का काम करता है। फिर धर्म वो सब करने की इजाज़त नहीं देता. तो एक आम आदमी इसकी कल्पना भी नहीं कर सकता. लोग सोचते हैं कि धर्म और ईश्वर के नाम पर कोई व्यक्ति इस हद तक गलत काम कर सके, यह संभव नहीं है। लेकिन तकिया ये सब इजाजत देता है. ताकिया के बारे में अधिक जानकारी के लिए सतपंथ पुस्तक देखें 27: पृष्ठ 222 से 225, 321 से 341, 354 से 359।

मामले में अदालत के न्यायाधीश ने कहा कि सतपंथवाद में हिंदू अवतारों को शामिल करने के लिए इस तकिया का व्यापक रूप से उपयोग किया गया है। सतपंथ में इस्लाम के प्रसार के लिए, हिंदुओं को सतपंथ की ओर आकर्षित करने के लिए इसके ग्रंथों में हिंदू देवताओं का इस्तेमाल किया गया है। अली तालिब सतपंथ के प्रमुख देवता हैं। इसलिए, इस्लाम का केंद्र होने के कारण, यह अंततः सतपंथ के हिंदू अनुयायियों को इस्लाम की ओर ले जाता है।

61.2. धर्मांतरण फार्मूला: दूसरा मुद्दा जिसका हाई कोर्ट को सामना करना पड़ा वह था धर्मांतरण फार्मूला। जैसा कि पिछले बिंदु (34) में कहा गया है, इस्लाम के प्रचारकों ने आस्था, धार्मिक विश्वास, सिद्धांत आदि को आधार बनाकर सतपंथ धर्म का प्रचार किया।

उदाहरणार्थ, जब इस्लाम के प्रचारक किसी हिन्दू का धर्म परिवर्तन कराना चाहते हों ;

A) हिंदू साधु बनकर,

B) हिंदू धर्म का प्रचार (इस्लाम नहीं)।

C) हिंदुओं की जडता के बारे में विस्तार से बात करना और मुसलमानों को अज्ञानी दिखाना। (विश्वास जीतने के लिए)

D) ऐसा करते समय हिंदू धर्म के केंद्रीय सिद्धांतों का आधार लें। जहां हिंदू धर्म के सिद्धांत इस्लाम के अनुकूल हों, वहां उन सिद्धांतों की व्याख्या बदल दी जाती है और फिर ऐसे बदले हुए अर्थों का उपयोग करके उस धर्म को इस्लाम के अनुकूल दिखाया जाता है।
(सभी धर्म एक हैं, संदेश देते हुए लोगों के मन को इस्लाम स्वीकार करने के लिए तैयार करना है।)

E) और परोक्ष रूप से, धीरे–धीरे यह संदेश देना कि धर्म का असली सार कुछ अलग है। (हिंदू धर्म से नाता तोड़ने की तैयारी)

F) आगे यह कहा जा सकता है कि ब्राह्मण हिंदू धर्म के वास्तविक सार को समझने में गलती कर रहे हैं। यदि धर्म का सही अर्थ समझना है तो सतपंथ धर्म को अपनाना होगा।
(हिन्दू धर्म से विमुख होना।)

सतपंथ छोडो 27:पृष्ठ 278 से 280 एक ऐसी पुस्तक है जो इस विषय पर देश–विदेश के शोधार्थियों एवं बुद्धिजीवियों के कार्यों/लेखों के सन्दर्भ में प्रमाण सहित सुव्यवस्थित ढंग से जानकारी उपलब्ध कराती है।

61.3. **<u>धर्मान्तरण का सेतु:</u>** सतपंथ धर्म के प्रचारकों के धर्मान्तरण सूत्र/सूत्र को निम्नलिखित चित्र/चार्ट की सहायता से आसानी से समझा जा सकता है। हिंदुओं को एक किनारे से दूसरे किनारे इस्लाम तक लाने का एक तरीका है जिसे इस्लाम कहा जाता है ऐसे एक तरफी पुल बनाये गए। पुल तकिया की बुनियाद पर बना है। जिसके लिए हिंदू देवताओं के अवतारों का उपयोग इस प्रकार किया गया है।

A) कृष्ण अवतार के माध्यम से हिंदुओं को उस पुल तक लाया जाता है।

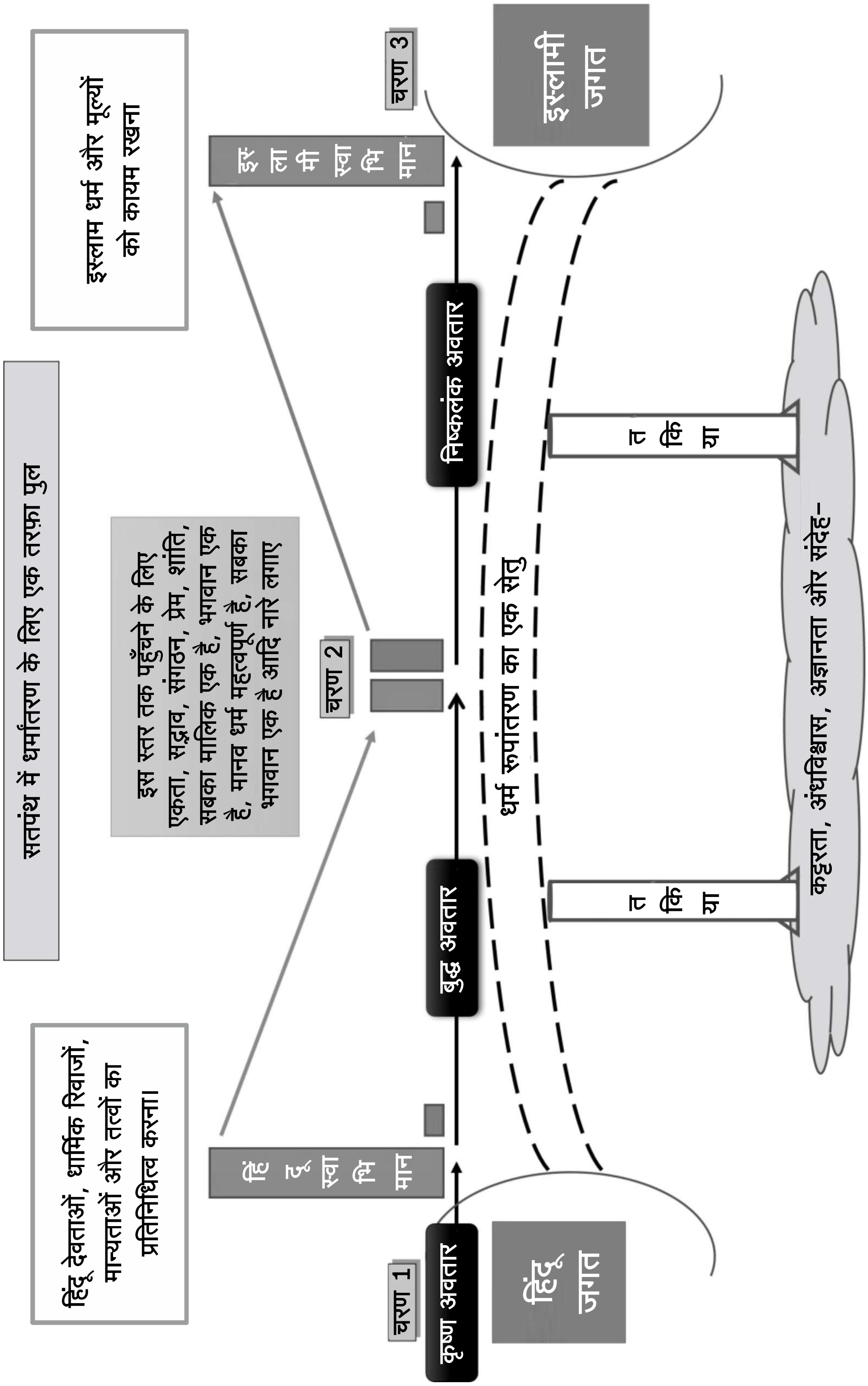
B) फिर बुद्ध के अवतार के माध्यम से हिंदू धर्म के प्रति सम्मान की कमी पैदा होती है। प्रेम–एकता–मिलन–संगठन, ईश्वर एक है, केवल रूप अलग–अलग है आदि बातें करने से लोगों के मन में हिंदू धर्म के प्रति दृढ़ता कमजोर हो जाती है और वह मनुष्य धीरे–धीरे पुल पर आगे बढ़ जाता है।

C) और अंत में, निकलंकी/निष्कलंकी अवतार के माध्यम से, आदमी का हृदय परिवर्तन किया जाता है और उसे मुसलमान बनाया जाता है।

62. **सारांश:** ऊपर उल्लिखित 1866 के बॉम्बे हाई कोर्ट के आगा खान मामले से, हम समझ सकते हैं कि यद्यपि सतपंथ में हिंदू देवताओं का उल्लेख किया गया है, लेकिन यह केवल हिंदुओं को इस्लाम की ओर आकर्षित करने और उनके धर्मांतरण को सुविधाजनक बनाने के लिए है। हिंदू देवताओं का उपयोग के माध्यम से इस्लाम का प्रचार करने के लिए किया गया है। सतपंथ के मूल देवता अली तालिब हैं, इसलिए सतपंथ इस्लाम है।

23 एक तरफा रासता : एक तरफ का रासता

9 हिंदू देवता होते हुए भी इस्लाम को धर्म क्यों कहा जाता है?



9 हिंदू देवता होते हुए भी इस्लाम को धर्म क्यों कहा जाता है?

63. **<u>अधिक स्पष्टीकरण के लिए सतपंथ छोड़ो ग्रंथ देखें:</u>** उपर्युक्त बिंदुओं और इसी तरह के कई मुद्दों पर स्पष्टीकरण माँ उमा का आदेश सतपंथ छोड़ो संक्षेप में सतपंथ छोड़ो पुस्तक में मिलेगा । इसमें अनेक प्रमाण हैं, जो सिद्ध करते हैं कि सतपंथ ही इस्लाम है। ऐसे प्रमाण के लिए सतपंथ छोडो से बढ़कर कोई अन्य पुस्तक कहीं नहीं मिलेगी। अधिक जानकारी के लिए कृपया इसका अध्ययन करें। आपको इस पुस्तक का लिंक इस पुस्तक की ग्रंथ सूची /संदर्भ सूची अध्याय में भी मिलेगा ।

64. सतपंथ छोड़ें पुस्तक में दी गई जानकारी की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है।

क्र.	विषय	पृष्ठ क्र.
6.1.	सतपंथ धर्म पर पीपीटी प्रस्तुति सहित..	
	1) सतपंथ का इतिहास, सतपंथ की उत्पत्ति, धर्म परिवर्तन की विधि, धर्म के सिद्धांत	273 से 292
	2) सतपंथ दशावतार, सतपंथ साहित्य, गिनान साहित्य, दुआ और कलमा और सारांश	293 से 320
	3) तकिया	321 से 341
	4) इमामशाह की भूमिका, सतपंथ में पैर, गादीपति काका की भूमिका, इमामशाह की पीढ़ी	342 से 353
	5) नव निर्मित संदर्भ और सारांश	354 से 361
6.2.	दस्तावेजी साक्ष्य, जिनमें प्रमुख हैं;	
	1) पिराना का संविधान	391 से 414
	2) सरकारी गजेटियर, जनगणना, आदि	415 से 456
	3) अदालती दस्तावेज़ – आगा खान केस 1866, देवचंद तोताराम केस, पादरा कोर्ट केस	457 से 510
	4) हिंदू और इस्लामी दस्तावेज़, जिनमें शामिल हैं; शंकराचार्य के पत्र, साधु समाज के पत्र, औरंगजेब के पत्र, सतपंथ दशावतार, पूजा विधि, पंचम वेद, यज्ञ विधि, इमामशाह की जीवनी, आदि।	511 से 706
	5) विश्वकोश एवं शब्दकोश	707 से 732
	6) सामाजिक दस्तावेज – के. पा. समाज, उंझा, कच्छ, मराठी सतपंथ समाज, पिरानानी पॉल, आदि	733 से 848
	7) देश–विदेश के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों की रिसर्च थीसिस/यूनिवर्सिटी रिसर्च थीसिस	849 से 978
	8) प्रसिद्ध शोधकर्ताओं की पुस्तकें।	979 से 1195

10 पहली समस्या का समाधान- दशावतार

65. <u>धर्मान्तरण की पहली समस्या का समाधान:</u> बिंदु (15) में वर्णित 2 समस्याओं में से पहली समस्या इस्लाम के विरुद्ध समस्याएँ जिसका उल्लेख बिंदु (15.1) में है हिंदू धर्म के मूल्य और आदर्श बहुत ऊंचे थे ऊपर वर्णित समस्या का समाधान सतपंथ दशावतार पाठ के माध्यम से निकाला गया 27: पृष्ठ 285 से 287, 293 से 302 । जिसके बारे में हमने पिछले पॉइंट (48) में देखा था।



मैं आपको याद दिला दूं कि पहली समस्या क्या थी .. हिंदू धर्म के मूल्य और आदर्श इतने ऊंचे हैं कि इस्लाम उनकी बराबरी नहीं कर सकता।

65.1. <u>क.क. पाटीदार जाति पर प्रभाव:</u> ऊपर दिखाए गए सतपंथ के दशावतार ग्रंथ ज्ञान से आप समझ जाएंगे कि दशावतार ग्रंथ हिंदू देवताओं को गाली देने के लिए तैयार किया गया था, जबकि क.क. पाटीदार जाति के तत्कालीन भोले-भाले बुजुर्गों के सामने रखा गया तो अज्ञानता, अंधविश्वास, चमत्कार, कट्टरता और संदेह से परे बेचारे बुजुर्ग इस साजिश का शिकार हो गए।

बुजुर्गों को बताया गया कि यह पुस्तक असली दशावतार पुस्तक है। देखिये, हम नहीं कहते, भगवान ने स्वयं कहा है। और ब्राह्मण वेद आदि जो ग्रन्थ पढ़ते हैं, वे सब कलियुग में भगवान् ने त्याज्य बता दिये हैं। देखो, कलियुग में ब्राह्मणों के पास बुद्धि नहीं रही, उन्होंने अपना ब्राह्मणत्व खो दिया है, इसलिए वे भूखे पेट वेदों के पन्ने पलटते हैं। असल ब्राह्मण हरिवंशीय ब्राह्मण यानी सैयद (अली के वंशज) हैं। ऐसा कि भगवान ने दशावतार में बताया है।

कलियुग का सच्चा सनातन धर्म सतपंथ है। बाकी सब धर्म रद्द हो गये। कलियुग के अंत में सतपंथी ही पृथ्वी पर राज करेंगे, उन्हें ही अमरापुरी 24 /जन्नत आदि प्राप्त होगी। ऐसे कारणों से क.क. पाटीदार उस समय जाति के बुजुर्गों ने सतपंथ धर्म को हिंदू धर्म समझ लिया और उसमें शामिल हो गये।

11

दूसरी समस्या का समाधान धर्म को गुप्त रखना

66. **<u>धर्मान्तरण की दूसरी समस्या का समाधान:</u>** उपरोक्त बिन्दु (15) में वर्णित दो समस्याओं में से दूसरी इस्लाम के विरुद्ध समस्याएँ, जैसा कि बिन्दु (15.2) में बताया गया है, हिन्दुओं की रक्षा करने वाली सख्त सामाजिक व्यवस्था का कवच:, समस्या को हल करने के लिए जो युक्ति अपनाई गई वह यह कि गुप्त रूप से सतपंथ का आचरण करने को कहा जाए 88:पृष्ठ 133।



आपने देखा होगा कि दशावतार सहित सतपंथ ग्रंथ अक्सर गुप्त रूप से सतपंथ का पालन करने के लिए कहते हैं।

यहां तक कि सुरजारानी और कमलाकुंवर ने भी अपने निष्कलंकी अवतारों में गुप्त रूप से सतपंथ का पालन किया। **इसीलिए सतपंथ को गुप्त पंथ भी कहा जाता है।** 88: पृष्ट 5, 6, 130 से 133, 359

हिंदू मान्यता के अनुसार कलियुग लगभग 4,32,000 वर्षों तक रहेगा। कलियुग की गणना भगवान कृष्ण की मृत्यु से होती है। तो आज तक, हिंदू धर्म के अनुसार, कलियुग केवल 5 हजार वर्षों से थोड़ा अधिक (5124 वर्ष, दिनांक 11– मई –2023 तक) हुआ है। ऐसे में लोगों के मन में यह सोचना स्वाभाविक है कि कलियुग के खत्म होने में अभी लाखों साल बाकी हैं, कलियुग का अंत कब होगा और कब कलिंग से युद्ध करना है और कब निष्कलंक पृथ्वी से विवाह करना है। तब तक कौन जानता है कि क्या होगा. ऐसी निराशावादी बातों का प्रतिकार करने के लिए ऐसा प्रतीत होता है कि शतपंथ ग्रंथों में लिखा है कि कलियुग का अंत बहुत निकट है। 10 दिन का एक साल होगा और 1 रात में 5 साल गुजर जायेंगे. ऊपर बिंदु (57.2) में उप बिंदु (7) देखें। तो अब कलियुग ख़त्म होने में बहुत कम समय बचा है. किसी भी क्षण निष्कलंक नारायण प्रकट होंगे और सच्चे सतपंथियों को अमरापुरी[24] जाने का मौका मिलेगा। उन्होंने यह भी उपदेश दिया कि उन्हें सवा लाख वर्ष तक पृथ्वी पर शासन करने को मिलेगा।

24 अमरपुरी = भिश्त = इमामशाह द्वारा लिखित ङ्ङ्जन्नतपुरीङ्ङ् नामक जिनान में अमरपुरी को ङ्ङ्स्वर्गङ्ङ् बताया गया है, जिसमें 50 हूरें आदि शामिल हैं। सतपंथ की मान्यता के अनुसार, केवल एक सच्चा सतपंथी जो पूरी ईमानदारी से दशौंदा देगा, वह अमरपुरी जा सकेगा और कलियुग के अंत में सवा लाख वर्षों तक पृथ्वी पर शासन कर सकेगा। ऐसी मान्यता सतपंथ में है।

11 दूसरी समस्या का समाधान - धर्म को गुप्त रखना

दूसरी बात यह है कि सतपंथ मत के अनुसार कलियुग में केवल 12 करोड़, बिंदु देखें (57.1.26), सतपंथ छोडो देखें 27: पृ 290 164, लोग अमरापुरी में जाएंगे। सतपंथ को गुपचुप तरीके से कई लोग पहले ही अमरापुरी पहुंच चुके हैं। अमरापुरी में स्थान सीमित हैं। तो सामान्य मनुष्य स्वाभाविक रूप से सोचता है कि जब कलियुग कुछ ही समय में समाप्त होने वाला है और बहुत से लोग गुप्त रूप से सतपंथ का पालन करते हुए अमरापुरी तक पहुंच गए हैं, तो मैं भी चुपचाप सतपंथ का पालन करूंगा तो मुझे भी लाभ होगा। इन सब बातों के कारण सतपंथ धर्म गुप्त रूप से प्रचलित हो गया।

गुप्त रूप से सतपंथ का पालन करने का परिणाम।

अब सोचिए कि यदि आपके परिवार का कोई सदस्य गुप्त रूप से परधर्म/विधर्म का पालन करता है, और आपको ज्ञात भी न हो तो आप इसे कैसे रोक सकते हैं ? इसे रोक नहीं सकते. कच्छ कड़वा पाटीदार जाति के बुजुर्गों ने भी ऐसा ही किया.

इस सिद्धांत का उपयोग करके, एक ऐसी प्रणाली स्थापित की गई ताकि हिंदू सामाजिक व्यवस्था के भीतर इस्लाम का पालन आराम से किया जा सके। और बाकी हिंदुओं को पता न होने के कारण वे कुछ नहीं कर सके. इस प्रकार सतपंथ के प्रचारक हिंदू समाज के सुरक्षा कवच को भेदने में सफल रहे।

प्रहर 3

1500 से 1805

305 वर्ष

धर्म की हानि होने पर दुर्गति होती है

सतपंथ के शासन से विचारधाराओं का विनाश..

जो जाति गुप्त रूप से इस्लाम का पालन करती थी, वह अब सार्वजनिक रूप से मुसलमान बनने की कगार पर पहुँच गयी।

12

कच्छ में प्रवास
जाति के पतन का प्रारंभ



67. **<u>गहरी साजिश के शिकार – सतपंथ का पालन</u>:** सतपंथ दशावतार ग्रंथ के माध्यम से सतपंथ प्रचारकों के खिलाफ धर्मांतरण में पहली समस्या (बिंदु 65.1) का समाधान । तब गुजरात में रहने वाले कच्छ कड़वा पाटीदार जाति के पूर्वजों का उनकी कट्टरता के कारण पूरी तरह से दिमाग खराब हो गया था, उन्होंने इस नकली दशावतार ग्रंथ पर अंधविश्वास कर लिया। परिणामस्वरूप, ब्रेनवास किए गए पूर्वजों ने (गलत तरीके से) विश्वास करना शुरू कर दिया कि पिराना सतपंथ धर्म ही कलियुग का सच्चा हिंदू धर्म था।

यह सतपंथ अपनी गुप्त प्रथा के कारण मुस्लिम धर्म होते हुए भी हिन्दू समाज में पनप सका (बिंदु 66)। जो सतपंथ के प्रचारकों की एक और समस्या का समाधान था।

सतपंथ का एक ग्रन्थ मूलबन्ध आज भी गुप्त रखा गया है। पिराना सतपंथ की मूल संस्था इसे प्रकाशित नहीं करती है। परन्तु उनके पुराने ग्रन्थों में जो परिवर्तन (सही–गलत) किये गये हैं वे मूल ग्रन्थों पर आधारित हैं। तो फिर मूलबन्ध ग्रन्थ का प्रकाशन क्यों नहीं ? सोशल मीडिया में पाया गया संदर्भ संख्या है – (103) (159) (101)।

12 कच्छ में प्रवास - जाति के पतन का प्रारंभ

चाहे क.क. पाटीदार जाति के पूर्वज पिराना सतपंथ का पालन करते थे, जो इस्लाम है, लेकिन दिल से वे हिंदू ही रहे। 88: पेज 547

क्योंकि, उनका ब्रेनवॉश कर दिया गया था कि सतपंथ ही कलियुग का सच्चा सनातन हिंदू धर्म है। सतपंथ दशावतार ग्रंथ के अनुसार, अन्य हिंदू समाज और ब्राह्मण जो हमेशा से हिंदू धर्म का पालन करते आ रहे हैं, उन्हें कलियुग में भगवान विष्णु/नारायण द्वारा रद्द/समाप्त घोषित कर दिया गया है। अतः उसने (गलत तरीके से) यह मान लिया कि वह सच्चे सनातन धर्म का पालन कर रहा है।

हम तो सच्चे सनातनी है बाकी तो निराकृत सनातनी है ऐसी झुठी बातों के आधार भ्रमित होकर

68. **निराशा का सिलसिला:** वैचारिक विध्वंस अर्थात निराशा की प्रक्रिया का प्रथम चरण प्रारंभ हुआ। आइये अब इसके बारे में और अधिक जानते हैं।

69. **धर्म के विनाश की अवस्था:** अब, उस मुद्दे पर आते हैं जो शुरुआत में उठाया गया था । इस स्तर पर सतपंथ के प्रचारकों को सफलता मिली। विचारधारा के विनाश की चार अवस्थाओं में से सबसे महत्वपूर्ण पहली अवस्था, जो बहुत लंबी और कठिन होती है, धर्म के विनाश की अवस्था है। उसे समझते हैं।

70. **धर्म का नाश:** जैसा कि ऊपर बताया गया है, दशावतार के माध्यम से क.क. पाटीदार सनातन हिंदू धर्म को जाति से छीनकर उन्हें इस्लामिक सतपंथ धर्म का पालन करने के लिए बाध्य किया गया। दूसरे शब्दों में, सतपंथ के प्रचारक मूल सनातन हिंदू धर्म को नष्ट करने के अपने प्रयासों में सफल रहे। धर्म नाश के प्रभाव की अधिक जानकारी के लिए बिन्दु देखें (20.1)

वैचारिक विनाश	विनाश विवरण	विनाश स्थिति
1.1. धर्म	20.1	(70)

12 कच्छ में प्रवास - जाति के पतन का प्रारंभ

71. क्या कणबीयों को मुसलमान बनने से रोकने के लिए सैयद इमामशाह ने सतपंथी बनाई थी?

क्या कणबीयों के मुसलमान बनने का डर था?

1) अगर इमामशाह कणबीयों को मुसलमान बनने से बचाना चाहते तो उनका ग्रंथ पीर सदरुद्दीन का नहीं होता.. जिसे पढ़कर आज हिंदू लोहाना जाति मुसलमान बन गई।
2) दूसरी बात कच्छ में हिंदू राजा के पास कणबी भेजने के बाद इमामशाह कह सकते थे कि अब तुम्हें कच्छ में कोई डर नहीं है, इसलिए पूरी तरह से हिंदू रहो... सभी इस्लामी धर्मग्रंथ बंद करो और हिंदू मंदिर आदि बनवाओ.. लेकिन ऐसा नहीं कर रहे थे. जमातखाने थे खड़ा किया गया।
3) यदि कणबीयों के मुसलमान बन जाने का डर सच था , तो गुजरात क्षेत्र में रहने वाले उनके अन्य भाई मुसलमान क्यों नहीं बने ? वे आज भी हिंदू बनकर रहते हैं.
4) कणबी किसी एक क्षेत्र से कच्छ नहीं आये थे. वे कई क्षेत्रों से आए थे. अतः यह कहना सही नहीं है कि मुस्लिम राजा का शासन अत्याचारी था। क्योंकि जिस मूल क्षेत्र से वे सभी आए थे, उसी क्षेत्र के लोग आज भी हिंदू हैं और बहुत आगे बढ़ चुके हैं।
5) तो यह कि इमामशाह ने कणबीयों को मुसलमान बनने से रोकने के लिए सतपंथ धर्म दिया, यह पूरी तरह से झूठ और मनगढ़ंत बात है।

72. कच्छ के राजा मुहम्मद बेगड़ा, इमामशाह और औरंगजेब के बीच क्या संबंध है?

1) कच्छ को एक सूत्र में बांधकर एक राज्य स्थापित करने वाले राव खेंगारजी प्रथम के पिता राव हमीरजी ने राजनीतिक संबंधों को बनाए रखने के लिए अपनी बेटी का विवाह मुहम्मद बेगड़ा से किया था। 155 110 129 ।

2) मुहम्मद बेगड़ा [25] ने अपनी बेटी की शादी इमाम शाह के बेटे नूर मुहम्मद शाह से की थी 122:पेज 60 ।

3) मुहम्मद बेगड़ा ने पिराना को पहले जमीन दी थी 158:पृ 215 ।

4) औरंगजेब ने पिराना को 45 एकड़ जमीन और धन दिया।

ऊपर वर्णित बातों से यह भी समझ में आता है कि इमामशाह को मानने वालों को मुस्लिम राजाओं से कोई समस्या नहीं थी। इसके उलट उनसे समर्थन मिला.

25 मुहम्मद बेगडा – https://abkkpsamaj.org/go/fn25

12 कच्छ में प्रवास - जाति के पतन का प्रारंभ

73. विचारधारा के विनाश का लक्ष्य (पूर्व चरण में): कच्छ कड़वा पाटीदार जाति के तत्कालीन पूर्वजों का धर्म परिवर्तन कर दिया गया था। सनातन ने हिंदू धर्म छोड़कर पिराना सतपंथ धर्म अपना लिया। नीचे दी गई तालिका से यह प्रक्रिया स्पष्ट रूप से समझ में आ जाएगी।

परिवर्तनों/ ट्रैकिंग तालिका का निरीक्षण करें		
वैचारिक तोड़फोड़	**विनाश विवरण**	**विनाश स्थिति**
1. मनोबल गिराने वाले क्षेत्र	19	प्रगतिमे
1.1. धर्म		✓(70)
1.2. शिक्षा	20.2	बाकी
1.3. सामाजिक जीवन	20.3	बाकी
1.4. शक्ति संरचना	20.4	बाकी
1.5. कानून एवं व्यवस्था	20.5	बाकी
1.6. नेतृत्व	20.6	बाकी
2. अस्थिरता	21	बाकी
2.1. वित्त	21.1	बाकी
2.2. कानून एवं व्यवस्था	21.2	बाकी
2.3. मीडिया	21.3	बाकी
3. संकट	23	बाकी
3.1. तथाकथित उद्धारकर्ता अंदरूनी सूत्र एक बाहरी व्यक्ति	23.3	बाकी
4. स्थिति का सामान्यीकरणय	24	बाकी
4.1. एक नये समाज की स्थापना – 2 चरणों में		बाकी

इस पुस्तक में आगे हम देखेंगे कि समय के साथ धर्म के अलग हो जाने से जाति की कितनी दुर्दशा हो गई।

12 कच्छ में प्रवास - जाति के पतन का प्रारंभ

- धर्म और समाज एक ही सिक्के के दो पहलू हैं. धर्म छूट गया तो समाज टूट जायेगा।
- जिस समाज में धर्म नहीं होता उसका पतन निश्चित है ।
- इसे ऐसे समझा जा सकता है कि जो लोग कहते हैं कि समाज में किसी को भी किसी भी धर्म का पालन करने की इजाजत है वे आपकी विचारधारा को नष्ट करने की कोशिश कर रहे हैं।

- अपने उज्ज्वल भविष्य के लिए सनातन धर्म को किसी भी कीमत पर न छोड़ें।
- साथ ही सनातन धर्म को भ्रष्ट न होने दें और यदि किसी ने धर्म भ्रष्ट कर दिया हो तो ऐसे धर्म को न अपनाएं।

74. **परिणामस्वरूप – जाति को गुजरात क्षेत्र से बाहर निकाल दिया गया:** इमामशाह के सतपंथ नामक माया जाल में फंस गया। क. क. पाटीदार उस समय (आज से लगभग 550 वर्ष पूर्व) इस जाति के पूर्वज गुजरात क्षेत्र अर्थात् उंझा–मेहसाणा, अहमदाबाद, विरमगाम, आनंद–चारोतर आदि में रहते थे।

कलियुग का सच्चा हिंदू धर्म सतपंथ है। लालच भरी बातों से ब्रेनवॉश किया गया कि मरने के बाद सतपंती को अमरापुरी (एक विशेष स्वर्ग, जिसमें 50 हूरें आदि होंगी) मिलेगी और कलियुग के अंत में लाखों वर्षों तक शासन करेगी। क. क. पाटीदार इस जाति के पूर्वज सतपंथ का पालन करने लगे।

क्योंकि उन्हें अटूट विश्वास था कि वे सच्चे सनातन धर्म का पालन कर रहे हैं। कडवा पाटीदार जाति यह मानने लगी कि उनके अन्य भाई (जो सतपंथ धर्म का पालन नहीं करते थे) और साथ ही अन्य जाति के हिंदू भी मिथ्या (नष्ट/समाप्त) सनातन धर्म का पालन कर रहे हैं। वह स्वयं धर्म के सही मार्ग पर थे, ऐसी सोच में रहते थे।

प्रारंभ में, सतपंथवाद के अनुयायियों की संख्या कम थी धीरे–धीरे बढ़ने लगी। गुप्त रूप से प्रचलित सतपंथ धर्म का पर्दाफाश हो गया। जाति के बीच यह बात फैल गई कि कुछ जाति के लोग पिराना के एक मुसलमान सैयद इमामशाह को अपना गुरु बनाकर इस्लाम के सतपंथ नामक संप्रदाय का पालन करते हैं।

अपने तत्कालीन कडवा पाटीदार जाति के भाइयों के समझाने पर भी वे नहीं समझे। अत: सतपंथ धर्म के प्रचार–प्रसार से अन्य भोले–भाले लोग और ज्यादा भ्रमित न हो और जाति को इस समस्या से बचाने के लिए गुजरात क्षेत्र की कडवा पाटीदार जाति ने सतपंथ धर्म को मानने वाले अपने भाइयों के लिए जाति के दरवाजे बंद कर दिये। सारे रिश्ते तोड़ दिए अंत में, क. क. पाटीदार के पूर्वजों को गुजरात क्षेत्र से निर्वासित कर दिया गया। 57:पेज 128 88:पेज 526 105:पेज 200 106:पेज 206 143:पेज 127 144:पेज 118 ।

12 कच्छ में प्रवास - जाति के पतन का प्रारंभ

75. **<u>कच्छ में पलायन – शिकरा गाँव बसाया:</u>** जाति और समुदाय से बाहर हो जाने के बाद गुजरात क्षेत्र को कहाँ छोड़ जाए ? यह मामला सैयद इमामशाह बावा तक पहुंचा। इमामशाह के कच्छ के राजा से सम्बन्ध होने के कारण उसके अनुयायियों को कच्छ भेज दिया गया।

उस समय कच्छ में मेहनती किसानों की बहुत आवश्यकता थी। इसलिए, महाराव ने अच्छे किसानों के लिए सभी प्रकार की वित्तीय सहायता की गारंटी दी और राज्य की ओर से खेती के लिए भूमि (पोयरा हक), घर बनाने के लिए मुफ्त भूमि (गोखरूबूटा), कृषि उपकरण, कुएं खोदने आदि का प्रावधान किया। . साथ ही, महाराव ने इमामशाह बावा को उन गांवों में दरबारी पुलिस पटेल के रूप में एक मानद पद देने का भी वादा किया जहां पटेल बसे थे 96:पेज 2 97:पेज 2 और 3 ।

Location: Shikara

इन सुविधाओं के साथ, इमामशाह ने 16वीं शताब्दी में धीरे–धीरे कड़वा पाटीदारों को कच्छ भेजना शुरू कर दिया। कच्छ में भचाऊ शहर के पास विरमगाम के श्री परबत वेलानी ने शिकरा गाँव की स्थापना की 106: पृष्ठ 207 । जो गुजरात से पाटीदार जाति का पहला मुख्यालय बना। **यहीं से उनकी पहचान कच्छ कड़वा पाटीदार के रूप में बनी।**

इसके बाद समय–समय पर जैसे–जैसे परिवार बड़े होते गए, या बेहतर भूमि की तलाश में, वे कच्छ के मध्यवर्ती क्षेत्रों में फैल गए। शिकरा के बाद, जाति का मुख्यालय मनकुवा, विथॉण और अब नखत्राणा में है।

76. **<u>पुलिस और न्याय व्यवस्था से जाति को अलग करना:</u>** इमामशाह बावा ने कच्छ के महाराव के विरुद्ध एक विशेष मांग की, जो आगे चलकर बहुत घातक सिद्ध हुई। मांग की गई कि कच्छ की कडवा पाटीदार जाति के किसी भी छोटे–बड़े झगड़े का निपटारा स्वयं दरबारश्री (अर्थात् कच्छ के महारावश्री/महाराजश्री स्वयं) करें। उसके लिए कोर्ट–कचहरी का सहारा न लें. इस मांग को कच्छ के महारावश्री ने स्वीकार कर लिया और तदनुसार कणबी (क. क. पा. जाति) को गारंटी दी गई। न्यायालय कार्यालय या राज्य का कोई अन्य विभाग इसमें हस्तक्षेप नहीं करेगा। यह भी निर्णय लिया गया कि ये स्थितियाँ पीढ़ी–दर–पीढ़ी बनी रहेंगी। तदनुसार, अदालत का सहारा नहीं लिया जाता था। 96:पृष्ठ 70, 97 और 98 97:पृष्ठ 74, 75 और 103 ।

<u>इस शर्त के माध्यम से इमामशाह ने यह सुनिश्चित किया ;</u>

1. जाति को पुलिस और न्याय व्यवस्था से वंचित कर दिया और लोगों को जाति बुजुर्गों (स्वघोषित जाति नेताओं) पर निर्भर बना दिया। ताकि कोई भी बुजुर्गकी बातों का उल्लंघन करने की हिम्मत न कर सके. जैसे भेड़–बकरियाँ चरवाहे के इशारे पर चलती हैं, वैसे ही जाति के लोग इन आगेवानो के इशारे पर चलते हैं, ऐसी व्यवस्था की।

2. क. क. पाटीदार इस जाति पर सतपंथ के ठेकेदार माने जाने वाले आगेवानो की मजबूत पकड़ हो सके। ताकि भविष्य में सतपंथ के विरुद्ध संभावित विद्रोह या विरोध को आसानी से दबाया जा सके।

यह स्थिति, आगे क. क. पाटीदार हम इस पुस्तक में आगे देखेंगे कि किस प्रकार जाति को दबाव में रखने और उनका शोषण और उत्पीड़न करने में सफल हुए।

77. <u>विचारधारा का विनाश – सत्ता संरचना, कानून–व्यवस्था और नेतृत्व के विनाश का चरण:</u> सतपंथ के प्रचारक कच्छ के महाराव यानी राजा के खिलाफ की गई मांगों/शर्तों और उनकी स्वीकृति से विचारधारा के विनाश के तीन बिंदुओं को नष्ट करने में सतपंथ के प्रचारको को सफलता मिली।

77.1. सत्ता संरचना: जाति की सत्ता मुखी के हाथ में देकर राजा की पारंपरिक सत्ता संरचना को छीनकर अपनी प्रजा को दे देना। इस प्रकार पारंपरिक शक्ति संरचना (जाति के लिए) नष्ट हो गई। सामाजिक संरचनाओं के विनाश के प्रभाव पर अधिक जानकारी के लिए बिंदु (20.4) देखें।

वैचारिक विनाश	विनाश विवरण	विनाश स्थिति
1.4. शक्ति संरचना	20.4	✓(77.1)

77.2. कानून और व्यवस्था: जाति को अदालत और कार्यालय से बाहर रखकर बुनियादी कानून और व्यवस्था के लाभ भी (जाति के लिए) नष्ट कर दिए गए। जो लोग बोलते हैं वही कानून हैं और वे समाज ज्ञाति के सर्वेसर्वा बन गए। यह विचारधारा के विनाश को कैसे प्रभावित करता है, यह देखने के लिए बिंदु (20.5) और बिंदु (76) देखें।

वैचारिक विनाश	विनाश विवरण	विनाश स्थिति
1.5. कानून एवं व्यवस्था	20.5	✓(77.2)

77.3. नेतृत्व: जब सत्ता और कानून–व्यवस्था जातीय मुखीओ के हाथ में आ जाती है तो स्वाभाविक है कि जातीय नेतृत्व भी स्वतः ही उनके हाथ में आ जाता है। अंतिम बात वही है जो वह कहते है। इसलिए मुखी जाति के नेता बन गए। लोकतंत्र द्वारा नेतृत्व का विनाश विचारधारा के विनाश को कैसे प्रभावित करता है, इसके लिए बिंदु (20.6) देखें।

वैचारिक विनाश	विनाश विवरण	विनाश स्थिति
1.6. नेतृत्व	20.6	✓(77.3)

78. **विचारधारा के विनाश का उद्देश्य पर्याप्त (इस स्तर पर):** धर्म के विनाश के बाद सत्ता संरचनाओं का विनाश, कानून और व्यवस्था का विनाश और नेतृत्व का विनाश हुआ, जैसा कि नीचे दी गई तालिका में बताया गया है।

परिवर्तनों/ ट्रैकिंग तालिका का निरीक्षण करें		
वैचारिक तोड़फोड़	**विनाश विवरण**	**विनाश स्थिति**
1. मनोबल गिराने वाले क्षेत्र	19	प्रगतिमे
1.1. धर्म		✓(70)
1.2. शिक्षा	20.2	बाकी
1.3. सामाजिक जीवन	20.3	बाकी
1.4. शक्ति संरचना	20.4	(77.1)
1.5. कानून एवं व्यवस्था	20.5	(77.2)
1.6. नेतृत्व	20.6	(77.3)
2. अस्थिरता	21	बाकी
2.1. वित्त	21.1	बाकी
2.2. कानून एवं व्यवस्था	21.2	बाकी
2.3. मीडिया	21.3	बाकी
3. संकट	23	बाकी
3.1. तथाकथित उद्धारकर्ता अंदरूनी सूत्र एक बाहरी व्यक्ति	23.3	बाकी
4. स्थिति का सामान्यीकरणय	24	बाकी
4.1. एक नये समाज की स्थापना – 2 चरणों में		बाकी

इस पुस्तक में आगे हम देखेंगे कि समय के साथ धर्म के अलग हो जाने से जाति की कितनी दुर्दशा हो गई।

13

पतन - निराशा फैलने की अवस्था

79. **<u>पतन की शुरुआत:</u>** जैसा कि पहले कहा गया है, कच्छ के कडवा पाटीदारों ने अपना धर्म खो दिया और इस तरह राज में अपने अधिकार की सुरक्षा खो दी, कानून और व्यवस्था का समर्थन खो दिया और इसका नेतृत्व जोर जुलम वाला हो गया। जाति पतन के कगार पर थी और शीघ्र ही पतन के लक्षण भी प्रकट हो गये।

यहां ध्यान रखने वाली बात यह है कि नीचे बताए गए बदलाव और उनके प्रभाव तुरंत नहीं हो सकते हैं या दिखाई नहीं देते। वे सभी प्रभाव समय के साथ धीरे–धीरे होने लगे एवं दिखने लगे।

80. **<u>धार्मिक रूप से अंधा/मानसिक रूप से कठपुतली:</u>** गुजरात क्षेत्र में रहने वाले अपने भाइयों और परिवारों से अलग हो गया। कहने का तात्पर्य यह है कि जो लोग उनके सच्चे हितैषी थे, उन्होंने ही उनसे छुटकारा पा लिया। दुर्भाग्य से गुजरात के ये भाई, क. क. पाटीदार वही जाति बंधु जो धर्म की गलत राह पर भटके लोगों को वापस सनातन हिंदू धर्म में लाने में असफल रहे। क. क. पाटीदार जाति के भाई उन भाइयों से प्रेम करते थे जो उनके लिये चिंतित थे।

क. क. पाटीदार जाति के बुजुर्गों को सही सलाह देने या उनकी तरफ धर्म बाबत ध्यान देने के लिए कोई नहीं बचा था। वे मानसिक रूप से अंधे और बहुत कमजोर हो गये । दूसरे शब्दों में कहें तो वे कठपुतली की तरह किसी के हाथ के खिलौने बन गये। जब वे ऐसी स्थिति में थे जहां उनके साथ दुर्व्यवहार किया जा सकता था।

81. **<u>जमातखाना – इस्लाम का बुनियादी धार्मिक ढांचा (इंफ्रास्ट्रक्चर):</u>** गुजरात क्षेत्र के साथ–साथ हिंदू धर्म के आस्था के केंद्र यानी उमिया मां समेत सभी हिंदू देवी–देवताओं के मंदिर भी छूट गए। क्योंकि सतपंथ के ग्रंथों में वर्णित नियमों के अनुसार हिंदू मंदिरों, मूर्ति पूजा आदि पर प्रतिबंध था।

यह धार्मिक और आध्यात्मिक शून्यता इस्लाम की धार्मिक सुविधाओं से भरी हुई थी। सतपंथ के जमातखाने प्रारम्भ किये गये। लोहाना से मुसलमान बने खोजा अभी भी समुदाय में वही जमात खाना चलाते हैं। उनके धार्मिक स्थान को जमात भी कहा जाता है 121: पृष्ठ 360, पैरा 2, पंक्ति 2। इसी प्रकार उनके समाज/समूह को जमात भी कहा जाता है। इस जमातखाने में एक फर्श है और उस पर इमामशाह यानी सैयद इमामुद्दीन और पीर सदरुद्दीन के धार्मिक ग्रंथों के अलावा कुछ भी नहीं है। इस प्रकार कच्छ में गाँव–गाँव सतपंथ के जमातखाने स्थापित हो गये। कोई मंदिर नहीं बनाया गया. समय–समय पर इस जमातखाने को संक्षेप में खाना के नाम से भी जाना जाता था 121: पृष्ठ 355 से 362। इसे जग्या या जगयूं भी कहा जाता था, जिसका अर्थ है स्थान।

13 पतन - निराशा फैलने की अवस्था

82. **<u>इस्लामी कलमाओं का पाठ:</u>** हिंदुओं में कोई भी धार्मिक कार्य करने से पहले जिस प्रकार गणेश जी की स्तुति में एक मंत्र का जाप किया जाता है , उसी प्रकार सतपंथ की तथाकथित पूजा..

शुरुआत में एक कलमा/दुआ कहा जाता है, अर्थात;

ॐ फरमानजी बिस्मिल्लाह **हर** रहमान नररहीम
सतगोर पात्र **ब्रह्मा इंद्र** इमाम शाहा आद
विष्णु निरंजन नरअली मुहम्मद शाहा आपकी दुआ

और जब हर दुआ इसके साथ पूरी हो जाए तो यह कहना चाहिए;

सतगोर इमाम शाहा नाराली मुहम्मद शाहा आपकी दुआ...
हक़ लैलाहा इल्लल्लाहो मुहम्मदुर रसूलिल्लाहे

स्रोत: 20 48 126 102

कोई भी सामान्य व्यक्ति यह समझ सकता है कि ये श्लोक हिंदू पूजा अनुष्ठानों में नहीं हो सकते।

83. **<u>मध्य रात्रि पूजा और गुडकी गाय:</u>** सतपंथ की मुख्य पूजा मध्य रात्रि में की जाती थी 88:पेज 5 । जिसमें, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, हिंदू नामों के साथ एक इस्लामी पूजा समारोह था। ऐसा सुना गया है कि ऐसी पूजाओं में प्रतीक के तौर पर गुड़ वाली गाय बनाई जाती है और पूजा के बाद गुड़ वाली गाय के टुकड़े करके प्रसादी में बांट दिया जाता है. 56:मई-1972, पृष्ठ 8 और 9 (522 में से 201 और 202) 111:पृष्ठ 9 6:पृष्ठ 29 । जे सतपंथ का बुध[26] (बुद्ध) अवतारों से भी जुड़ा हुआ है। अंक (56.2. 6.1-अनुच्छेद संख्या 649, 804)के साथ-साथ (56.2. 6.2) और (56.27) देखें।

84. **<u>मुस्लिम सैयद धर्म गुरु:</u>** सैयद इमामुद्दीन यानी इमामशाह बावा के वंशज सतपंथ के धर्म गुरु हैं। वह है क.पा. मुस्लिम सैयद जाति के लोगों के घर जाने लगे। बुजुर्गों से सुना है कि ऐसे तथाकथित धर्म गुरुओं को प्रसाद के रूप में दिया जाता था। इसी प्रकार एक लोटे में सैय्यद का मुखवाश डाला जाता था और उसमें और पानी डाला जाता था और सभी को प्रसाद के रूप में दिया जाता था 88:पेज 26 114:पेज 65, 67 6:पेज 214 और 216।

85. **<u>दफ़न संस्कार:</u>** इस्लाम की पद्धति के अनुसार मृत्यु के बाद दफ़न संस्कार की तरह ही सतपंथ में भी दफ़न संस्कार की शुरुआत हुई। हिंदू अग्नि संस्कार को छोड़ दिया गया। इस पुस्तक में पहले उल्लेखित अध्याय संवत संकल्प 1832 – हिंदू जड़ों को काटने का काला संकल्प देखें।

86. **<u>विवाह समारोह की शुरुआत निकाह/मुखी के कलमा से होने लगी:</u>** ब्राह्मणों के हाथों पवित्र हिंदू चोरी विवाह समारोह को बंद करके, इस्लामिक सतपंथ खाना के मुखी द्वारा कलामा पढ़ने से विवाह शुरू हुआ 85: पृष्ठ 67। इस पुस्तक में पहले उल्लेखित अध्याय संवत संकल्प 1832 – हिंदू जड़ों को काटने का काला संकल्प देखें।

26 बुध – सतपंथ ग्रंथों में बुद्ध को बुद्ध लिखा गया है।

पतन - निराशा फैलने की अवस्था

87. **<u>मुमना मुस्लिम की पहचान:</u>** इस अध्याय में उपरोक्त कारणों से सतपंथवाद के प्रभाव के रूप में क. क. पाटीदार जातिगत पहचान धीरे–धीरे मुमना मुस्लिम के रूप में उभरी 85:पेज 1 । जैसे सतपंथ ने लोहाना की पहचान खोजा मुस्लिम के रूप में बनाई, ऐसे ही क. क. पाटीदार जाति की पहचान ''मुमना'' के रूप में प्रचारित हुई।

''मुमना'' का अर्थ है धर्म में आस्था रखने वाले। भुज के सरकारी संग्रहालय में हर जाति के लोगों की मूर्तियाँ रखी गई थीं , जिनमें के भी शामिल थे। क. क. पाटीदार कणबी जाति की मूर्ति के नीचे मुमना लिखा हुआ था। 16:पेज 3

<u>सामाजिक जीवन पर प्रभाव:</u> मुस्लिम जाति के रूप में पहचान का इस जाति पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। जिसके
88. कारण ;

88.1. उस समय (आज नहीं) अन्य हिन्दू जातियाँ कणबी (क. क. पाटीदार जाति) के हाथ का पानी भी नहीं पीती थीं। उनके साथ खाने–पीने का रिश्ता भी नहीं रखते थे, उन्हें हिंदू नहीं माना जाता था। 56:फरवरी–1972, पृष्ठ 10 (522 में से 68) । नीच शब्दों से सम्बोधित किया जाता था। 130:पेज 27 6:पेज 125।

88.2. कच्छ के मनकुवा गाँव में अभी भी मुमना का निवास है, और वहाँ के लेवा पाटीदारों के बहुत बूढ़े लोग अभी भी कडवा पाटीदारों के साथ भेदभाव करते हैं।

88.3. स्वामीनारायण संप्रदाय में. क.पा. जाति के हरिभक्तों को साधु दीक्षा नहीं दी जाती थी। (24) (95) इस मामले पर कई वर्षों तक विवाद चलता रहा । अंततः, 17–अक्टूबर–1945 को पुरुष भिक्षुओं के संबंध में एक समझौता हुआ 39 6:पृष्ठ 596 । ऐसी प्रथा केवल स्वामीनारायण समाज द्वारा ही नहीं, बल्कि समस्त हिंदू समाज द्वारा प्रचलित थी। यह क. क. पाटीदार यह जाति के बुजुर्गों के अनुभवों के आधार पर उल्लेखित है।

88.4. क. क. पाटीदार जाति का पानी पीने की बात तो दूर की बात है. अन्य हिन्दू जाति के लोग क. क. पाटीदार जाति के लोगों को भी ऊपर से पानी पिलाया जाता था, जैसे कि वे अछूत हों। दलित और हरिजन समुदाय के लोग भी क. क. पाटीदार यहाँ तक कि वे लोग भी जो जाति के लोगों का पानी नहीं पीते। क. क. पाटीदार जाति को अछूत माना जाता था, ऐसी बातें सुनने को मिलती थीं। कारण यह था कि जाति की पहचान मुमना मुसलमान की हो गई थी।

88.5. छुआछूत के उन दिनों (आज नहीं) यह प्रथा थी कि यदि किसी अछूत को गलती से छू लिया जाए तो प्रचलित प्रथा के अनुसार उस व्यक्ति को स्नान करना पड़ता था या कम से कम पानी छिड़क कर खुद को शुद्ध करना पड़ता था। लेकिन क. क. पाटीदार यह जाति इस हद तक अंधविश्वासी और कट्टर थी कि किसी

अछूत को छूने के बाद अगर किसी मुसलमान को छू लिया जाए तो नहाने की जरूरत नहीं होती। ऐसी कुमान्यता फैल गई थी क्योंकि ऐसी मान्यता थी कि मुसलमान पवित्र माने जाते हैं, इसलिए मुसलमान को छूने से हम पवित्र हो जाते हैं। लोग यह सुनाते हैं। इससे पता चलता है कि किस हद तक ब्रेनवॉश किया गया था.

वैचारिक विनाश	विनाश विवरण	विनाश स्थिति
1.3. सामाजिक जीवन	20.3	✓(88)

89. **<u>शिक्षा का आभाव:</u>** इस जाति ने पहले शिकरा गांव को बसाया, और उसके बाद, जैसे–जैसे कच्छ के आंतरिक गांवों के जागीरदारों ने निमंत्रण और सुविधाएं दीं, आंतरिक गांवों की प्रगति हुई। अधिकांश समय वहां पढ़ाई की कोई सुविधा नहीं थी, क्योंकि पहले गांव बसा और फिर बाकी सब और शिक्षा जैसी सुविधाएं भी लगभग सबसे आखिर में पैदा हुईं, जिसमें कई साल लग गए। तो आप समझ गये होंगे कि सामान्यतः शिक्षा प्राप्त करना कितना कठिन था।

89.1. इस संबंध में महत्वपूर्ण कारण यह था क. क. पाटीदार जाति का इतिहास कहता है कि सतपंथ के प्रचारक कहते थे कि लड़कों को मत पढ़ाओ, अगर पढ़ाओगे तो बुढ़ापे में रोटी नहीं देंगे 56:मई–1972, पृष्ठ 2 (522 में से 195) 71:पेज 23 130:पेज 28 6:पेज 126। हम समझ सकते हैं कि यदि लड़के शिक्षित होंगे तो सतपंथ और सतपंथ के ग्रंथों में छिपा इस्लाम पहचान लिया जायेगा और उनका धर्म परिवर्तन का कार्य असफल हो जायेगा। इस संबंध में जाति की स्थिति इतनी खराब थी कि नारायण रामजी द्वारा लिखित पुस्तक पिराणा नी पोल में बताया गया है कि उस समय जाति में 5वीं कक्षा तक पढ़ाई करना बहुत बडा माना जाता था 148:पेज 4।

89.2. **<u>अवरुद्ध बौद्धिक विकास:</u>** यदि पीढ़ी दर पीढ़ी शिक्षा से वंचित होती रही तो आप कल्पना कर सकते हैं कि जाति का बौद्धिक स्तर दिन–ब–दिन गिरता जाता है। एक पीढ़ी के बाद व्यक्ति के मन में धीरे–धीरे यह बात घर कर जाती है कि जो व्यक्ति धर्म–ग्रंथों के बारे में थोड़ी सी भी बात करता है, वह उससे कहीं अधिक ज्ञानी है। तो हमें इस पर विश्वास करना चाहिए. इस प्रकार शिक्षा एवं प्रशिक्षण का कार्य का विनाश हो गया।

वैचारिक विनाश	विनाश विवरण	विनाश स्थिति
1.2. शिक्षा	20.2	✓(89)

13 पतन - निराशा फैलने की अवस्था

90. **वैचारिक विनाश का लक्ष्य पर्याप्त (इस स्तर पर):** पारंपरिक सामाजिक जीवन और शिक्षा के अभाव ने वैचारिक विनाश के पहले चरण में उल्लिखित निराशा के सभी क्षेत्रों को अवलोकन किया। तो यहाँ **1. मनोबल गिराने वाले क्षेत्र / निराशाजनक क्षेत्र** चरण समाप्त होता है।

परिवर्तनों / ट्रैकिंग तालिका का निरीक्षण करें		
वैचारिक तोड़फोड़	**विनाश विवरण**	**विनाश स्थिति**
1. मनोबल गिराने वाले क्षेत्र	19	**पूर्ण**
1.1. धर्म		✓ (70)
1.2. शिक्षा	20.2	✓ (89)
1.3. सामाजिक जीवन	20.3	✓ (88)
1.4. शक्ति संरचना	20.4	✓(77.1)
1.5. कानून एवं व्यवस्था	20.5	✓(77.2)
1.6. नेतृत्व	20.6	✓(77.3)
2. अस्थिरता	21	बाकी
2.1. वित्त	21.1	बाकी
2.2. कानून एवं व्यवस्था	21.2	बाकी
2.3. मीडिया	21.3	बाकी
3. संकट	23	बाकी
3.1. तथाकथित उद्धारकर्ता	23.3	बाकी
अंदरूनी सूत्र		
एक बाहरी व्यक्ति		
4. स्थिति का सामान्यीकरणय	24	बाकी
4.1. एक नये समाज की स्थापना – 2 चरणों में		बाकी

14

पिराणा की कार्य विधि
हिन्दू और मुस्लिम खिचड़ी

91. **<u>काका की नियुक्ति[27] के पीछे मूल भावना:</u>** इतिहास कहता है कि सैयद इमामशाह ने अपने जीवन के अंतिम दिनों में काका (जो लेवा पाटीदार थे) को पिराना की दरगाह की सेवा के लिए नियुक्त किया था। उनका काम केवल इमामशाह की कब्र की देखभाल करना और हिंदू सतपंथीयों की मदद करना था। 74:पेज 137 88:पेज 148। यहाँ काका एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ होता है नौकर। सैय्यदों द्वारा दरगाह की देखभाल के लिए एक मुजावर और अनुयायियों के संपर्क में रहने के लिए एक नौकर को नियुक्त किया जाता था,जिसे काका कहा जाता था50: पृष्ठ 217, 220, 223 और 224 156: पृष्ठ 38।

<u>91.1. पिराणा की कमाई का सैयदों में बटवारा</u>[28]: काका को पिराना के केंद्र में लाने का मुख्य कारण नुर मोहम्मद शाह[29] के बेटों में झगड़े थे उनकी मृत्यु के बाद, नर अली (मुहम्मद शाह का दूसरा नाम) ने काका की भूमिका बढ़ा दी, जिससे पिराणा की कमाई को प्रतिद्वंद्वी बेटों के बीच उचित रूप से विभाजित करने की व्यवस्था महसूस हुई। पैसे इकट्ठा करने के लिए, मुख्य काका ने एक उप–काका को काम पर रखा था। शोधकर्ताओं के अनुसार वास्तव में काका की गद्दी साजिशों , धोखाधड़ी और घोटालों का अक्षय भंडार थे। समय के साथ पैसे के कारण काका की शक्ति धीरे–धीरे बढ़ती गई । वह स्वयं को धर्म और पंथ का स्वामी मानने लगा 156: पेज 38, 39, 46, 55, 57, 58 38: पेज 446 122:पेज 60 छपा (लेकिन वास्तव में 62) 158: पृष्ठ 216, 219 74: पृष्ठ 135 से 137।

<u>91.2. काका के 2 नाम, एक हिंदू और एक मुस्लिम:</u> परंपरागत रूप से काका के दो नाम होते हैं, एक हिंदू नाम और दूसरा सतपंथी नाम, यानी मुस्लिम नाम। उदाहरण के लिए, नाया काका को पीर नसीरुद्दीन कहा जाता था 156:पृष्ठ 51 । इसी प्रकार करसन काका को पीर करीम कहा जाता था 50:पृष्ठ 217 ।

27 पिराना के काकाओं की सही सूची के लिए देखें..58:पेज 35 88:पेज 148।

28 कमाई का बँटवारा = पिराना की कमाई के बँटवारे की समस्या इमामशाह के समय में नहीं थी। इमाम शाह के बेटे नूर मुहम्मद शाह के गद्दी पर बैठने के बाद से यह समस्या उत्पन्न हुई। इमामशाह के समय पिराना की कमाई ईरान स्थित इमाम (अर्थात बेदाग नारायण) को भेजी जाती थी। नूर मुहम्मदशाह ने धन/कमाई को अपने पास रखने के लिए स्वयं को बेदाग नारायण घोषित कर दिया। इसने (निज़ारी) खोजा जाति को इमामशाही से बाहर कर दिया। तब से इमामशाह मूल इस्लामिक खोजा समुदाय/जाति से अलग हो गए और इमामशाह संप्रदाय के रूप में जाने गए9 37:पेज 180 38:पेज 446 54:पेज 359 74:पेज 135 88 :पेज 146,150128:पेज 5156:पेज 44।

29 नूर मुहम्मद शाह = इमामशाह का पुत्र। पिराना सतपंथी को निष्कलंक नारायण कौन मानता है 128:पेज 5 122:पेज 63 के रूप में मुद्रित (लेकिन वास्तव में 61) 158:पेज 216 50:पेज 220 और 225।

91.3. **उप–काकाओं की नियुक्ति:** संविधान के अनुसार, पिराणा के मुख्य काका की नियुक्ति उप–काकाओं में से की जाती है। और संविधान के अनुच्छेद 18 के अनुसार, उप–काकाओं की नियुक्ति, सैयदों के एकमात्र नियंत्रण में है। इसलिए सैयदों द्वारा उप–काकाओं को प्राथमिकता दी जाती है। मुख्य काका को ऐसे सैयदों द्वारा चुने गए उप–चाचाओं में से नियुक्त किया जाता है 142: पृष्ठ 37–खंड 18। ऐसे में स्वाभाविक है कि मुख्य काका भी सैयदों के चहेते होते थे, तो यह समझा जाता है कि इस धर्म में मुसलमानों का परोक्ष नियंत्रण था, तो फिर इसे हिंदू धर्म क्यों कहा जाए ? ऐसा नहीं कहा जा सकता।

91.4. **सैय्यदों द्वारा किए जाने वाले काकाओं के अनुष्ठान:** जब गादीपति काका की नियुक्ति की जाती है, तो उनके अनुष्ठान सैय्यदों द्वारा किए जाते हैं। यह पिराणा के संविधान में प्रशासनिक योजना के खंड 6 में कहा गया है 142: पृष्ठ 35–खंड 6। अहमदाबाद के सिविल कोर्ट द्वारा तय किए गए इस संविधान के अनुसार, जब तक सैय्यद काका का अनुष्ठान नहीं करता, उसे पद पर नियुक्त नहीं किया जा सकता।

91.5. अब आपको यह समझना होगा कि मुस्लिम धर्म का पालन करते हुए सैयद कौन से धार्मिक अनुष्ठान करते होंगे।

आपको यह भी समझना होगा कि अगर कोई मुसलमान किसी संप्रदाय के मुखिया का अनुष्ठान करता है तो क्या वह हिंदू धर्म हो सकता है ?

92. **मुस्लिम होने के बावजूद काका का हिंदू दिखना:** इतिहासकार बताते हैं कि ऐसे कई उदाहरण हैं जहां इस्लाम के प्रचारकों ने खुद को ब्राह्मण या हिंदू पुजारी के रूप में प्रचारित किया और धीरे–धीरे हिंदू धर्म को कमजोर कर दिया ताकि लोग इस्लाम में परिवर्तित हो जाएं। यह एक सौम्य तरीका था. इसने अनुयायियों को अपनी हिंदू पहचान उजागर करने की अनुमति दी गई।। मुर्तजा अली तालिब को विष्णु का अवतार दिखाया। ब्रह्मा को मुहम्मद दिखाया, शिव को बाबा आदम को दिखाया और हिंदू देवीओं को मुस्लिम साध्वी को दिखाया। 51: पृष्ठ 41, 63, 64 और 73 ।

92.1. **आगा खान केस:** तो सतपंथ के मुस्लिम धर्म होने के बावजूद प्रचारकों द्वारा भगवा धारण कर हिंदू रूप धारण करना, इसके पीछे के कारणों को ऊपर बताए अनुसार समझा जा सकता है। इसमें इस्लामी तकिया 30 की बहुत बड़ी भूमिका है. इसके बारे में विस्तृत जानकारी 1866 के बॉम्बे हाई कोर्ट के आगा खान मामले के फैसले में दी गई है 25 52 । इस विषय पर टीना पुरोहित की एक बहुत अच्छी किताब है, जिसे द आगा खान केस भी कहा जाता है। 141

30 तकियाः–तकिया के बारे में अधिक जानकारी के लिए शतपंथ, पृष्ठ 321 से 341 और 354 से 359 देखें।

92.2. **<u>प्रेम–एकता–सम्पंग–संगठन:</u>** पहली नज़र में प्रेम–एकता–संप–संगठन जैसी आदर्शवादी और अच्छी बातों को हिंदू और मुसलमानों की जनता के बीच स्वीकार्यता हासिल करने के लिए आगे रखा गया। भगवान एक ऊपर वाला है. हमारा खून एक है, अगर हमें आगे बढ़ना है तो मिलजुल कर रहना होगा, जो जिस धर्म का पालन करना चाहता है उसे समाज में रहने की इजाजत है, धर्म और समाज अलग–अलग हैं आदि।

93. ऐसे माहौल में बुद्धिहीन अनुयायी स्वयं को सच्चा हिंदू मानते थे। और सतपंथ को कलियुग का सच्चा हिन्दू धर्म समझा गया। उपरोक्त चीजें थीं जो सभी के लिए सुविधाजनक थीं। ऐसी बातों पर किसी को आपत्ति हो सकती थी? किसी को शक भी नहीं होता। लेकिन सौभाग्य से क. क. पा. ज्ञाति ने इतिहास में अपना पहला निर्णायक मोड़ लिया।

15

विश्राम बापा नकराणी
हिंदू जड़ों की रक्षा की

94. **खिचड़ी:** मुस्लिम सैयद इमामशाह, सतपंथ के संस्थापक, लेकिन उनके ग्रंथों में राम, कृष्ण जैसे हिंदू देवता शामिल हैं । उनके गुरु मुस्लिम सैयद और गादीपति काका अपने का हिंदू है, लेकिन पिराना के कब्रिस्तान में जाकर और कब्रों की पूजा करते थे। एक तरफ मुस्लिम धर्मग्रंथ और दूसरी तरफ हिंदू मान्यताएं। यह बात आम आदमी की समझ से परे एक खिचड़ी व्यवस्था थी।

95. **प्रेरणा:** इन सबके बीच, सतपंथ ने क. क. पा. जाति का यह मिथ्या विश्वास कि वे सच्चे हिन्दू हैं, अन्य हिन्दू इससे अनभिज्ञ हैं। ऐसी स्थिति में, जाति के सौभाग्य से, भगवान ने जाति के नेता को अपनी जाति को हिंदू बनने और मुस्लिम बनने से रोकने के लिए प्रेरित किया।

96. **भूल समझ में आई:** यह चिंता कि भविष्य में कोई जाति हिंदू-मुस्लिम विभाजन में फंसकर मुस्लिम न बन जाए, शिकरा[31] एक गाँव में रहते हुए विश्रामबापा को अनुभव होने लगा। विश्रामबापा नाकरानी जाति के एक प्रतिष्ठित, लोकप्रिय नेता और दूरदर्शी थे। वह जानते थे कि जाति ने मुसलमान को धर्मगुरु मानकर अधर्म का मार्ग अपनाया है, जो कि बहुत बड़ी भूल है 27:पृ. 266 व 267 119: पृ. 144 व 145 ।

97. **जाति से दो प्रतिज्ञाएँ लीं:** संवत् 1685 अर्थात् 1628-29 में वे बीमार पड़ गये और उनका अन्तिम समय आ गया । जब उनसे उनकी अंतिम इच्छा पूछी गई तो बापा ने कहा कि, हमने भोलेपन से एक मुस्लिम सैयद इमामशाह को अपना गुरु मान लिया है, यह हमारी बहुत बड़ी गलती है। लेकिन पूरी जाति रातोरात लौटकर नहीं आती. परन्तु कालान्तर में यह जाति मुस्लिम न बन जाए और हिन्दु ही रहे, इसके लिए आप मुझे दो वचन दो।

1) **आप कृष्ण जन्माष्टमी को गोकुलियाँ के रूप में मनाना कभी बंद नहीं करेंगे –** इस वादे के कारण क. क. पीदार जाति सदैव भगवान कृष्ण की जन्माष्टमी[32] त्योहार मनाते आ रहे हैं।

31 शिकरा = कच्छ के भचाऊ कस्बे से सटा हुआ एक गाँव। क. क. पा. जाति का प्रथम मुख्यालय इसी गाँव में था।
32 कृष्णजन्माष्टमी = जन्माष्टमी = सातम = भगवान कृष्ण के जन्म का उत्सव जो सातम-अथमा के नाम से प्रसिद्ध है।

15 विश्राम बापा नकराणी - हिंदू जड़ों की रक्षा की

परभाषी भोजन मुखी[33] जन्माष्टमी को खाने के अंदर मनाने की अनुमति नहीं थी। फिर भी बापा को दिए वचन को निभाने के लिए असुविधाएं सहकर रसोई के बाहर या सड़क पर ही जन्माष्टमी मनाई गई. लेकिन वादा नहीं तोड़ा. यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि इस प्रथा को कायम रखने में जातीय माताओं–बहनों का अमूल्य योगदान एवं योगदान है।

2) <u>आप कभी भी परभाषी (नॉन वेज) नहीं खायेंगे –</u> एक हिंदू का धर्म परिवर्तन करते समय उसे परिपक्व होने के लिए गाय का मांस खिलाया जाता था। मांसाहार पर प्रतिबंध लगाने से धर्मांतरण की इस पद्धति पर रोक लग गई। 120:पेज 46

सतपंथियों के धार्मिक गुरु होने के नाते मुस्लिम सैयद कणबीयों के घर पर ही ठहरते थे। गांव पहुंचने पर सैय्यदों का राजा की तरह स्वागत किया गया। उन्हें उनका मनपसंद खाना परोसा गया। मुसलमान होने के कारण वे मांस (नॉन–वेज) पसंद करते थे। फिर मानसाहर गांव में एक अन्य मांस खाने वाली जाति के घर से उनके लिए मांस तैयार कर लाया गया. लेकिन कणबी के घर में मांस नहीं पकाया जाता। इसके पीछे कारण था बड़े विश्रामबापा को दिया गया वचन।

लेकिन हिंदुओं के दिमाग को गाय का मांस खाने के लिए तैयार करने का काम जारी रहा. यह पांडवों द्वारा बुध अवतार में गाय को मारने की कहानी के अनुरूप है। सतपंथ की पूजा में गुड़ वाली गाय काटकर उसके टुकड़े प्रसादी के रूप में दिए जाते थे 56:मई–1972, पृष्ठ 8 व 9 (201 व 202 ऑफ 522) 111:पेज 9 6:पेज 29। सोचो यदि विश्रामबापा ने जाति को यह वचन न दिया होता तो क्या होता? आज शर्म या किसी अन्य कारण से कोई इस बात को सार्वजनिक तौर पर स्वीकार नहीं करता। लेकिन आज कहीं न कहीं बंद दरवाजों के पीछे कट्टरपंथियों के घर में ये सब हो रहा होगा।

98. <u>खानपान भ्रष्ट नहीं हो सका:</u> जैसा कि ऊपर बताया गया है कि क.क. पाटीदार ने बापा को दो वचन दिये थे। उनका पालन आज तक हो रहा है और इसी कारण पिराना सतपंथ के काका, सैयद, मुखी आदि अपने प्रयासों के बावजूद इस जाति के आहार को भ्रष्ट नहीं कर सके।

99. <u>हिंदू जड़ों को नहीं काट सके:</u> मांस न खाने और जन्माष्टमी मनाने की प्रथा के कारण सैय्यद इस जाति का संबंध हिंदू धर्म से तोड़ने में कभी सफल नहीं हुआ। जाति सुधारक श्री नारायण रामजी लिम्बानी के मन में यह बात आई कि हम हिंदू हैं, फिर भी मेरी जाति का अपमान क्यों? उस भावना के पीछे विश्रामबापा के इन 2 वचनों की बड़ी भूमिका रही होगी, इसमें कोई दो राय नहीं है.

33 मुखी = खाना का मुख्य पुजारी

15 विश्राम बापा नकराणी - हिंदू जड़ों की रक्षा की

100. **<u>धर्म परिवर्तन की गति पर लगा विराम:</u>** इतिहास गवाह है कि विश्रामबापा का एक छोटा सा कदम जाति के लिए कितना महत्वपूर्ण था। इस घटना ने पिराना सतपंथ की इस्लाम में मतांतरण की गति में स्पीड ब्रेकर के रूप में काम किया।

101. **<u>अतिरिक्त समय प्राप्त हुआ:</u>** जैसे खोजा लोग हिंदू लोहाना से मुस्लिम बन गए , उसी तरह जाति को भी वर्षों की अवधि में धीरे–धीरे परिवर्तित हो जाना चाहिए था। लेकिन क. क. पाटीदार जाति में धर्मांतरण समय अनुसार न हो सका उनके पीछे विश्राम बापा के 2 वचन थे, जिसके कारण यह समयावधि बढ़ गई।

102. **<u>विचारधारा के विनाश के लक्ष्य पर प्रभाव:</u>** धर्मांतरण की धीमी गति के कारण, जैसा कि पहले कहा गया है, पिराना सतपंथियों को विचारधारा के विनाश के लक्ष्य को प्राप्त करने में अधिक समय लगा। उसका काम हो गया.

103. अस्थिरता का दौर, जिसके बारे में हम बाद में देखेंगे, दौर समानांतर चलता रहा। लेकिन विश्राम बापा से किये गये दो वादों के कारण पतन का यह सिलसिला लम्बा हो गया।

इस वजह से, जाति की हिंदू जड़ों को काटने के लिए सही समय की प्रतीक्षा करने के अलावा कोई अन्य रास्ता नहीं था।

इसलिए, जाति में सनातन के बीज को अंकुरित होने के लिए आवश्यक समय मिला।

16

अस्थिरता का प्रसार चरण

104. **<u>अस्थिरता का दौर आरंभ:</u>** उन सभी क्षेत्रों का विनाश कैसे होता है जो हर समाज की मजबूती के लिए आवश्यक नींव रखते हैं, और जिन पर समाज का विकास निर्भर करता है। तमाम क्षेत्रों का विना क. क. पाटीदार जाति में हुआ। हमने देखा है कि कैसे जीवन–प्रेरक आशाएँ निराशा में बदल गईं। परिणामस्वरुप सम्पूर्ण जाति में निराशा फैल गयी। ऐसी स्थिति पैदा हो गई कि आम लोग गलत कार्यों और गलत लोगों का विरोध करने का साहस नहीं जुटा सके। समाज के पतन का यह पहला चरण हमने देखा।

आइये अब समाज के पतन के दूसरे चरण को देखें और उसके बारे में समझें। हम देखेंगे कि समाज में अस्थिरता क्यों है. अधिक जानकारी के लिए बिंदु (21) देखें। हिंदू जड़ों को काटने में देरी के बावजूद, जाति के भीतर अस्थिरता फैलाने का काम उस अवधि के दौरान जारी रहा।

105. **<u>आर्थिक शोषण:</u>** हम समझते हैं कि कोई भी धर्म दान से चलता है। लेकिन जब दान स्वैच्छिक के बजाय अनिवार्य हो जाता है तो यह कर का रूप ले लेता है। फिर यह धर्म के ठेकेदारों के हाथों अनुयायियों के शोषण का साधन बन जाता है। सतपंथ में भी दान के नाम पर कुछ ऐसा ही है।

दान की अपील सभी धर्मों में पाई जाती है। परंतु दशावतार ग्रंथ सहित सतपंथ के ग्रंथों में अनेक स्थानों पर यह मिलता है कि सतपंथी जो निष्ठा के साथ तय दान देता है वो ही सच्चा सतपंथी होगा। केवल ऐसे खर शतपंथी को ही मृत्यबाद अमरापुरी जाने और कलियुग के अंत में 1.25 लाख वर्षों तक पृथ्वी पर शासन करने का अवसर मिलेगा। और जो लोग इसका पालन नहीं करेंगे उन्हें नरक की यातना भुगतनी पड़ेगी।

अमरापुरी के साथ–साथ सवा लाख वर्ष तक शासन करने के प्रलोभन के साथ–साथ नारकीय यातना का भय 88:पेज 371 एक सामान्य भक्त से बहुत कुछ कराता। नाजायज है इस तरह का लालच और डर इंसान को अनगिनत यातनाएं, कष्ट और जुल्म सहने पर मजबूर है, इसलिए हरगीज दान न देने की गलती नहीं करते हैं।

105.1. **<u>दसोंद[34] /दशान्स:</u>** हर साल आय या कमाई का 10% देना। साथ ही, यदि संपत्ति की कीमत बढ़ती है, तो उस पर भी 10% अतिरिक्त भार दिया जाता है। 85:पृष्ठ 26, बिंदु 6 88:पृष्ठ 127, 497।

105.2. **<u>विसोंद/विसांक:</u>** दसोंड के समान, लेकिन 10% के बजाय 20% दान अनिवार्य देना। 148:पेज 24।

34 दसौंद = दशौंद

105.3. **<u>प्रकारो:</u>** जाति सुधारक श्री नारायणजी रामजी लिम्बानी द्वारा लिखित महान ग्रंथ पिराना नी पोल के पृष्ठ संख्या 545 88:पृष्ठ 545 में सतपंथी के ऊपर लगाए जाने वाले करों और लेवी की एक सूची दी गई है, जो इस प्रकार है।

कुछ कर[35] और लागा[36] की प्रस्तावित सूची नीचे दी गई है। कृपया ध्यान दें कि इस सूची के अतिरिक्त कर और शुल्क और भी हो सकते हैं।

1) लड़कों के जन्म के बाद सतपंथी बनाने का कर
2) प्रवासीदेश में रहते हुए[37] भाई[38] वापस आते समय नूर की गोली का अभिषेक करें[39] पेज[40] कर
3) गुरूवार[41] और चंद्रमा पर[42] थाल बनाने और नकद जमा करने पर टैक्स
4) मौत का दांव[43] प्रति व्यक्ति जो खाने जाता है[44] अनुच्छेद के अंतर्गत भुगतान किया जाने वाला कर
5) मृतक के पापों का प्रायश्चित[45] के लिए प्रति व्यक्ति 50 से 150 कोरी[46] तक करें
6) शादी या पुनर्विवाह के मामले में कोरी का टैक्स
7) मवेशी[47] यदि प्रजा बढ़े, तो उनको घमण्ड करना
8) नेता[48] अपमान और जातीय अपराध के मामले में जुर्माना देना होगा
9) सैय्यदों को[49] गुरु करने के लिए प्रति व्यक्ति कम से कम 12 कोरी का कर
10) पिरानावाला मुजावर[50] चाचा[51] देश में[52] 38 जब शिरबंदी आती है[53] का कर
11) लगभग 400 लोगों का एक संघ जो हर साल पिरान यात्रा करने के लिए कम से कम रु. 50/- से अधिकतम 100/- रु.

35 कर = कर
36 लागा = फीस/शुल्क
37 विदेश गये हुऐ = जो लोग रोजगार के उद्देश्य से विदेश में काम करने गए थे
38 देश = कच्छ में। क्योंकि के. क. पा. जाति के लिए देश का मतलब कच्छ है
39 नूर की गोली = पावल आदि। कृपया जानकारी के लिए परिवर्णी शब्द अनुभाग देखें
40 पावनो = पीना शब्द का अपभ्रंश
41 गुरुवार, क्योंकि सतपंथ में गुरुवार-शुक्रवार की रात्रि पूजा का बहुत महत्व है।
42 चांदरात = रमज़ान का महीना पूरा होने के बाद की पहली रात, जिसे ईद-उल-फितर कहा जाता है। स्रोत: https://abkkpsamaj.org/go/fn42
43 दादो = किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसके परिवार वाले मृतक का मोक्ष संस्कार करते हैं 114:पृष्ट 24 6:पृष्ट 176।
44 दोकड़ा = फुटनोट 46 देखें
45 मोचन = मृत व्यक्ति को मृतक द्वारा किये गये अपराध (अपराध) से मुक्त करना। और ऐसा करने पर ही मृत व्यक्ति अमरपुरी 24 जा सकता हैऐसी मान्यता सतपंथ में है।
46 कोरी = वर्ष 1948 तक कच्छ की मौद्रिक मुद्रा थी। कोरी को 24 दोकड़ा (एकवचन: दोकडो) और दोकड़ा को 2 ट्रॉम्बियो में विभाजित किया गया था। केवल कोरी के सिक्के जारी किये गये। अन्य तांबे के सिक्के ढाबू और ढींग्लो थे। 1 कोरी = 2 अडालियानो = 4 पाइलोस = 8 ढाबू = 16 गुड़िया = 24 दोकड़ा = 48 ट्रैम्बियो = 96 बाबुकिया।भारत की आज़ादी के बाद इसका मूल्य1 भारतीय रुपया = 3(स्रोत:https://abkkpsamaj.org/go/fn46)
47 मवेशी = गाय, बैल, घोड़े, बकरी, ऊँट आदि जानवर जो सामान्यतः मनुष्य द्वारा पाले जाते हैं।
48 गेद्रस

105.4. **<u>धन का दुरुपयोग:</u>** यह वर्ष 1920 के आसपास होगा जब कच्छ के पिराणा सतपंथी कणबी भाइयों को कम से कम रुपये दिए गए थे। 1,50,000/– टैक्स के तौर पर चुकाने पड़े. राजस्व के बाद भी, धर्म को दिए जाने वाले अतिरिक्त करों और लेवी की एक बड़ी राशि जाति के नेता पटेल (गेधेरा) और मुखी थे[54] पच रहे थे इस माध्यम से, तथाकथित नेता गेधेरा ने कुछ जाति भाइयों पर जितना हो सके अत्याचार करने में संकोच नहीं किया 88: पृष्ठ 546 और 547 । इस जाति के धन का उपयोग इस जाति पर अत्याचार करने के लिए किया जाता था। इसके बारे में विस्तृत जानकारी क. क. पाटीदार जाति सुधारक श्री नारायण रामजी लिम्बानी द्वारा लिखित नामक पुस्तक 85 ।

105.5. जब कोई समाज आर्थिक रूप से बर्बाद हो जाता है तो उस समाज के लोगों की लड़ने की शक्ति कमजोर हो जाती है। जिससे अस्थिरता फैलती है.

106. **<u>कानून व्यवस्था द्वारा शोषण:</u>** आर्थिक शोषण तभी संभव है जब लोग कानून व्यवस्था पर भरोसा नहीं करते। जैसा कि ऊपर बिंदु (76) में बताया गया है, हमने देखा है कि कैसे जाति के सदस्यों को रणनीतिक रूप से कानून और व्यवस्था के लाभों से बाहर रखा गया था।

106.1. **<u>अपने हाथों की शक्ति का दुरुपयोग करना:</u>** नेताओं/आगेवानो के खिलाफ बोलने वालों की शादियों को रोकना। समाज से बहिष्कृत करना और जबरन तलाक देना 130:पेज 39 6:पेज 136 ।

49 सैयद = हरिवंश = इमामशाह के वंशज.. जिन्हें पिराना सतपंथ को मानने वाले गुरु मानते हैं।88:पेज 547

50 मुजावर=कब्र की देखरेख करने वाला

51 काकाओ = चाचा–भतीजा के साथ चाचा नहीं, बल्कि यहां काकाए एक फ़ारसी शब्द है, जिसका अर्थ है दास/नौकर।85:पेज 27–बिंदु 9

52 पिराना का मुजावर काको = पिराना का गादी पति। हाल.. जिनके नाम के साथ (महाराज) शब्द जोड़ा जाता है।

53 शिरबन्धी = एक प्रकार का उपहार। देखें 88 :पेज 31 111:पेज 5 6:पेज 25।

54 मुखी = जमातखाना अर्थात कलमा आदि बोलकर पूजा करने वाला खाना अर्थात खाने का पुजारी।

106.2. **कानून और व्यवस्था में अस्थिरता के लक्षण:** अस्थिरता को बेहतर ढंग से समझने के लिए, आइए इस पर एक नज़र डालें कि सामान्य तौर पर कानून और व्यवस्था के क्षेत्र में अस्थिरता की विशेषताएं क्या हैं।

आम लोग यही सोचते हैं;

1) कानून व्यवस्था से किसी को डर नहीं है.

2) पुलिस और अदालतों में बहुत सारे काम पैसे और ताकत से होते हैं।

3) कानून व्यवस्था का सहारा लेना, लेकिन उस पर भरोसा नहीं करना। लंबे समय में, कानूनों का बहुत कम उपयोग होता है।

4) कानून और व्यवस्था गरीबों के लिए नहीं है.

106.3. **अस्थिर स्थिति का आकलन:** क. क. पाटीदार जब से यह जाति कच्छ में आकर बसी तब से केशरा परमेश्वर बापा तक [55] हमें इस विषय पर कोई दस्तावेज़ या लेख नहीं मिले हैं। लेकिन केशरा परमेश्वर (96) के जीवन पर लिखी पुस्तक इस विषय पर अच्छी जानकारी प्रदान करती है। जिससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि, क. क. पाटीदार जाति के लोगों के लिए कानून व्यवस्था की स्थिति कितनी अस्थिर होगी।

केशरा परमेश्वरा (केशरा बापा) के कच्छ के राजा के साथ बहुत अच्छे और घनिष्ठ संबंध थे। संबंध इतने अच्छे थे कि केशरा बापा बिना समय मांगे किसी भी समय राजा से मिलने जा सकते थे। [56] ने किया था 96:पेज 74 । इतना ही नहीं, कच्छ के राजा प्रागमलजी की पत्नी रानी साहेबा उनकी धार्म की बहन थीं 96: पेज 93 । इसी प्रकार उनके अपने गांव नेत्रा के आसपास के जागीरदारोंसे भी बहुत अच्छे संबंध थे।

परन्तु पूर्वोक्त बिंदु (76) के अनुसार कानून एवं व्यवस्था के क्षेत्र में इमामशाह द्वारा कच्छ के राजा के साथ किये गये समझौते के अनुसार। क. क. पाटीदार जाति को पुलिस और अदालतों जैसी न्यायिक सुविधाओं से वंचित करके क्षेत्र में फैलाई गई हताशा के परिणामस्वरूप, क्षेत्र में अब अस्थिरता का अनुभव होने लगा।

जैसा कि पुस्तक में कहा गया है, सतपंथी की शिकायत थी कि कच्छ के राजा केशरा मुखी के समर्थन के बावजूद केशरा बापा। [57] अक्सर दुःखी रहते थे 96:पेज 14, 62 । कच्छ कटवा पाटीदार जाति के उस समय के आगेवान जो कहते थे वही कानुन माना जाता था 96:पेज 5 ।

55 केशरा बापा के योगदान का विवरण देने वाला एक अलग अध्याय आगे शामिल किया गया है।
56 दरबारश्री = महाराव = कच्छ के राजा को दरबारश्री भी कहा जाता था।
57 केशर मुखी = केशर परमेश्वर = केशर बापा

16 अस्थिरता का प्रसार चरण

निम्नलिखित कुछ उदाहरण नीचे दिए हैं जहां कानूनी व्यवस्था में अस्थिरता के कारण केशर बापा को परेशान किया गया था।

1) केशरा बापा और उनके अन्य 4 मित्रों ने सनातन धर्म स्वीकार कर लिया, इसलिए विथोण गांव में तीन क्षेत्र विभाग की जातियां एकत्रित हुईं और तब के सर्वसर्वा उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के लिए एकत्र हुए 96:पृष्ठ 46 ।
2) उनके एक सहयोगी श्री अबजी करसन भगत को बेरहमी से पीटा गया 96:पेज 54 ।
3) केशरा बापा और सनातनी साथियों के परिवारों की सगाई टुटने के प्रसंग बनने लगे। 96:पृष्ठ 61।
4) परिणामस्वरूप कच्छ के महाराजा को स्वयं स्वामीनारायण संप्रदाय और सतपंथ संप्रदाय के बीच समाधान करना पड़ा। 96:पृष्ठ 64 ।
5) सतपंथी रैया नाकराणी ने कच्छ के महाराजा द्वारा बनाये गये समझौता पत्र को फाड़ दिया 96:पृष्ठ 65 ।
6) रैया नाकराणी के व्यवहार से तंग आकर कच्छ के राजा ने स्वयं कहा था कि आप लोग जो पुराने धर्म को मानते हैं, आप बहुत अधिक शिरजोरी का प्रयोग कर रहे हैं और आप लोग ही लड़ाई–झगड़े करने वाले लोग हैं 96:पृष्ठ 71 ।
7) जब स्वामीनारायण मंदिर की नींव खोदी जाजा रही थी तब के लोग रात में खोदी गई नींव नष्ट कर देते थे। पुराने धर्म ऐसी हरकतों से मंदिर का काम रोकना ही उनका उद्देश्य था। 96:पेज 73 । कच्छ के राजा ने मंदिर के कामकाज के लिए पुलिस सुरक्षा प्रदान की और अन्य सभी तरीकों से सहायता का आश्वासन दिया 96: पृष्ठ 74 और 75 ।
8) स्वामीनारायण के साधुओं पर हड्डियाँ, मांस आदि अपवित्र वस्तुएँ फेंककर उन्हें अपवित्र करने का प्रयास 96:पृष्ठ 86 ।
9) समाज के संयुक्त बर्तन, गद्दे, गलीचे [58] का उपयोग करने नहीं देते थे। अभद्र भाषा के साथ अपमानित कर बहार धकेलते थे। 96:पेज 94 से 97।

इतिहास में भी ऐसे अनगिनत उदाहरण देखने को मिलते हैं। क. क. पाटीदार यह बात जाति के बुजुर्गों से मौखिक रूप से सुनी जाती है। केशरा बापा के बाद नारायण रामजी लिम्बानी और उनके बाद रतनशी खिमजी खेतानी ने इस आंदोलन का नेतृत्व किया, उन्हें जिन समस्याओं और परेशानियों का सामना करना पड़ा, उनके कई उदाहरण हैं।

58 बर्तन और गलीचे गलीचे = जाति बहुत गरीब होने के कारण लोगों के पास धातु के बर्तन, गलीचे गलीचे आदि बहुत सीमित संख्या में थे। शादी जैसे बड़े आयोजन के लिए ऐसी व्यवस्था थी कि बर्तन आदि संयुक्त रूप से गांव के खाने में रखे जाते थे और जिसके घर पर आयोजन होता था, वह इसका उपयोग कर सकता था।

16 अस्थिरता का प्रसार चरण

106.4. हालाँकि इतिहास में केशरा बापा के विषय में बात करने का अभी समय नहीं आया है, लेकिन उस काल में केशरा बापा के साथ घटी घटनाओं का उदाहरण देने के पीछे उद्देश्य यह है कि पाठकों को यह एहसास हो कि उनके काल में क. क. पाटीदार जाति के लिए, कानून और व्यवस्था क्षेत्र में कितनी अस्थिरता थी। क्योंकि ये सभी ऐतिहासिक घटनाएँ एक ही कड़ी से जुड़ी हुई हैं।

यदि केशरा बापा जैसा व्यक्ति हर तरह से सक्षम और मजबूत होने के बावजूद उसे कितना कुछ सहना पड़ता, तो पाठक कल्पना कर सकते हैं कि पहले के समय में (यानी इतिहास के इस चरण में) स्थिति क्या रही होगी।

107. <u>मीडिया:</u> मीडिया[59] को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है[60] हैं . जिसमें सरकारी समाचार मीडिया प्रमुख है। इसके माध्यम से लोगों पर हो रहे अत्याचारों की सूचना देकर आवश्यक सुधारात्मक कदम उठाने के लिए सरकारी तंत्र का ध्यान आकर्षित किया जाता है।

विक्रम संवत 1832 (सन् 1776) में कोई सार्वजनिक मीडिया नहीं था। आज की तरह इलेक्ट्रॉनिक या सोशल मीडिया की बात नहीं होती थी। संदेश लेनदेन के लिए पांटिआ[61] पद्धति थी।

इसलिए यहां मीडिया को अस्थिर करने का मुद्दा कोई खास नहीं है।

लेकिन, आज हम देखते हैं कि मीडिया का किस तरह दुरुपयोग किया जाता है। पेड न्यूज, फेक न्यूज, पैसों के लिए बड़े और झूठे विज्ञापन देना, पत्रकारों को विज्ञापन का वादा करके खरीदना, खबरों को तोड़-मरोड़ कर अपने पक्ष में पेश करना, खबरों में छिपकर अपना ही प्रोपेगेंडा शामिल करना आदि का इस्तेमाल किया जाता है। लगभग आज की पीढ़ी जानती है कि मीडिया का उपयोग करके जनता की भावना/वोट को अपने पक्ष में कैसे करना है।

चूँकि आज के परिप्रेक्ष्य में मीडिया एक बड़ी भूमिका निभाता है, इसलिए भविष्य को ध्यान में रखते हुए इस मुद्दे को यहाँ उठाया गया है।

आज के परिप्रेक्ष्य में उदाहरण के तौर पर कहें तो सतपंथ के एक भाई थे, श्री रतनशी लालजी वेलाणी। भाई स्वयं श्री अखिल भारतीय कच्छ कड़वा पाटीदार समाज के अध्यक्ष हैं और उनकी अध्यक्षता में नखत्राणा में उस समाज की आम बैठक बुलाने की घोषणा/समाचार कुछ वर्षों से कच्छ मित्र और अन्य

59 मीडिया=प्रचार प्रसार का साधन
60 लोकतंत्र के तीन स्तंभ = विधायिका, नौकरशाही, न्यायपालिका
61 पांती = घर-घर जाकर लोगों को संदेश देने वाला व्यक्ति

समाचार पत्रों (जैसे)दिनांक, में छपते थे। 16 अक्टूबर 2014, पृष्ठ 15 और समाचार: कच्छ मित्र, भुज संस्करण, दिनांक 20 सितंबर 2014)। क्योंकि उस समय श्री अखिल भारतीय कच्छ कड़वा पाटीदार समाज की आमसभा होनी थी. इसमें उनकी फर्जी मुलाकात की तस्वीरें भी छपी हैं. ऐसी खबर देकर जनता को संदेश दें कि रतनशी लालजी वेलाणी ही समाज के अध्यक्ष हैं. लेकिन वास्तव में समाज के वास्तविक अध्यक्ष कई वर्षों से श्री अबजीभाई विश्राम कनाणी रहे हैं। यह मीडिया के दुरुपयोग का उदाहरण है [62] .

108. **विचारधारा के विनाश का उद्देश्य पर्याप्त (इस स्तर पर):** निम्न तालिका दर्शाती है कि अस्थिरता के इस चरण में कितनी क्षति हुई। यह अवसाद चरण के बाद अस्थिरता चरण के दौरान होने वाले नुकसान पर नज़र रखने वाली एक तालिका है।

परिवर्तनों/ ट्रैकिंग तालिका का निरीक्षण करें		
वैचारिक तोड़फोड़	**विनाश विवरण**	**विनाश स्थिति**
1. मनोबल गिराने वाले क्षेत्र	19	पूर्ण
1.1. धर्म		✓(70)
1.2. शिक्षा	20.2	✓ (89)
1.3. सामाजिक जीवन	20.3	✓ (88)
1.4. शक्ति संरचना	20.4	✓(77.1)
1.5. कानून एवं व्यवस्था	20.5	✓(77.2)
1.6. नेतृत्व	20.6	✓(77.3)
2. अस्थिरता	21	**पूर्ण**
2.1. वित्त	21.1	✓(77.3)
2.2. कानून एवं व्यवस्था	21.2	✓(77.3)
2.3. मीडिया	21.3	✓(77.3)
3. संकट	23	बाकी
3.1. तथाकथित उद्धारकर्ता अंदरूनी सूत्र एक बाहरी व्यक्ति	23.3	बाकी
4. स्थिति का सामान्यीकरणय	24	बाकी
4.1. एक नये समाज की स्थापना – 2 चरणों में		बाकी

62 उदाहरण = रतनशी लालजी वेलानी के ऐसे और उदाहरणों के लिए देखें : https://abkkpsamaj.org/go/fn62

17

संवत् 1832 का संकल्प-हिन्दू जड़ों को काटने का काला संकल्प

109. **<u>परिप्रेक्ष्य:</u>** विचारधारा के विनाश के 2 प्रारंभिक चरण, अर्थात् पतन का चरण और अस्थिरता का चरण, लगभग पूरे हो चुके थे। इस समयावधि तक क.क.पा. जाति के लोग हिंदू धर्म के अनुसार ब्राह्मणों के हाथों और फिर सैयदों के हाथों धार्मिक अनुष्ठान करते थे। हिंदू मूल को अभी तक नहीं छोड़ा गया था। अब अगला कदम धर्मान्तरण के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए उठाया गया। और वह था..

1) अनुयायियों के मूल धर्म यानि हिंदू धर्म से नाता तोड़ना। और,
2) हिंदू धर्म में वापस धर्मांतरण के दरवाजे बंद करना।

110. **<u>पीराना के काका एवं धार्मिक गुरु सैयद का कच्छ आगमन:</u>** एक विवाह के अवसर पर पीराना के गादीपति प्रागजी काका एवं धार्मिक गुरु सैयद वलिमियां (इमामशाह के वंशज) नखत्राणा आये। वहां उन्होंने कणबियों को हिंदू धर्म से अलग कर उन्हें शुद्ध पीर अनुयायी बनाने का प्रयास किया।

111. **<u>संवत 1832 का काला संकल्प:</u>** विक्रम संवत 1832 के पौष वद 13 को , यानी 18 जनवरी 1776 को, प्रागजी काका और सैयद वालिमियां ने पूरी जाति को नखत्राणा के खाने में इकट्ठा किया और सामने धूपबत्ती जलाई। इमामशाह बावा की पाट ने निम्नलिखित संकल्प किए और भोली–भाली जाति को भ्रमित करने का प्रयास किया 88:पेज 526 105:पेज 201 98:पेज 7 56:जनवरी–1972, तंत्री लेख, पेज 9 व 10 ऑफ 522 ;

1) बारोट गौरीदास शामदास को मिली छुट्टी: आज के बाद बारोट के पास वाहिवंचा[63] मत लिखाओ। साथ ही उन्होंने ब्रह्म दान न देने का संकल्प लिया।
2) गोर जानी दयाशंकर भगवानजी को छुट्टी दी: गोर दयाशंकर और उनके वंशजों के साथ–साथ किसी अन्य ब्राह्मण को, विवाह या किसी अवसर पर कोई कर्म[64] नहीं करना है। यह उनका दूसरा संकल्प था।

बेचारे अंधविश्वासी और धर्मांध कणबी इस कदम को पहचान नहीं पाए और उनकी बातों में आ गए।

63 वाहिवांचा = वंशावली विशेषज्ञ परंपरागत रूप से हिंदू जाति का वंशावली विशेषज्ञ।
64 कर्म = पूजा एवं अन्य कोई अनुष्ठान

17 संवत् 1832 का संकल्प-हिन्दू जड़ों को काटने का काला संकल्प

112. **<u>संकल्पों के पीछे का उद्देश्य:</u>** उपरोक्त संकल्पों के पीछे के उद्देश्य को निम्नलिखित बिन्दुओं से समझा जा सकता है।

1) **<u>हिन्दू जड़ काटना:</u>** वाहिवंचा की कार्यशैली होती है कि जब वह किसी के घर जाता है तो उसके घर, कुल और गांव का सटीक इतिहास बताता है। उनके पूर्वजों की सफलता की कहानियाँ बताते हैं। ताकि लोगों को अपने पूर्वजों पर गर्व हो और उसके बाद वंशावली लिखनी चाहिए यानी घर में जन्म–मृत्यु–विवाह आदि की घटनाओं को दर्ज करते थे।

आप समझ सकते हैं कि वाहीवांचा की अपनी वंशावली है[65] लिखना बंद करने का कारण यह था कि कणबी धीरे–धीरे अपना पैतृक गौरव खो देंगे और भूल जायेंगे कि उनके पूर्वज हिन्दू थे। साथ ही मूल हिंदू जाति से उनका रिश्ता भी ख़राब हो जाएगी इस तरह एक बार जब कणबी अपनी जड़ों से अलग हो जाते हैं, तो उनके विश्वास को पूरी तरह से इस्लाम में परिवर्तित करना आसान हो जाता है।

वहीं, दूसरी ओर जो हिंदू समाज जाति पर आधारित है, उस जाति के जानकारी के बिना हिंदू समाज की कौन सी जाति उसे स्वीकार करेगी, यह एक बड़ा सवाल खड़ा होता है। साथ ही जाति का ज्ञान न होने के कारण उनकी मूल जाति भी उन्हें अपने में शामिल करने से कतराती है। जो स्वाभाविक था. हिन्दू समाज में वापसी के सभी दरवाजे हमेशा के लिए बंद हो जायेंगे, यह एक खेल था, यह बात हर कोई समझ सकता है।

2) **<u>हिंदू धर्म से अलगाव:</u>** ब्राह्मणों के अलगाव का उद्देश्य कणबीयों को हिंदू धर्म के रीति–रिवाजों, रीति–रिवाजों और परंपराओं से अलग करना था। हिंदुओं में वैदिक विवाह चोरी[66] पद्धति से होने वाली शादियां बंद हो गईं और खाना में मुखी द्वारा निकाह शादियां शुरू कर दी गईं।

एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य मृत्यु के बाद दाह–संस्कार (चिता पर) करने की हिंदू परंपरा को बंद करना और इसके स्थान पर इस्लामी दमन विधि शुरू करना था।

इस प्रकार ब्राह्मणों द्वारा किए जाने वाले सभी हिंदू अनुष्ठान बंद कर दिए गए, और अनुष्ठान खाना के मुखी द्वारा शुरू किए गए। ब्राह्मणों को दूर रखकर लोगों को हिंदू धर्म से अलग करने से धीरे–धीरे इस्लाम में उनकी आस्था बढ़ेगी, उनकी योजना स्पष्ट हो गई।

65 वंशवृक्ष
66 चोरी = 4 खंभों पर बना विवाह भवन जहां नवविवाहित जोड़े अग्नि की उपस्थिति में विवाह के फेरे लेते हैं।

17 संवत् 1832 का संकल्प-हिन्दू जड़ों को काटने का काला संकल्प

<u>मुमना मुस्लिम की पहचान पैदा हुई:</u> सैयद वालिमियां और प्रागजी काका अपने मकसद में कामयाब होने लगे। धीरे–धीरे कणबी जाति में अर्थात क. क. पाटीदार जाति में ;

1) विवाह की शुरुआत निकाह प्रथा और मुर्दा को दफनाने की रस्म से हुई।

2) ब्राह्मणों ने पूर्णतः धार्मिक अनुष्ठान बंद कर दिए।

3) एक कृष्ण जन्माष्टमी[67] को छोड़कर लगभग सभी हिंदू त्योहार मनाना बंद कर दिए गए

4) हिन्दू धर्म शास्त्र पूर्णतया बन्द हो गये। अब सैयद इमामशाह द्वारा तैयार किये गये इस्लामी धर्मग्रन्थों ने जाति के धर्म पर एकाधिकार स्थापित कर लिया।

5) कोई भी हिंदू मंदिरों और हिंदू धार्मिक आयोजनों में नहीं जा सकता था और अगर वे जाते थे, तो उस समय के काथकथित आगेवाने ने जुर्माना लगाना शुरू कर दिया। अतः सार्वजनिक रूप से लोगों को हिंदू धर्म से वंचित किया जाने लगा।[68]

ऐसे कारणों के संबंध में क. क. पाटीदार जाति के लोगों की पहचान मुमना है।[69] कच्छ में एक मुस्लिम के रूप में उभरे 35:पृष्ठ 148 121:पृष्ठ 355 ।

114. सनातनी क. क. पाटीदार यह जाति के लिए इतिहास का एक काला दिन है। संवत 1832 के संकल्प के रूप में जाने जाने वाले इन प्रस्तावों ने जाति को वैचारिक विनाश के सबसे घातक चरण में धकेल दिया। जिसे संकट या संकट की स्थिति कहा जाता है । जिसके बारे में हम आगे देखेंगे।

115. **<u>स्थिति को सही ढंग से समझें:</u>** आइए आपको याद दिला दें कि विचारधारा के विनाश के चरणों को पहले चित्र के माध्यम से समझाया गया था, बिंदु (23) देखें, उस चित्र के माध्यम से हम सबसे पहले सही ढंग से समझेंगे कि क. क. पाटीदार जाति भयंकर संकट की स्थिति में पहुँच गयी है। स्थिति को समझने के लिए मैं आपको याद दिला दूं कि इसके बाद वैचारिक विनाश का केवल एक ही चरण बचा है, और वह है हिंदू पहचान को त्यागना और सार्वजनिक रूप से इस्लाम की पहचान को स्वीकार करना, जो कि धर्मांतरण का अंतिम चरण है।

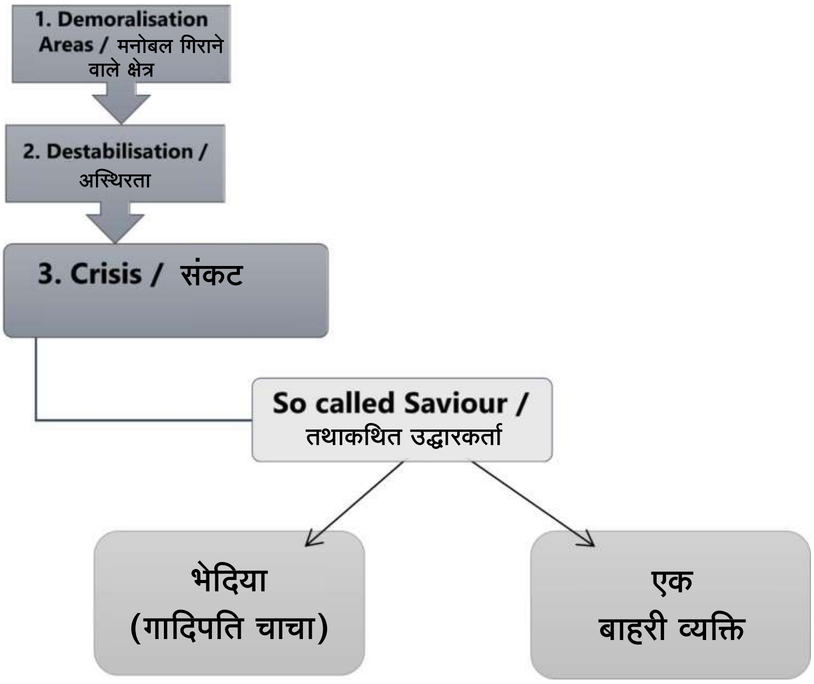
कृपया ध्यान दें कि संवत 1832 के संकल्प के समय, पिराना के गादीपति काकाओं और गांव–गांवों के मुखी जाति के व्यक्ति थे । जबकि धार्मिक नेता सैयद वालिमियान जाति के बाहरी व्यक्ति थे ।

67 कृष्णजन्माष्टमी – विश्रामबापा नकराणी को दिये गये वचन के कारण। बिंदु देखें (97).

68 दंड = संत सेवादास बापू बंधय ईश्वर आश्रम के वरिष्ठ थे। उन्हें दे 24 मार्च 2012 को दिए गए एक वीडियो इंटरव्यू में कहा गया था कि लोग भीठ (दीवार) पकड़कर (यानी दीवार के पीछे छिपकर) हिंदू धर्म की सार्वजनिक कहानियां/सप्ताह सुनते थे। क्योंकि पकड़े जाने पर जातिगत दुराचारियों पर जुर्माना लगेगा। वीडियो लिंक: https://abkkpsamaj.org/go/fn68

69 मुमना = मोमना = इस्लाम को मानने वाले =आस्तिक35:पृष्ट 148

17 संवत् 1832 का संकल्प-हिन्दू जड़ों को काटने का काला संकल्प



ऊपर दिखाए गए चित्र में आप देख सकते हैं कि जब जाति संकट की स्थिति में पहुंच जाती है तो धर्मांतरण के कार्य को पूरा करने के लिए 2 प्रकार के व्यक्तियों की आवश्यकता होती है। जो है ;

1) **<u>अंदरूनी सूत्र:</u>** यदि आप संवत 1832 के प्रस्ताव के बारे में सोचते हैं, तो आपको पता चलेगा कि धर्म के मामले में ब्राह्मणों को हटा दिया गया था और उनके स्थान पर खाने के मुखी को धार्मिक कार्य की जिम्मेदारी दी गई थी। गांव–गांव के खानों के प्रमुख और प्रबंधक पूर्ण और निर्विरोध सत्ता में आ गए। यह कानून था कि उनके मुंह से जो कुछ भी निकलता था उसका पालन करना पड़ता था। और इन प्रमुखों का संचार पिराना के काका के माध्यम से होता था 88:पेज 10 ।

2) **<u>बाहरी व्यक्ति:</u>** सतपंथ के धार्मिक गुरु मुस्लिम सैय्यद इमामशाह यानी मुस्लिम सैय्यदों के वंशज हैं। सैयद समय–समय पर अनुयायियों को उपदेश देने और धर्म को कायम रखने के लिए कच्छ आते थे। उनका स्वागत एक राजा की तरह किया गया. गाँव में वे लोग नीचे खाने के अंदर जाते थे, जिनका मुखिया उनकी सेवा में होता था। सैय्यद इस मुखी को आवश्यक निर्देश देते थे और धार्मिक दासों, करो और लागा से राजस्व का अपना हिस्सा एकत्र करते थे (बिंदु 105 देखें)। आजकल क.पा. ऐसे माहौल में जहां जाति में कोई मुस्लिम धर्म गुरु नहीं होना चाहिए, कई जगहों से सुनने में आता है कि सैय्यद अपना काम सार्वजनिक रूप से करने की बजाय गुप्त रूप से पिछले दरवाजे से करते थे। शोधकर्ता ऐसे छिपे हुए सर्वरों के लिए हिडन पीर (अदृश्य पीर / छुपा हुआ पीर / छुपा पीर) शब्द का उपयोग करते हैं । 151:पेज 154 141 31 138 33:पेज 112 और 119 से आगे 158:पेज 224 और 233 138:पेज 147 ।

17 संवत् 1832 का संकल्प-हिन्दू जड़ों को काटने का काला संकल्प

इतिहास में देखा गया है कि जाति के कुछ दुष्ट लोग अपने एजेंट बना लेते हैं और अपनी अत्याचारी एवं निरंकुश शक्ति का प्रयोग करके अपना काम करते हैं। इस प्रकार इन दो प्रकार के (अंदर और बाहर) व्यक्तियों के हाथ में। क. क. पाटीदार जाति प्रताडित हो रही थी 148:पेज 34 ।

116. **<u>एक बाहरी व्यक्ति क्या करता है इसका एक उदाहरण:</u>** इस चरण के अनुरूप, एक बाहरी व्यक्ति इस चरण में क्या करता है इसका एक उदाहरण जानने लायक है। वह लोहाना जाति से हैं. इमामशाह के दादा पीर सदरुद्दीन को मानने वाला लोहाना जाति के सतपंथियों का समुदाय , जिसे आज हम खोजा मुसलमानों के नाम से जानते हैं, इतिहास में भी ऐसी ही स्थिति में खड़ा था। बात सन 1848 तक की है. लोहाना समुदाय का एक बड़ा वर्ग, जो इस समय तक सतपंथ को मानता था, सतपंथ को कलियुग का हिंदू धर्म मानता था और खुद को हिंदू मानता था।

वर्ष 1848 में एक बाहर व्यक्ति ने आकर लोहाणा समाज पर अपना अधिकार जमाने की कोशिश की। वह शख्स था आगा खान. लोहाना जाति के कुछ अंदर लोगों की मदद से, वह यह स्थापित करने में सफल रहे कि सतपंथ के इष्टदेव निष्कलंकी स्वयं है नारायण।

मामला बॉम्बे हाई कोर्ट तक पहुंच गया. वर्ष 1866 का प्रसिद्ध आगा खान मामला, जिसका उल्लेख पिछले बिंदुओं (60), (61) और (92) में किया गया है, यह तय करने का मामला था कि सतपंथ मूल रूप से हिंदू धर्म था या मुस्लिम धर्म। तब इस लोहाना समाज के धार्मिक स्थल जमातखाना थे। वह विचारधारा के विनाश से पहले सभी चरणों से गुजरकर संकट की स्थिति तक पहुँच चुके थे। संकट के समय उस समाज की डोर कुछ भीतरी और बाहरी लोगों के हाथ में चली गयी। और उस समय आगा खान बॉम्बे हाई कोर्ट में यह साबित करने में सफल रहे कि सतपंथ धर्म एक मुस्लिम धर्म है और उस धर्म के इष्टदेव भगवान निष्कलंकी नारायण हैं।

इसके परिणामस्वरूप लोहाना जाति धीरे–धीरे पूर्णतः मुस्लिम हो गयी। और खोजा मुस्लिम के रूप में उनकी पहचान और अधिक स्पष्ट हो गई। उनकी आज की पीढ़ी के अधिकांश लोग अपना सच्चा धार्मिक इतिहास भी नहीं जानते। वे नहीं जानते कि उनके पूर्वजों को यह विश्वास दिलाकर इस्लाम की ओर आकर्षित किया गया था कि सतपंथ ही कलियुग का सच्चा हिंदू धर्म है। इसके बाद धीरे–धीरे उसका ब्रेनवॉश किया गया और ऊपर बताई गई युक्तियों से उसका धर्म परिवर्तन कराया गया। आज नई पीढ़ी खुद को मुसलमान कहने में गर्व महसूस करती है। जिन लोगों ने अपने पूर्वजों को धोखा दिया आज वे उन्हीं लोगों को अपना नायक मानते हैं, जो उनके लिए दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण है।

117. **<u>खतरनाक भूमिका:</u>** इस उदाहरण से आप समझ जायेंगे कि एक अंदर और बाहर का व्यक्ति कितना खतरनाक हो सकता है। उस भूमिका को पिराना की पुस्तक पॉल 88 के पृष्ठ 12 के पहले पैरा में बहुत अच्छी तरह से वर्णित किया गया है , जिसे यहां शब्दशः उद्धृत किया गया है ;

17 संवत् 1832 का संकल्प-हिन्दू जड़ों को काटने का काला संकल्प

पिराणा–सतपंथ के मूल उत्पादकों और संस्थापकों का पाखंड और झूठ, काकाओं और सैयदों का स्वार्थ, पाजी पटेलों और निम्न स्तर के आगेवानो के काले कारनामे, पापी और उपद्रवी हरामखोरों की मोगलई दमन नीति, और इन सबके द्वारा बनाए गए विभाजनकारी विधर्म–जाल में फंसे पाटीदारों के झुंड की हृदय विदारक स्थिति...

118. **विचारधारा के विनाश का उद्देश्य पर्याप्त:** आइए नीचे दी गई तालिका से एक बार फिर देखें कि इस चरण के अलावा विचारधारा के विनाश के कितने चरणों को पार करने में पिराना सतपंथ के प्रचारक अब तक सफल हुए हैं। और अभी कितना काम बाकी था.

परिवर्तनों/ ट्रैकिंग तालिका का निरीक्षण करें		
वैचारिक तोड़फोड़	**विनाश विवरण**	**विनाश स्थिति**
1. मनोबल गिराने वाले क्षेत्र	19	पूर्ण
1.1. धर्म		✓(70)
1.2. शिक्षा	20.2	✓ (89)
1.3. सामाजिक जीवन	20.3	✓ (88)
1.4. शक्ति संरचना	20.4	✓(77.1)
1.5. कानून एवं व्यवस्था	20.5	✓(77.2)
1.6. नेतृत्व	20.6	✓(77.3)
2. अस्थिरता	21	पूर्ण
2.1. वित्त	21.1	✓(105)
2.2. कानून एवं व्यवस्था	21.2	✓(106)
2.3. मीडिया	21.3	✓(107)
3. संकट	23	**पूर्ण**
3.1. तथाकथित उद्धारकर्ता अंदरूनी सूत्र एक बाहरी व्यक्ति	23.3	**✓(115)**
4. स्थिति का सामान्यीकरणय	24	बाकी
4.1. एक नये समाज की स्थापना – 2 चरणों में		बाकी

18

संकट की अवस्था
पूर्ण मुसलमान बनने के कगार पर

119. **आपातकाल क्या है ?:** आपातकाल एक भीषण आपात की स्थिति है जिसमें भारी हानि (विनाश) होना लगभग निश्चित होता है। पूर्ण विनाश की संभावना बहुत कम अर्थात लगभग शून्य होती है।

120. **क. क. पाटीदार जाति में संकट के लक्षण:** क. क. पाटीदार उस समय जाति (कणबी जाति) की धार्मिक और सामाजिक विशेषताओं से यह पता चल जाएगा कि यह जाति धार्मिक रूप से कितने भयंकर संकट में पहुँच गई थी। उनके रीति–रिवाज और रीति–रिवाज मुसलमानों जैसे हो गये 121:पृष्ठ 342 । इसकी कुछ विशेषताएँ इस प्रकार थीं।

नोट: उल्लिखित विशेषताओं के साथ नीचे दिए गए संदर्भ केवल उदाहरण स्वरूप हैं। इतिहास में ऐसे कई सन्दर्भ हैं।

1) **सच्चा हिंदू धर्म खो गया:** हिंदू धर्म सैकड़ों वर्षों से खो गया है। कृष्णजन्माष्टमी को छोड़कर लगभग सभी हिंदू त्यौहार छूट गए। 88:पेज 9 ।
2) **हिंदू धार्मिक कहानियों पर बंदी:** हिंदू धार्मिक कथाओ को सुनने पर 68 की सजा होती थी।
3) **शिक्षा से वंचित:** शिक्षा का स्तर बहुत कम (लगभग शून्य) था (96:पेज 6) । बच्चों को पढ़ने की अनुमति न देना 56:मई–1972, पृष्ठ 2 (522 में से 195) 71:पृष्ठ 23 । वर्ष 1904 में पूरी जाति में केवल 10 लोग ऐसे थे जिन्होंने पांचवीं कक्षा तक पढ़ाई की थी 86:पेज 11 6:पेज 245 । इससे आप शिक्षा के स्तर को समझ सकते हैं।
4) **अली बने इष्टदेव:** मुर्तजा अली तालिब सतपंथ के इष्टदेव बने। जिन्हें निष्कलंक नारायण भी कहा जाता है । ऊपर बिंदु (57) देखें . 141: पृष्ठ 45, 53, 54, 58, 60 52 139: पृष्ठ 463 से आगे 45: पृष्ठ 81 53: पृष्ठ 40, 48 ।
5) **इस्लामी आयतें:** धार्मिक समारोहों में इस्लामी आयतें पढ़ी जाती थी 126 ।
6) **धार्मिक गीतों में मुसलमानों की प्रशंसा:** भजनों की जगह इस्लामी भजन गायन एक ज्ञान [70] (गोरवानी का गिनान 6ठा, कडी 4 की दूसरी पंक्ति) में कहा गया है कि अथर्ववेद में मांभांखिया, सब हिंदू होंगे मुसलमान 58:पेज 295 88:पेज 488 126:पेज 285 146:पृष्ठ 225. एक ऑडियो–वीडियो [71] भी सामने आया, जिसमें महिलाएं किसी खाने में यह गिनाना गाती हुई सुनाई देती हैं।

70 ज्ञान = ज्ञान शब्दों का अपभ्रंश। कुरानो संदेश आपता धार्मिक गीतो.43अथर्व120:पृष्ठ 43140156:पृष्ठ 2988:पृष्ठ 483
71 विडियो : https://abkkpsamaj.org/go/fn71 – 1:52 मिनट पर जाएं.

7) **<u>इस्लाम के नायकों की पूजा:</u>** सतपंथियों के धार्मिक ग्रंथ इस्लाम के नायकों जैसे अल्लाह, मुहम्मद, अली आदि की प्रशंसा करते हैं। 12 13 14 15 16 20 58 81 126 102 146। ऐसे अनेक ग्रंथ हैं और सतपंथ की मूल पांडुलिपियाँ भी अनेक स्थानों पर हैं।

8) **<u>प्रार्थना और अल्लाह का नाम:</u>** सुबह उठते समय या रात को सोते समय कुछ लोग अल्लाह का नाम लेने लगे थे और 35:पेज 148 72:पेज 36 6:पेज 505। 112 :पेज 8 6:पेज 76। आना के मुखी नमाज़ पडना भी सिखाते थे।

9) **<u>कुरान पर विश्वास:</u>** कलियुग में सच्चा वेद कुरान है, जिसे अथर्ववेद कहा जाता है। इसलिए उन्होंने कुरान पर विश्वास करना शुरू कर दिया 35:पृष्ठ 148 56:मार्च–1972 पृष्ठ 28 (522 में से 126) 88:पृष्ठ 127, 358, 364, 372। 157:पेज 24 37:पेज 183 27:पेज 1164 27:पेज1172)

10) **<u>पावल / नूर / अमी:</u>** ईरान में कर्बला[72] ऐसे ऐतिहासिक दस्तावेज़ हैं जो बताते हैं कि पावल / नूर / अमी गोलियाँ मिट्टी, इमाम शाह की कब्र पर प्लास्टर और वीर्य के मिश्रण से बनाई गई थीं 56:जनवरी–1972 संस्करण का तंत्री लेख 89:पेज 7 81:पेज 9 88:पेज 127,128 81:पेज 9 सैय्यदों की चूक भी मिलाई जाती है 114:पेज 70 6:पेज 218।

11) **<u>मोमना / मुमना मुस्लिम के रूप में पहचान:</u>** जाति पहचान मोमना[73] मुसलमान हो गई। 35:पेज 148 121:पेज 342 और 355 41:पेज 214 (बाद में जोड़ा गया41:पेज 188)।

12) **<u>जीवन शैली:</u>** किसी से मिलते समय, हिंदू प्रथा रामराम के बजाय मुस्लिम शब्दों हे जिंदा.. कायम पाया / पीरशाह के साथ एक–दूसरे का स्वागत करने लगे थे।[74] ने ऐसी जीवनशैली अपनाई गई। 88:पेज 375, 429 148:पेज 23।

13) **<u>पीर शाह का जाप:</u>** हिंदू देवताओं के जाप के बजाय पीर शाह, पीर शाह का जाप करने लगी थी। 88:पेज 331, 375 113:पेज 5 6:पेज 62।

14) **<u>इस्लाम के तीर्थस्थल:</u>** गांव–गांव में मुस्लिम पीरों की मजार और दरगाहों पर मत्था टेकना आम हो गया था।

15) **<u>इस्लामिक रीति–रिवाजों को अपनाना:</u>** सभी हिंदू रीति–रिवाजों को बंद कर दिया गया और इस्लामिक रीति–रिवाजों को अपना लिया गया। लग्न निकाह विधि से कलमा[75] और मृत्यु के बाद नमाज़ पढ़ना और दफ़न करना[76] विधियां की जाने लगी।

72 करबला = अलीना देखकर इमाम हुसैन लड़ेमान मर गया. हाल ही में इराक देशमान
73 मोमना = मोमना
74 अभिवादित = आवाहन आपवो = स्वागत = नमस्कार
75 कलमा लगते वक्त जो कलमा बोलता है वो यहीं रहता है 114 : पृष्ठ 72 6 : पृष्ठ 220.
76 दफ़न बहुत जानकार मत बनो 114 : पृष्ठ 73 6 : पृष्ठ 221.

16) **<u>सैय्यदों को हरिवंश (विष्णु का वंश) ब्राह्मण/हुसैनी ब्राह्मण माना जाता था:</u>** हिंदू भगवान विष्णु का हरिवंश।[77] सैयद इस्लाम शाह और उनके बाद उनके वंशजों तक, जो सभी मुस्लिम हैं, इन पीढ़ियों को हरि वंश का नाम दे दिया गया। 113:पृष्ठ 5 6:पृष्ठ 63 88:पृष्ठ 170 55। सैय्यदों को कलियुग के सच्चे ब्राह्मण के रूप में स्वीकार किया गया 86:पृष्ठ 34 6:पृष्ठ 268।

17) **<u>धर्म गुरुओं सैय्यदों:</u>** असली ब्राह्मणों को निम्न बतलाकर उस पर प्रतिबंध लगाया गया। इसके बजाय इमामशाह के वंशजों के सैय्यदों को सच्चा ब्राह्मण माना गया, उन्हें धर्म गुरु के रुप में माना गया। 111: पृष्ठ 4,15 और 25 6: पृष्ठ 24, 34, 43।

18) **<u>सैय्यदों का झुठा यानि प्रसादी:</u>** कणबी के घर सैय्यदों का आना–जाना बढ़ गया। सैय्यदों की झुठन को अमृत प्रसाद के रुप में प्रचारित किया गया। 56:मार्च–1973, पेज 5 (522 में से 103) 88:पेज 499 114:पेज 65, 67 6:पेज 214 और 216 40:पेज 99।

19) **<u>सैय्यद का मतलब होता है शुद्धः</u>** छूआछूत के युग में ऐसी मान्यता थी कि सैय्यद को छूने से आदमी पवित्र हो जाता है।

20) **<u>धार्मिक कर के नाम पर ज़बरदस्ती लूट:</u>** धर्म फैलाने के नाम पर दशांद, लागा धार्मिक कर की वसुली के लिए पिराना के काका की सवारी[78] कच्छ और गुजरात में समय–समय पर आती थी। बिंदु देखें (105) 88:पेज 9, 31 148:पेज 25, 117, 118 और 145 ।अगर पैसा नहीं तो कर्ज ले लो,संपत्ति बेच दो, संपत्ति को महाजन के पास गिरवी रख दो,जो चाहो करो लेकिन लागा–दशांद देना ही पड़ता था। मृत्यु के पश्चात भोजन करना ही पड़ता था नहीं तो मुख्य आत्मा को स्वर्ग नहीं मिलेगा ऐसा डर बताया जाता था। 113:पेज 6 6:पेज 63।

21) **<u>विदेश में काम करने के लिए जाने की इजाजत नहीं:</u>** अगर कोई व्यक्ति विदेश जाता है तो उसका धर्म भ्रष्ट हो जाएगा। यहां तक कि अगर कोई चला गया है और जब वह वापस आता है, तो उसे सीधे घर नहीं जा सकता। उन्हे रसोई में जाने से पहले पावल पीना होता था. उसको अपराध कर और दसोंद – विसोंद का पैसा देना होता था। जुर्माना देना होगा . जब तक खाना में जाकर छींटे[79] न मारे तब तक वो अपने घर में खाना–पीना नहीं कर सकता था।

22) **<u>खतना:</u>** अनौपचारिक चर्चाओं में ये बातें सुनने को मिलती हैं 148:पेज 114 । इसी प्रकार द केस ऑफ खोम्बडी नामक अध्याय भी बहुत प्रसिद्ध है। जिसमें नेताओं की एक समिति रामजी काका के खतना के बारे में जांच करने के लिए बैठती है। लेकिन ऐन वक्त पर मवालिओ ने भूमिका निभाई और जांच रोक दी गई. ऐसा कहा गया था कि अगर चाचा के खतना की जांच की गई, तो मां के मन में मुस्लिम होने की धारणा स्थायी हो जाएगी और अन्य हिंदू कनबियों को धुत्कारेंगे। इसी डर से ऐन वक्त पर जांच को रोक दिया गया. यहां बिल्कुल निश्चित तौर पर कुछ

77 हरिवंश पीरनामन आवेल ईमामशाहना वंशज बकारशाह बावनी दरगाहमान हरिवंशनो मार्बलमन कोटरेली यादि जोवा मे छे27:पृष्ठ 294. गुजरात लेवा पाटीदार समाजो एक नैनो वर्ग इस बेकरशाहने माने है। बकारशाहना गादीपति काकनुम इमादशाहनी दरगाहना मुख्य कार्यक्रम मान मंच ऊपर विशेष स्थान होय छ.

78 सवारी = वेल पाण कहवामन आवतु 148 : पृष्ठ 109.

79 छीटें = खाने के मुख शुद्ध/पावन करवा दुआँ 148 पृष्ठ 22 और 23बोली व्यक्ति पर पानी हाथ से छँटे। अपने माता–पिता के सामने छटपटाने का प्रयास करो।

भी नहीं कहना चाहता 148:पेज 119, 120 और 130 । अधिक जानकारी के लिए रमेशभाई वागड़िया का 13 अक्टूबर 2005 का पैम्पलेट देखें। पहले भी ऐसी बातें सामने आती रही हैं 94 : पेज 11। 18 जनवरी 2023 को वाढांय में सतपंथी और सनातन के नेताओं की बैठक हुई, वहां भी खतना की बात सामने आयी. वहां के एक भाई ने पूरे विश्वास के साथ दावा किया कि आज भी कुछ लोगों का गुप्त रूप से खतना किया जाता है। जिसका उल्लेख वाढांय की कार्यवाही पुस्तिका में भी किया गया है। (बाद में जोड़ा गया: 41: पृष्ठ 214 40: पृष्ठ 98)

23) **अनेक अत्याचारो:** आर्थिक शोषण, उत्पीड़न जैसे अनेक प्रकार के अवर्णनीय अत्याचार होते थे, जिन्हें आप समझ ही गए होंगे। क्योंकि सभी अत्याचारों के बारे में लिखा या बोला नहीं जा सकता। इसके लिए बुद्धि और कल्पना शक्ति की आवश्यकता है 111:पेज 12 और 15 6:पेज 32 और 34 114:पेज 52 6:पेज 201 ।

24) **अन्य हिंदू समुदायों ने दूरी बनानी शुरू कर दी:** सतपंथी एक मुस्लिम धर्म है.. अन्य हिंदू जातियों ने कणबियों को अपने से दूर रखा। उन्हें ऊपर से पीने का पानी देने जैसे व्यहार करने लगे। 56:फरवरी–1972, पृष्ठ 10 (522 में से 68) 59:पृष्ठ 24 113:पृष्ठ 3 6:पृष्ठ 61 ।

25) **काकाओं और मुखीयों के हाथ में पूर्ण शक्ति:** क. क. पाटीदार जाति में, काकाओं और मुखीओ के पास जबरदस्त शक्ति थी, जिसके खिलाफ जाने की कोई हिम्मत नहीं करता था 148:पृष्ठ 24 ।

26) **मरण तुल्य दुर्दशा:** पिराना सतपंथ के कारण जाति का इतना अधोपतन हो गया कि गरीब ज्ञातिगण मरणतुल्य दुर्दशा भोग रही थीं 88:पेज 20 । भोले–भाले जाति बंधुओं को निर्धन बनाकर बर्बाद करने का समय आ गया था। 148:पृष्ठ 26 । ऐसा कहा जाता था कि कनबी एक मानव है कि पशु है 130:पेज 5 6:पेज 105।

27) **इस्लाम पूरी तरह से स्थापित हो गया:** इस्लाम जाति के मन–मस्तिष्क में संपूर्ण रुप से स्थाकित हो गया। और अधिकांश लोगों ने इसे गर्व के साथ स्वीकार भी कर लिया। 88:पेज 16 ।

28) **बस नाम बदलना बाकी था:** इन सभी विशेषताओं को देखकर आपको एहसास होगा कि मुस्लिम बनने के लिए बस मुस्लिम नाम रखना बाकी था। बाकी लगभग सभी चीजें मुसलमानों की अपना अपना ली गई थी।

संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि ऊपर वर्णित जाति की विशेषताओं से पता चलता है कि जाति मौत के जबड़े में फंस गई थी (हिंदू दृष्टिकोण से) एक तरफ काका /मुखी और दूसरी तरफ सैयद थे। जाति ऐसी स्थिति में पहुँच गयी कि वह मृत्यु के मुख से बच न सकी।

18 संकट की अवस्था - पूर्ण मुसलमान बनने के कगार पर



121. **<u>इस दयनीय स्थिति का वर्णन नारायण बापा के शब्दों में किया गया है:</u>** क. क. पाटीदार जाति के महान आद्यसुधारक श्री नारायण रामजी लिम्बानी ने अपनी जाति की इस दयनीय स्थिति का वर्णन करने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया था, वे भी बहुत कुछ कहते हैं। जो निम्नलिखित है।

स्वार्थी नेताओं ने अत्याचारी शक्ति का इस्तेमाल किया और कच्छ कणबी कोम को पूरी तरह से पंगु बना दिया। कच्छ की कणबी जाति की वीरता और खमीर को भुलाकर पूरी जाति को नपुंशक बनाकर गुलामी में भटकते हिजड़ों जैसा स्थिति में छोड देने के लिए तथाकथित नेता दोषी हैं। 85:पेज 1 ।

वे कणबी जाति के कुछ दमनकारी नेताओं के कई प्रकार के उत्पीड़न से बच नहीं सकते 85:पेज 2।

122. ऊपर बताए गए फीचर्स के साथ आधार और खुलसा भी दिया गया है. जिससे पाठक मित्रों को यह अंदाजा हो जायेगा कि क. क. पाटीदार हिंदू धर्म की दृष्टि से **जाति समाप्ति के कगार पर थी । बचने का कोई मार्ग दिखाई नहीं देता था।**

स्थिति कितनी गंभीर होगी इसकी कल्पना मात्र से ही रूह कांप उठती है.

प्रहर 4

1805 से 1960
155 वर्ष

सतपंथ के विरुद्ध विद्रोह - जागरण - घर वापसी

1805 से 1902 विद्रोह काल - केशरा बापा
1902 से 1925 जागृति काल - नारायण बापा
1925 से 1960 घरवापसी काल - रतनशी बापा

19

सतपंथ के विरुद्ध विद्रोह
जागरण - घर वापसी

123. **टर्न, जाति ने यू – टर्न कब लिया ?:** विचारधारा का विनाश काफी हद तक पूरा हो चुका था, फिर धार्मिक रूप से टर्न कब और कैसे आया, यह अब हम देखते हैं। आपके मन में यह सवाल उठ सकता है कि कच्छ की कट्टु पाटीदार जाति इस विचारधारा को नष्ट करने की साजिश में किस हद तक फंसी थी कैसे और कहां से वापस आई ?

अगर हम पहले बताए गए पॉइंट (18) में दिखाए गए चित्र (ग्राफ़िक्स) को देखें तो सब कुछ आसानी से समझ आ जाएगा। जो इस प्रकार है.



उपरोक्त ग्राफ़िक में आप देख सकते हैं कि कच्छ कटवा पाटीदार जाति में अपने धर्म परिवर्तन के कारण सार्वजनिक रूप से मुस्लिम पहचान स्वीकार करने की स्थिति थी। जिसे एक प्रकार से मृत्यु का मुख कहा जा सकता है 85:पेज 10 । क. क. पाटीदार सनातन जाति का उद्धार के लिए संतों, जाति सुधारकों, नेताओं, माताओं, युवाओं और बुजुर्गों ने अकल्पनीय योगदान दिये। धार्मिक और वैचारिक रूप से मृत्युशय्या पर पड़ी यह जाति को नष्ट होने से बचाया जा सका।

124. **क. क. पा. सनातन जाति के संतों और बुजुर्गों की महानता का विचार करें:** इन महान दुर्लभ व्यक्तियों ने जाति के लिए विधर्मियों के ठेकेदारों के कठोर अत्याचारों को कैसे सहन किया होगा ? वह चाहे तो अपनी रोटी स्वयं खा सकते थे। लेकिन वे व्यक्तिगत हित की अपेक्षा जाति हित के विचार को अधिक कल्याणकारी मानते थे। कितने दृढ़ बुद्धि और दैवीय शक्ति वाले पुरुष रहे होंगे, जिन्होंने विधर्मी बाघ के जबड़े में फंसी अपनी जाति को बचाने का असंभव और अकल्पनीय कार्य किया।

अनेक जातियाँ विधर्मियों की ऐसी चालों का शिकार हो चुकी हैं। लोहाना जैसी चतुर जाति के बारे में सोचें। जिसके लिए कहा जाता है कि चतुराई उन्हें गले से ही मिलती है, लोहाना जैसी चतुर जाति का एक वर्ग, जो इस षडयंत्र का शिकार हुआ, इससे बच नहीं सका। और आज वह समाज खोजा मुस्लिम बन गया।

तब आपको यह जानकर गर्व होगा कि **कच्छ कड़वा पाटीदार सनातन जाति के** सनातनी[80] संत और बुजुर्ग कितने महान होंगे कि वे लोग इस जाति को बचाने के इस कार्य में सफल हुए। बड़े विश्रामबापा नकराणी के बारे में हम पहले ही देख चुके हैं। अब आइये उनके अलावा अन्य महान क्रांतिकारी बुजुर्गों और संतों पर नजर डालते हैं।

इस किताब में हम कडवा पाटीदार जाति के साथ साजिश के बाद **सफल घर वापसी और उसके खिलाफ संघर्ष की कहानी** देखेंगे ।

80 सनातन जाति = क. क. पा. जाति में दो विभाग हैं. एक है के.के.पी.ए. इस्लाम आदि के धर्म परिवर्तन के षडयंत्रों के विरुद्ध लड़ने वाली सनातन जाति क है। क. पा. सतपंथ जाति, जो इस्लाम के एक संप्रदाय सतपंथ का पालन करती है।

20

विद्रोह का पहला बिगुल
केशरा परमेश्वरा का आंदोलन



केशरा परमेश्वरा

125. **<u>पृष्ठभूमि:</u>** केशर बापा का जन्म विक्रम संवत 1824 चैत्र सूद 15 (पूनम), दिनांक 02 अप्रैल 1768 को ग्राम नेत्रा में हुआ था। नरवीर केशर परमेश्वरा[81] श्री केशरा (परमेश्वरा) मुखी सांखला को जीवन एवं महान कार्यों और जीवन की घटनाओं का वर्णन करने वाली एक सुंदर पुस्तक 21 अप्रैल 1983 को प्रकाशित हुई थी। यह लेख इसी किताब पर आधारित है.

उनके जीवन पर समय–समय पर संक्षिप्त लेख भी प्रकाशित होते रहते हैं। ऐसा ही एक बढ़िया लेख श्री अखिल भारतीय कच्छ कड़वा पाटीदार समाज द्वारा प्रकाशित कच्छ पाटीदारों का इतिहास 4 नामक खंड के पृष्ठ 82 पर भी छपा है।

<u>इन किताबों में[82] शायद आप जान सकते है ;</u>

1) काशी जाने वाले कडवा पाटीदार इमामशाह फकीर के चक्कर में कैसे पड़ गये।
2) कड़वा पाटीदारों का कच्छ में प्रवास और राजा से मेल–मिलाप। कड़वा पाटीदार जाति को विशेष पुलिस और न्याय प्रणाली से अलग करने की शर्त।
3) केशरा बापा का जन्म और उनके माता–पिता, उनकी शिक्षा आदि।
4) शारीरिक बनावट, पहनावा का प्रभाव। राज्य में धनिष्ट संबंध बाप दादा का व्यवहार और घर में रिद्धि सिद्धि। कच्छ की विषम स्थिति में उन्होंने[83] अकाल के साल में लोगों की मदद की. उनको नरवीर और परमेश्वरा की जो उपमा पाई उसके पीछे का तथ्य यह है।
5) सतपंथ[84] का त्याग और स्वामीनारायण धर्म[85] अधिकार करना साथ में धर्म के झगड़े आरंभ हुए।

81 केशर परमेश्वर = जन्म नाम केशर तेजा सांखला।
82 स पुस्तक के अंत में संदर्भ सूची में ग्रंथ सूची 96 97 देखें
83 वर्ष सूखा =सूखे।
84 सतपंथ धर्म को पुराना धर्म भी कहा जाता है। अधिक जानकारी के लिए एक्रोनिम्स देखें
85 स्वामीनारायण कोई धर्म नहीं बल्कि हिंदू धर्म का एक संप्रदाय है। मूल पुस्तक में धर्म शब्द का प्रयोग हुआ है भले ही वह एक सम्प्रदाय है इसलिए यहाँ भी वही शब्द प्रयोग किया गया है।

6) ग्राम विथोण में धर्म परिवर्तन के विरुद्ध तीन–क्षेत्र पंचायत की सभा में प्रस्तुत दलीलें।
7) सतपंथी द्वारा अपने सहयोगी अबजी भगत की अमानवीय पिटाई।
8) सतपंथियों द्वारा स्वामीनारायण के लड़का–लड़की के रिश्ते को तोड़ना।
9) सतपंथियों द्वारा उत्पीड़न के खिलाफ कच्छ के महारावश्री को शिकायत की गई।
10) महारावश्री द्वारा दोनों पक्षों में सुलह कराया गया। सतपंथी रैया नाकराणी ने सुलहनामा को फाड़ दिया।
11) महारावश्री का पुनः हस्तक्षेप और केशरा बापा को पूर्ण समर्थन।
12) स्वामीनारायण मंदिर का निर्माण और इसमें आने वाली बाधाओं से सफलतापूर्वक निपटना।
13) रानी साहेबा को अपने धर्म की बहन बनाना और उन्हें राजा का मामा मानना।
14) अपना हिस्सा संयुक्त[86] होने के बावजूद सतपंथी द्वारा प्रयोग किये जाने वाले बर्तन, गलीचे, नहीं दिये गये और उल्टे उसे अश्लील भाषा में अपमानित किया गया।
15) कच्छ के राजा के खिलाफ की गई शिकायत और उसके समाधान के पीछे का अनोखा तर्क।
16) 110 वर्ष से अधिक लंबे और संतुष्ट जीवन के गरिमापूर्ण, अंतिम दिन और जाति के लोगों को उनकी सलाह।

पुस्तकों में उपरोक्त के साथ–साथ उनके जीवन की अनेक प्रेरक घटनाओं की विस्तृत जानकारी दी गयी है। वह सारी जानकारी यहां दोहराई नहीं गई है.

इधर, केशरा बापा के क. क. पाटीदार हम जाति के हित के लिए किये गये संघर्ष, बलिदान के साथ–साथ जीवन और कर्म का भी अवलोकन करेंगे। हम देखेंगे कि कैसे केशरा बापा ने जाति द्वारा संवत् 1832 (दिनांक 18 जनवरी 1776) का काला प्रस्ताव के विरुद्ध[87] ने जोरदार संघर्ष किया और सफल हुए।

126. **<u>सतपंथ के प्रचारक निर्विरोध आगे बढ़ रहे थे:</u>** केशर बापा संवत 1832 में केवल 8 वर्ष के थे। अत: यह स्वाभाविक है कि संवत् 1832 का प्रस्ताव बनाते समय उन्होंने चर्चा में भाग नहीं लिया (बिंदु 111 देखें)। अतः प्रस्ताव पारित हो गया और धीरे–धीरे इसका क्रियान्वयन प्रारम्भ हो गया। सतपंथ के प्रचारक हिन्दू विचारधारा को नष्ट करने के उद्देश्य से निर्विरोध/बे रोक टोक आगे बढ़ रहे थे। इस बात का ध्यान रखना जरूरी है, ताकि अगले मामले की गंभीरता ठीक से समझ में आ जाए. 96:पेज 98।

127. **<u>स्वामीनारायण संप्रदाय को अपनाया:</u>** केशरा बापा और उनके 4 अन्य साथी परमेश्वर के पड़ोसी शिवजीभाई सुथार के घर पर स्वामीनारायण साधुओं के संपर्क में आए। साधुओं के माध्यम से सच्चे सनातन धर्म को जानने का उन पर अच्छा प्रभाव पड़ा। विक्रम संवत 1861 फागण वद 11 दिनक 26 मार्च 1805 को इन मित्रों ने शतपंथ धर्म को पूरी तरह से त्याग दिया और एक नया धर्म

86 संयुक्त = संगठित
87 संवत 1832 बिंदु (111)।

अर्थात शुद्ध सनातन धर्म का स्वामीनारायण संप्रदाय स्वीकार कर लिया 96:पृष्ठ 24 और 25। और तभी से जाति में धर्म के झगड़े शुरू हो गए 96:पेज 98।

उसके बाद, कुछ साल बाद विक्रम संवत (VSAK) 1865 फागण सुद 13 यानी 28 फरवरी 1809 को अहमदाबाद में उन्होंने श्रीजी महाराज के दर्शन किए और उनके हाथ से फिर से कंठी बंधवायी? 96:पृष्ठ 35।

128. **<u>धमकियों के बावजूद लोग शामिल हुए:</u>** केशरा बापा और उनके दोस्तों के घरों में बहुत परेशानी थी। पहले तो कई महीनों तक केशरा बापा और उनके दोस्तों के परिवारों ने भी स्वामीनारायण को स्वीकार नहीं किया। लेकिन धीरे-धीरे इसका उन पर अच्छा प्रभाव पड़ा। नेत्रा, घडाणी और अंगिया गांवों से अच्छा सहयोग मिलने लगा 96:पेज 26।

केशरा बापा और उनके दोस्तों को जो सार्वजनिक समर्थन मिला, वह स्वाभाविक रूप से सतपंथ के रूढ़िवादी अनुयायियों को अच्छा नहीं लगा। इसलिए उन्होंने शिवजी सुथार को बुलाया और धमकी दी कि स्वामीनारायण के साधु तुम्हारे घर नहीं आने चाहिए और अगर वो आ गए तो तुम्हारा गांव में रहना मुश्किल हो जाएगा. रोटी-व्यवसाय बंद हो जाएगा। गांव में रहना है तो जैसा हम कहेंगे वैसा ही करना होगा। इस धमकी का अच्छा असर हुआ और स्वामीनारायण साधुओं ने नेत्रा गांव में आना बंद कर दिया. विवाद से बचने के लिए स्वामीनारायण के साधु नेत्रा गांव के बगल के नागविरी गांव में सत्संग करने चले गए. तो, केशरा बापा और अन्य मित्र सत्संग के लिए नागविरी गांव पहुंच जाते थे। परंतु उन्होंने सनातन धर्म नहीं छोड़ा 96:पेज 27।

> सतपंथ के एक रुढ़िवादी अनुयायी को कितना डर होगा कि दूसरा समाज यानी बढ़ई समाज के भाई को इस तरह धमकाता है कि आदमी उस धमकी के अनुसार व्यवहार करने लगता है।

सनातन धर्म को स्वीकार कर लिया है[89] बात फैलती हुई जब धर्मगुरुओं तक पहुंची यह सुनकर उसे बहुत सदमा लगा। लेकिन तब उनसे कुछ नहीं हो सका. अत: उन्होंने सतपंथ के भाइयों से कहा कि आप किसी केशरा मुखी द्वारा स्वीकृत पुराने [90] धर्म के चक्कर में मत पड़ो। और इसके लिए बहुत सावधान रहने की सिफ़ारिश की गई है 96:पेज 28।

88 कल्पित धर्म = शतपन्थ धर्म
89 बवंडर = बवंडर
90 पुराना धर्म = सतपंथ धर्म
91 नवीन = सच्चा सनातन हिंदू धर्म

फिर भी, केशरा बापा के सहयोगियों की संख्या धीरे–धीरे बढ़ती गई और संगठन भी मजबूत होने लगा 96:पेज 28।

129. <u>खुली चुनौती:</u> विक्रम संवत 1872 भाद्रव वद 7 यानी 25 सितंबर 1815 को नेत्रा गांव में तत्कालीन पुराने पौराणिक 88 धार्मिक स्थल थे।[92] ने खड़े होकर चुनौती दी कि हमारा पुराना धर्म एक पाखंडी और विधर्मी धर्म है। हमें ऐसे धर्म में कभी विश्वास नहीं करना चाहिए। ऐसा कहकर वह पुराने धर्म की बुराइयों को उजागर करने लगे।

पुराने धर्म के पाखंडों और भ्रष्टाचारों को उजागर करने वाले उनके शब्दों ने पुराने धर्म की मजबूत इमारत की नींव को हिला दिया। कच्छ में उस समय की कट्टर पाटीदार जाति के पुराने धर्म के भाइयों की चिंताएं कांप उठीं। केशरा बापा और पुराने धर्मवादियों के बीच वाकयुद्ध होता रहता था। लेकिन केशर मुखी 96:पेज 46 की सच्चाई के सामने उन लोगों की ताकत काम नहीं करती।

130. <u>कड़ी सजा के लिए पूरी जाति इकट्ठी की गई:</u> अब पुराने धर्मवादियों ने अपना पक्ष बदल लिया। उनके तीन पंचद (क्षेत्र पंचायत) हैं[93] जाति के नेताओं को इकट्ठा किया। केशरा बापा और उनके सहयोगियों को कड़ी सजा दिलाने के प्रयास शुरू कर दिये।

यह घटना संवत् 1832 के प्रस्ताव के ठीक 40 वर्ष बाद की है। विक्रम संवत 1872 चैत्र सुद 7 यानी 19 अप्रैल – 1816 जाति बुजुर्गों ने पूरी जाति को विथोण गांव के धर्म स्थल पर एकत्रित किया। इसमें केशर बापा और उनके साथियों को विशेष रूप से बुलाया गया था। एक तरफ पूरी जाति और दूसरी तरफ सिर्फ पांच दोस्त. ऐसे में तो अच्छे से अच्छे इंसान का कलेजा जवाब दे जाए. जरा सोचिए हालात क्या होंगे और इन लोगों के दिमाग पर क्या चल रहा होगा.

इस बैठक में हुई चर्चाओं को यहां दोहराया नहीं गया है. जो लोग विस्तार से जानना चाहते हैं उनसे अनुरोध है कि वे केशर बापा के जीवन पर लिखी पुस्तक 96:पृष्ठ 46 से 54 पढ़ें।

हालाँकि, इस बैठक में चर्चा किए गए मुख्य बिंदु और आमने–सामने सवाल–जवाब नीचे संक्षेप में दिए गए हैं।

<u>बैठक में सभी आगेवान कहने लगे कि ;</u>

1) केशरा बापा ने जाति (खास संवत 1832) प्रस्ताव का उल्लंघन किया है।

92 धर्म स्थान = सतपंथ का जमातखाना = खाना
93 पंचदा = एक्रोनिम देखें

2) सभी लोग सजा की मांग करने लगे और कहने लगे कि.. अगर सजा नहीं देनी है तो जाति के चरणों में गिरकर अपनी गलती कबूल करते हुए माफी मांगनी चाहिए। माफीनामा लिखकर दे।
3) इसी प्रकार स्वामीनारायण को भी धर्म छोड़कर पुराना (सतपंथ) धर्म स्वीकार कर लेना चाहिए।
4) और यदि वह ऐसा नहीं करता है, तो उसे समाज से बहिष्कृत करने और उसके पुत्रों के सगाई के सभी संबंध तोड़ने का दंड दें एवं सभी प्रकार का व्यवहार बंध कर दे।

कठोर काले मजबूत पत्थर की तरह मन को कुचल देने वाले वातावरण में केशरा बापा और उनके साथियों ने धैर्य के रूप में स्वयं को ढाल लिया। और जातिगत नेताओं के सभी प्रश्नों का नम्रता एवं दृढ़तापूर्वक सही उत्तर दिया।

<u>**उत्तरों में उन्होंने तर्क दिया कि ;**</u>

5) किसी भी धर्म शास्त्र या कानून में यह नहीं लिखा है कि किसी के पूर्वजों द्वारा किए गए किसी भी सामाजिक या राजनीतिक अपराध की सजा उनके पीछे की पीढ़ी को दी जानी चाहिए।
6) जब तक हम और हमारे बुजुर्ग पुराने प्रचलित धर्म में विश्वास करते थे, हम उस संकल्प का पूरा सम्मान करते थे।
7) परन्तु अब चूँकि हमने उस धर्म का त्याग कर दिया है, इसलिये धर्म के विषय में अब हम पुराना धर्म को स्वीकार नहीं करते।

<u>**इसके बाद की बहस बहुत अच्छी थी. जाति के एक आगेवान ने उनसे पूछा कि ;**</u>

8) यह पूरी जाति आपसे पूछती है कि जब आपने हमारे पूर्वजों द्वारा स्वीकृत धर्म को छोड़ा तो आपने हमारे समाज के नेताओं से क्या पूछा ?
   <u>**नोट:**</u> केशरा बापा के लिए यह प्रश्न बहुत गंभीर था, क्योंकि वे स्वयं जाति के आगेवान थे। और एक आगेवान के तौर पर उनकी जिम्मेदारी खास थी.

तब केशरा बापा ने बड़ा सटीक उत्तर दिया कि ;

9) जब हमारे बुजुर्गों ने उस समय के मूल वैदिक सनातन धर्म को छोड़कर दूसरा यानि वर्तमान काल्पनिक धर्म स्वीकार कर लिया तो उन्होंने समाज के बुजुर्गों से पूछा था कि सनातन धर्म को छोड रहे है ?
10) सतपंथ धर्म स्वीकार करने के कारण नंदनवन की तरह गुजरात छोड़कर कच्छ की इस बंजर, पहाड़ी, कंकरीली, सूखी भूमि पर आना पड़ा।
11) अपने बुजुर्गों ने उनके बुजुर्गों के वैदिक धर्म एवं जाति का सम्मान नहीं करते थे। उन्होंने समाज और सनातन धर्म का अपमान किया है। इसलिए हम पुराने धर्म को नहीं मानते.

94 मुचारको = यदि मैं अपराध दोहराता हूं, तो मैं जुर्माना या सजा देने का वचन देता हूं लिखित जमानत।

केशर बापा का यह तर्क इतना तार्किक और सटीक था कि उनके सतपंथ के आगेवानों के पास इसका जवाब नहीं था।

ऐसे जबरदस्त दबाव की स्थिति में इतना ठोस तर्क दैवीय कृपा से संभव हो सकता था, अन्यथा ऐसी स्थिति में यह एक आम आदमी का काम नहीं है।

इससे हमें केशरा बापा के व्यक्तित्व की झलक देखने मिलती है।

131. **<u>जाति पंच की विफलता:</u>** बैठक में और भी कई तर्क थे. लेकिन, जाति के नेताओं ने सच्चाई को समझे बिना, अपनी शक्ति का दुरुपयोग किया, बलपूर्वक उत्पीड़न किया, और ऐसा लगता था कि उन्होंने पहले से ही सनातनियों को सबसे गंभीर तरीके से दंडित करने का मन बना लिया था।

तब केशरा बापा ने कहा कि तुम सर्व सत्ताधीश बन गये हो और हिन्दू समाज पर औरंगजेबी शासन मुगलशाही चला रहे हो।

यदि आप धर्म के नाम पर हमारी जाति के गरीब भाई–बहनों पर सितमगारी की दमनकारी नीति चलाएंगे तो मुझे हमारे महाराव के सामने आप सभी की शिकायत करनी पड़ेगी। आप सभी को इसका परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहना होगा।
केसरा बापा के ये सिंह गर्जनापूर्ण उत्तर सुनकर जाति बुजुर्ग आगेवानों की गांठें ढीली हो गईं। उन्होंने मौखिक रूप से निर्णय लिया कि मामले का खुलासा करने के समाधान के लिए, हम अपने वर्तमान धर्मगुरु को सूचित करेंगे, और हम सभी वैसा ही करेंगे जैसा वह कहेंगे।

सनातन धर्म के पक्ष में केशरा बापा के पीछे कच्छ के महारावश्री के समर्थन की बहुत बड़ी भूमिका रही है।
<u>इसलिए क. क. पाटीदार सनातन जाति कच्छ के महारावश्री की सदैव ऋणी रहेगी।</u>

<u>यहाँ समझने लायक मुद्दा ;</u>
विचारधारा के विनाश में कानून एवं व्यवस्था की भूमिका। जैसे–जैसे कानून–व्यवस्था का लाभ जाति को मिलने लगा, विचारधारा को नष्ट करने का काम बंद होने लगा।

20 विद्रोह का पहला बिगुल - केशरा परमेश्वरा का आंदोलन

132. **<u>धर्म गुरुओं का निर्णय:</u>** धर्म गुरु ने जाति नेताओं द्वारा किए गए मौखिक प्रस्ताव पर निर्णय लेते हुए, एक साथ विचार किया ;

सतपंथ के धर्म गुरुओं के निर्णय

हम सभी अच्छी तरह समझते हैं कि हमारे वर्तमान धर्म का सार क्या है। इसलिए अब से अगर हमें किसी धर्म पर आपत्ति होगी तो हम उसमें हस्तक्षेप नहीं करेंगे. इसलिए हमें किसी भी धर्म पर आपत्ति नहीं करनी चाहिए. आइए सभी अपने–अपने धर्म का पान करें।

पुराना धर्म पालन करने वाले जो नया धर्म केशरा मुखी के साथ है, उसमें फंसाये नहीं। भाइयों और बहनों इस बात का विशेष ध्यान रखें कि धर्म के चक्कर में न पड़ें, झगड़ने से धर्म में ही फूट पड़ जायेगी और हमारा संख्या बल टूट जायेगा। हम देखेंगे कि आगे क्या होता है. केशरा मुखी शिरजोर आदमी हैं, इसलिए ऊपर से उनसे संबंध बना कर रखो। ऐसे मनुष्य को बल से नहीं बल्कि कौशल से वश में करना चाहिए। 96:पेज 53 और 54

133. **<u>सनातन धर्म का जोरदार प्रचार:</u>** जाति पंच और धार्मिक नेताओं की विफलता के कारण, केशर बापा और उनके सहयोगियों को स्वामीनारायण संप्रदाय के जोरदार प्रचार में ताकत मिली। लेकिन सतपंथ के रुढ़िवादी नेताओं को यह पसंद नहीं आने वाला था.

134. **<u>अबजी भगत को बेरहमी से पीटा गया:</u>** केशरा बापा के एक सहयोगी, ग्राम अंगिया के श्री अबजी करसन भगत को कुछ सतपंथियों ने बेरहमी से पीटा 96: पृष्ठ 54 । जब केशरा बापा को पता चला तो वे बहुत क्रोधित हुए और उन्होंने अंगिया गांव के पतपंथी आगेवानों को बुलाया और कहा कि..

बात–बात में तुम इस तरह का जुल्म करोगे, यह मैं बर्दाश्त नहीं करूंगा। मैं कल सुबह यहां से सीधे भुज निकलूंगा और आपके जुल्म के खिलाफ शिकायत करूंगा। 96:पेज 57
तो अंगिया के आगेवान तुरंत हाथ जोड़कर माफी मांगने लगे और लिखा कि ;

हम सभी एक लिखित स्वीकारोक्ति देते हैं कि आज से स्वामीनारायण धर्म का पालन करने वाले किसी भी भाई या बहन को पुराने धर्म का पालन करने वाले किसी भी भाई द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से परेशान नहीं किया जाएगा और किसी की संपत्ति को नुकसान नहीं पहुंचाया जाएगा। 96:पेज 58 ऐसा लिखित आश्वासन देते है।

इसके बाद वे घडाणी गांव गये. वहां के नेताओं ने पहले ही तय कर लिया था कि गलत तरीके से नहीं लड़ेंगे इसलिए मौखिक स्वीकारोक्ति दी कि ;

95 केशर मुखी – केशर बापा को स्वयं केशर मुखी के नाम से संबोधित किया जाता था क्योंकि वह जाति के नेता थे।

हम अपने गाँव में धर्म, सही या ग़लत, किसी भी तरह का झगड़ा नहीं करेंगे। हम और स्वामीनारायण धर्म के सभी लोग एक साथ रहेंगे और सद्भाव से काम करेंगे। 96:पेज 59

135. **<u>सगाई तोड़ने के अवसर:</u>** केशरा बापा के साथियों को कई बाधाओं का सामना करना पड़ा ताकि वे अपने उद्देश्य में सफल न हो सकें। सतपंथ धर्म के भाई धीरे–धीरे केशरा बापा का तीव्र विरोध करने लगे। सगाई संबंध [96] में बड़ा हस्तक्षेप शुरू हुआ. रिश्ते–नाते तोडने लगे 96:पेज 61 । केशरा बापा बहुत कोशिश करते थे. कच्छ के राजा का समर्थन प्राप्त होने के बावजूद, वह अक्सर मुश्किल अवस्था में रहे।

बात फिर कच्छ के राजा तक पहुँची। तब कच्छ में महारावश्री ने विक्रम संवत (वी.एस.ए.) 1884 आसो सुद 9, दिनांक 28 सितंबर 1827 को दोनों पक्षों के बीच समझौता कराया कि दोनों धर्म के मामले में शांति रखेंगे और गलत या परोक्ष रूप से परेशान नहीं करेंगे। इस आशय का एक लिखित समझौता किया गया। इस समझौते पर सनातन की ओर से केशरा बापा और सतपंथ की ओर से रैया नाकराणी ने हस्ताक्षर किए 96:पृष्ठ 64 ।

उसके बाद कुछ समय तक समझौता ठीक–ठाक चला। लेकिन फिर कुछ दिन बाद दोनों पक्षों के बीच फिर से मौखिक तौर पर धार्मिक झगड़े शुरू हो गए.

फिर, विक्रम संवत (VSA) 1887 भाद्रव वद 5, दिनक 07 सितम्बर 1830 को जाति विथोण गांव में एकत्रित हुई। वहां केशरा बापा ने जाति के खिलाफ शिकायत की कि रिश्तेदारी को लेकर राजा के खिलाफ हुए समझौते के बावजूद नेत्रा गांव के गेठेरा लोग परेशान कर रहे हैं. समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले रैया नाकराणी वहां मौजूद थे और केशरा बापा को धमकाने लगे। क्रोध में आकर रैया नाकराणी ने समझोता पत्र फाड़ दिया 96:पेज 67 ।

जब कच्छ के राजा को इस बात का पता चला तो उन्होंने नवरात्रि पर जाति प्रमुखों को माता का मठ पर बुलाया। वहाँ रैया नाकराणी ने अपनी गलती स्वीकार की और कच्छ के महारावश्री ने कहा ;

अब यह स्थापित हो गया है कि आप सभी झगड़ों की जड़ में हैं। आप लोग केशरा मुखी और उसके सहयोगियों के खिलाफ जो भी शिकायत करेंगे, हम उसे नहीं सुनेंगे और यही आपकी सजा है. आप सभी लोग जो पुराने धर्म को मानते हैं वे बहुत ज्यादा शिरजोरी का प्रयोग करते हैं और आप लोग ही लड़ाई–झगड़ा करते हैं। अब से हम केवल केशरा मुखी को ही सुनेंगे। जाओ, अब और झगड़ा मत करो। 96:पेज 71

राजा का निर्णय

96 सगापना–संतारण = सगपना शब्द या वाणी के स्वर का अपभ्रंश।

20 विद्रोह का पहला बिगुल - केशरा परमेश्वरा का आंदोलन

<u>फैसले के पीछे का महत्व</u>

कच्छ के राजा के इस फैसले से सतपंथीओं गिरोहों को संदेश गया कि अब कानून और व्यवस्था का इस्तेमाल हमारे खिलाफ किया जाएगा, इसलिए चुप रहना ही बेहतर है।

136. **<u>प्रथम सनातनी मंदिर के निर्माण में बाधाएँ:</u>** नेत्रा गांव में केशरा बापा। क. क. पाटीदार जाति का पहला मंदिर यानि स्वामीनारायण मंदिर बनाने का निर्णय लिया। इसके लिए उन्होंने पुराने धर्म स्थानक (यानि सतपंथ का खाना) के सामने एक जगह चुनी।

मंदिर निर्माण की लागत को पूरा करने के लिए दोनों पक्षों की साझा/संयुक्त संपत्ति का आधा–आधा हिस्सा मांगा। पुराने धर्मवादियों ने धमकाना शुरू कर दिया। खुलेआम मारपीट भी होने लगी. केशरा मुखी की बात सुने बिना ही वह तुरंत मारपीट पर उतर आते थे. विवाद को सुलझाने के लिए केशरा मुखी ने अपने साथियों को धैर्य रखने के लिए समझाया.

लेकिन मंदिर निर्माण के अपने संकल्प पर अमल करना शुरू कर दिया. धीरे–धीरे वे सामान इकट्ठा करने लगे। नींव खोदना शुरू कर दिया। लेकिन जितनी नींव खोदी जाए, पुराना धर्म वाले नींव खराब कर देते थे. ऐसा कई दिनों तक चलता रहा. समझाने जाने पर उल्टे केशरा बापा को मारने के लिए खड़े हो जाते थे. अंततः अपनी दुविधा भुज के दरबार (अर्थात महाराजा) के समक्ष प्रस्तुत की।

राजा ने तुरंत पुलिस को केशरा बापा की मदद करने और मंदिर के निर्माण के लिए आवश्यक सुरक्षा प्रदान करने का आदेश दिया। इसके अलावा मंदिर के लिए खिड़की–दरवाजे और अन्य सामान के लिए भी सहयोग दिया गया। केशरा बापा ने इतनी अच्छी चाल चली कि उन्होंने विध्न संतोषी रैया नाकराणी को बहुत सम्मान दिया और उनके हाथ से मंदिर का खात मुहुर्त करवा दिया। यह केशरा बापा द्वारा एक बहुत अच्छी युक्ति थी। 96: पृष्ठ 73 से 77 ।

उसके बाद विक्रम संवत 1909 वैशाख सुद 5, दयांक 13 मई 1853 को मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा की गई। इस अवसर पर भुज के राजा सहित आसपास के सामंत, प्रशासन के उच्च अधिकारी, पुलिस अधिकारी, आचार्य, साधु संत आदि को आमंत्रित किया गया था 96:पेज 78 से 83 । इस समय तक जाति में कोई भी हिन्दू मन्दिर नहीं बना था।

20 विद्रोह का पहला बिगुल - केशरा परमेश्वरा का आंदोलन

<u>सनातन धर्म की स्थापना</u>

स्वामीनारायण भगवान के मंदिर स्थापना से केशरा बापा ने क. क. पा. जाति शुद्ध सनातन धर्म की मजबूत नींव रखी।

137. **<u>उत्पीड़न की समस्याएँ जारी:</u>** मंदिर निर्माण के बाद भी सनातन धर्म को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से परेशान करने की समस्याएँ जारी रहीं। उदाहरण के लिए, 1859 में स्वामीनारायण साधुओं पर हड्डियाँ, मांस आदि अपवित्र वस्तुएँ फेंकना 96:पृष्ठ 86।

उसी वर्ष (सन 1859) में आचार्य अयोध्या प्रसाद ने केशर बापा और उनके साथियों की परीक्षा की। सनातन धर्म के प्रति उनकी दृढ़ता को परखने के लिए उन्होंने एक लालची प्रस्ताव रखते हुए कहा, यदि तुम्हें पुराने धर्म द्वारा अक्सर परेशान किया जाता है, तो हम भुज परगना के कडवा पाटीदारों के साथ तुम्हारा रोटीबेटी का रिश्ता तय कर देंगे। तब केशरा बापा और साथियों ने यह कहकर प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया कि हमारी जाति हमारी मातृरूप है। हम न तो अभी और न ही भविष्य में जाति छोड़ना चाहते हैं 96:पेज 90 से 92 ।

पुरानी धार्मिक जाति ने सनातनियों के साथ बर्तन, कालीन और गलीचे साझा करने से इनकार कर दिया। जब वह माँग करने गए तो ख़ाना के सरदार ने उसे भद्दे शब्दों का प्रयोग करके बहुत अपमानित किया। बात फिर महाराजा तक पहुँची। नखत्राणा के माननीय न्यायाधीश[97] ने संपत्ति को सील कर दिया। पहले तो कोई समझौता नहीं हुआ, लेकिन आख़िरकार यह निर्णय लिया गया कि संपत्ति का आधा हिस्सा स्वामीनारायण को दिया जाना चाहिए। जिसके बारे में रोहा जागीर के दरबारश्री ने भी अच्छी व्याख्या की है 96:पेज 94 से 97।

<u>अक्षर निवास:</u> केशरा बापा ने बहुत लंबा और सफल जीवन जिया। विक्रम संवत 1934 आसो वद 14
138. (काली चौदह), दिनांक 25 अक्टूबर 1878, विक्रम संवत कैलेंडर98 के अनुसार उन्होंने 110 वर्ष, 6 माह और 14 दिन का जीवन जीया और स्वर्गवासी हुए।

<u>कमियाँ एवं कमियाँ:</u> प्रत्येक व्यक्ति एवं अभियान में कुछ न कुछ कमी एवं न्यूनता होती है। जाहिर है केशरा
139. बापा के नेतृत्व में शुरू किये गये सनातन अभियान में भी खामियां और खामियां रही होगी। यहां उन कमियों और गलतीओं को देखते हुए केशरा बापा और उनके सहयोगियों के योगदान को कमत्तर करने का प्रयास नहीं किया जा रहा है। लेकिन यह कमियों और कमियों से सीख लेकर आगे बढ़ने की बात है।

97 जज = पाठकों को याद होगा कि के. क. पा. जातिगत झगड़ों को आपस में मिलजुल कर सुलझा लिया जाता है. और यदि नहीं तो वह इसे कच्छ के महाराव के सामने ले जायेंगे और वही फैसला सुनायेंगे। अदालतों का सहारा नहीं लिया गया. बिंदु देखें (76).

98 अंतर्राष्ट्रीय कैलेंडर के अनुसार: 110 पूर्ण वर्ष, 6 महीने और 23 दिन

139.1. केशरा बापा का अभियान नेत्रा सहित आसपास के 7 गांवों तक सीमित था 27:पेज 267 यह अभियान अन्य गांवों तक नहीं पहुंच सका।

139.2. केवल, लगभग 1500 लोगों ने सतपंथवाद को पूरी तरह से त्याग दिया और स्वामीनारायण संप्रदाय को स्वीकार कर लिया 96: पृष्ठ प्रस्थान और 99 ।

139.3. केशरा बापा के बाद स्वामीनारायण का जाति में प्रचार लगभग बंद हो गया 95:पेज 15 और 16 । इसके पीछे मुख्य कारण उस समय (आज नहीं) भुज स्वामीनारायण मंदिर के साधुओं का कठोर रवैया और जाति की मुस्लिम पहचान के कारण जाति के प्रति अन्यायपूर्ण और नृशंस व्यवहार था 95 ।

139.4. स्वामीनारायण की सांख्य योगियों (साध्वीओ) के साथ भी कई वर्षों तक भेदभाव जारी रहा 95:पेज 5 और 11 । आज की स्थिति के बारे में पर्दे के पीछे से अब भी कभी–कभार संदिग्ध बातें सुनाई देती हैं।

139.5. क. क. पाटीदार जाति के संबंध में स्वामीनारायण संप्रदाय में विश्वास करने वाले अन्य समुदायों के लोगों द्वारा भेदभाव और उत्पीड़न भी एक कारण था। डी। जैसे कि लेवा एवं कड़वा कणबी की भोजन अलग करने के संबंध में 95:पेज 2।

<u>**आज की स्थिति**</u>

क. क. पाटीदार जातीय सत्संगियों को साधु–दीक्षा देने के संबंध में अहमदाबाद के धर्मपीठ के नेतृत्व में 50 विद्वानों एवं पंडितों ने 07 अक्टूबर –1945 को निर्णय लिया कि के. क. पा. जाति वर्ग से आने वाले सत्संगी साधु–दीक्षा के पात्र हैं। कार्यवाही और निर्णय के संपूर्ण विवरण के लिए, संदर्भ सूची से 39 और 6:पृष्ठ 596 में उद्धृत दस्तावेज़ देखें ।

आज की स्थिति

तब से अन्य दो समस्याओं का भी सुखद समाधान हो गया है।

<u>**विशेष नोट:**</u> आज अत्यधिक भेदभाव वाला माहौल नहीं है। आज क। पा. जाति को पूरे आदर और सम्मान के साथ माना जाता है। विशेष अनुरोध है कि आप ऊपर बताई गई बातों का गलत अर्थ न निकालें।

20 विद्रोह का पहला बिगुल - केशरा परमेश्वरा का आंदोलन

140. **उपसंहार:** केशरा बापा (केशरा मुखी) द्वारा उठाया गया अभियान (आंदोलन) कोई छोटा नहीं था। जिस प्रकार भारत के स्वतंत्रता संग्राम में मंगल पांडे के 1857 के विद्रोह का बहुत महत्व है, उसी प्रकार सतपंथ के विरुद्ध केशरा बापा के अभियान का भी बहुत महत्व है।

उनके अभियान की सफलता के प्रमुख बिंदु हैं ;

140.1. **सनातन दीप प्रज्वलित:** विचारधारा विनाश विधि के अंतिम चरण अर्थात संकट समय (बिंदु 120 देखें) में केशरा बापा एक असंभव स्थिति में सनातन धर्म का दीपक जलाने में सफल हुए। आज भले ही वह दीपक छोटा लगता है, लेकिन कहते हैं कि अधर्म के अंधेरे को दूर करने के लिए एक दीपक भी काफी होता है, क्योंकि सनातन धर्म का वह दीपक केशरा बापा ने जलाया था।

140.2. **सफलता:** केशरा बापा विधर्मी के सतपंथ नामक मजबूत किले की दीवारों को तोड़ने में सफल रहे। और कच्छ के 7 गांवों के लोगों को उस किले से मुक्त कराकर शुद्ध सनातन धर्म में लाने का महान कार्य किया।

140.3. **जवाबी हमले में सफल होना:** ये उनके जीवन के सबसे कठिन दौर की कहानी है. उनके जीवन और कार्यों की विशेषता यह थी कि सतपंथ के किले में सेंध लगाने के बाद सतपंथ का जवाबी हमला हुआ, जिसमें उन पर और उनके साथियों पर अत्याचार, जुल्म, प्रताड़ना और उत्पीड़न की आंधी चल पड़ी। सनातन धर्म अभियान की नाव को तूफान से सुरक्षित बाहर निकालने में सफल रहे। जो सिर्फ एक वीर ही कर सकता है. उनके इसी गुण के कारण उन्हें ''नरवीर'' कहा जाता है।

140.4. **सनातनियों का पहला मंदिर:** इस कठिनाई के बीच सनातन धर्म की स्थायी नींव रखने और अपने मिशन को मजबूत करने के लिए क. क. पाटीदार वह जाति का पहला हिंदू मंदिर यानी स्वामीनारायण मंदिर बनाने में सक्षम हुए।

140.5. **कानून और व्यवस्था का समर्थन:** केशरा बापा की सफलता के पीछे मुख्य कारकों में से एक कच्छ के राजा का मजबूत समर्थन था। जब केशरा बापा को जरूरत पड़ी, तो कच्छ के महारावश्री हमेशा केशरा बापा के साथ खड़े रहे और उन्हें सच्चाई के पक्ष में पहाड़ जैसी ताकत दी। इससे उन्हें जाति के उत्पीड़कों की असहनीय यातना और अत्याचार सहने का साहस और क्षमता प्राप्त हुई।

99 उपसंहार = निष्कर्ष

20 विद्रोह का पहला बिगुल - केशरा परमेश्वरा का आंदोलन

141. **<u>सुधार के क्षेत्र:</u>** सतपंथ प्रचारकों के विचारधारा के विनाश के उद्देश्य पर केशरा बापा का अभियान कैसे उल्टा पड़ा, इसे निम्नलिखित तालिका में देखा जा सकता है।

परिवर्तनों/ ट्रैकिंग तालिका का निरीक्षण करें			
वैचारिक तोड़फोड़	विनाश विवरण	विनाश स्थिति	सुधार* केशरा
1. मनोबल गिराने वाले क्षेत्र	19	पूर्ण	**प्रगति मे विद्रोह**
1.1. धर्म		✓(70)	
1.2. शिक्षा	20.2	✓(89)	--
1.3. सामाजिक जीवन	20.3	✓(88)	थोड़ा
1.4. शक्ति संरचना	20.4	✓(77.1)	थोड़ा
1.5. कानून एवं व्यवस्था	20.5	✓(77.2)	थोड़ा
1.6. नेतृत्व	20.6	✓(77.3)	--
2. अस्थिरता	21	पूर्ण	--
2.1. वित्त	21.1	✓(105)	--
2.2. कानून एवं व्यवस्था	21.2	✓(106)	थोड़ा
2.3. मीडिया	21.3	✓(107)	--
3. संकट	23	पूर्ण	--
3.1. तथाकथित उद्धारकर्ता अंदरूनी सूत्र एक बाहरी व्यक्ति	23.3	✓(115)	**सुधार**
4. स्थिति का सामान्यीकरणय	24	असफल	बाकी
4.1. एक नये समाज की स्थापना - 2 चरणों में		असफल	बाकी

21

जागरूकता - नारायण रामजी लिम्बानी का दल आंदोलन

142. **भूमिका:** केशर बापा के बाद सनातन धर्म अभियान स्थगित हो गया था। नारायण रामजी लिम्बाणी[100] (नारायण बापा) ने अपनी युवावस्था में सनातन धर्म जागरूकता की मशाल को फिर से प्रज्वलित किया और जाति के जन–जन तक सनातन धर्म जागरूकता का प्रकाश फैलाया।



नारायण रामजी लिम्बानी

19 साल की उम्र में 1902 में अपनी किस्मत आजमाने मायानगरी मुंबई आ गए। वहां नारायण बापा के साथ हुई एक घटना ने उनके जीवन का उद्देश्य ही बदल दिया। सबसे पहले विद्वान पंडितों के हाथों खुद को शुद्ध करने के बाद, उन्होंने पीडित जाति को कष्टों और पीड़ाओं से मुक्त करने के लिए पिराना सतपंथ के खिलाफ बिगुल बजाया। केवल कक्षा 5 वीं[101] तक शिक्षित होने के बावजूद उन्होंने जागरूकता की ऐसी आंधी चलाई कि उनके प्रयासों के सम्मान में उन्हें जाति का आध्य–सुधारक कहा जाने लगा।

इस लेख में हम नारायण बापा के व्यक्तित्व, उनके द्वारा की गई यात्रा, उनके द्वारा की गई कठिनाइयों, उनके द्वारा प्राप्त की गई सफलताओं और उनके जीवन के उतार–चढ़ाव पर नजर डालेंगे। और साथ ही हम यह भी देखते रहेंगे कि उनके नेतृत्व में चलाए गए अभियान का सतपंथ के प्रचारकों की विचारधारा के विनाश की रणनीति पर कैसा प्रभाव पड़ा।

143. **स्रोत:** नारायण बापा के कार्यों के बारे में कई दस्तावेज़ हैं। जैसे सम्मेलनों की रिपोर्ट, सार्वजनिक बैठकों की रिपोर्ट, पैम्पलेट, पुस्तिकाएं आदि, जिनमें एक मजबूत दिमाग वाले व्यक्ति का व्यक्तित्व दिखाई देता है। उनके जन्म से लेकर स्वर्गारोहण तक के छोटे–छोटे विवरण कई पुस्तकों में हैं। इच्छुक पाठक इसे प्राप्त कर सकते हैं। जाति सुधार के भगीरथ कार्य में नारायण रामजी का योगदान हम देखेंगे. इसके लिए इन दस्तावेज़ों के अलावा नीचे बताई गई पुस्तकों का मुख्य सहारा लिया गया है।

100 नारायण रामजी लिम्बानी – इन्हें नारायण रामजी कॉन्ट्रैक्टर के नाम से भी जाना जाता था।
101 कक्षा 5 = 88 : पेज 14

21 जागरुकता - नारायण रामजी लिम्बानी का दल आंदोलन

1. पिराना सतपंथ की पोल और सत्य का प्रकाश 88
2. कर्त्तव्य पंथे 148
3. कच्छ कडवा पाटीदारों का इतिहास 4:पृष्ठ 85 से 100

इस लेख में केवल नारायण बापा के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का संक्षेप में अवलोकन किया गया है। विस्तृत जानकारी के लिए कृपया मूल दस्तावेज़ पढ़ें। इनमें से कई दस्तावेज़ों के ऑनलाइन लिंक इस पुस्तक के अंत में ग्रंथ सूची/संदर्भ सूची अध्याय में दिए गए हैं।

144. **<u>अभियान की महत्वपूर्ण घटनाएँ:</u>** नीचे हम नारायण बापा के साथ उनके द्वारा चलाए गए सनातन धर्म जागरूकता अभियान में घटित महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में संक्षेप में देखेंगे।

144.1. **<u>नारायण बापा को याद आया:</u>** मुंबई–वडगड़ी में एक भाई सेठ केशवजी दामजी के मकान काम के लिए नारायण बापा की सिफारिश करने के लिए हंसी–मजाक में कच्छी भाई श्रीयुत गोपालभाई द्वारा कहे गए शब्द। जिससे नारायण बापा को ज्ञानि हो गई। (कच्छी भाषा में) ;

ई डीसाजेता हिन्दु जेडा, पण धरममें तां ई वडा काफ्र आई न ई हिन्दु ने न ई मुसलमान. ईनीजेमें भरे तडें दटजे, अने पईणे तडें धुवा पेन!

<u>गुजराती अनुवाद:</u> वह हिंदू जैसा दिखता है लेकिन धर्म में वह बहुत काफिर है – न तो हिंदू और न ही मुस्लिम। उन लोगों में से, जब उनकी मृत्यु हो जाती है तो वे दफना देते हैं और जब उनकी शादी होती है तब दुआ पढ़ते है।

यह सुनने के बाद, नारायण बापा को एहसास हुआ कि.. हम कडवा पाटीदार कणबी श्री रामचन्द्रजी के गौरवशाली वंश के क्षत्रिय हैं। लेकिन ये लोग हमें इतना बदनाम क्यों कर रहे हैं? उस दिन से नारायण बापा को सत्य की खोज में बहुत उत्सुकता होने लगी 88: पेज 16।

144.2. **<u>रामेश्वर महाराज का मार्गदर्शन:</u>** राजकोट के पास ढोलरा गांव के मूल निवासी श्री रामेश्वर मोरारजी के सानिध्य से वैदिक संस्कार प्राप्त हुए। सतपंथ के गुप्तभेद धर्म का भी ज्ञान पूज्य रामेश्वरजी महाराज के माध्यम से हुआ।

102 हदोहद = प्रत्योक हड्डी में। शरीर के सभी भागों में,हड्डियाँ।

144.3. **<u>हिंदू धर्म का अर्जित किया ज्ञान:</u>** पिराना सतपंथ को जानने के लिए उन्होंने इसके साहित्य को बारीकी से पढ़ना शुरू किया। नारायण बापा नियमित रूप से अपने खाली समय का उपयोग मुंबई के माधव बाग, आर्य समाज मंदिर और हीरा बाग जैसे सार्वजनिक हॉलों में करते थे, जहाँ धार्मिक व्याख्यान होते थे, और जहाँ प्रसिद्ध वक्ताओं के धार्मिक विचारों को जानने का अवसर मिलता था 88: पेज 17.

कच्छ में ऐसी हिंदू धर्मसभा का लाभ उठाना असंभव था क्योंकि ऐसा करने वाले पर जुर्माना लगाया जाता था। फुटनोट (फुटनोट) क्रम 68 देखें।

144.4. **<u>शुद्धिकरण:</u>** नारायण बापा और उनके 6 अन्य मित्रों (कूल 7 मित्र) को विक्रम संवत 1964 जेठ सूद 5, गुरुवार, दिन 04 जून 1908 को त्र्यंबकेश्वर के मंदिर में विद्वान ब्राह्मणों द्वारा वैदिक संस्कार देह शुद्ध किया गया। नासिक के पास , गोदावरी नदी के तट पर।) शुद्धि और तपस्या से गुजरने के बाद जनोई धारण किया 88:पृष्ठ 21 ।

144.5. **<u>स्वधर्मवर्धक और जाति हितचिंतक मंडल:</u>** नासिक से शुद्धि के तुरंत बाद स्वधर्मवर्धक और जाति हितचिंतक मंडल[103] की स्थापना की गई, जिसमें केवल देह शुद्धि करा चुका व्यक्ति ही सदस्य बन सकता था 88:पेज 21 ।

144.6. **<u>नाते–रिश्तेदार–दोस्तों को जाति से बाहर कर दिया गया:</u>** जहां–जहां नारायण बापा और उनके मित्रों के रिश्तेदार थे, वहां–वहां आदेश भेज दिए गए, उनके सभी परिवारों–रिश्तेदार–मातृ–मातृ, भ्रातृ, सगे–संबंधी और किसी भी तरह के संबंध वाले उन्हें – पिराना सतपंथ पीराणा के एजेंटों ऐसे आगेवानों के संपर्क में आने वाले किसी भी व्यक्ति को जाति से बाहर करने का आदेश जारी किया 88:पृष्ठ 22 ।

144.7. **<u>यातनाएँ:</u>** इस कारण उन पर अप्रत्याशित विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा। उन्होंने असहनीय पीड़ा और अत्याचार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। पूरी जाति में उससे सारे रिश्ते–नाते ख़त्म हो गये। बीमारी में और मृत्यु में, और किसी भी अच्छे या बुरे अवसर पर, कोई भी जाति का भाई रिश्तेदारों और रिश्तेदारों के पास नहीं आ सकता, उन्हें स्वयं वहां नहीं बुला सकता। यहां तक कि दोनों पक्षों के लिए एक–दूसरे का पानी पिलाना भी हराम हो गया 88:पेज 22 ।

144.8. **<u>टूटे रिश्ते:</u>** माता–पिता अपने बच्चों के साथ कोई रिश्ता नहीं रख सकते। एक पत्नी अपने पति के साथ नहीं रह सकती. चाचा–चाची, भाई–भाभी के रिश्ते तोड़ दिए। अब समय आ गया है कि सभी

103 मंडल को (श्री कच्छ कड़वा पाटीदार जाति सुधारक युवा मंडल) भी कहा जाता था।

प्रकार की जातियों से नाता तोड़कर अलग हो जाएं। रिश्तेदारी–विवाह जैसे गंभीर रिश्तों के तार–तार होने के भयानक अवसर आने लगे। फिर भी ये लोग अपने उद्देश्य पर अटल रहे 88:पेज 22।

144.9. **स्वामीनारायण संप्रदाय का सहयोग:** विक्रम संवत 1967 के फागन वद 5, दिनांक 19 मार्च 1911। क.पा. जाति के स्वामीनारायण संप्रदाय के सभी सदस्यों का देह शुद्धिकरण किया गया। इनकी संख्या 1000 से 1200 थी 88:पेज 26 ।

144.10. **स्वामीनारायण संप्रदाय पर दबाव – रिश्तेदारी और रिश्ते बंद:** पिराना सतपंथ बंधुओं ने पूरी जाति के आगेवानों और सत्संगियों को इकट्ठा किया।[104] सभी सामुदायिक संबंध समाप्त करने का संकल्प। क्योंकि वे शुद्ध हैं[105] भाइयों से मिल गये। उसने उस अपराध के लिए हर रिश्तेदारी और रिश्ते को रोककर उन्हें परेशान करना शुरू कर दिया 148:पेज 35 । विवाद बढ़ने पर दोनों जातियां विक्रम संवत (वीएसके) 1968 प्रथम आषाढ़ सूद 13 और गुरुवार, 27 जून[106] के बीच समझौता कराया गयाउस समझौते के मुताबिक बेटियों को अपने–अपने ससुराल जाना होगा और बेटियों को अपने परिवार (मायके) में खाने–पीने की छुट होगीलेकिन दूसरों पर खाने–पीने के लिए दबाव नहीं रख सकते। 148:पेज 36 से 48।

144.11. **स्वयं कौन है ? इसे ढूँढना:** पता लगाएँ कि आपके पूर्वज कौन थे और वे किस जाति के थे। बड़ी मेहनत से अहमदाबाद बरोट–वाहिवंचा का नक्शा चिन्हित किया गया। और बारोट रामसंग डोलजी से मिले और उनके पास संवत् 1832 के प्रस्ताव की एक प्रति मिली। अत: उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया कि वास्तव में उनकी अपनी जाति कडवा पाटीदार है। उसके बाद गुजरात के सभी कडवा पाटीदारों से जुड़ने का प्रयास किया गया 148:पेज 50।

144.12. **गुजरात के कडवा पाटीदार भाइयों का समर्थन:** नारायण बापा को गुजरात के कड़वा पाटीदार भाइयों के बड़े नेताओं का भी समर्थन मिला 88:पेज 28। उनमें से प्रमुख हैं उंझा के प्रसिद्ध जाति आगेवान श्री पुरूषोत्तम लल्लूभाई पारिख, जिनसे वे व्यक्तिगत रूप से परिचित हुए।

144.13. **गुजरात की कडवा पाटीदार परिषद की प्रत्येक बैठक में उपस्थिति:** गुजरात की सभी जातियाँ सामाजिक सुधार के लिए काम करने वाले सुसंस्कृत, उच्च श्रेणी के विद्वानों से मिलने लगीं। उनका परिचय कडवा पाटीदार परिषद के नेताओं से कराया गया। गुजरात के कटवा पाटीदार परिषद की सभी बैठकों में भाग लिया। 1911 में वडोदरा में आयोजित दूसरे सम्मेलन से लेकर 1925 में कडी में आयोजित

104 सत्संगी = स्वामीनारायण संप्रदाय के अनुयायी
105 शुद्धिवाला = नारायण रामजी और उनकी टीम जो शरीर शुद्धि कराकर जनोई बने
106 दोनों जातियाँ = सतपंथ की जाति और सनातन की जाति (उस समय स्वामीनारायण)

11वें सम्मेलन तक, उन्होंने व्यवस्थापक मंदल के सदस्य के रूप में सभी सम्मेलनों में प्रमुखता से भाग लिया। वह 1917 में वर्तमान मध्य प्रदेश राज्य के निमाण मालवा के कूवा नामक गाँव में आयोजित उप–विभाग परिषद के अध्यक्ष बने 148: पृष्ठ 51 से 53।

144.14. **<u>कच्छ कड़वा पाटीदार युवक मंडल की स्थापना:</u>** कच्छ कड़वा पाटीदार युवक मंडल (युवा मंडल) की स्थापना वर्ष 1918 में सतपंथ के भाइयों से मिलने और चर्चा करने के लिए की गई थी। इनमें से कोई भी क.पा. एक जाति का व्यक्ति सदस्य बन सकता है, भले ही उसका देह शुद्धिकरण न हुआ हो 88:पेज 30।

144.15. **<u>रतनशी खिमजी खेतानी का साथ:</u>** श्री रतनशीभाई खिमजी खेतानी, जिन्हें नारायण रामजी का दाहिना हाथ माना जाता था, ने युवक मंडल के शुरुआती दिनों से ही कई महत्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान कीं। जिससे सतपंथ के भाइयों को समझाकर धीरे–धीरे सुधार के रास्ते पर लाया जा सके 88:पेज 31 । रतनशीभाई एक बहादुर जाति सेवक थे 88:पृष्ठ 44 । उसके बारे में अधिक जानकारी अगले अध्याय में दी गयी है.

144.16. **<u>कराची, विराणी मोटी और नखत्राणा में युवक मंडलों की स्थापना:</u>** मुंबई युवक मंडल के नक्शेकदम पर चलते हुए कराची, विराणी मोटी और नखत्राणा में भी युवक मंडलों की स्थापना की गई 88:पेज 32,33 । इन युवा संगठनों ने जाति सुधार का जबरदस्त अभियान चलाया। अत: सतपंथ धर्म के विषय में संपूर्ण ज्ञाति जागृत हो गई।

144.17. **<u>पहला जाति सम्मेलन:</u>** सतपंथ से जाति को मुक्त कराने के लिए पहला जाति सम्मेलन 08 से 11 अगस्त 1920 को कराची में आयोजित किया गया था। जिसमें जाति सुधार का कार्य कुछ हद तक आगे बढ़ा 88:पेज 34।

<u>नारी शक्ति का सच्चा परिचय</u>

सबसे पहले बड़ा सवाल खड़ा हुआ कि जाति परिषद का अध्यक्ष किसे बनाया जाए. तभी नारायण रामजी का ध्यान राजाराम शामजी ढोळु पर गया। लेकिन राजाराम बापा ने मना कर दिया. राजाराम बापा की आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत थी। अत्याचारी भी कुछ बिगाड़ने की स्थिति में नहीं थे। अत: जाति के लोगों पर प्रभाव डालने के लिए उनका प्रमुख पद ग्रहण करना आवश्यक था। लेकिन उन्होंने अध्यक्ष बनने से इनकार कर दिया, जिससे पूरी टीम बहुत निराश और परेशान हो गई.

तब नारायण रामजी ने एक बड़ी युक्ति खोजी। अंतिम प्रयास के तहत राजारामभाई के धर्मपत्नि ने धनलक्ष्मीबेन से मुलाकात की और जाति सुधार की अपनी भावनाओं को

समझाया और कहा कि एक योग्य नेता की कमी के कारण इतना कठिन कार्य रुका हुआ है।

उसके बाद धनलक्ष्मीबेन और राजारामभाई के बीच का संवाद बहुत महत्वपूर्ण है। धनलक्ष्मीबेनन स्मरणांजलि पुस्तक के पृष्ठ 38 से आगे 82: पृष्ठ 38 से आगे , लेखक नारायण रामजी लिम्बानी ने इस संवाद का बहुत अच्छा वर्णन किया है।

धनलक्ष्मीबेन उन सभी मुद्दों का समाधान प्रदान करती है जो जाति सेवा कार्यकर्ता को परेशान करते हैं। इतना ही नहीं, जिस प्रकार राजा रामभाई का समाज जागरण के कार्य के लिए प्रेरित करती रही दूध–दही की उपमा देकर जाति सेवा के लिए पुरजोर ढंग से यह कहकर तैयार करती हैं कि उन्हें मावलवादी विचारों से परे जाकर जाति सेवा के गहन कार्य में लग जाना चाहिए, वह है बहुत प्रेरणादायक और यह जाति की महिलाओं की शक्ति पर गर्व करने वाली घटना है। उस पुस्तक का पृष्ठ 44 देखें।

राजारामभाई के पास धनलक्ष्मीबेन के व्यंग्यपूर्ण शब्दों और मजबूत तर्कों का कोई जवाब नहीं था। वे सहमत हुए और राजारामभाई की अध्यक्षता में इतिहास में पहला जाति सुधार सम्मेलन हुआ।

144.18. **<u>वैदिक विधि से विवाह प्रारम्भ:</u>** संवत् 1832 के प्रस्ताव के बाद जाति में पहली बार सन् 1921 में लगभग 1200 विवाह इस्लामी प्रार्थनाओं के स्थान पर वैदिक रीति से किये गये 88:पृ. 41 । संवत् 1832 के प्रस्ताव के बाद हिन्दू वैदिक रीति से विवाह पुनः प्रारम्भ किये गये।

144.19. **<u>दूसरा जाति सम्मेलन:</u>** दूसरा जाति सम्मेलन भी 07 से 09 अक्टूबर 1922 तक कराची में आयोजित हुआ । उस सम्मेलन में पिराना सतपंथ के काले दाग को धोने के लिए, गेठेराओ की गुलामी से मुक्त होने के लिए, हृदय विदारक गगन–धोष ने एक गंभीर घोषणा की। और उसके बारे में संकल्प किया 88:पेज 43 । इस सम्मेलन में नारायण रामजी ने सतपंथ के दशावतार ग्रंथ 114:पृष्ठ 58 6:पृष्ठ 207 की अफवाहों और मनगढ़ंत बातों पर बहुत प्रभावशाली भाषण दिया । जिसका जनता पर इतना अच्छा और स्थायी प्रभाव पड़ा कि लोगों को पूरा विश्वास हो गया कि सतपंथ एक मुस्लिम धर्म है और विशेष रूप से हिंदुओं का धर्म परिवर्तन करने के लिए बनाया गया है।

144.20. **<u>तीसरा जाति सम्मेलन:</u>** दूसरी बैठक की सफलता के बाद, पिराना सतपंथ से जाति को मुक्ति दिलाने के लिए तीसरा सम्मेलन 18 से 21 अप्रैल 1924 तक घाटकोपर – मुंबई में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में पिराना सतपंथ के विरोध के मुख्य प्रस्ताव को विफल करने के लिए सनातनियों के साथ बैठे मावलों द्वारा सतपंथ विरोध के प्रस्ताव का विरोध किया गया। अनेक नेताओं तथा अन्य जातियों के अतिथियों के प्रभावशाली भाषणों ने सम्मेलन को सफल बना दिया 88:पृ. 53।

144.21. **<u>जागृति:</u>** कच्छ दयापार गांव के लोगों ने देह शुद्धि करके नारायण बापा का समर्थन किया 88:पृष्ठ 45 से 49 । इसी प्रकार कच्छ पानेली गांव की बहनों ने भी विशेष नेतृत्व किया और नारायण बापा के साथ जुड़ गईं। उनमें से कंकुबाई का मामला बहुत ही प्रेरणादायक और गौरवपूर्ण था 88:पेज 51 । इसी तरह मुंबई–घाटकोपर में भी कई लोगों ने देह शुद्धि की 88:पेज 50 । जल्द ही कराची और रवापर गांवों के लोग भी इसमें शामिल हो गए 148:पेज 74,98 । इस प्रकार, सैकड़ों लोगों का देह शुद्धिकरण हुआ 85:पेज 22 99:पेज 15 ।

144.22. **<u>सभाएं एवं मिटिंग:</u>** नारायण रामजी के नेतृत्व में सनातन धर्म जागरूकता अभियान हेतु अनेक बैठकें आयोजित की गईं। उनमें से कुछ बैठकों और मुलाक़ातों की रिपोर्टें प्रकाशित की गईं। इनमें से मुख्य हैं;

क्र.	सभा / बैठक	प्रसंग	
1)	क. क. पा. जाति सम्मेलन–पहला–कराची, 08 से 11–अगस्त –1920	130	6:पृष्ठ 1002
2)	क. क. पा. जाति परिषद–दुसरा–कराची, 07 से 09–अक्टूबर –1922	114	6:पृष्ठ 1533
3)	क. क. पा. जाति परिषद–तीसरा–घाटकोपर, 18 से 22–अप्रैल – 1924	86	6:पृष्ठ 2314
4)	दाना बंदर सार्वजनिक बैठक, 1918	111	6:पृष्ठ 195
5)	कच्छ देश का पिरानापंथ कड़वा कनबी–दानबंदर–सार्वजनिक सभा, मुंबई – 1919	113	6:पृष्ठ 576
6)	क. क. पा. जाति की सार्वजनिक बैठक–विरानी मोती, 1920	112	6:पृष्ठ 687
7)	क. क. पा. जाति सुधारक युवा मंडल रिपोर्ट, 1926	131	
8)	क. क. पा. जाति सुधारक युवा मंडल रिपोर्ट, 1932	117	

144.23. **<u>जागरूकता के लिए कई साहित्य प्रकाशित किए:</u>** पिराणा सतपंथ की पोल और सत्य का प्रकाश 88 पुस्तक के अलावा, उन्होंने और उनकी टीम ने सनातन धर्म जागरूकता फैलाने के लिए कई हैंडबिल, पैम्पलेट, पुस्तिकाएं आदि मुद्रित कीं। इनमें से मुख्य हैं;

क्र.	साहित्य	प्रसंग
1)	पिराणा सतपंथ पाटीदार बंधुओं को अनुरोध पत्र	61
2)	पटेल फकीरदास गोपालदास को उत्तर दें	76
3)	खुले पत्रो का अवलोकन – भाग 1	77
4)	विदेशों में स्थापित युवा संगठनों का अवलोकन	78
5)	खुले पत्रो का अवलोकन – भाग 2	79
6)	सतपंथियों का साठियारा चपटा करो	81
7)	धनलक्ष्मीबेन का स्मरणोत्सव	82
8)	पवित्र वेदों का प्रकाश और पिराना सतपंथ के विधर्म	84

21 जागरूकता - नारायण रामजी लिम्बानी का दल आंदोलन

क्र.	साहित्य	प्रसंग
9)	एक परिचयात्मक निबंध	85
10)	सैयद अहमद अली खाकी को उत्तर दें	87
11)	मुबारकबादी	107
12)	क्या पिराना सतपंथ बन जाएगा हिंदू धर्म?	108
13)	पीरानापंथी पाटीदार भाईयों को पता होना चाहिए	109
14)	पाटीदार उदय मासिक पत्रिका	115
15)	ओशानी की ओशाद या भक्त की भदवै	116
16)	कुटिलता पर एक सर्च लाइट	127
17)	चाचा रावजी लक्ष्मण को विशेष चेतावनी	132
18)	सदगोर नहीं जागेगा	134
19)	अनुरोध पत्र – कराची (कराची) पैम्फलेट	135
20)	सतपंथियों का साठियारा चपटा करो	81

144.24. **<u>सतपंथ की पोल पुस्तक की रचना:</u>** 20 वर्षों तक सतपंथ के गुप्त हस्तलेखित लेखों और साहित्य का अभ्यास करके 6 वर्षों के अभ्यास के पश्चात सतपंथ की पोल नामक पुस्तक तैयार की गई।

1) अज्ञानी और भोले–भाले हिंदुओं का धर्म परिवर्तन करना,

2) धर्म और कर्म से भ्रष्ट करके,

3) हिन्दू जातियों को अलग–थलग करके,

4) वेदों, शास्त्रों और पुराणों का अविश्वास करना,

5) गाय, ब्राह्मण, जोगी, संन्यासी पर अविश्वास करना।

6) सतपंथ के अनुयायी द्वारा उपयोग की जाने वाली विभिन्न युक्तियाँ और उनमें उत्पन्न भ्रम।[107] शास्त्र,

7) और, यह पंथ के कार्यों से कैसे जकड़ा रहता है।
.. इत्यादि बातों का उल्लेख है 88:निवेदन।

पिराना की पॉल पुस्तक ने **सतपंथ के सभी मूल ग्रंथों** को प्रकाशित किया है और सतपंथ के **सभी कार्यों और पूजाओं** को भी शामिल किया है 88:अध्याय 5 से 11।

107 अलेलटप्पु = बॉयिश, रेहियाल, गप्पीदास, गपोडिया, गपटिया (स्रोत : https://abkkpsamaj.org/go/fn107)

इस पुस्तक में इमामशाह द्वारा सतपंथ की स्थापना (सन 1419 के आसपास) 88:पेज 132 के साथ–साथ पिराना सतपंथ की स्थापना 88:पेज 136 की पूरी और विस्तृत जानकारी दी गई है।

सतपंथी ने इस पुस्तक को जब्त (प्रतिबंध) करने के लिए बहुत भागदौड़ की। आख़िरकार अहमदाबाद कलेक्टर साहेब का कार्यालय पीछे हट गए। 148:पेज 97।

144.25. **<u>पिराणा की पोल को मान्यता:</u>** सतपंथ के छिपे हुए भेदों को विस्तृत, तथ्यात्मक, गुजराती भाषा में दुनिया के सामने लाने वाली यह पहली पुस्तक है 88:पेज 3 । यह पुस्तक विश्व प्रसिद्ध शोधकर्ताओं और पीएच.डी. करने वालो की अभ्यास हेतु लिखी गई है। देश–विदेश के डॉक्टर डिग्री प्रदान करने वाले विश्वविद्यालय भी इसी पुस्तक को आधार मानते हैं। 156:पेज 22 33:पेज 85 158:पेज 214 22:पेज 269 23:पेज 154 ।

144.26. **<u>काका और सैय्यदों को खुली चुनौती:</u>** पिराना के गादिपति लक्ष्मण काका को पत्र द्वारा चुनौती दी कि पिराना सतपंथ धर्म हिंदू धर्म नहीं है। और यदि आप सिद्ध कर दें तो नारायण रामजी 10,000/– रुपये देने को तैयार थे 148:पेज 71 । इसी प्रकार, सीधे तौर पर सतपंथ की रक्षा में आये सैयद बावासाहेब अहमद अली खाकी के समान सतपंथ की सचाई प्रस्तुत करने वाले कई साहित्य प्रकाशित किये 148:पृष्ठ 98–99 ।

144.27. **<u>रामजी काका की नियुक्ति का समझौता:</u>** पिराणा काका की गद्दी पर रामजी लक्ष्मण काका और सैयदों के बीच नियुक्ति का समझौता पूना में पंजीकृत कराया गया, तथ्य छपवाकर सभी जाति के लोगों को अवगत कराया गया 148:पृष्ठ 102 ।

144.28. **<u>कानून एवं व्यवस्था पर एक नजर:</u>** इस विषय में नारायण रामजी का एक परिचयात्मक निबंध 85 विचारणीय है। जिससे यह समझा जा सकता है कि नारायण रामजी की पैनी नजर सतपंथ के कोर्ट केस और अन्य कानूनी मामलों पर थी।

144.29. **<u>शिक्षा:</u>** जहां जाति शिक्षा में बहुत पीछे थी, उस स्थिति को सुधारने के लिए नारायण रामजी की टीम ने सबसे पहले कराची में एक पुस्तकालय की स्थापना की।[108] आख़िरकार 01अक्टूबर –1938 को कराची में एक रात्रि विद्यालय 73 भी शुरू किया गया। रात्रि शाला रिपोर्ट में आप यह देखेंगे कि किस प्रकार जाति ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहती थी। भले ही जाति के पास पैसा नहीं था, फिर भी वे पैसे इकट्ठा करने में कामयाब रहे, बच्चों को मुफ्त शिक्षा प्रदान की और उत्तीर्ण होने वालों को प्रोत्साहन

108 कराची पुस्तकालय – जब भारत स्वतंत्र हुआ तो इस पुस्तकालय की पुस्तकें आदि जदोदर गांव में लायी गयीं। पुस्तकालय आज भी वहीं है। कच्छ किंग्स लाइब्रेरी के बाद कोटडा जादोदर लाइब्रेरी सबसे पुरानी सरकारी पंजीकृत लाइब्रेरी है। मिट्टी के तेलकी कमी हुई, तोरात में पुस्तकालय में मोमबत्तियाँ जलाने के लिए सरकार की ओर से पुस्तकालय के लिए कोटा.

के रूप में पुरस्कार दिए। हालाँकि जाति के स्तर पर यह एक छोटा कदम था, लेकिन जाति को आगे ले जाने के लिए यह एक आवश्यक कदम था।

145. <u>जाति पर अभियान का प्रभाव:</u>

145.1. **<u>प्रचंड जागृति:</u>** नारायण रामजी ने सतपंथ की पोल खोलकर जाति में प्रचंड जागृति लायी। वह उन लोगों की आंखें खोलने में सफल रहे जो मुस्लिम धर्म होने के बावजूद धोखे के कारण सतपंथ को सच्चा हिंदू धर्म मानते थे। जिससे जाति में सतपंथ के विरुद्ध जबरदस्त जागृति एवं सुधार लहर उत्पन्न हो गयी। इसके बहुत अच्छे परिणाम मिले.

145.2. **<u>भ्रम दूर करके दी दृढ़ता:</u>** आम हिंदुओं की दृष्टि से ऐसा प्रतीत होता है कि सतपंथ का निर्माण धर्म में भ्रम के आधार पर किया गया है। अत: यदि हमें सतपंथ के सत्य को समझना है तो इस भ्रम को दूर करना होगा। आम अनुयायी अंधविश्वास, अज्ञानता और कट्टरता के कारण चमत्कारों के जादू से पैदा हुए भ्रम में फंस जाता है और कभी बच नहीं पाता। नारायण रामजी इस भ्रम को दूर करने में बहुत सफल रहे। जिसका जाति पर बहुत प्रभाव पड़ा और अभियान को बल मिला।

145.3. **<u>पिराना के काका और सैय्यदों का डर दूर हो गया:</u>** जिसने भी सतपंथ के खिलाफ थोड़ा सा भी अपशब्द कहा या सनातन के पक्ष में बोला, उस पर जुर्माना लगाया गया और उसे दबाने के लिए जाति से बाहर निकाल दिया गया। उस व्यक्ति के प्रियजनों, रिश्तेदारों आदि को भी असहनीय यातना सहनी पड़ी। ऐसे हमलों के कारण लोग सतपंथ के विरुद्ध या सनातन के पक्ष में कुछ नहीं कर पाते।

नारायण रामजी और उनकी टीम ने जाति से बाहर रहकर जो मिसाल कायम की है, उससे डर का माहौल काफी हद तक कम हो गया है. जिससे लोगों को सतपंथ के विरुद्ध आवाज उठाने का साहस मिला।

145.4. **<u>अभियान से जुड़ने लगे लोग:</u>** नारायण रामजी और उनकी टीम के प्रयास से बने सकारात्मक सनातन माहौल से प्रेरित होकर लोग जुड़ने लगे. जिन लोगों को मनोमन सतपंथ पसंद नहीं था, वे लोग सार्वजनिक रूप से सनातनी बनकर सामने आये। अभियान में एक बड़ा मील का पत्थर[109] साबित हुआ.

109 मील का पत्थर = महत्वपूर्ण शिविर

145.5. **<u>सनातनीयों ने उठाई आवाज:</u>** नारायण रामजी ने युवा मंडलों का गठन किया और सार्वजनिक बैठकें और सम्मेलन आयोजित करके सनातन की आवाज को ताकत दी। कराची में एक पुस्तकालय की स्थापना करके उन्होंने लोगों के मन में सनातन के प्रति ऐसी आस्था भर दी कि उन्होंने सतपंथ के झूठे परोपकारों की झूठी बातों के विरुद्ध प्रमाणों सहित ठोस सूचनाओं की ढाल बना ली।

146. <u>कमियाँ और दोष:</u>

146.1. **<u>अनिवार्य देह शुद्धि:</u>** नारायण रामजी और उनकी टीम का एक अनिवार्य नियम था कि जो कोई भी सनातनी बनता है उसे अनिवार्य देह शुद्धि से गुजरना पड़ता है। अनिवार्य जनोई पहनना होगा। 99:पेज 50 ऐसे भाइयों के साथ खाना–पीना बंद कर देना चाहिए जो शारीरिक रूप से स्वच्छ नहीं हैं । ऐसे नियमों से उन्हें खुद को श्रेष्ठ दिखाकर अपना मनोबल बनाए रखने में मदद मिली, लेकिन नियम के कारण अपेक्षित संख्या में लोग शामिल नहीं हो सके।

बहुत से लोग सनातनी के थे, परंतु उन्होंने शरीर शुद्धि नहीं करायी। ऐसे लोगों से भी नारायण रामजी और उनकी टीम खाने–पीने का कोई वास्ता नहीं रखती. स्वयं नारायण रामजी ने पिराना की पोल के पृष्ठ 545 में लिखा है कि पिराना सतपंथ को न मानने वाले वर्ग है जिसकी संख्या लगभग 3000 है 88:पृष्ठ 545 । उनके नियमों की कठोरता ऐसी थी कि नारायण रामजी की टीम उनके साथ अछूत जैसा व्यवहार करती थी।

146.2. **<u>सार्वजनिक सामाजिक समारोहों में अलग रसोई:</u>** नारायण रामजी और उनके पवित्र देहशुद्धि वाले आगेवानो की टीम जातियों (जो पवित्र नहीं हैं और जनोई नहीं पहनते हैं) के साथ भी खाते–पीते नहीं थे। सामाजिक आयोजनों में सार्वजनिक रूप से अलग रसोईघर रखने की शर्त थी। अछूतों जैसा व्यवहार किये जाने से लोगों के मन में उनके प्रति नफरत की भावना पैदा हो गयी और धीरे–धीरे लोग उन्हें छोड़ने लगे 148:पृष्ट 129 ।

146.3. **<u>व्यावहारिक समाधान का अभाव:</u>** जब बड़ी संख्या में लोग नारायण रामजी के अभियान को छोड़ने लगे, तो वे कोई व्यावहारिक समाधान नहीं निकाल सके। बाद में कुछ नियमों में ढील देने का असफल प्रयास किया गया 148:पेज 129 और दिनांक 08 जुलाई 1929 को एक प्रस्ताव पारित कर जाति के साथ खाने–पीने के नियमों में ढील दी गई। पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी।

146.4. **<u>कठोर रवैया:</u>** किसी भी चीज़ में दृढ़ता की आवश्यकता होती है। परन्तु परिस्थिति के अनुसार दृढ़ता के साथ–साथ कोमलता भी आवश्यक होनी चाहिए। नारायण रामजी के अटूट दृढ़ संकल्प ने लोगों को जुड़ने के लिए प्रेरित किया, लेकिन वह दृढ़ संकल्प आगे चलकर बाधा बन गया। नियमों में आवश्यक परिवर्तन न करने के उनके अड़ियल रवैये से उत्पन्न समस्याओं के कारण लोगों ने नारायण रामजी का साथ छोड़ना शुरू कर दिया।

146.5. **<u>सुधारकों के बीच मतभेद:</u>** सुधारक नेताओं के बीच मतभेद समय पर दूर नहीं हो सके और संघर्ष बढ़ गया। यदि कार्तव्य पंथे 148 पुस्तक पढ़ते हैं, तो वे अभियान की धीमी गति के लिए अपनी विपक्षी जाति सुधार टीम को दोषी मानते हैं। जबकि 20 मई 1937 को प्रकाशित नखत्राणा में बने लक्ष्मीनारायण मंदिर के प्राणप्रतिष्ठा के समय की रिपोर्ट 70 6: पेज 325 में नारायण रामजी की पक्ष पर आरोप लगाए गए हैं। इस प्रकार दोनों सुधार दलों के बीच मतभेदों को हल नहीं किया जा सका। अपने मतभेदों के बावजूद, दोनों दल जाति के लिए सम्मानित और महान हैं। अतः चूँकि यह विषय आज के समय में गौण हो गया है इसलिए इस पर अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है।

146.6. **<u>नियम अपनाने में जल्दबाजी:</u>** अल्पसंख्यक दल हमेशा अपने नियम बहुमत दल पर नहीं थोप सकता। प्रत्येक व्यक्ति उस समय अनिवार्य देह शुद्धि, जनोई, अलग रसोईघर, खाने–पीने के सख्त नियम, कठोर रवैया आदि नियमों का पालन करने की स्थिति में नहीं था। बहुमत मिलने के बाद जो नियम अपनाने चाहिए, उन्हें अपनाने में बहुत जल्दबाजी की गई.

146.7. **<u>लोगों को एक साथ नहीं रख सके:</u>** इतिहास कहता है कि लगभग सभी आर्य समाजियों ने नारायण बापा को छोड़ दिया 99: पृष्ठ 16 । नारायण बापा लोगों को अपने मिशन से स्थायी रूप से जोड़े नहीं रख सके।

147. **<u>निष्कर्ष:</u>** मनुष्य कितना भी महान क्यों न हो, वह भगवान नहीं है । सभी मनुष्यों में कुछ कमियाँ एवं दोष होते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन गलत है या कौन सही है। महत्वपूर्ण बात यह है कि नारायण बापा अपने सामने की परिस्थितियों का सामना करके जाति सुधार का महान कार्य कैसे कर पाये।

इसमें कोई संदेह नहीं कि सैकड़ों वर्षों से शतपंथ पर सोई हुई जाति को जगाने में नारायण रामजी को जबरदस्त सफलता मिली। वह लोगों के मन से अंधविश्वास, अज्ञानता और कट्टरता को दूर करके चमत्कारों के जादू को तोड़ने में बहुत सफल रहे। अत: लोगों को सतपंथ के विरुद्ध सार्वजनिक रूप से बोलने का साहस मिला।

अपने जीवन के अंतिम संदेश में, व्यक्तिगत शिकायतों से परे, नारायण बापा ने अपनी विपक्षी दल को कहे गए शब्दों के साथ खुद की वास्तव में एक महान व्यक्ति के रूप में पहचान हुई फिर भी लक्ष्य सच्चा है, इसलिए अंतिम जीत भी है ।

संक्षेप में, जिस गति से जाति पतन की ओर गहरी खाई में धँसती जा रही थी, उस पर रोक लगाने में नारायण बापा बहुत सफल रहे ।

आइए (संक्षेप में) देखें कि वैचारिक विनाश के क्षेत्रों में कहाँ कहाँ सुधार हुए हैं:

147.1. **धर्म:** धर्म के प्रति जबरदस्त जागरूकता लाई, जिसे सतपंथ के कुटिल प्रचारक नहीं तोड़ सके।

147.2. **शिक्षा:** नारायण रामजी पुस्तकालय पर जोर देते हैं। अगर लोग किताब पढ़ेंगे तो उन्हें सही–गलत की समझ आ जाएगी। जिससे सनातन धर्म के सच्चे मार्ग को पहचान सकेगा।

147.3. **सामाजिक जीवन:** इसने धर्म के बारे में जागरूकता फैलाकर और अज्ञानता, अंधविश्वास और कट्टरता को दूर करके लोगों को सतपंथ के खिलाफ आवाज उठाने का साहस दिया। जिसके कारण लोगों ने सतपंथ धर्म की जीवन शैली को त्यागकर सनातन हिंदू धर्म के अनुसार जीवन अपनाना शुरू कर दिया।

147.4. **शक्ति संरचना:** जाति के भीतर शक्ति संरचना को चुनौती दी। वह लोगों के बीच भ्रष्ट और क्रूर आगेवानों के डर को कम करने में सक्षम हुए।

147.5. **कानून एवं व्यवस्था:** सतपंथ से संबंधित अदालती मामलों पर नारायण बापा की टीम की अच्छी नजर थी। जरूरत पड़ने पर वह अदालत में केस भी लड़ेंगे।

147.6. **नेतृत्व:** वह जाति पर नेतृत्व करने वाले आगेवानों को पीछे हटने पर मजबूर करने में सक्षम थे। खुले तौर पर गलत काम करने वाले आगेवानों की संख्या और शक्ति में धीरे–धीरे गिरावट आई। नया नेतृत्व प्रदान करने की दिशा में आगे बढ़ते हुए गुजरात के मूल कडवा पाटीदार जाति के नेताओं को बैठकों में प्रमुख स्थान दिया गया।

147.7. **आर्थिक:** दशोद और लागाओ द्वारा हर साल पिराणा को भेजी जाने वाली धनराशि को धीरे–धीरे कम करने के लिए उनके द्वारा किए गए प्रयास बहुत प्रभावी थे। इससे जाति की आर्थिक बर्बादी में सुधार की स्थिति उत्पन्न हुई।

147.8. **मीडिया:** मुंबई, गुजरात और कराची के सामयिक पत्रों में प्रकाशित लेख। इसी प्रकार, जन जागरूकता पैदा करने के लिए पंपलेट, हैंडबिल, छोटी पुस्तिकाएं प्रकाशित की गईं।

147.9. **तथाकथित उद्धारकर्ता:** संवत 1832 के प्रस्ताव में बड़े पैमाने पर गादीपति काका और पिराना के सैयदों की मैली शक्ति को कम करने में सफल रहे, जिन्हें जाति में उद्धारकर्ता के रूप में स्थापित किया गया था।

21 जागरुकता - नारायण रामजी लिम्बानी का दल आंदोलन

148. **<u>सुधार के क्षेत्र:</u>** नारायण रामजी लिम्बाणी के पराक्रम से सतपंथ के प्रचारकों की विचारधारा के विनाश का मेली मुराद पर किस प्रकार प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, इसे निम्नलिखित तालिका में देखा जा सकता है।

परिवर्तनों / ट्रैकिंग तालिका का निरीक्षण करें			
वैचारिक तोड़फोड़	विनाश विवरण	सुधार* केशरा	सुधार* NRL
1. मनोबल गिराने वाले क्षेत्र	19	प्रगति मे विद्रोह	**प्रगति मे जागृति**
1.1. धर्म			
1.2. शिक्षा	20.2	--	**शुरु**
1.3. सामाजिक जीवन	20.3	थोड़ा	**शुरु**
1.4. शक्ति संरचना	20.4	थोड़ा	**शुरु**
1.5. कानून एवं व्यवस्था	20.5	थोड़ा	**शुरु**
1.6. नेतृत्व	20.6	--	**बहुत**
2. अस्थिरता	21	--	**प्रगति में अच्छे प्रमाण में**
2.1. वित्त	21.1	--	
2.2. कानून एवं व्यवस्था	21.2	थोड़ा	**शुरु**
2.3. मीडिया	21.3	--	**ठंडा**
3. संकट	23	--	**--**
3.1. तथाकथित उद्धारकर्ता अंदरूनी सूत्र एक बाहरी व्यक्ति	23.3	सुधार	**बहुत**
4. स्थिति का सामान्यीकरणय	24	बाकी	**बाकी**
4.1. एक नये समाज की स्थापना – 2 चरणों में		बाकी	**बाकी**

अंतिम जीत शाश्वत है
।। सनातन धर्म की जय ।।

22

धर्म परिवर्तन रतनशी खिमजी खेताणी की टीम का आंदोलन

149. **<u>पृष्ठभूमि:</u>** रतनशी खिमजी खेताणी ने अपना सामाजिक जीवन नारायण रामजी लिम्बानी के नेतृत्व में जाति के सुधारक के रूप में शुरू किया । चूंकि नारायण रामजी ने सतपंथ विषय का गहराई और सूक्ष्मता से अध्ययन किया था, इसलिए वे सतपंथ की चाल, खेल और रणनीति से अच्छी तरह परिचित थे। नारायण बापा जाति सुधार के कार्य के लिए दिशा निर्देश देते थे और उसी के अनुसार रतनशीभाई उस पर अमल करते थे और उसे साकार भी करते थे। उन्हें नारायण रामजी का दाहिना हाथ माना जाता था । वेपार में उन पर भाग्यलक्ष्मी की अच्छी कृपा थी। कर्मभूमि मुम्बई में वे आर्थिक रूप से सम्पन्न थे।



रतनशी खिमजी खेतानी

वह एक महान वक्ता थे. उनके भाषण का बहुत प्रभाव पड़ा. जब पिराना के चाचाओं और सैयदों और उनके एजेंट के रूप में काम करने वाले, मुखी और पटेलों द्वारा किए गए अत्याचारों की कहानियाँ जनता के सामने रखी गईं तो लोग मंत्रमुग्ध होकर सुनते रहे और उनका दिल पिघल गया। उदाहरण सहित यह समझाने की उनकी शैली कि सतपंथ हिन्दू धर्म नहीं बल्कि मुस्लिम धर्म है, बहुत प्रभावशाली थी। ज़मीनी कार्यकर्ताओं से सीधे जुड़े होने के कारण उन्हें अभियान में आने वाली समस्याओं और कठिनाइयों की सटीक जानकारी होती थी।

नारायण रामजी से अलग होने के बाद, संत ओधवराम महाराज के मार्गदर्शन में, उन्होंने भगवान लक्ष्मीनारायण को जाति में इष्टदेव के रूप में स्थापित किया। सनातन धर्म के ढीले पड़े आंदोलन को पुनर्जीवित किया। कच्छ और गुजरात के गांव में भगवान लक्ष्मीनारायण का[110] क्षेत्रों में व्यापक प्रचार किया। 01अक्टूबर 1944 को प्रकाशित जाति संविधान और कच्छ कड़वा पाटीदार सनातन समाज की रिपोर्ट के पृष्ठ 5 और 6 पर कम से कम 54 लक्ष्मीनारायण मंदिरों की निर्माण सूची बनाई गई है। इसके अलावा यहां करीब 10 अन्य मंदिर भी निर्माणाधीन हैं, ऐसा जुबानी सुना जाता है। यही कारण है कि अभियान की शुरुआत में लगभग 65 मंदिरों के निर्माण में उनकी प्रमुख भूमिका रही है। मंदिर के उद्घाटन से पहले, उन्होंने काम का मार्गदर्शन और नजर करने के लिए आवश्यकतानुसार लंबे समय तक काम किया। यहां तक कि अपनी निजी अचल संपत्ति बेचकर भी उन्होंने मंदिरों को भारी आर्थिक योगदान दिया।

110 कम्पा = कैंपका अपभ्रंश

22 धर्म परिवर्तन - रतनशी खिमजी खेताणी की टीम का आंदोलन

संत ओधवराम महाराज के मार्गदर्शन में उन्होंने धर्म परिवर्तन की जो नींव रखी वह दिन–ब–दिन मजबूत होती गई। आज एक अनुमान के अनुसार 95 प्रतिशत से अधिक जाति के लोग धीरे–धीरे सतपंथ के चंगुल से निकलकर सनातनी बन गये हैं।

लेकिन दुर्भाग्य से जीवन के अंतिम दिनों में उनका स्वास्थ्य ख़राब हो गया। वात रोग[111] को बीमारी थी. जिससे उनकी गतिविधियों पर बड़ी रोक लग गई. संत ओधवराम महाराज के निधन के बाद यद्यपि धर्मांतरण और जाति सुधार का कार्य शिथिल हो गया, लेकिन उनके द्वारा बोए गए आंदोलन के बीज इतने प्रबल थे कि उनके बाद आने वाले व्यक्तियों और नेताओं ने इस आंदोलन को आगे बढ़ाया और आज लगभग 95 % जाति के लोग सनातनी हो गये हैं

बुजुर्ग श्री रतनशी खिमजी खेतानी के जीवन और कार्यों के बारे में जानकारी के लिए निम्नलिखित पुस्तकें महत्वपूर्ण हैं ;

1) कच्छ के कड़वा पाटीदारों का इतिहास, 2010 4:पृष्ठ 101
2) लक्ष्मीनारायण मंदिर (पुराना) हीरक जयंती, विराणी मोटी, 2004 153:पेज 8
3) लक्ष्मीनारायण मंदिर (नया) रजत जयंती, विराणी मोटी, 2014 152:पेज 7
4) रतनशीभाई के जीवन और कार्य पर एक पुस्तक, जो जल्द ही विराणी मोटी समाज द्वारा जारी की जाएगी। – (सनातानी क्रांति रत्न – रतनशी खिमजी खेतानी)

150. <u>**अभियान की महत्वपूर्ण घटनाएँ:**</u> आइए देखें कि रतनशी खिमजी के नेतृत्व वाले अभियान की महत्वपूर्ण घटनाएँ क्या थीं।

<u>**150.1. युवक मंडल से शुरुआत:**</u> वह मुंबई–घाटकोपर में कच्छ कड़वा पाटीदार युवक मंडल के संस्थापक मंत्री थे, जिसकी शुरुआत 1918 में नारायण बापा के नेतृत्व में सतपंथी युवाओं को सनातन के मिशन में शामिल करने के लिए की गई थी। बिंदु देखें (144.14). जाति की पहली सार्वजनिक बैठक उनके नेतृत्व और अध्यक्षता में मुंबई के दाना बंदर में आयोजित की गई थी, जिसकी रिपोर्ट जागरूकता पैदा करने के लिए प्रकाशित की गई है कि पिराना सतपंथ एक मुस्लिम धर्म है ।

श्री रतनशीभाई खिमजी खेतानी ने अपनी स्थापना से ही युवक मंडल को कई महत्वपूर्ण सेवाएँ प्रदान कीं। जिससे सतपंथ के भाइयों को समझाया जा सके और धीरे–धीरे सुधार के रास्ते पर लाया जा सके 88:पेज 31 । पिराणा की पोल में नारायण रामजी लिम्बानी ने रतनशीभाई को वीर जाति सेवक के रूप में संबोधित किया है 88:पृष्ठ 44।

111 संधिव = गठिया

150.2. **महत्वपूर्ण सेवाएँ:** एक सच्चे जाति सेवक के रूप में रतनशीभाई ने नारायण रामजी के नेतृत्व में लगन से जाति सेवा कार्य किये। उन्होंने नीचे उल्लिखित बैठकों में प्रमुख भूमिका निभाई। (सभा की लिस्ट छुट गई है)

क्र.	सभा/बैठक	प्रसंग	
1)	दाना बंदर सार्वजनिक बैठक, 1918	111	6:पृष्ठ 19
2)	कच्छ देश का पिरानापंथ कड़वा कनबी–दाणाबंदर–सार्वजनिक सभा, मुंबई – 1919	113	6:पृष्ठ 57
3)	क. क. पा. जाति की सार्वजनिक बैठक–विराणी मोटी, 1920	112	6:पृष्ठ 68
4)	क. क. पा. जाति सम्मेलन–पहला–कराची, 08 से 11–अगस्त –1920	130	6:पृष्ठ 100
5)	क. क. पा. जाति परिषद–दुसरा–कराची, 07 से 09–अक्टूबर –1922	114	6:पृष्ठ 153
6)	क. क. पा. जाति परिषद–तीसरा–घाटकोपर, 18 से 22–अप्रैल – 1924	86	6:पृष्ठ 231

150.3. **नारायण रामजी का अभियान लड़खड़ाने लगा:** एक अनुमान के अनुसार, नारायण रामजी के अभियान में लगभग 400 से 500 सतपंथियों की देह शुद्धि हो सकी। इसके अलावा उन्हें स्वामीनारायण संप्रदाय के करीब 1,500 लोगों का समर्थन हासिल था. इस प्रकार नारायण रामजी शुरुआत में लगभग 2,000 लोगों को ही आकर्षित कर पाये।

नारायण रामजी के अभियान की कमियों का प्रतिकार जनता के सामने दिखने लगा। नारायण रामजी के समय के बारे में दी गई जानकारी में इन दोषों के बारे में पहले बिंदु (146) में विस्तार से जानकारी दी गई है। कृपया एक बार पीछे मुड़कर देखें.

नारायण रामजी के अभियान के नियम इस प्रकार हैं ;

1) अनिवार्य देह शुद्धि
2) सार्वजनिक सामाजिक आयोजनों में अलग रसोई
3) जड़ मनोवृत्ति
4) नियम अपनाने में जल्दबाजी करना

इन नियमों को लोगों द्वारा व्यावहारिक और लागू करने योग्य नहीं बनाया गया। दूसरी ओर, सतपंथ के आगेवानो का भी बहुत अत्याचार बढ़ गया। जो लोग देह शुद्धि करते थे, उन लोगों और उनके परिवारों को तुरंत जाति से बाहर कर दिया जाता था। रिश्ते तोड़ते थे, तलाक लेते थे. यदि गाँव का कोई भी व्यक्ति उनका समर्थन करता तो उसे भी जाति से बाहर कर दिया जाता। इसलिये लोग नारायण बापा को छोड़कर जाने लगे। इतिहास कहता है कि लगभग सभी आर्य समाजियों ने नारायण बापा को छोड़ दिया 99:पृष्ठ 16। लोगों को अपने अभियान से स्थायी रूप से जोड़े नहीं रख सके.

150.4. ऐतिहासिक मोड़ – संत ओघावराम महाराज के साथ सम्पर्क: क. क. पाटीदार जाति के उद्धारक परम पूज्य संत ओधवराम महाराज ने अपने गुरु संत लालराम महाराज को। क. पा. जाति को सनातन धर्म के चरणों में वापस लाने का वादा किया गया था। इसका एहसास लगभग सभी को हो गया होगा 4:पेज 141, इसलिए इसे यहां दोहराया नहीं गया है। संत लालरामजी महाराज के बारे में अधिक जानकारी के लिए ईश्वर विहारी विलास पुस्तक 121:पृष्ठ 345 पढ़ें।

गुरु लालरामजी महाराज के निधन के कुछ वर्ष बाद यानि विक्रम संवत 1977 में सन् 1920–21 में संत ओधवराम महाराज गादी पर बैठे। इसके बाद उन्होंने अपने गुरु को दिया वचन पूरा करने का प्रयास किया। और एक दिन संयोग से उनकी मुलाकात रतनशी खिमजी से हुई।

<u>इस वार्तालाप के इमोशनल सीन और संवाद कुछ इस तरह रहे:</u>

रतनशी भाई : हरिहर महाराज श्री...

ओघवराम : हरिहर भाई... सुना है कि विरानी के आप युवा सनातन धर्म जागरण के लिए बहुत अच्छा काम कर रहे हैं... इसी संबंध में कुछ जानकारी के लिए आज आना हुआ।

(**रतनशी भाई का संदेह:** उन्हें अत्यधिक संदेह था कि रतनशीभाई ने नारायण रामजी के मार्गदर्शन का पालन करके देहशुद्धि की थी और इस बात से आश्चर्यचकित थे कि हम कितने महान हैं।)

रतनशी भाई : हां, हम सभी जाति में सनातन धर्म को जागृत करने के लिए नारणभाई के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। हम जाति सुधारक मंडल के माध्यम से जाति के लोगों को पिरानापंथ छोड़ने.. शरीर को शुद्ध करने...सनातन धर्म को फिर से स्वीकार करने के लिए मना रहे हैं।

ओघवराम : आप बहुत अच्छा कर रहे हैं। बहुत खुश। भगवान आप सब का भला करे।

ओघवराम : सनातन धर्म में जाति प्रथा को वापस लाने का काम कैसे चल रहा है ? आप महेनत से लगे हो न.

रतनशी भाई : (वट से बोलते हुए) – हाँ महाराज. जब तक लोग शुद्धिकरण के अनुष्ठान को स्वीकार नहीं कर लेते, तब तक हम उनके साथ खाने–पीने जैसा कोई व्यवहार नहीं करते।

ओघवराम : ओह

ओघवराम : रतनशी भाई, बताओ तुम घर पर कौन हो, सभी कुशल मंगल सही हैं ?

रतनशीभाई : हाँ सर. मैं और मेरी धर्म पत्नी, देहशुद्धि करके, खुशी और अच्छे से रह रहे हैं।

ओघवराम : और.. आपके भाई का परिवार.. परिवार में कौन कौन है ?

रतनशी भाई : (बड़े गर्व और अभिमान के साथ बोलते हैं।) भाइयों के बारे में तो बात ही मत करो। यद्यपि वे लोग सनातनी हो गये हैं, फिर भी वे शुद्ध नहीं हुए हैं । इसलिए हमने उनके साथ खाना–पीना बंद कर दिया है , मैं और मेरी धर्म पत्नी अलग हो गए हैं और अलग–अलग घरों में रहते हैं। हम इतने दृढ़ हैं कि देहशुद्धि न करने वालों की छाया भी अपने ऊपर नहीं पड़ने देते ।

ओघवराम : तो आप उन्हें मनाकर अपने पास क्यों नहीं रखते ? उन लोगों को समझाएं .. कि उन लोगों को भी देहशुर्द्धि करनी चाहिए ।

रतनशी भाई : (फिर अहंकार से) छोडो महाराज उनको समझाने के बाद भी वह लोग समझने को तैयार नहीं हैं।

वह लोगों को समझाते–समझाते थक गये। यद्यपि उनमें समझ है, फिर भी वे साहस नहीं करते । क्योंकि जो लोग नारायण रामजी के वचनों पर विश्वास करते हैं और शरीर शुद्धि करते हैं, उन लोगों को जाति के दुष्ट लोग तुरंत जाति से बाहर कर देते हैं। उनसे सारे रिश्ते तोड देते हैं. चाहे वह बहन–बेटी का रिश्ता हो, पति–पत्नी का रिश्ता हो, भाई–भाई का रिश्ता हो या पिता–पुत्र का रिश्ता हो। इसके अलावा कई लोग अपने दैनिक जीवन में बात–बात पर लोगों पर अत्याचार और अत्याचार करते रहते हैं।

वो लोग भले ही डरते हों, लेकिन मैं इन उपद्रवियों की हिंसा से बिल्कुल नहीं डरता. तो देखिए.. (फिर से) मैं और मेरी पत्नी अलग हो गए हैं। हमने उन्हें उनके कर्म पर छोड़ दिया है.

ओघवराम : (थोड़ी देर के लिए चुप। चिंतित भाव , चेहरे पर गंभीरता.. और गंभीर और सावधान आवाज में.. धीरे–धीरे.. रतनशीभाई से कहते है..)

रतनशी भाई, आप ये सब कर रहे हैं, ये तो ठीक है, लेकिन का बुरा न लगे तो एक बात कहूँ।

रतनशी भाई : हाँ, बताइये महाराज।

ओघवराम : मुझे लगता है, यदि आप अपने भाइयों को नहीं मना सकते, तो आप पूरी जाति को कैसे मना सकते हैं.. ? इस प्रकार.. संपूर्ण जाति को सनातनी बनाने के अपने लक्ष्य में, आपको सफल होना बहुत कठिन लग रहा है।

रतनशी भाई : (सोचते हुए..संत के मुख से निकले शब्दों का कारण समझकर रतनशीभाई के सभी गलत विचार, संदेह और अहंकार एक ही झटके में दूर हो गए। रतनशीभाई सोच में पड़ गए..)

महाराज.. ऐसा कौन सा मार्ग है ? क्या किया जाए ?

ओघवराम : देखो , रतनशीभाई , तुमने जो रास्ता अपनाया है वह सनातनी और सनातनी के बीच भेदभाव का रास्ता है । देह शुद्धि से अधिक महत्वपूर्ण यह है कि क्या उन लोगों ने पिराना सतपंथ धर्म छोड़ दिया ? क्या इमामशाह बावा को उन्होने छोड़ दिया ?
क्या उसने झुठा पानी पीना बंद कर दिया ?

यदि वह व्यक्ति बावा को छोड़कर सनातनी बन जाता है तो उसे शरीर शुद्धि करने की कोई आवश्यकता नहीं है। अगर आप उनके साथ अछूत जैसा व्यवहार करेंगे तो आपके साथ कौन आएगा ? इसके विपरीत, वे आपसे घृणा करेंगे और सतपंथी से घुल–मिल जायेंगे ।

रतनशी भाई : तो फिर मुझे क्या करना चाहिए ?

ओघवराम : देखो, रतनशी भाई, तुम्हें सबसे पहले अपने सनातनी के दोनों बड़े भाइयों से माफ़ी मांगनी चाहिए। उनके साथ घुलमिल जाएं और उनके साथ खाना–पीना शुरू कर दें। सनातनी भाई के साथ रहो सतपंथी भाई के साथ नहीं। कृपया समझें कि यदि सतपंथी भाई हैं, तो मैं उनसे किसी भी तरह के व्यवहार की बात नहीं कर रहा हूं।

रतनशी भाई : तो इससे क्या होगा ? क्या वे लोग हमसे जुड़ेंगे ? क्या वे लोग सतपंथी से व्यवहार करना बंद कर देंगे ?

ओघवराम : हाँ.. रतनशी भाई, आप देखिए.. भगवान निश्चित रूप से अच्छा करेंगे ।

150.5. **नारायण रामजी को विश्वास में लेने का प्रयास:** संत ओघवराम महाराज के साथ मार्मिक चर्चा का रतनशी भाई के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। और जाति सुधार के लड़खड़ाते अभियान से चिंतित रतनशी भाई अपने गुरु श्री नारायण रामजी लिम्बानी से मिलते हैं। नारायण ने बापा से विस्तार से बात की। बातचीत सुनने के बाद भावुक संवाद कुछ यूं रहे ;

नारायण भाई : रतनशी भाई, आप क्या बात कर रहे हैं? कई साधु ऐसे ही घूम रहे हैं. वो लोग बोल सकते हैं. लेकिन हमें अपना रास्ता नहीं छोड़ना चाहिए .

रतनशीभाई : नारायणभाई, आप सही कह रहे हैं। हम जाति को सनातन बनाने का लक्ष्य कभी नहीं छोडना है। लेकिन ये कोई साधारण घुमक्कड़ साधु नहीं है. मुझे लगता है यह कोई दिव्य पुरुष है. उनकी बातों में वजन है. उनकी बातों को खारिज नहीं किया जा सकता.

रतनशीभाई : ऐसा लग रहा है कि हमारा अभियान शुरू हो गया है, लेकिन हमें अभी तक इसमें अपेक्षित सफलता नहीं मिली है । और जिन्होंने कुछ सफलता हासिल की है, उनमें भी हर दिन कोई न कोई बुजुर्ग आकर आपके चरणों में अपनी पगड़ी उतार कर कहता है..

नारायण भाई, आपके सभी बाते सत्य हैं, लेकिन गेढेराओं के अत्याचार और हमारी जाति से बाहर कर देने के कारण, हम हमेशा के लिए सनातनी नहीं रह सकते। अब हम पुनः सतपंथ धर्म मे जा रहे हैं । यह कहकर जब वह आपके चरणों में गिर पड़ते है तो हम कुछ नहीं कर पाते ।

ये संत ओघवराम महाराज अत्यंत तेजस्वी संत प्रतीत होते हैं। उनकी सलाह काफी व्यावहारिक है. उनके व्यवहार में बहुत धैर्य और गंभीरता होती है। यह किसी साधारण संत का लक्षण नहीं है. मुझे लगता है कि उन्होंने हमें बहुत सही रास्ता दिखाया है , हमें उनकी बातों पर ध्यान देना चाहिए.

नारायणभाई : (कहीं नारायण बापा के अहम को ठेस लगी हो ऐसा व्यवहार करके बोल रहे है कि) ऐसी सलाह देने वाले बहुत लोग हैं. आप किस पर विश्वास करेंगे? अभियान को तोड़ने के लिए उपद्रवी जुल्म करेंगे। वो लोग पहले भी ऐसा कर चुके हैं. इससे डरो मत.

रतनशीभाई : नारायण भाई, मुझे कोशिश करने दो। अगर मैं सफल हुआ तो भी मैं तुम्हारे साथ हूं और अगर मै असफल हो गया तो भी मैं खुद को शुद्ध करके फिर से तुम्हारे साथ जुड़ जाऊंगा ।

नारायणभाई : गुस्से में.. कड़वाहट से.. रतनशीभाई धर्म का काम करना कोई खेल की बात नहीं है. आज शरीर की सफ़ाई करें, कल ख़राब और जब मज़ा आए तो दोबारा। धर्म का कार्य करने के लिए दृढ़ मन और दृढ़ निश्चय की आवश्यकता होती है।

रतनशीभाई : नारायण भाई.. मैं मामले की गंभीरता को समझता हूं। लेकिन कहीं हमारा अड़ियल रवैया हमारे लक्ष्य को खत्म तो नहीं कर देता,ये भी आपको देखना चाहिए. आप हमारे मार्गदर्शक हैं और रहेंगे। आए दिन लोगों द्वारा पगड़ी उतारकर हमें छोड़कर सतपंथ में शामिल होने की समस्या का कोई समाधान नहीं है।कुछ तो करना ही पड़ेगा ना ?

नारायणभाई : गुस्से में..तो तुम भी चले जाओ. कोई जबरदस्ती नहीं है. जैसा तुम्हें ठीक लगे वैसा करो. मेरे पास दोबारा नहीं आना। फिर हमारे रास्ते अब से अलग हो जाते हैं.

रतनशीभाई : (एक ओर सच्चे संत, संत ओघवाराम महाराज की धैर्य–गंभीरता, व्यावहारिक अनुशंसा और दूसरी ओर नारायण रामजी जैसे महान गुरु के क्रोध के बीच फंसे हुए हैं।)

फिर रतनशी भाई हाथ जोड़कर नारायण भाई से कहते हैं, हे नारायणभाई आप जो कर रहे हैं वह सही है , लेकिन मुझे इसे अपने तरीके से आजमाने दीजिए। आप मेरे मार्गदर्शक हैं और सदैव रहेंगे।

फिर मतभेद बढ़ गए. दोनों तरफ से आरोप–प्रत्यारोप का दौर चला. नारायण रामजी की टीम के खिलाफ रतनशी खिमजी की टीम के आरोपों के बीच, 1937 में प्रकाशित नखत्राणा नवावास लक्ष्मीनारायण मंदिर के प्रतिष्ठा महोत्सव की का अहेवाल एंव नारायण बापा कर्तव्य पंच पुस्तक से जान सकते है कि मतभेद के बावजूद दोनो महान और अदारणीय है। आज इसकी चर्चा करने का कोई औचिव्य नही है।

150.6. <u>**संत ओधवराम महाराज का उपाय काम कर गया:**</u> कौन जानता है कि भविष्य में कालचक्र क्या मोड़ लेगा। दोनों बुजुर्गों अलग हो गए. संत ओघवराम महाराज के निर्देश के अनुसार, रतनसी बापा अपने सनातन के दो बड़े भाइयों, यानी दो बड़े भाइयों और भाभियों से मिलते हैं, और उन व्यवहारो को फिर से शुरू करते हैं जिन्हें उन्होंने बंद कर दिया था । जैसा कि पहले बताया गया है, देखते देखते गिनती के दिनों में दोनों भाई – भाभी और सभी परिवार । 16 – जुलाई –1923 को देहशुद्धि कराते है, जिसका नोट पिराना पोल 88: पृष्ठ 536 के पृष्ठ 536 पर प्रकाशित सूची में शामिल है ।

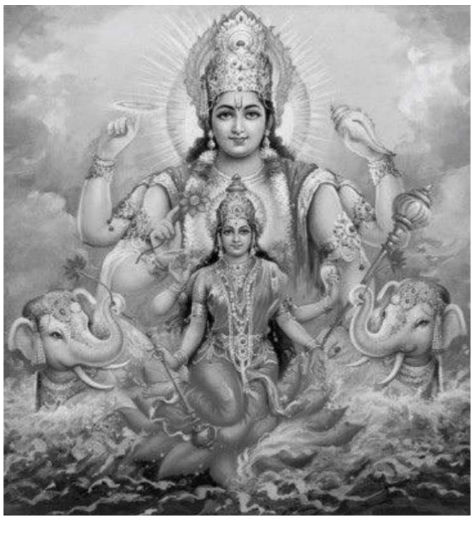
वर्षों तक रतनसी भाई इस काम में (भाइयों को मनाने में) सफल नहीं हो सके थे, गिनती के कुछ ही महीनों में रतनशी बापा को संत श्री ओघवराम महाराज पर अटूट विश्वास और श्रद्धा बढ़ गई। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि यदि जाति सुधार का कार्य सफल होना है तो संत ओघवराम महाराज द्वारा बताये गये मार्ग का अनुसरण करना होगा। वर्ष 1925–26 से रतनशी खिमजी और नारायण रामजी के बीच मतभेद सामने आने लगे। और धीरे–धीरे रतनशीभाई ने ऐसे लोगों की एक टीम बनानी शुरू की जो उनके विचारों से सहमत हों।

150.7. <u>व्यावहारिक समाधान की तलाश:</u> एक तरफ गेठेराओ का त्रास दूसरी ओर, शरीर की शुद्धि और हवन, यज्ञ, संस्कृत मंत्र, वेदों की ऋचाएँ आदि जैसे धार्मिक अनुष्ठान जिनका पालन करना आम आदमी के लिए असंभव हो गया। यदि आप किसी अनपढ़ जाति से, जो सैकड़ों वर्षों से हिंदू धर्म को भूल चुकी है और जो इस्लामी कलमा बोलने की आदी है, उनसे अचानक कठिन संस्कृत श्लोक और क्रियाएं करने के लिए कहें, तो यह संभव नहीं होगा। इस प्रकार दोनों ओर से घिरे हुए लोगों को एक सरल समाधान प्रदान करने की आवश्यकता थी।

यह संत ओघवराम महाराज के विरुद्ध तलवार की धार पर चलने जैसा था। उन्हें लोगों को हिंदू धर्म से जोड़े रखने का एक तरीका खोजना था और यह भी सुनिश्चित करना था कि भविष्य में कोई भी धार्मिक गुरु/साधु इस भोली–भाली जाति को गुमराह न कर सके।

लोगों को एक व्यावहारिक समाधान और एक सरल विधि की आवश्यकता थी जिसे आम, अज्ञानी, कम शिक्षित, कृषक परिवार आसानी से अपना सके। ऐसे में संत ओधवराम महाराज ने जाति धर्म परिवर्तन का बेहद आसान और स्थायी समाधान दिया.

150.8. <u>भगवान लक्ष्मीनारायण को इष्टदेव के रूप में:</u> एक व्यावहारिक समाधान के रूप में संत ओघवराम महाराज ने रतनशी भाई को भगवान लक्ष्मीनारायण को जाति के इष्टदेव के रूप में अपनाने की सलाह दी। यह पद्धति इतनी सटीक थी कि जाति का सामान्य वर्ग भी इसे आसानी से अपना सकता था। कोई विशेष बंधन या जटिल अनुष्ठान नहीं थे। शर्तों में से एक यह थी कि व्यक्ति को पूरी तरह से पिराना सतपंथ का त्याग करना होगा, भगवान लक्ष्मीनारायण के प्रति शुद्ध मन रखना होगा। ऐसा करने से मनुष्य सनातनी बन सकता है।



यही उपाय था कि इस पद्धति से यह जाति भविष्य में धर्म की गलत राह में नहीं फंसेगी, किसी गलत धर्मगुरु के चंगुल में नहीं फंसेगी और सनातन हिंदू धर्म के विशाल वट वृक्ष की छाया सदैव बनी रहेगी सनातन धर्म के मूल आधार में रहते हुए उस पर चल सकेगे.

इतना अच्छा उपाय खोजने के बाद, संत ओघवराम महाराज और बुजुर्ग श्री रतनशी खिमजी खेतानी के संयोजन से बहुत अच्छे परिणाम मिलने लगे। संत ओघवरम महाराज ने . रतनशी बापा को भगवान श्री लक्ष्मीनारायण को जाति के इष्टदेव के रूप में स्थापित करने की सलाह दी। जिसे धीरे-धीरे व्यवस्थित ढंग से अमल किया गया।

150.9. <u>भगवान लक्ष्मीनारायण क्यों?:</u> कुछ मित्र, इस समय, सोच रहे होंगे कि भगवान लक्ष्मीनारायण इष्टदेव क्यों हैं? अन्य देवता भी हो सकते थे. इसके उत्तर के लिए कृपया इस पुस्तक में आगे इस विषय पर प्रकाशित लेख पढ़ें।

150.10. <u>मंदिरों का निर्माण शुरू:</u> संत ओघवराम के मार्गदर्शन के अनुसार, विरानी मोटी गांव के खाना के मुख्य हॉल के अंदर एक मंदिर बनाने का निर्णय लिया गया। सारी तैयारियां हो चुकी थी. मुंबई से भगवान लक्ष्मीनारायण की पानमूर्ति (चित्र/छवि/फोटो) भी तैयार की गईं। प्रतिष्ठा तिथि भी निकल गई। लेकिन आखिरी वक्त पर विवाद खड़ा हो गया और मामला कोर्ट में चला गया. इसलिए विराणी मोटी के भगवान लक्ष्मीनारायण के मंदिर उद्घाटन में देरी हुई.

चूंकि उस समय गुजरात के बोरडीटिंबा (केशवपुरा) में कई मूल विराणी निवासी रहते थे, इसलिए वहां के भाइयों ने मंदिर के निर्माण में उत्साह दिखाया। इसलिए, विराणी के लिए तैयार की गई भगवान लक्ष्मीनारायण की मूर्तियों को 26 अगस्त -1928 को बोरडीटिंबा के मंदिर में प्रतिष्ठित किया गया। अधिक जानकारी के लिए अभिलेख 2023 पुस्तक पृष्ठ 321 6:पृष्ठ 321 देखें।

उसके 2 वर्ष बाद 15 अगस्त -1930 को ग्राम विराणी मोटी में भगवान लक्ष्मीनारायण का मूल मंदिर बनाया गया।

150.11. <u>विराणी मंदिर और इसकी सफल रणनीति - खाना को मंदिर में बदलना:</u> विराणी मोटी के भगवान लक्ष्मीनारायण मंदिर का निर्माण कच्छ कड़वा पाटीदार जाति के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था, इस मंदिर की खास बात यह है कि इसे सतपंथखाना के मुख्य हॉल के अंदर बनाया गया है। ख़ाने के मुख्य हॉल का मतलब है जैसे मस्जिद के मुख्य हॉल के अंदर। मंदिर का वास्तविक आकार छोटा था डेरु[112], लेकिन इसके पीछे का संदेश जाति की मजबूत बुनियाद डालकर फैले इस्लामी विश्वास को उखाड़ फेंकना। यह रणनीति संत ओघवराम महाराज ने दी थी72:पेज 36 6:पेज 506।

112 डेरु = देवगृह, देवमंदिर, देवालय

22 धर्म परिवर्तन - रतनशी खिमजी खेताणी की टीम का आंदोलन

उस समय पिराना सतपंथ एक हाड़ कंपा देने वाली मजबुत सिकंजा था । विचार करें कि अन्यजातियों के देवता, जो उनके नश्वर शत्रु हैं, का स्थान उनके घर में क्यों स्थापित किया गया । उस हॉल में एक तरफ इमामशाह बावा की पाट और दूसरी तरफ भगवान लक्ष्मीनारायण का मंदिर था। और ऐसा नहीं है कि इमामशाह बावा की जयकार करके भोली प्रजा को मनाते हुए नही बल्कि विधि सर नियमानुसार (कचहरी तक) लड़ाई करके लक्ष्मीनारायण मंदिर को खाना में स्थापित किया गया

खाना में मन्दिर निर्माण के कारण अन्य हिन्दू जातियाँ भी देवदर्शन के लिये आने लगीं। तब ख़ाना के मुखयो के सामने विकट स्थिति उत्पन्न हो गई। यदि मुखी अपने इस्लामी धर्मग्रंथ पढ़ें तो अन्य सभी हिंदू जातियों को पता चल जाएगा कि सतपंथ एक मुस्लिम धर्म है। और अगर ऐसा होता है तो बाहरी हिंदू पहचान अपनाना असंभव हो जाता है. पूरा मुसलमान होना चाहिए. इससे वे सतपंथ का प्रचार करने में असमर्थ हो गये और उनकी वास्तविक स्थिति उजागर हो गयी। अतः जाति पर अच्छा प्रभाव पड़ा और इमामशाह बावा पर से लोगों का विश्वास टूटने लगा 148:पृष्ठ 125 ।

आज उस गॉव में इमामशाह या सतपंथ का कुछ भी नहीं है। धीरे–धीरे पूरा गांव सतपंथ छोड़कर सनातनी हो गया है। पूरे गांव ने खाना पूरी तरह खत्म कर दिया है. विरानी गांव का इतिहास बताता है कि इसके पीछे सतपंथ से समझोते की रणनीति नहीं अपनाई थी. लेकिन एक सख्त और दृढ़ विपक्षी रणनीति अपनाई गई। उस गाँव के एक महान सुधारक श्री करसन शिवदास मुखी ने प्रमुख भूमिका निभाई 152:पृष्ठ 17 । आज विरानी गांव में खाना और पिराणा सतपंथ धर्म को उखाड़ फेंका गया है।

अगर आपको इस पवित्र स्थान पर जाने का मौका मिले तो एक बार जरूर जाएं। पहली नजर में यह एक साधारण मंदिर प्रतीत हो सकता है, लेकिन यदि आप इसे ऊपर बताए गए ऐतिहासिक नजरिए से देखेंगे तो आपको इस मंदिर की आध्यात्मिक भव्यता का वास्तविक दर्शन होगा। आपके मन में गर्व की भावना रहेगी। विरानी गांव से अनुरोध है कि विकास/नवीनीकरण या किसी अन्य कारण से इस मंदिर का भोजन कक्ष में परिवर्तन न करें। क्योंकि उस मंदिर का ऐतिहासिक महत्व के साथ–साथ आध्यात्मिक महत्व भी है। किस आध्यात्मिक शक्ति ने सतपंथ को छोड़ने के लिए एक पूरी जाति के मन को परिविर्तित किया होगा ? मंदिर को संरक्षित कर उस शक्ति का सम्मान और सुरक्षा करना बहुत जरूरी है।

150.12. **सफल रणनीति का जाति पर प्रभाव:** इस प्रकार विराणी मोटी के लक्ष्मीनारायण मंदिर के निर्माण के लिए संत ओधवराम महाराज द्वारा दी गई रणनीति की सफलता का इस अभियान पर गहरा और सकारात्मक प्रभाव पड़ा। इस रणनीति के तहत अन्य गाँवो मे खाना को लक्ष्मीनारायण मंदिर में बदलने का प्रयास किया गया। जहां संभावना कम थी, वहां खाने के बगल में या सामने भगवान लक्ष्मीनारायण की पानमूर्ति वाले मंदिर बनाए गए।

150.13. **रतनशी खिमजी के सामने सबसे कठिन कार्य:** रतनसी खिमजी को जाति परिवर्तन का श्रेय इसलिए दिया जाता है क्योंकि उन्होंने धर्म परिवर्तन के कार्य में सबसे कठिन कार्य किया था। यह कहना आसान है कि सतपंथ धर्म छोड़ दो, लेकिन वास्तव में धर्म छोड़ना उतना ही जटिल है। लोगों को एहसास हुआ कि वे पिराना सतपंथ में फंस गए हैं, लेकिन वे खुद को मुक्त नहीं कर सकते गेडेरा और मुखी की जाति के ऊपर सिकंजा संसा[113] जैसी पकड़ और जबरदस्त दबाव. ऐसी स्थिति में सतपंथ के विरुद्ध लोगों को खड़ा करना और मुस्लिम सतपंथ पूजा स्थलों को हिंदू मंदिरों में परिवर्तित करने की तैयारी करना, ऐसा अकल्पनीय और असंभव कार्य किया।

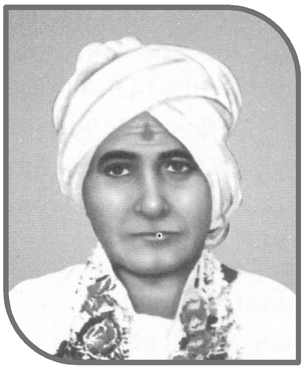
आज हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि इस अभियान को सफल बनाने के लिए उन्हें कितना और कैसा बलिदान देना पड़ा होगा। पैसा भी पानी की तरह बह गया. आज के हिसाब से उन्होंने हजारों करोड़ की अपनी निजी संपत्ति बेच दी और जाति मंदिरों को आर्थिक योगदान दिया। खुद का धन्धा[114] व्यापारिक सेवकों के भरोसे छोड़कर वे लगातार महीनों तक कच्छ और गुजरात में रहे और भगवान लक्ष्मीनारायण का प्रचार किया। बहुत अपमान, बदनामी, सच्चे–झूठे आरोप लगे।

सतपंथी प्रचार कार्य के लिए जाते समय पत्थर फेंकते थे। रात में भी यही डर रहता था. सुरक्षा के लिए रतनशी बापा के साथ स्वयंसेवकों की एक टीम लगातार मौजूद रहती थी. अकारण[115] स्थिति में हमले की संभावना अधिक थी। विराणी मोटी के शिवगण लालजी पटेल (नाकराणी), जो उनके अंगरक्षक के रूप में विशेष थे, ने उन्हें ऐसी स्थिति से बचाने के लिए महान सेवा प्रदान की है। उन दिनों घर छोटे होते थे और सोने की व्यवस्था खुले में, आँगन में या ओसरे में होती थी। रतनशीभाई की जान को इतना ख़तरा था कि रात में जब शिवगण बापा जागते थे और सुरक्षा का ध्यान रखते थे, तभी रतनशीभाई को नींद आती थी। रतनशी खिमजी को जाति के लिए ऐसे भयानक समय का सामना करना पड़ा है।

113 संसा = प्लायर, परेशान।
114 धिक्तो धन्धो = अच्छी तरह चलनेवाला–आबाद धन्धो
115 अकारण = अनिर्धारित

इस प्रकार उन्होंने किसी भी जाति या समाज के धर्मांतरण की सबसे कठिन दौर, जिसके विरुद्ध शायद लोहे के चने चबाना आसान है, अभियान की कमान संभाली। धर्म–परिवर्तन के संकट रूपी तूफ़ान से, भोली–भाली जाति की नाव को सफलतापूर्वक लक्ष्य तक पहुंचा दी। लोग धीरे–धीरे धर्म परिवर्तन की इस धारा में शामिल हो गए और पिराना सतपंथ को छोड़कर सनातन धर्म में परिवर्तित हो गया।

150.14. **<u>संतों का सहयोग:</u>** इन सभी कार्यों में संत ओधवराम महाराज का मार्गदर्शन, सहयोग एवं आशीर्वाद अत्यंत प्रभावशाली एवं सफलता की कुंजी रहा। प्रचार–प्रसार के कार्य में न केवल संत ओधवराम महाराज का मुख्य योगदान था, बल्कि उनके शिष्य संत दयालराम महाराज का भी बहुत बड़ा योगदान था।



संत ओधवरामजी



संत दयालरामजी

बुजुर्गों से सुना है कि जब संत ओधवराम महाराज प्रवचन के लिए निकलते थे तो सतपंथ के लड़के अक्सर उनके उपर पत्थर फेंक देते थे। पूर्व में मानकुवा, टोडिया आदि गांवों में ऐसे मामले घटित होते सुने गये हैं. ऐसे में एक पत्थर (पत्थर) संत ओधवराम महाराज के सिर पर गिरा और खून बहने के बावजूद संत ओधवराम महाराज ने लोगों का मनोबल बनाए रखने के लिए धैर्यपूर्वक गांव में अभियान जारी रखा. जब इसकी शुरुआत हुई तो वे डरे नहीं और अभियान चालु रखा। यह बात इस अभियान के शुरुआती दिनों में सनातन के बुजुर्गों/परिवारों से पता चली है।

संत ओधवराम महाराज के आदेशानुसार, संत दयालरामजी महाराज रतनशी खिमजी की टीम के साथ भगवान लक्ष्मीनारायण का प्रचार करने के लिए कच्छ के गांवों और गुजरात के कम्पाओं में गए। बाद में, कच्छ के गांवों और गुजरात के कंपा में भगवान लक्ष्मीनारायण के मंदिर बनाए गए और जाति को स्थायी रूप से सनातन धर्म में परिवर्तित कर दिया गया।

150.15. **सनातन जाति के साथ खाने–पीने का व्यवहार और व्याख्या:** रतनशी खिमजी की टीम की सफलता का मुख्य कारण यह था कि उन्होंने सनातन जाति, यानी जिन लोगों ने देशशुद्धि अनुष्ठान नहीं किया था, उनके साथ सम्मान के साथ व्यवहार किया। हम दूसरों से ऊँचे हैं, सुधरे हुए हैं, पवित्र हैं, आपके साथ बैठ कर खा नहीं सकते, ऐसा व्यवहार न अपनाकर उसने उनके साथ मित्रता और प्रेम का व्यवहार अपनाया। ये लोग पिराना सतपंथ धर्म छोड़ चुके थे, अतः इनके साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करना उचित नहीं था। (**विशेष नोट:** सतपंथी से कभी भी खाने–पीने का कोई व्यवहार नहीं किया गया)

खाने–पीने का विषय गंभीर क्यों था?

उन दिनों लोग अपनी धार्मिक शुद्धता बनाए रखने के लिए मांसाहारियों के साथ खाने–पीने में बहुत सावधानी बरतते थे। कुछ धर्मों के लोग लोगों को भ्रष्ट करने के लिए उनके भोजन में कुछ अशुद्ध पदार्थ मिलाते थे, जो किसी को पसंद नहीं होता। बड़े–बुजुर्गों ने सुना है. ऐसी भी मान्यता थी कि ऐसा मिलावटी खाना खाने से लोगों की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है 70:पेज 22 6:पेज 347 । ऐसी मान्यताओं के बीच यदि एक ही सनातन जाति के लोग एक–दूसरे के साथ खान–पान को लेकर अलग व्यवहार करेंगे तो स्वाभाविक है कि आंतरिक आक्रोश बढ़ेगा और कटुता पैदा होगी।

खाने–पीने का मुद्दा क्यों है गंभीर?

जाति में गंभीरता

खान–पान आदि के कारण जाति में भयानक दीवार खड़ी करके जाति सुधार के धर्म के कार्य का समर्थन न करना सुधार नहीं कहलाता। इसलिए, जातिगत विरोध में वृद्धि होती थी। 70:पेज 10 6:पेज 336

रतनशी खिमजी का दल खान–पान का व्यवहार सनातन की जाति से ही करता था। (अर्थात जिन्होंने पिराना सतपंथ धर्म को पूरी तरह से त्याग दिया था, लेकिन देहशुद्धि कीआवश्यक्ता पर जोर नहीं दिया)

कृपया ध्यान दें कि उन्होंने सतपंथी के साथ खाना–पीने का व्यवहार चालु नहीं किया। उनका विशेष ध्यान देवें

विशेष ध्यान

रतनशी खिमजी ने नखत्राणा नवा वास मंदिर के प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव के दौरान दिए गए भाषण में सनातनियों के साथ खाने–पीने की प्रथा किन परिस्थितियों में और किन परिस्थितियों में शुरू की गई, इसके बारे में विस्तृत विवरण दिया है। इस उत्सव की रिपोर्ट की विस्तृत जानकारी के लिए ग्रंथ सूची /संदर्भ सूची में दी गई है, जहां से आप इस रिपोर्ट को ऑनलाइन भी देख सकते हैं 70:पेज 39 से 46 6:पेज 363 से 369 ।

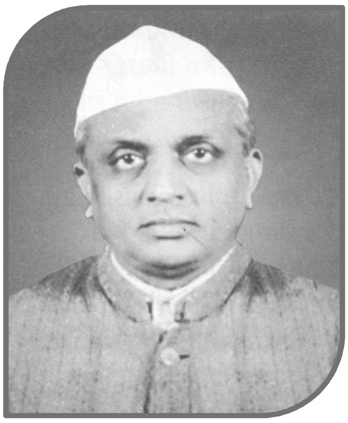
पहला मंदिर कच्छ में विराणी में, कच्छ में दूसरा और तीसरा लक्ष्मीनारायण मंदिर 70:पेज 10 6:पेज 336 बनाने के बाद जाति को 7 साल लगे। 20 मई 1937 को कच्छ का दूसरा लक्ष्मीनारायण मंदिर नखत्राणा में बनाया गया। यह स्वाभाविक है, क्योंकि अभियान शुरू होने के बाद लोगों में आत्मविश्वास पैदा होता है, जिससे वे सक्रिय हो जाते हैं, जिससे अभियान एक आंदोलन बन जाता है। इसमें कुछ समय लगना स्वाभाविक है. लेकिन आंदोलन तो जारी हो गया था.

इतिहास में उल्लेख है कि इस दौरान संत ओधवराम महाराज के मार्गदर्शन में कच्छ और कंपा में कई स्थानों पर भगवान लक्ष्मीनारायण मंदिर बनाए जा रहे थे। ऐसा उल्लेख इतिहास में देखने को मिलता है।

150.16. <u>नथू नानजी केशराणी/छाभैया का साथ मिला:</u> ऊपर वर्णित नखत्राणा में लक्ष्मीनारायण मंदिर के प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव कार्यक्रम में, समाज में एक महान जाति सेवक, बुजुर्ग नथू नानजी का आगमन हुआ 70: पृष्ठ 25 6: पृष्ठ 350 ।

खोजा मुसलमान से अपने प्रारंभिक जीवन के कर्म स्थान ओडिशा में एक कार्यक्रम में पिराना सतपंथ धर्म के बारे में जो सच्चाई बताई, वह नथू भाई नानजी के मन में घर कर गई और वे ओडिशा में अच्छी नौकरी छोड़कर अपनी जाति सुधारने के लिए कच्छ आ गए। उनके जीवन पर एक अच्छा लेख कच्छ के कड़वा पाटीदारों का इतिहास 4:पृष्ठ 103 पुस्तक के पृष्ठ 103 में प्रकाशित हुआ है ।

कच्छ आने के बाद नथू नानजी ; रतनशी खिमजी की टीम में शामिल हो गए। वह एक प्रभावशाली वक्ता थे और लोगों को पिराना सतपंथ छोड़ने के लिए बहुत अच्छी तरह प्रेरित करते थे।



नथू नानजी केशराणी/छाभैया

वे कच्छ कड़वा पाटीदार सनातनी समाज के संस्थापक महासचिव बने और भगवान लक्ष्मीनारायण के मंदिर बनाने के अभियान को गति देने में प्रमुख भूमिका निभाई। यह वाक्यांश कहने में जितना आसान हो सकता है, उनका काम उतना ही कठिन और मांगने जैसा था।

150.17. <u>वर्ष 1938 में – केंद्र समाज की स्थापना – कच्छ कड़वा पाटीदार सनातनी समाज:</u> जब नए विचारों के आधार पर एक नया संगठन बनाया जाता है, तो उसके तीन मुख्य चरण होते हैं।

1) मौखिक सहमति प्राप्त कर अनौपचारिक रूप से आयोजन करें। (शुरुआत में जांचने के लिए)
2) संगठन की एक व्यवस्थित संरचना बनाना और उसके अनुसार चलाना। (लोगों का साथ मिलता है तब)
3) संगठन को सरकार के साथ पंजीकृत करना। (बड़े पैमाने पर काम करना, बड़ी संपत्तियों का निर्माण करना आदि)

शुरुआत के पहले चरण में रतनशी खिमजी और नथू नानजी के नेतृत्व में क. क. पाटीदार सनातनियों की प्रथम मातृ समाज/केन्द्रीय समाज का उदय हुआ। यह किसी एक गांव की सोसायटी नहीं थी, बल्कि उनके गांव के सनातनी (उस समय लगभग 60 गांव 72:पेज 16 6:पेज 487) को एक साथ इकट्ठा करके बनाई गई थी। इस केंद्रीय समाज यानी कच्छ कड़वा पाटीदार सनातनी समाज के संस्थापक अध्यक्ष श्री रतनशी खिमजी खेतानी थे और संस्थापक महासचिव श्री नथू नानजी केशराणी/छाभैया थे।

सोसायटी की स्थापना की सही तारीख उपलब्ध नहीं है। लेकिन हमारे पास 2 ऐसी घटनाएं हैं, जिनसे अंदाजा लगाया जा सकता है कि सोसायटी की स्थापना साल 1938 में हुई थी.

1) वर्ष 1937 में नखत्राणा के लक्ष्मीनारायण मंदिर कार्यक्रम के दौरान नाथू नानजी का जाति में आगमन जैसा कि ऊपर बताया गया है 70:पेज 25 6:पेज 350 ।
2) वर्ष 1939 में सनातनी समाज ने वहिवंचाओं और ब्राह्मणों को पुनः नियुक्त किया, जो संवत् 1832 के पूर्व उल्लेखित काले प्रस्ताव द्वारा वहिवंचाओं और ब्राह्मणों के उपर बंदिश लगाई गई थी। जाति में घर–घर जाकर वंशावली लिखने की अनुमति और जिम्मेदारी कच्छ कड़वा पाटीदार सनातन समाज द्वारा दी गई। कृपया इस संबंध में इस पुस्तक में बाद में प्रकाशित लेख देखें।

अनुमान है कि सनातन समाज की स्थापना उपरोक्त दोनों घटनाओं के कालखंडों के बीच हुई होगी। जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि सनातनी समाज की स्थापना वर्ष 1938 में हुई थी।

सामाजिक संगठन के दूसरे चरण में इस समाज का व्यवस्थित संविधान भी बनाया गया है जो दिनांक 15 नवंबर 1945 में लागु किया 72:पृष्ठ 16 6:पृष्ठ 487 है। और तीसरे चरण में साल 1965 में[116] केंद्रीय सोसायटी सरकार के साथ पंजीकृत का गई थीं।

116 रजिस्टर = नख्तराना वर्ष 1960 में एक छात्रावास बन गया, लेकिन सोसायटी को 1965 में ट्रस्ट अधिनियम के तहत पंजीकृत किया गया था।

150.18. **गांव–गांव युवक मंडलों और समाजों की स्थापना:** नखत्राणा मंदिर की स्थापना के बाद गांव–गांव युवक मंडलों का गठन किया गया। ऐसी स्थिति में युवा ही धर्म का कार्य कर सकते हैं, इसलिए युवा मंडल का गठन करना आवश्यक था। इसके लिए गांव–गांव में बैठकें हुईं. उसके लिए रतनशी खिमजी, संत ओधवराम महाराज और संत दयालराम महाराज युवाओं में जोश भरने के लिए उपस्थित रहते थे 59:पृष्ठ 24।

150.19. **जाति उत्पीड़न आगेवानों की कमर तोड़ना:** जैसा कि इस पुस्तक में पहले बताया गया है, गेठेराओं की दमनकारी शक्ति का प्रयोग जाति द्वारा किया जाता था। लोगों को अपनी सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं के समाधान के लिए गेठेरों के पास में जाना पड़ता था। उस समय वे अन्याय, अत्याचार या पुराने शत्रुओं का बदला लेने के लिए गलत अवसर का लाभ उठाकर अत्याचार करते थे। युवा संघों और समाजों के गठन ने अब गेठेराओं के अधिकार को सीधी चुनौती दी। गेठेराओं को उन पर अत्याचार करने से पहले सौ बार सोचने पर मजबूर किया। क्योंकि लोकतांत्रिक व्यवस्था द्वारा निर्मित सामाजिक व्यवस्था में अब आम आदमी भी संगठित एवं शक्तिशाली हो गया था तथा दिन में तारे दिखाने की स्थिति में आ गया था।

150.20. **घेढेराओ की कमर टूटने के साथ ही सतपंथ की शक्ति भी टूट गई:** जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, पिराना सतपंथ ने गेठेराओं के माध्यम से अपनी औरंगजेबी–शक्ति का प्रयोग किया। लेकिन एक बार जब गेठेरा चले गए, तो पिराना सतपंथ की शक्ति भी चली गई।

150.21. **अलग जातियों की स्थापना – आंदोलन एक प्रमुख पडाव:** धार्मिक रूपांतरण की इस पंक्ति में एक केंद्रीय समाज की स्थापना आंदोलन का एक प्रमुख मुकाम साबित हुई। गांव–गांव बिखरे हुए और अल्पसंख्यक सनातनियों पर सतपंथ के काकाओं, मुखी, गेठेरा आदि के अत्याचारों का सामना करने के लिए सनातनियों का एक संगठन बन गया। जाहिर सी बात है कि ऐसे संगठन से उन्हें शक्ति भी मिली, साहस भी मिला और संबल भी मिला।

यहीं से सनातनियों की अपनी अलग जाति की शुरुआत हुई। पिराना सतपंथ से अलग होने के बाद सनातनी अब अपने फैसले सार्वजनिक रूप से अपने हिसाब से लेने लगे। सामाजिक तौर पर उनकी सभाएं भी अलग–अलग होने लगीं. पिराणा सतपंथ के नियमों और आदेशों का अनुपालन उन पर बाध्यकारी नहीं था। पिराना सतपंथियों ने यह भी मान लिया कि हमारा आदेश अब सनातनियों पर लागू नहीं होता, क्योंकि अब सनातनियों की जाति अलग है। और सनातनियों के एक केन्द्रीय समाज की स्थापना के साथ ही सनातनियों की एक अलग संस्था का जन्म हुआ।

सनातन धर्म का प्रचार–प्रसार और गाँव–गाँव में भगवान लक्ष्मीनारायण के मन्दिर बनाने का आन्दोलन इसी संस्था द्वारा उठाया गया और बहुत अच्छे ढंग से आगे बढ़ाया गया। एक केंद्रीय समाज के निर्माण ने सनातन धर्म प्रचार के कार्य को जबरदस्त प्रोत्साहन मिला।

सनातन समाज की टीम में कई महान सुधारक भी शामिल हुए। यहां सभी के नाम तो नहीं दिए जा सकते, लेकिन कुछ प्रमुख बुजुर्गों के नाम नीचे दिए गए हैं।

1) भीमजी केशरा लिम्बानी – कोटडा जडोदर
2) परबत लखु पोकार – मथल
3) राजाराम शामजी ढोलु – मानकुवा
4) खिमजी नागजी लिम्बानी – मथल (मास्टर)
5) शिवदास कानजी नाकराणी – विराणी मोटी
6) करसनभाई उकेड़ा रुडाणी – देशलपर वांढाय
7) मावजी पूंजा जाबुवाणी – नखत्राणा
8) नारायण शिवजी नाकराणी – विराणी मोटी

उन लोगों के योगदान को कम मत आंकिए जिनके नाम यहां उल्लिखित नहीं हैं। उपरोक्त नाम स्थान एवं समय की सीमा को ध्यान में रखकर ही लिये गये हैं। अगर किसी बड़े बुजुर्ग का नाम गलती से छूट गया हो तो कृपया माफ कर दें ऐसी प्रार्थना.

150.22. **<u>जाति के लिए नियम – संत ओधवराम:</u>** संत लालरामजी महाराज की इच्छा थी कि कच्छ की कडवा पाटीदार जाति को शुद्ध सनातन हिंदू धर्म को मानने वाली समाज बनाई जाए। उसके लिए एक उत्कृष्ट मार्गदर्शक ग्रंथ तैयार करना चाहिए।

अपने गुरु की इच्छा को पूरा करने के लिए संत ओधवराम महाराज ने स्वयं ईश्वर विहारी विलास भाग 2 दिनांक 22 नवंबर 1942 (121:पेज 341) से आगे पुस्तक की रचना की । उस पुस्तक के पृष्ठ 355 पर, कड़वा पाटीदार भाइयों द्वारा पालन किये जाने योग्य नियम दर्शाये गये हैं। ये नियम जाति को मुस्लिम प्रथाओं और रीति–रिवाजों से मुक्त करने के लिए संत ओधवराम महाराज द्वारा दिए गए थे। इसमें कुल 23 नियम बताए गए हैं जैसे वैदिक पद्धति से शादी करना, पावल न पीना, दाह–संस्कार करना मुख्य है।

इसमें अंतिम नियम सतपंथियों से संबंध न रखने और उनका त्याग करने की बात कहता है। फिर एक दैनिक क्रिया (एक प्रकार की शिक्षा पत्री) दी जाती है। जिसमें 16 संस्कार भी लिखे हुए हैं।

यह पुस्तक जाति को मुस्लिम प्रथाओं से मुक्त करने का रास्ता बताती है।

150.23. **<u>जातीय रीति–रिवाज – बोरडी टीम्बा:</u>** गुजरात के कम्पा क्षेत्र में जाति सुधार का कार्य जोर शोर से चल रहा था। बोरडी टीम्बा, मोतीसरी (मोतिश्री) कम्पा आदि बहुत जागृत थे। काम्पा क्षेत्र में संत दयालरामजी महाराज का प्रचार कार्य बड़े जोर शोर से चल रहा था। विक्रम संवत 2000 मागसर वद 5, दिनांक 16– दिसंबर –1943 में प्रकाशित बोरडी टीम्बा विजय मंडल कड़वा पाटीदार जाति सम्मेलन और

संविधान (83 6:पृष्ठ 413) नामक एक रिपोर्ट बहुत अच्छी जानकारी देती है। 26 नवम्बर 1943 को ग्राम रामपुरा कम्पा में सुधारक बंधुओं की एक सार्वजनिक बैठक आयोजित की गई । उस बैठक में मानदंड और जाति नियमों को तैयार किया गया और यह निर्णय लिया गया कि उनके मुख्यालय बोरडी टीम्बा में एक सभा बुलाकर आगे की कार्रवाई की जाए।

15 से 18 दिसंबर 1943 तक बोरडीटीम्बा में बुलाई गई एक बैठक में जाति नियमों को सर्वसम्मति से पारित किया गया (रिपोर्ट का पृष्ठ 10 देखें)। उस रिपोर्ट के पृष्ठ 4 में कहा गया है कि संत ओधवराम महाराज की अनुशंसा के अनुसार, **सतपंथियों के साथ खाना-पीना पूरी तरह से बंद करने का निर्णय लिया गया** (रिपोर्ट पृष्ठ 13 देखें)।

मोतीसरी कंपावाला निवासी मुल गांव मथल निवासी श्री हरिभाई करमशी भवाणी को यह देखकर खुशी हुई कि जाति नियम पर प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किए गए। उनका दृढ़ संकल्प था कि यदि यह सब ठीक-ठाक चलता रहा तो कच्छ में कुलदेवी उमिया माताजी का मंदिर बनने पर वे 1001/- रुपये देंगे। उनके इस दृढ़ संकल्प के कारण वांढाय में उमिया माताजी मंदिर का निर्माण का मार्ग प्रसश्त हुआ।

150.24. **<u>वाढ़ाय में उमिया माताजी मंदिर का निर्माण:</u>** जैसा कि ऊपर बताया गया है, मोतीसरी कंपा के श्री हरिभाई करमशी भवाणी की दिल की इच्छा के अनुसार, संत ओधवराम महाराज के आदेश से ओधव आश्रम के अंदर उमिया माताजी का एक मंदिर बनाने का निर्णय लिया गया। प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव का एक विस्तृत (पूर्ण) विवरण वर्ष 1945 में श्री कड़वा पाटीदार कुल देवी की श्री उमिया देवी माताजी के प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का एक संक्षिप्त विवरण शीर्षक से प्रकाशित हुआ है 93 6: पृष्ठ 436 । इस घटना का एक संक्षिप्त विवरण वर्ष 2010 में प्रकाशित उमिया माताजी संस्थान वांढाय स्मृतिग्रंथ 145:पृष्ठ 66 में भी दिया गया है, लेकिन यह संक्षिप्त है।

हालाँकि मंदिर एक आश्रम में बनाया गया था, लेकिन उत्सव को काम्पा और कच्छ के सभी क्षेत्रों के लोगों से बहुत समर्थन मिला। कच्छ कड़वा पाटीदार सनातन समुदाय ने अग्रणी भूमिका निभाई। रिपोर्ट के पृष्ठ 6 पर बैठक का वर्णन करते हुए कहा गया है कि सभी लोग श्री कच्छ कड़वा पाटीदार सनातन समाज की बैठक के रूप में एकत्र हुए थे।

इस अभियान की दृष्टि से यहां यह जानना जरूरी है कि महाराज ओधवराम की उपस्थिति में सनातनी समाज के प्रमुख आगेवानों ने मंदिर का उद्घाटन किया था 93:पेज 4 6:पेज 440 । मंदिर का ध्वजारोहण और मूर्ति-प्राणप्रतिष्ठा जैसे मांगलिक कार्य श्री रतनशी खिमजी के हस्तो से संपन्न हुए। 93:पेज 14 6:पेज 447।

कच्छ के कड़वा पाटीदारों का इतिहास 4 पुस्तक के पृष्ठ 198 पर उमिया माताजी मंदिर - वांढाय शीर्षक से एक लेख है। जिसमें पेज 199 पर कहा गया है कि वांढाय मंदिर के उद्घाटन से एक दिन पहले कच्छ कड़वा पाटीदार सनातन समाज की एक बैठक श्री हरिभाई करामशी भवाणी की अध्यक्षता में हुई और

इसका संचालन सचिव नाथूभाई नानजी केशराणी ने किया. उस अवसर पर आयोजित सनातनी समाज की दूसरी बैठक की अध्यक्षता परबत लखु पोकार ने की। उद्घाटन अवसर पर आयोजित कच्छ कड़वा पाटीदार सनातनी समाज की सभा के अध्यक्ष श्री रतनशी खिमजी खेताणी थे। जिससे कच्छ कड़वा पाटीदार सनातन समाज के योगदान को समझा जा सकता है।

इस कार्यक्रम में पिराना सतपंथ धर्म को त्याग कर सनातन धर्म अपनाने के कई उपदेश दिये गये। इसके अलावा स्कूलों की स्थापना पर भी जोर दिया गया।कार्यक्रम में सुधारक संत ओधवराम, संत दयालराम, हरिभाई करमशी, रतनशी खिमजी, परबत लखू, नथू नानजी आदि मुख्य वक्ता थे।

150.25. **<u>वांढाय मंदिर का प्रभाव:</u>** सैकड़ों वर्षों तक यह जाति इस्लाम में परिवर्तित हो गई और अपने मूल वंश और उसकी उत्पत्ति की कहानी आदि को भूल गई। सौभाग्य से, उमिया माताजी उंझा संस्थान से जुड़े पुरूषोत्तम लल्लूभाई पारिख द्वारा लिखित पुस्तक कणबी क्षत्रिय उत्पत्ति और इतिहास 106 105 , 106 105 में निश्चितता के साथ कहा गया है कि कणबी लोग क्षत्रिय से संबंधित हैं। गोत्र और उनकी मूल जाति कडवा पाटीदार जाति है। इसका सारांश इस पुस्तक के उंझा और गुजरात क्षेत्र अध्याय में देखा जा सकता है ।

वांढाय में मंदिर के निर्माण से मुमना की पहचान मिटाने में बहुत मदद मिली। अन्य हिंदू जातियों ने कणबियों को हिंदू के रूप में मान्यता दी और वे उंझा में स्थित उमिया माताजी के साथ सामाजिक और धार्मिक रूप से जुड़ गईं।

150.26. **<u>संत ओधवराम महाराज की इच्छा थी कि कच्छ कड़वा पाटीदार समाज वांढाय मंदिर का प्रबंधन करे:</u>** दिनांक 05 जुलाई 1947 को संत ओधवाराम महाराज के निमंत्रण पर उमिया माताजी के प्रांगण में श्री कच्छ कड़वा पाटीदार समाज की एक बैठक बुलाई गई थी । उस सभा के अध्यक्ष राजाराम शामजी ढोलु मानकुवा थे।

संत ओधवराम महाराज ने निवेदन किया कि वांढाय में चलने वाली संस्था को श्री कच्छ कड़वा पाटीदार के अधीन चलाया जाना चाहिए। इस विषय पर काफी देर तक चर्चा हुई. अंत में सुधारक आगेवान श्री मावजी धनजी ने प्रस्ताव रखा, जो पारित हुआ कि ;

श्री कच्छ कड़वा पाटीदार समाज की आज हुई बैठक में निर्णय लिया गया कि पूज्य महाराजश्री ओधवरामजी श्री कच्छ वांढाय ईश्वर नगर में शुरू किए गए बोर्डिंग और साथ ही माताजी के मंदिर के पूरे परिसर को पाटीदार समाज को सौंप रहे हैं और इसका ट्रस्ट डीड पंजीकृत करनेके लिए तैयार है। ऐसे में आज की बैठक में फैसला लिया गया है कि पाटीदार समाज माताजी के मंदिर की देखरेख और व्यवस्था का जिम्मा संभालेगा और इस प्रकार कि मंगलवार 23– सितम्बर –1947, मंगलवार, 23–सितम्बर–1947 को जनरल सभा बुलाई जायेगी और कच्छ के सभी गाँवों से और परदेश से अधिक से अधिक

संख्या में भाग लेने हेतु प्रेरित किया जाए जब तक कि यह तय न हो जाए तब तक इसे उसे उसी ढंग से चलाया जाए और पूरी तरह से स्वीकार करते हुए, तभी सभा ऐसा करने का निर्णय लेती है और इस बीच 2.5 महीने के अभियान कार्य के लिए निम्नलिखित योजना तैयार की गई है। लिखित तालुका वार प्रचारक सभा में आने के लिए दृढ़ सम्मेलन में भाग लें और एक योजना तैयार करने के लिए प्रत्येक गांव के भाइयों का सहयोग लेते हुए जिसके लिए नीचे उल्लिखित भाइयों की एक कार्य समिति नियुक्त की जाती है।

फिर, तद्उपरांत खेडोई, देशलपर, कंठी, नखत्राणा, लखपत और गुजरात क्षेत्रों के भाइयों की एक सूची है और श्री कच्छ कड़वा पाटीदार समाज के प्रधान कार्यालय की ओर से कुछ विशेष नाम भी शामिल हैं।

परन्तु हम यह समझ सकते हैं कि इस प्रस्ताव के बाद भारत स्वतन्त्र हो गया और देश के विभाजन के कारण कराची में रहने वाले भाइयों के भारत आ जाने से कुछ दिनों तक जाति में अव्यवस्था रही होगी। अतः उक्त प्रक्रिया उस समय पूर्ण नहीं हो सकी।

इसके बाद 15 अप्रैल –1962 को केंद्रीय समाज की कार्यकारिणी बैठक में मोतीसरी कंपा और डायाभाई हरिभाई (मथल) और बादाम कंपा के वेलजीभाई वालजीभाई (विराणी) ने एक प्रस्ताव दिया जिसके बारे में एक नोट इस प्रकार मिनट बुक में दिखाई देता है ;

वांढाय में श्री उमिया माताजी के मंदिर के प्रबंधन के लिए और इसे ट्रस्ट अधिनियम के तहत पंजीकृत किया जाना है या नहीं, और इसलिए ट्रस्ट और कारोबारी आदि नियुक्त करना है। इसलिए सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि इस मामले पर सामान्य सभा में चर्चा की जानी चाहिए। ऐसी सबकी सहमति से निर्णय लिया गया।

इसके बाद, ओधवराम बापा की अधूरी इच्छा संत शांति रामजी महाराज ने वर्ष 1964 में पूरी की। जिसके बारे में अधिक जानकारी इसी किताब में आगे बताए गए लेख में दी गई है.

150.27. <u>**जातीय रीति–रिवाज:**</u> सैकड़ों वर्षों से यह जाति मुस्लिम रीति–रिवाजों और परंपराओं का पालन करती रही है। सनातन में आने के बाद किन रीति–रिवाजों और परंपराओं का पालन करना चाहिए ? यह एक बड़ा सवाल था. जाति में समान रीति–रिवाजों और परंपराओं का होना बहुत ज़रूरी था, ताकि जाति एक साथ बंधी रहे और जाति में एकता आए। जिससे जाति अक्षुण्ण रहे और टूटे नहीं।

जैसा कि पहले बिंदु (150.23) में उल्लेख किया गया है, बोरडीटिम्बा में पारित जाति रीति–रिवाजों के समान रीति–रिवाज कच्छ में पारित किए गए थे। इसके लिए कच्छ कड़वा पाटीदार सनातन समाज द्वारा 01 अक्टूबर –1944 को वांढाय में एक विशेष बैठक बुलाई गई , जिसमें रीति रिवाजों को पारित किए गए।

जाति से अन्धविश्वास, कुरीतियाँ, कट्टरता को सदैव के लिए दूर करने तथा जाति को सदैव सनातन धर्म पर रहने के लिए जाति प्रथाएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं।

150.28. **<u>गाँव–गाँव प्रचार के कुछ उदाहरण:</u>** कच्छ कड़वा पाटीदार सनातन समाज के नेताओं ने कच्छ के प्रत्येक क्षेत्र के मुख्य गाँवों में जाकर जातीय अनुष्ठान तैयार कर खूब प्रचार–प्रसार किया। इस यात्रा का विस्तृत विवरण कच्छ कड़वा पाटीदार के 72: पृष्ठ 20 से 30 के पृष्ठ 20 से 30 और 6: पृष्ठ 491 से 500 के 6: पृष्ठ 491 से 500 पृष्ठ 491 से 500 पर पढ़ा जा सकता है। सनातनी समाज – जाति मानदंड और रिपोर्ट. यह एक प्रकाशित वृत्तांत है, लेकिन ऐसी कई अप्रकाशित यात्राएँ सनातन के बुजुर्गों द्वारा की गई होंगी, जिनका आज हमारे पास कोई रिकॉर्ड नहीं है। बुजुर्गों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ा। इसका अंदाजा लगाने के लिए एक बार इस रिपोर्ट को अवश्य पढ़ें।

150.29. **<u>लक्ष्मीनारायण मंदिर का प्रचार:</u>** इसी तरह बुजुर्ग लोग लक्ष्मीनारायण मंदिर के प्रचार के लिए खूब यात्राएं करते थे. वे गांवों में जाते थे, वहां बैठकें करते थे और लोगों को प्रोत्साहित करते थे. उन सभाओं में सतपंथियों ने किस प्रकार मंदिरों को रोकने का प्रयास किया, इसका अत्यंत गौरवपूर्ण इतिहास है, पूरी दुनिया के दबावों और अत्याचारों के बावजूद भी सनातनी डटे रहे और भगवान लक्ष्मीनारायण के मंदिर बनवाते रहे। कुछ गाँवों में ऐसे प्रचार कार्य की यात्रा रिपोर्टें पढ़ने लायक हैं। जो अभिलेख 2023 6 पुस्तक में सम्मिलित है। जैसे कि;

1) बोरडी टिम्बा लक्ष्मीनारायण मंदिर 6:पेज 321 दि. 26–अगस्त–1928

2) नखत्राणा नवावास लक्ष्मीनारायण मंदिर 70 6:पेज 325 दि. 20–मई–1937

3) खेडोई लक्ष्मीनारायण मंदिर 65 6:पेज 543 दि. 18–दिसम्बर–1945

4) खोमडी लक्ष्मीनारायण मंदिर 66 6:पेज 553 दि. 16–मई–1946

5) उखेड़ा लक्ष्मीनारायण मंदिर 67 6:पेज 571 दि. 23–मई–1946

150.30. **<u>अदालती मामले:</u>** सनातन आंदोलन को व्यक्तिगत रूप से या अन्यथा कमजोर करने के लिए कई अदालती मामले और पुलिस शिकायतें दर्ज की गईं, खासकर उन गांवों में जहां लक्ष्मीनारायण मंदिर बनाया गया था, बल्कि उन गांवों में भी जहां सनातनी आंदोलन चल रहा था। आपको हर गांव में बुजुर्गों को अदालती मुकदमों और पुलिस शिकायतों के जरिए परेशान करने के कई मामले मिल जाएंगे। ऐसे मामलों से न घबराते हुए सनातनियों ने अपनी जीत निश्चित की।

150.31. <u>सगाई तोड़ने के मामले फिर शुरू:</u> सतपंथियों और सनातनियों के बीच 27 जून 1912 को एक समझौता हुआ कि रिश्तेदारी के मामले में किसी को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। अधिक जानकारी के लिए बिंदु (144.10) देखें । इस समझौते का पहला उल्लंघन सतपंथियों द्वारा किया गया और इसकी विस्तृत चर्चा कच्छ कड़वा पाटीदार समाज की 19– नवंबर –1945 की कार्यकारी बैठक के मिनटों में मिलती है। लंबी बहस के अंत में समाज रसलिया के भाइयों के साथ खड़ा हुआ क्योंकि सतपंथियों ने रसलिया सनातनी के लड़कों की रिश्तेदारी तोड़ने की पहल की थी।

150.32. <u>1947 में नए अध्यक्ष:</u> भारत के स्वतंत्र होने से कुछ ही दिन पहले, समाज के रिकॉर्ड बताते हैं कि भीमजी केशरा लिम्बाणी – कोटडा जडोदर वाल ने 05 जुलाई 1947 को कच्छ कड़वा पाटीदार सनातन समाज के अध्यक्ष के रूप में पदभार संभाला और नथू नानजी केशराणी मंत्री बने।

स्वतंत्रता के बाद प्रचार–प्रसार का कार्य कुछ धीमा पड़ गया प्रतीत होता है। 1947 के ठीक बाद 1951 का नोट है। इसका स्वाभाविक कारण यह हो सकता है कि जाति का जो बड़ा वर्ग कराची में रहता था, उसे देश के विभाजन के बाद भारत के अन्य प्रांतों में बसने में समय लगा होगा।

चूंकि सनातन समाज के ये सभी अभिलेख भीमजी केशरा के घर में पाए गए थे, इसलिए यह समझा जाता है कि समाज का कार्यालय नखत्राणा से भीमजी केशरा के घर में स्थानांतरित कर दिया गया होगा। अब जो भी दस्तावेज़ उपलब्ध हैं, उन दस्तावेज़ों को कोटडा जड़ोदर समाज द्वारा व्यवस्थित रूप से संरक्षित किया गया है, जो खुशी की बात है।

150.33. <u>वांढाय में पहली छोटी बोर्डिंग:</u> वांढाय में क. क. पाटीदार बहुत छोटे पैमाने पर, लेकिन सबसे पहले, जाति के बच्चों के लिए बोर्डिंग की स्थापना की गई थी। उसके बाद गुजरात में रहने वाले जाति बंधुओं ने धनसुरा में बड़े पैमाने पर बोर्डिंग की स्थापना की 71:पेज 21।

150.34. <u>हीरापुर कंपा अधिवेशन और धनसुरा में पहला बड़ा बोर्डिंग (छात्रावास):</u> 15 अप्रैल 1954 को हीरापुर कंपा में एक अधिवेशन 60 6:पेज 592 आयोजित किया गया था । उस सम्मेलन में संत ओधवराम महाराज, रतनशी खिमजी, शिवदास कानजी, नथू नानजी जैसे हजारों जाति सुधारक भी उपस्थित थे।

इस सत्र में 2 मुख्य मुद्दों पर निर्णय लिया गया ;

1. गुजरात में किसी केंद्रीय स्थान पर पाटीदार समुदाय के लिए बोर्डिंग (छात्रावास) बनाना.
2. कच्छ में समस्त ज्ञाति का अधिवेशन आयोजित करना।

इस अधिवेशन में उपस्थित बुजुर्ग श्री बेचरभाई मुलजीभाई भावाणी (मोतिसरी कंपावाला, धनसुरा समाज के 27 वर्षों तक पूर्व मंत्री और 3 वर्षों तक अध्यक्ष) ने स्वयं सम्मेलन का अच्छा विवरण दिया, जो

प्रकाशित रिपोर्ट में नहीं है। उन्होंने कहा कि; सम्मेलन में चर्चा हुई कि.. बच्चों के पढ़ने के लिए स्कूल तो हैं, लेकिन रहने की व्यवस्था नहीं है. इसलिए छात्रों के लिए बोर्डिंग (छात्रावास) आवश्यक है। इसलिए बोर्डिंग बनाने का निर्णय लिया गया. तो **संत ओधवराम महाराज एक पैर पर खड़े हो गए** और बोले कम से कम रु. जब तक 60,000/– इकट्ठा नहीं हो जाते, मैं नहीं बैठूंगा. लोगों ने अपनी क्षमता के अनुसार योगदान दिया. और पलक झपकते ही 60,175/– रूपये का योगदान दर्ज हो गया।

151. धर्मान्तरण अभियान की सफलता के प्रमुख बिन्दु:

151.1. **सकारात्मक कार्यशैली:** रतनशी खिमजी की टीम ने सकारात्मक कार्यशैली अपनाई। विधर्मीओं द्वारा किया गया नकारात्मक प्रचार हुआ है, टीम को बदनाम किया गया या अभियान को बदनाम किया गया, लेकिन फिर भी टीम ने ऐसी नकारात्मक बातों का जवाब अपने सकारात्मक कार्यों से दिया है। इससे अनावश्यक विवादों में पड़े बिना अभियान ने अपना काम जारी रखा, जिससे उसे सफलता मिली.

151.2. **कठिन परिश्रम:** जाति सुधार का कार्य आसान नहीं है। कोई भी सुझाव दे सकता है. लेकिन उन सुझावों को क्रियान्वित करना विशाल हिमालयी, विश्वव्यापी कठिनाइयों का सामना करने जैसा है। बहुत मान अपमान सहना पड़ता है. बड़ा आर्थिक योगदान भी देना पड़ता है. संक्षेप में कहें तो व्यक्ति को बहुत कड़ी मेहनत और लंबे समय तक काम करना पड़ता है। साफ है कि इस अभियान के नेताओं ने अभियान को सफल बनाने के लिए कड़ी मेहनत की है.

151.3. **सुधार की मशाल जलाए रखना:** नारायण रामजी का अभियान लड़खड़ाने के बाद, यह आशंका थी कि लोगों के पास अब पिराना सतपंथ की ओर लौटने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। उस समय संत ओधवराम महाराज और रतनशी खिमजी की जोड़ी ने जाति, भगवान श्री लक्ष्मीनारायण को इष्टदेव का रूप देकर सनातन आंदोलन को आगे बढ़ाया।

151.4. **टीम वर्क:** भले ही शुरुआत में रतनशी खिमजी और संत ओधवराम महाराज अकेले थे। लेकिन धीरे–धीरे उन्होंने अपनी टीम बनाई. हर तरह के लोग शामिल थे. मिशन में नाथू नानजी, राजाराम शामजी, परबत लखू, खिमजी मास्टर, भीमजी केशरा, शिवदास कानजी, मावजी धनजी आदि शामिल हुए, जो बहुत बुद्धिमान, प्रभावशाली और शक्तिशाली व्यक्तित्व थे। जिससे यह अभियान सफल हुआ।

151.5. **कोई जटिल परिस्थितियाँ नहीं थीं:** सनातनी बनने के इच्छुक सतपंथियों को इस अभियान के दौरान कोई जटिल कार्य या अनुष्ठान नहीं करना पड़ा। कोई विशेष शर्त नहीं थी. एकमात्र शर्त यह थी कि सतपंथ का संपूर्ण तिरस्कार करके सच्चे मन से शुद्ध भक्ति के साथ सनातन धर्म को स्वीकार किया जाए।

151.6. **<u>व्यावहारिक धर्म–पद्धति:</u>** भगवान श्री लक्ष्मीनारायण को इष्टदेव के रूप में जाति को देकर, उन्होंने धर्म की एक प्रणाली दी जिसे लोग आसानी से समझ सकते थे और उसका पालन कर सकते थे। भगवान श्री लक्ष्मीनारायण की परंपरा में सभी प्रकार के लोगों के लिए धर्म और आध्यात्मिकता के मार्ग पर पहला कदम उठाने से लेकर अंततः परमात्मा तक पहुंचने तक की यात्रा में सब कुछ है।

भले ही आपको संस्कृत के कठिन श्लोक आते हों या नहीं. सभी का स्वागत है। यदि आपको यज्ञ और अनुष्ठान भी करने हैं तो भी छूट है और सुबह–शाम दीपक जलाना भी उत्तम है।

विधर्म के मार्ग पर गिरी हुई जातियाँ जब वापस सनातन धर्म के मार्ग पर आईं, तो उन्होंने अपनी कठिनाइयों और आवश्यकताओं का भली–भांति अध्ययन करके अपनी आध्यात्मिक, सामाजिक, धार्मिक मुक्ति का मार्ग अपनाया, जिससे जुड़ने वाले लोगों को अपनापन जैसा लगने लगा।

151.7. **<u>मिथ्या अभिमान से दूर रहें:</u>** सुधारक बुजुर्गों ने हमेशा यही सलाह दी है कि आप मिथ्या अभिमान से दूर रहें। हम सुधरे हैं, हम जो कहते हैं, वही सत्य है, हम तुमसे श्रेष्ठ हैं, तुम हीन लोग, इस बात का विशेष ध्यान रखो कि तुम्हारी वाणी और व्यवहार में ऐसी भावना न आये। मिथ्या अभिमान से दूर रहने से लोगों में सुधारक वाले भाइयों के प्रति नफरत पैदा नहीं हुई बल्कि इसके विपरीत उनके प्रति सम्मान पैदा हुआ।

151.8. **<u>लचीलेपन के साथ दृढ़ता:</u>** आवश्यकता, परिस्थिति और स्थिति के अनुसार लचीला[117] नियम अपनाये गये। लेकिन इसके साथ दृढ़ता भी थी। कुछ मामलों में कोई ढिलाई नहीं बरती गई. इस प्रकार, सतपंथियों के साथ कोई भी व्यवहार (खाने–पीने सहित) करना वर्जित था।

151.9. **<u>जाति अस्तित्व के मूल सिद्धांत:</u>** जब किसी नई जाति का उदय होता है तो उसे कई मायनों में जाति अस्तित्व की नींव नए सिरे से रखनी पड़ती है। जैसे समाज, धर्म, शिक्षा, पारिवारिक सहयोग, आर्थिक मदद आदि। इस अभियान के नेताओं ने सभी मुद्दों का ध्यान रखते हुए अभियान चलाया ताकि जाति मजबूत स्थिति में खड़ी हो.

151.10. **<u>लोगों को संगठित करने में सफलता:</u>** सुधारक, लोगों को संगठित करने में सफल रहे। इसके लिए गांवों में बैठकें की गईं, लिए गए निर्णयों पर सार्वजनिक रूप से चर्चा की गई, कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित किया गया, सुझाव दिए गए और उन्हें लागू किया गया। संक्षेप में, लोग निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल थे, ताकि निर्णय अच्छी तरह से लागू हो सके।

117 लचीला = लचीला

151.11. **<u>वित्तीय सहायता:</u>** कोई भी अभियान पैसे के बिना नहीं चल सकता। रतनशी खिमजी अमीर थे. वह बड़े दिलवाले भी थे. खूब दान देना। मुंबई में उनका विकसित व्यापार था[118] जाति सेवा कार्य के लिए व्यवसाय पूर्णतया नौकरों पर निर्भर होकर कच्छ में ही रहते थे। मुंबई में अपनी अचल संपत्ति (घाटकोपर पाटीदार वाडी के पास 1 बड़ा भूखंड, माटुंगा में मेन रोड पर एक बंगला और खालसा कॉलेज के ठीक सामने एक कोने का बंगला) से भी जाति को वित्तीय ताकत मिली जब कच्छ में गांव-गांव मंदिरों के निर्माण की आवश्यकता थी। आज उन संपत्तियों की कीमत हजारों करोड़ रुपये होगी। इसी तरह एक और दानवीर थे भीमजी केशरा. कलकत्ता वाले बहुत बड़े आसामी कहलाते थे। उन्होंने आर्थिक रूप से भी काफी मदद की.

151.12. **<u>सनातन में दृढ़ विश्वास:</u>** लोगों में सनातन धर्म के प्रति दृढ़ विश्वास जगाने में सफल हुए। एक ऐसा दृढ़ विश्वास जिसे कोई हिला नहीं सकता. जरा सोचिए कि भले ही पिराना सतपंथी यह स्थापित करने के लिए पुरजोर कोशिश कर रहे हैं कि उनका सतपंथ धर्म सत्य है, लेकिन सतपंथी सतपंथ धर्म को छोड़कर सनातन में विलीन हो रहे हैं। सनातन धर्म में आस्था इतनी दृढ़ है कि सतपंथी भी स्वयं को सतपंथी के बजाय सनातन-सतपंथी कहलाने में गर्व महसूस करते हैं। सतपंथियों के मन से सनातन के प्रति प्रेम, जिसे सतपंथ के प्रचारक दूर नहीं कर पाते, दृढ़ सनातन अभियान का ही एक प्रभाव बताया जाता है।

151.13. **<u>अत्याचारों के सामने साहस:</u>** इस अभियान की सफलता के पीछे एक मुख्य कारण यह है कि इसने सनातनियों को निडर बना दिया। पिराना सतपंथी उन पर चाहे कितने भी अत्याचार करें, सनातन कभी भी जाने को तैयार नहीं होंगे। एक दुर्लभ अपवाद के रूप में, भले ही कोई सतपंथ में चला गया हो, कुछ दिनों में उसे तब तक शांति नहीं मिलेगी जब तक वह सनातन में वापस नहीं लौट आता। बुजुर्गों से सुना और पुराने दस्तावेज़ों में देखा है कि सनातन धर्म को दबाने के कई प्रयास हुए, उनमें से कुछ सीधे और सरल उदाहरण हैं ;

1) सनातन मंदिरों को बनने से रोकने के लिए उत्पीड़न। नींव के गड्ढों को खराब करना, संरचनाओं को ध्वस्त करना, हड्डियों और मांस जैसी अशुद्ध सामग्री को उसमें डालना आदि। 96।
2) सगाईयां और शादियाँ ख़त्म करना 85:पेज 6 ।
3) गांव के कुओं या तालाबों से पानी न भरने देना.
4) सनातनी के घर में जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो शव उठाने में सतपंथी परिवार साथ नहीं देता, सनातनी अकेला क्या कर सकता है।
5) वे खेतों में मजदूर के रूप में काम नहीं देते थे।
6) जाति से बहिष्कार कर देते ।
7) चूल्हे में खाना पकाते समय चूल्हा चालू करना आवश्यक होने पर भी जलता कोयला नहीं देते।
8) गाँव के मोची, नाई, बढ़ई आदि अन्य जातियों को भी सहयोग न करने के लिए कहा जाता।

118 धिकता = फलना-फूलना

9) कमजोर सनातनी परिवार को दूध, छास न देना ।
10) विवाह या मृत्यु जैसे अवसरों पर सामुदायिक बर्तन और गलीचे न देना।
11) सतपंथी बच्चों को सनातन के बच्चों के साथ खेलने की इजाजत नहीं देते थे। सनातनियों को छूने की मनाही थी।
12) सनातनी सभाओं या सार्वजनिक कार्यक्रमों में खाना पकाने को ख़राब करने की कोशिश की जाती है। भोजन में नमक डालें, चावल में रेत डालें, पानी बंद कर दें, बिजली बंद कर दें, आदि। इसे पूरा करने के लिए, सनातनी ने स्वयंसेवकों की एक विशेष टुकड़ी रखी जाती थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई भी कार्यक्रम को खराब न कर पाए।

चाहे कोई भी समस्या या बाधा हो, हम सनातन धर्म को छोड़ने वाले नहीं हैं, हम लोगों के मन में ऐसी छाप छोड़ने में सफल रहे कि यह अभियान की सफलता का एक मुख्य कारण बन गया।

152. **कमियाँ एवं दोष:**

152.1. **शिक्षा:** इस अभियान ने शिक्षा का कार्य उठाया। जाति में शिक्षा की नींव अच्छी तरह से रखी गई है, लेकिन इस मुद्दे पर अभी भी बहुत काम किया जाना बाकी है। कच्छ में छात्रावासों की योजना बनाई गई, कुछ धन एकत्रित किया गया, परन्तु कार्य को क्रियान्वित नहीं किया जा सका।

152.2. **रतनशी खिमजी का स्वास्थ्य बिगड़ गया:** वर्ष 1955 के आसपास रतनशी खिमजी का शारीरिक स्वास्थ्य बिगड़ गया। उन्हें गठिया रोग हो गया जिससे उनका चलना-फिरना गंभीर रूप से बाधित हो गया। फिर वे स्थायी रूप से अपने मुम्बई स्थित घर में ही रहने लगे और जाति सेवा के कार्य से मुक्त हो गये।

152.3. **संत ओधवराम महाराज का निधन:** संत ओधवराम महाराज का निधन 13 जनवरी - 1957 को हुआ। उसके बाद संत दयालदास गद्दी पर बैठे, लेकिन अपेक्षित प्रभाव नहीं डाल सके। संतों का प्रभाव कम होने से लोगों का उत्साह कम होने लगा।

संत ओधवराम महाराज ने 22 अक्टूबर -1956 की वसीयत बनाकर सरकार के साथ पंजीकृत होकर, अपने जीवनकाल के दौरान हरिद्वार में बनाए गए कच्छी लालरामेश्वर आश्रम को पूर्ण स्वामित्व अधिकार दे दिया। क. पा. यह जाति के 6 सनातनी के नेताओं को दिया गया था 92 । परंतु किसी कारणवश सनातनी उस संपत्ति को संभाल नहीं सके। इसी तरह, बद्रीनाथ में, मुख्य मंदिर के ठीक सामने, ओधवराम महाराज का कक्ष धनसुरा के सनातन नेताओं को सौंप दिया गया। सनातनी उस कमरे को भी नहीं संभाल सके। आज समस्त ज्ञाति को इसका दुःख है।

152.4. **धार्मिक केंद्र:** लोग सनातनी हो जाते हैं, लेकिन धर्म के मामले में एक आवाज होती है, धर्म के आदेश एक स्रोत से निकलते हैं। वे धर्म के मामले में सनातनियों को सतपंथियों के अत्याचारों से बचाने, उनके पक्ष में खड़े होने और उन्हें आर्थिक, कानूनी और सरकारी समर्थन देने की कोई स्थायी व्यवस्था नहीं बना सके।

152.5. <u>संयुक्त समाज और संस्थाएँ:</u> गांव–गांव सनातनी को संगठित करने के लिए युवा मंडल और समाज बनाए गए। परंतु उन संस्थाओं में सतपंथियों को किसी कारणवश कहीं न कहीं रखा गया। जो बाद में कर्ताधर्ताओं के लिए सिरदर्द बन गया।

152.6. <u>नियमित दान की प्रथा आरंभ नही कर सकें:</u> अभियान नेताओं ने स्वयं और अपने परोपकारी मित्रों के समूह से बहुत सारा धन जुटाया। लेकिन वे सनातनियों में ऐसी प्रथा नहीं डाल सके कि हर घर से लोग अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी को समझते हुए हर साल नियमित रूप से शक्ति दान करते रहें। सनातन समाज इतना शिथिल हो गया कि लोग दान देना अपना कर्तव्य भूलने लगे।

152.7. <u>रियायत का नुकसान:</u> लोगों ने गलती से यह मान लिया कि सनातनियों (जिनकी शारीरिक शुद्धि नहीं हुई है) को सतपंथियों के साथ खाने–पीने की अनुमति है। जिसका प्रचार पर भी कुछ गलत असर पड़ा.

152.8. <u>बहुत अधिक छूट:</u> पिराना सतपंथ के दमनकारी और अत्याचारी नियम–कानूनों से त्रस्त और स्वतंत्रता की चाह रखने वाली इस जाति को सनातन समाज में खुली छूट मिली और वे बहुत खुश हुए। लेकिन इस आज़ादी ने लोगों को बहुत अधिक छूट दे दी। लोग धर्म के प्रति उदासीन हो गये। धर्म पर पकड़ होना जरूरी है.

<u>निष्कर्ष:</u> रतनशी खिमजी और संत ओधवराम महाराज की जोड़ी ने अविश्वसनीय काम किया। जाति के भीतर
153. रहते हुए जाति का धर्म परिवर्तन किया, जाति को पिराना सतपंथ से मुक्त कराया और सनातनी हिंदू बनाया। यदि हम संक्षेप में उनके द्वारा किये गये कार्यों पर नजर डालें ;

1) **<u>इष्टदेव लक्ष्मीनारायण:</u>** भगवान श्री लक्ष्मीनारायण को इष्टदेव देकर जाति को हिंदू धर्म की जड़ों से जोड़ें।
2) **<u>सामाजिक व्यवस्था:</u>** सनातनियों को संगठित करने के लिए न केवल सामाजिक व्यवस्था का निर्माण किया गया। सनातनियों का एक केन्द्रीय समाज बनाया।
3) **<u>पिराना की शक्ति को तोड़ना:</u>** समाज और युवाओं की एक प्रणाली बनाकर घेढेराओ की अत्याचारी शक्ति को नियंत्रण में लाया गया। परिणामस्वरूप पिराना सतपंथ की शक्ति भी चली गयी।
4) **<u>क्षत्रिय वंश की पहचान:</u>** उमिया माताजी ने वांढाय का मंदिर बनवाकर उंझा की कडवा पाटीदारों के बीच संपर्क का एक स्थायी पुल बनाया। और अपने क्षत्रिय कुल की पहचान की. ताकि अन्य हिंदू जातियां इसे आसानी से स्वीकार कर सकें.
5) **<u>शिक्षा:</u>** शिक्षा क्षेत्र में भी वांढाय और धनसुरा में बोर्डिंग (छात्रावास) शुरू किये गये।

6) **आर्थिक उत्थान:** दशोंद और लागाओ जैसे अनिवार्य धार्मिक करो ने निराश्रित जाति को आर्थिक शोषण से मुक्त करके जाति के आर्थिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया।

7) **ज्ञाति अभिमान:** जातिगत रीति–रिवाजों को लाना, लोगों को एक साथ बांधता है। सामाजिक व्यवस्था एवं परिवार, परिवार व्यवस्था सुदृढ़ हुई। अराजक रीति–रिवाजों के कारण जाति टूटने न पाए तथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर न भटके इसका विशेष ध्यान रखा गया। लोगों में ज्ञाति के प्रति गौरव पैदा किया.

8) **स्थायी धर्मांतरण:** धर्मांतरण को स्थायी बनाने के लिए एक प्रणाली स्थापित की गई।

154. <u>आइये (संक्षेप में) देखें कि विचारधारा के विनाश के क्षेत्र में कहाँ–कहाँ सुधार हुए।</u>

154.1. **<u>धर्म:</u>** जाति का धर्म परिवर्तन कर जाति को वापस सनातन हिंदू धर्म से जोड़ने में सफलता मिली। हालाँकि सभी लोगों ने सतपंथ नहीं छोड़ा, लेकिन जो प्रवाह शुरू हुआ वह इतना जबरदस्त था कि बाकी लोगों को भी एक दिन इसमें शामिल होना पड़ेगा।

154.2. **<u>शिक्षा:</u>** शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी प्रगति हुई। बोर्डिंग (छात्रावास) शुरू हुई और जाति में ऐसा माहौल बन गया कि बच्चों को चाहे कुछ भी हो पढ़ाओ, इसके बिना काम नहीं चलेगा।

154.3. **<u>सामाजिक जीवन:</u>** धर्म परिवर्तन का सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ने लगा। इमामशाह और सतपंथ के ग्रंथों को हटा दिए जाने से जाति के लोगों की सामाजिक प्रथाएं हिंदू धर्म से मिलती–जुलती होने लगीं और वे इस पर गर्व करने लगे। अन्य हिंदू समाज भी कणबीओ को हिंदू के रूप में देखने और स्वीकार करने लगे।

154.4. **<u>सत्ता की संरचना:</u>** समाज में लोकतांत्रिक व्यवस्था की शुरूआत ने घेढेराओं की कमर तोड़ दी। जिससे घेढेराओं की लगभग पूरी शक्ति ख़त्म हो गयी। और सत्ता जनता के हाथ में आ गयी।

154.5. **<u>कानून एवं व्यवस्था:</u>** जैसे–जैसे घेढेराओं की शक्ति जाती गयी, समाज की आंतरिक कानून एवं व्यवस्था भी समाज के हाथ में आ गयी। ताकि कोई भी व्यक्ति अपने निजी स्वार्थ के लिए सत्ता का दुरुपयोग न कर सके।

154.6. **<u>नेतृत्व:</u>** प्रारंभ में नेतृत्व जाति सुधारकों के हाथ में था। धीरे–धीरे सामाजिक व्यवस्था के कारण नेतृत्व जनता द्वारा लोकतांत्रिक व्यवस्था से चुने गये व्यक्तियों के हाथ में आ गया।

154.7. **<u>आर्थिक:</u>** हर साल पिराना को भेजा जाने वाला दशोंद और लागाओ का पैसा बंद हो गया। जिससे सनातन समाज का आर्थिक शोषण बंद हो गया। अब लोग अपनी स्वेच्छा से अंशदान और चंदा इकट्ठा करने लगे और उस राशि का उपयोग स्व. उन्नति के लिए करने लगे।

154.8. **<u>मीडिया:</u>** इस स्तर पर समाज का आंतरिक मीडिया विशेष रूप से विकसित नहीं था। लेकिन संदेशों का आदान–प्रदान और सामाजिक समाचारों का आदान–प्रदान बेहतर होने लगा। लेकिन इस क्षेत्र में अभी भी बहुत काम किया जाना बाकी है।

154.9. **<u>तथाकथित उध्धारको:</u>** पिराना के गादीपति काका और सैयद, जिन्हें 1832 के संवत संकल्प के माध्यम से जाति में उध्धारको के रूप में स्थापित किया गया था, को सनातन समाज से पूरी तरह से बहिष्कृत कर दिया।

154.10. __सुधार के क्षेत्र:__ मोहीनी सतपंथ के प्रचारक रतनशी खिमजी खेतानी की विचारधारा के विनाश का मेली मुराद पर कैसे प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, यह नीचे दी गई तालिका में देखा गया है।

परिवर्तनों/ ट्रैकिंग तालिका का निरीक्षण करें			
वैचारिक तोड़फोड़	सुधार* केशरा	सुधार* NRL	सुधार* RKK
1. मनोबल गिराने वाले क्षेत्र	प्रगति मे विद्रोह	**प्रगति मे जागृति**	**पूर्ण धर्म परिवर्तन**
1.1. धर्म			
1.2. शिक्षा	--	शुरु	**बहुत**
1.3. सामाजिक जीवन	थोड़ा	शुरु	**पूर्ण**
1.4. शक्ति संरचना	थोड़ा	शुरु	**पूर्ण**
1.5. कानून एवं व्यवस्था	थोड़ा	शुरु	**बहुत**
1.6. नेतृत्व	--	बहुत	**पुर्ण**
2. अस्थिरता	--	प्रगति में अच्छे प्रमाण में	**प्रगति में**
2.1. वित्त	--		**पूर्ण**
2.2. कानून एवं व्यवस्था	थोड़ा	शुरु	**बहुत**
2.3. मीडिया	--	ठंडा	**शुरु**
3. संकट	--	--	**--**
3.1. तथाकथित उद्धारकर्ता अंदरूनी सूत्र एक बाहरी व्यक्ति	सुधार	बहुत	**पूर्ण**
4. स्थिति का सामान्यीकरणय	बाकी	बाकी	**मामूली शुरुवात**
4.1. एक नये समाज की स्थापना - 2 चरणों में	बाकी	बाकी	**मामूली शुरुवात**

अधिक्तम सनातन धर्म में लौट आए
।। जय लक्ष्मीनारायण ।।

प्रहर 5

1960 से 1985
25 वर्ष

जब धर्म मिला तो प्रगति हुई

परिश्रम से धर्म मिश्रित, अर्थ सब समझे..
उन्नति और समृद्धि से प्रभावित होकर,
सब सनातनी बनने जागे..

सामान्यीकरण / सामान्य स्थिति बहाल करना

4.1. एक नये समाज की स्थापना - 2 चरणों में

चरण :

1. सनातन संगठन को मजबूत करना: जाति को आत्मनिर्भर बनाने के लिए आवश्यक संस्थाओं और संगठनों का निर्माण करना। अपने नए रीति–रिवाजों और आंतरिक नियमों को व्यवस्थित रूप से स्थापित करने के लिए पुरानी परंपरा/धर्म की ओर देखना बंद करना।

2. मन को शुद्ध करना: पिराना सतपंथ में लगे लोगों के मन का मोह तोड़कर उस मन को शुद्ध सनातन बनाना। जिससे सनातन जाति का गौरव, स्वाभिमान, गरिमा बढ़े और गरिमा जागृत हो जिससे भविष्य में यह जाति दोबारा अन्य धर्मों की ओर आकर्षित न हो। ताकि क. पा. सनातन जाति और उसकी सनातन विचारधारा कभी नष्ट नहीं हो सकती।

23

सनातनी केंद्रीय समाज
चरण 1: संगठन को मजबूत करना

155. **सामान्य स्थिति की पुनर्स्थापना–शुरुआत:** इस पुस्तक की शुरुआत में हमने देखा कि विचारधारा का विनाश पद्धति का अंतिम चरण एक नया समाज बनाना, सामान्य स्थिति बहाल करना था। क. क. पा. इतिहास के नजरिए से देखा जाए तो सनातनी समाज की स्थापना तो हो चुकी थी, लेकिन अब वह सामान्य स्थिति बहाल करने का चरण (2 चरणों में) शुरू कर रहा है। इस चरण का पहला चरण यहीं से शुरू होता है। जिसके बारे में आप नीचे दी गई तालिका से विस्तार से समझ सकते हैं।

4. स्थिति का सामान्यीकरण	विनाश विवरण	सुधार करना
4.1. एक नये समाज की स्थापना – 2 चरणों में		
चरण 1: **सनातन संगठन को मजबूत करना:** जाति को आत्मनिर्भर बनानाआवश्यक संस्थाओं एवं संगठनों की स्थापना करना। अपना नयासीमा शुल्क आंतरिक नियमों को व्यवस्थित ढंग से स्थापित करना पुरानी परंपरा/धर्म की ओर देखना बंद करना।	**24**	**पूरा** (इस लेख में उल्लिखित बिंदुओं के बाद)

156. **सनातन के संगठन को मजबूत करना:** इस चरण में हम देखेंगे कि कैसे जाति परिवर्तन के बाद सनातनियों ने अपनी घर वापसी को कायम रखने के लिए जाति और समाज के विकास के लिए समय–समय पर बहु–आयामी काम किया। और अपने सनातन घर को मजबूत किया।

157. **घर वापसी के बाद अपना घर बनाना:** सनातन धर्म में जातिगत घर वापसी तो हो गई। लेकिन इससे काम ख़त्म नहीं होता. घर लौटकर अपना घर तो बनाना ही है। अन्यथा घर वापसी ज्यादा दिनों तक नहीं टिकेगी। व्यक्ति को जीवन का आनंद लेने के लिए एक अच्छे समाज की आवश्यकता होती है। एक अच्छे और मजबूत समाज का निर्माण उसकी संस्थाओं से होता है। एक ऐसा समाज जहां कम से कम ;

1) समाज सनातन धर्म की नींव पर खड़ा रहे
2) एक सुंदर परिवार व्यवस्था हो (विवाह जैसे जाति प्रथा)
3) संगठित करने के लिए एक सामाजिक व्यवस्था हो,
4) बिना किसी संकोच के रोटी–बेटी का व्यवहार कर सकते हो

5) सुरक्षा और समृद्धि हो,
6) आवश्यकता पड़ने पर आवश्यक सुविधाएं और पर्याप्त सहायता प्रदान करने की व्यवस्था हो।
7) अन्य सभी मामलों की तरह। जो सामाजिक जीवन के लिए उपयोग हो।

इसलिए, इस चरण के पहले चरण में यानी सामान्य स्थिति को बहाल करना जैसा कि ऊपर बताया गया है, अब हम देखेंगे कि सामाजिक संस्थाओं और सुविधाओं का निर्माण कैसे किया गया। इस सारी प्रक्रिया को इस पुस्तक में अपना घर बनाना कहा गया है।

158.**तदर्थ समिति का गठन:** खबर फैल गई कि नखत्राणा में एक हाई स्कूल खोला जाएगा, उस समय जाति के आगेवान, जिनका उल्लेख अध्याय में पहले किया गया था, जो परम पूज्य ओधवरामजी के निधन के बाद वांढाय में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित थे। संत ओधवराम महाराज ने ज्ञाति छात्रों के लिए छात्रावास की इच्छा व्यक्त की थी, जिसे मूर्त रूप देने का उस कार्यक्रम निर्णय लिया गया।

इस निर्णय को लागू करने के लिए 22 मई –1957 को श्री कच्छ कड़वा पाटीदार सनातनी समाज की एक बैठक बुलाई गई। मिनट बुक में नोट के मुताबिक यह बैठक कोटडा–जडोदर में हुई थी. जो भीमजी केशरा के निवास पर आयोजित थी कच्छ के गांव–गांव के आगेवानो को इकट्ठा किया। जिसमें 3 फैसले लिए गए.

1) नखत्राणा में जाति के छात्रों के लिए एक छात्रावास[119] बनाना.
2) भुज में समाज भवन बनाना.
3) मांडवी में एक समाज भवन [120] का भी निर्माण करना।

इस कार्य को करने के लिए एक तदर्थ समिति का गठन किया गया। इस पर एक विस्तृत रिपोर्ट पाटीदार विद्यार्थी भवन (नखत्राणा) उद्घाटन समारोह और सम्मेलन की कार्यवाही पर रिपोर्ट शीर्षक के तहत प्रकाशित की गई है 71। उसमें दी गई जानकारी यहां दोहराई नहीं जा रही है. पाठको से अनुरोध है कि वे रिपोर्ट पढ़ें। यदि आप संक्षेप में पढ़ना चाहें तो कच्छ कड़वा पाटीदारों का इतिहास 4 पुस्तक में पढ़ सकते हैं।

भुज और मांडवी समाज वाडी: जल्द ही सेठ तुलसीदास का बंगला भुज में खरीदा गया और वहां एक समाज वाड़ी शुरू की गई। और वाड़ी के पास खुली जमीन का एक प्लॉट भी खरीदा गया। इसी प्रकार मांडवी में भी वाडी
159.के लिए संपत्ति खरीदी गई थी 71 ।

119 हॉस्टल = बोर्डिंग = हॉस्टल
120 वाडी = परिवर्णी शब्द/संक्षिप्त रूप/विशेष शब्दों के अर्थ अनुभाग देखें

23 सनातनी केंद्रीय समाज - चरण 1: संगठन को मजबूत करना

160.**नखत्राणा छात्रावास:** नखत्राणा छात्रावास के लिए जमीन खरीदी गई और वहां एक बड़ा भव्य परिसर बनाया गया। उसके लिए पूरे भारत में फैले हुए सनातन समाज के लोगों से यात्रा कर योगदान एकत्रित किया गया। कलकत्ता, नागपुर और मुंबई ने इसमें प्रमुख भूमिका निभाई। नखत्राणा में इस विशाल छात्रावास का उद्घाटन 11 मई 1960 को हुआ था 71।

161.**नखत्राणा का छात्रावास एवं सनातनियों का केन्द्रीय स्थान:** धर्म परिवर्तन के क्रम में हम देखते हैं कि समाज में सनातन का अपना कोई स्थान नहीं था। प्रारंभ में, सोसायटी का कार्यालय नथू नानजी के घर में था और अंत में काम भीमजी केशरा के घर से किया जाता था। लेकिन छात्रावास की स्थापना से सनातनी को केन्द्रीय स्थान मिल गया। जिसे प्रधान कार्यालय अथवा मुख्यालय भी कहा जा सकता है। सनातनियों द्वारा संचालित समाज का संविधान पुनः बना और पारित हुआ। चूँकि जाति की अपनी सामाजिक संरचना थी, स्वयंसेवकों, बुद्धिजीवियों, परोपकारियों और सामान्य लोगों को एक जगह और इकट्ठा होने का स्थान मिला। केन्द्र की स्थापना से सनातन की सामाजिक गतिविधियों को जबरदस्त गति मिली। उसके लिए, यह एक ऐतिहासिक घटना है, जिस पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए 71।

Location: Chhatralaya / H.O.



162.**शिक्षा पर ध्यान दें[121]:** पिछले कई वर्षों से जाति का उद्देश्य भगवान श्री लक्ष्मीनारायण के मंदिरों का निर्माण करके बुनियादी ढांचे का निर्माण करना था। इस घटना के बाद जाति का मुख्य लक्ष्य शिक्षण संस्थानों पर केन्द्रित हो गया। कृपया इसका विशेष ध्यान रखें 71।

163.**सनातन धर्म को साथ रखने का दृष्टिकोण:** यहां एक बात ध्यान में रखने वाली है कि जब एक ज्ञाति ने शिक्षा पर ध्यान केंद्रित किया, तो उसकी नींव में सनातन धर्म ही था। याद रखें, यह परियोजना संत ओधवराम महाराज की इच्छा के कारण तैयार की गई थी। कार्यक्रम में सर्वत्र संत ओधवराम महाराज को याद किया गया. कार्यक्रम का स्वागत भाषण ओधवराम महाराज को स्मरण कर किया गया। कार्यक्रम के मंच पर लक्ष्मीनारायण भगवानकी जय, कुलदेवी उमिया मात की जय 4:फोटो पेज 28 के बाद जैसे बड़े–बड़े बैनर लगाए गए थे 71 । छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों के लिए धार्मिक शिक्षा की विशेष व्यवस्था की गई 4:पृष्ठ 149।

121 फोकस = ध्यान केन्द्रित करना।

23 सनातनी केंद्रीय समाज - चरण 1: संगठन को मजबूत करना

164.**<u>समाज का पहला जाति सम्मेलन:</u>** नारायण रामजी की आगेवानी में जाति के तीन परिषद (सम्मेलन) हुए थे। लेकिन यह उनके नेतृत्व में था, सामाजिक आधार पर नहीं. सामाजिक आधार पर पहला जातीय सम्मेलन छात्रावास के उद्घाटन से एक दिन पहले 10 मई –1960 को उसी स्थान पर आयोजित किया गया था । इस सम्मेलन में संत ओधवराम महाराज, नारायण रामजी, रतनशी खिमजी और नथू नानजी 71:पेज 65 के जाति सुधार कार्यों के प्रति आभार व्यक्त किया गया । और उनके बताये रास्ते पर आगे बढ़ने की बात कही गई. और इस सम्मेलन में जाति के रीति–रिवाजो जिसे जाति संविधान कहा जाता है 71: पृष्ठ 55 उसे पारित किया गया।

<u>शैक्षिक संरचना:</u> नारायण रामजी के समय से ही शिक्षा के प्रयास प्रारम्भ हो गये। उन्होंने पुस्तकालय पर जोर
165.दिया. कराची में पहली लाइब्रेरी बनाई। उस समय सतपंथीओ के बीच पुस्तकालय का इतना भय था (या नाराजगी थी) कि सुधारकों ने इसे लैबेरिया[122] कहा, को गौण अर्थ से पुकारा जाता था। उसके बाद थोड़े समय के लिए कराची में एक रात्रि विद्यालय खुला। वांढाय में छोटे पैमाने पर बोर्डिंग शुरू हुई। लेकिन इस पद्धति पर काम करने के लिए बड़े पैमाने पर जाति का पहला बोर्डिंग गुजरात के धनसुरा में स्थापित किया गया था। इसके बाद इस चरण में नखत्राणा में बोर्डिंग/छात्रावास शुरू हुई।

165.1. **<u>छात्र प्रोत्साहन/पुरस्कार वितरण:</u>** किसी भी संस्था या संगठन की नींव संस्कारों पर होती है। इस प्रकार जाति में शिक्षा की संस्कृति को विकसित करने के लिए छात्र सम्मान अर्थात पुरस्कार वितरण की प्रथा शुरू हुई। प्रत्येक संस्था, समाज और संगठन नियमित रूप से पुरस्कार वितरित करके छात्रों को प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में नाम कमाने वाले व्यक्ति को समाज में सम्मानित भी किया जाता है और उचित स्थान भी दिया जाता है।

165.2. **<u>गांव गांव बाल मंदिर:</u>** रतनशी खिमजी जैसे बुजुर्गों के प्रयासों से विराणी मोटी जैसे गांवों में चल रहे थे, लेकिन नखत्राणा में बोर्डिंग की शुरुआत ने गांव गांव में शिक्षा के लिए बाल मंदिर और प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना के काम को गति दी। जाति के बुजुर्गों ने गाँव की अन्य जातियों का समर्थन लिया। बुजुर्गों से सुना था कि विरोधी देशी भाषा में कह रहे थे कि पहले मंदिर में खून पिया था अब ये नया मंदिर कैसे खून पियेगा? ऐसी थी शिक्षा का निम्न स्तर और विरोधियों की घटिया मानसिकता।

165.3. **<u>पाटीदार छात्र छात्रावास–भुज:</u>** वर्ष 1967–68 में, भुज समाजवादी के 4 कमरे छात्रावास के लिए आबंटित किए गए और वहां एक छात्रावास शुरू किया गया। इसके बाद छात्रावास के लिए एक अलग भूखंड खरीदा गया और उस पर वर्ष 1987–88 में एक भवन का निर्माण किया गया 4:पृष्ठ 73।

122 लाइबेरिया = पुस्तकालय जाने वाले, पुस्तकालय का भ्रष्टाचार

165.4. **<u>गर्ल्स हॉस्टल – भुज:</u>** वर्ष 1981 में समाज वाडी के अंतर्गत भुज में लड़कियों की शिक्षा की व्यवस्था शुरू की गई। प्रारंभ में लड़कियों से कोई शुल्क नहीं लिया जाता था। धीरे–धीरे लड़कियों की संख्या बढ़ने लगी। वर्ष 2002 में एक नये भवन में गर्ल्स हॉस्टल शुरू किया गया 4:पेज 74 ।

165.5. **<u>कन्या विद्यालय – भुज:</u>** 2002 में, कक्षा 8, 9 और 10 के लिए गर्ल्स हॉस्टल में रहने वाली लड़कियों के लिए एक इन–हाउस हाई स्कूल शुरू किया गया था। इसके बाद, कॉलेज ने कक्षा 11 और 12 कला और वाणिज्य पाठ्यक्रम शुरू किए 4:पृष्ठ 74।

165.6. **<u>गर्ल्स हॉस्टल – नखत्राणा:</u>** 28 अप्रैल 1993 को समाज के चौथे अधिवेशन के दौरान नखत्राणा में एक गर्ल्स हॉस्टल शुरू किया गया था 4:पेज 76।

165.7. **<u>मांडवी गर्ल्स हॉस्टल:</u>** मांडवी में उच्च शिक्षा की अच्छी सुविधाएं होने के कारण जाति के छात्र समाजवाड़ी कमरों का उपयोग करते थे। छात्रावास की शुरुआत 17 अप्रैल 1994 को नानजी वीरजी ढोणु विद्यार्थी छात्रावास नाम से की गई थी। प्रारंभ में यहां कुमार छात्रावास था, परंतु आज इसका लाभ जाति की लड़कियां उठा रही हैं 4:पेज 75 ।

165.8. **<u>मांडवी कुमार छात्रावास:</u>** ऊपर उल्लिखित नानजी विरजी ढोणु छात्रावास का निर्माण करते समय, एकत्र की गई योगदान राशि की बचत से मांडवी में एक और बड़ी जगह लेने के लिए एक शुरुआती राशि दी गई थी। लखु विरजी ढोळु विद्यार्थी छात्रावास – मांडवी, छात्रावास इस नए स्थान पर 02 मई 2007 को शुरू किया गया था। वहां कुमारों (पुत्रों) के लिए एक छात्रावास शुरू किया गया 4:पृष्ठ 75 ।

165.9. **<u>वल्लभ विद्यानगर:</u>** यह गुजरात के आनंद शहर के बगल में बहुत अच्छी शैक्षणिक सुविधाओं वाला शहर है। वर्ष 1988 में एक किराए के मकान में पायलट आधार पर एक छात्रावास शुरू किया गया था। फिर 29 जनवरी 1995 को छात्रावास अपने भवन में प्रारम्भ हुआ। उसके बाद इसका संचालन 04– मई – 2015 को बनाये गये एसयूवी उप–संगठन के माध्यम से किया जाता है 4:पेज 77 ।

165.10. **<u>एसयूवी स्कूल सूरत:</u>** वैश्विक प्रतिस्पर्धा के युग में विश्व स्तरीय शिक्षा प्रदान करने के लिए जून 2007 में वलथाण, सूरत में स्कूल शुरू किया गया था 4:पेज 79 ।

165.11. **<u>नखत्राणा कॉलेज:</u>** नखत्राणा में जीएमडीसी कॉलेज कच्छ विद्या प्रतिष्ठान द्वारा चलाया जाता था। 07–अगस्त–2009 से समाज द्वारा कॉलेज का अधिग्रहण करने के बाद से समाज कॉलेज चला रही है।

166.**आरोग्य प्रवृत्ति:**

166.1. **देवाशीष अस्पताल:** 2005 से नकत्राणा में एक अस्पताल शुरू किया गया है 4:पृष्ठ 205। वर्ष 1977 में जाति का दूसरा सम्मेलन नखत्राणा में हुआ। आपदाओं में उपयोग और स्वास्थ्य के लिए नखत्राणा में एक सर्जिकल अस्पताल बनाने के लिए केंद्रीय समाज द्वारा एक प्रस्ताव पारित किया गया था। उस समय के समाज के नेताओं ने समाज से संविधान पारित करने और अन्य मामलों पर सहमति बनाने के काम के लिए कच्छ, भुज, पुणे, नासिक, अहमदाबाद, मुंबई जैसी जगहों पर बैठकें की और सहयोग प्राप्त हुआ। काफी समय के बाद नखत्राणा में एक अस्पताल बनाया गया। जो पश्चिम कच्छ के लिए वरदान साबित हुआ।

सामाजिक संपत्तियाँ: समाज का दायरा बढ़ाने और समाज के सदस्यों को सुविधा प्रदान करने के लिए,
167.केन्द्रीय समाज ने नीचे उल्लिखित संपत्तियों का निवेश किया है।

167.1. भुज समाज भवन – वर्ष 1957

167.2. मांडवी समाज भवन – वर्ष 1958

167.3. गांधीधाम समाज भवन – वर्ष 1980

167.4. सुविधा केंद्र – समाज सुचारु संचालन के लिए अहमदाबाद में सुविधा केंद्र की संपत्ति की खरीद दिनांक 28 मई 2019 को की गई

167.5. भुज भूमि – भविष्य की परियोजनाओं के लिए, समाज ने 18 जून –2021 को भुज में नई जमीन खरीदी।

167.6. कच्छ, कंपा और शेष भारत में, जहां–जहां ज्ञानि निवास करती हैं, वहां–वहां समाज बन गये हैं और उनमें अधिकतर समाज भवन भी स्थापित हो गये हैं। आज लगभग 450 समाज केन्द्रीय समाज में पंजीकृत हैं। इसके अलावा छोटी–छोटी समाज भी चल रही है।

क. क. पा. सनातन जाति के लिए समाज भवन जिसे समाज वाडी कहा जाता है समाज की रीढ़ हैं। समाज का संगठन समाज पर आधारित है। भारत भर में समाजों और समाज जनो का नेटवर्क इतना बढ़ गया है कि जब भी किसी व्यक्ति को जरूरत होती है, तो आस–पास के समाज से कोई न कोई तुरंत मदद के लिए पहुंच जाता है। यह क. क. पा. सनातन जाति की ताकत है।

168.**मंदिरो : धार्मिक क्षेत्र में जाति की उन्नति के लिए ;**

168.1. **उमिया माताजी वांढाय:** 02 अप्रैल –1944 को कुलदेवी उमिया माताजी के मंदिर की स्थापना की गई। जिसके बारे में विस्तृत जानकारी पिछले बिंदु (150.24) में दी गई है।

168.2. **संस्कार धाम देशलपर:** सतपंथियों का अत्याचार बढ़ता जा रहा था। सतपंथी सनातनियों को परेशान करने के लिए हर दिन झूठे अदालती मामले और पुलिस शिकायतें दर्ज कराते थे। उनके पीछे पिराना संगठन का समर्थन था। सनातनी को कोई संस्थागत समर्थन नहीं था। सतपंथियों के केन्द्रीय समाज में प्रवेश के कारण केन्द्रीय समाज से सनातनीयो को कोई समर्थन नहीं मिलता था। सनातन धर्म के संगठन को कायम रखने के लिए कुछ विशेष करने की सख्त जरूरत थी। तो 1995 में जोरावरनगर के भाइयों ने आगेवानी की।

वहां उन्होंने निर्णय लिया कि हमें सतपंथियों द्वारा झूठे अदालती मुकदमों और पुलिस शिकायतों के माध्यम से सनातनियों पर हो रहे अत्याचार और उत्पीड़न का मुकाबला करने के लिए और इस लड़ाई में सनातनियों का समर्थन करने के लिए सनातनियों का एक संगठन बनाना चाहिए। उसके लिए धर्म का एक केन्द्रीय स्थान बनाने का प्रश्न आया जिसमें गॉवो के लक्ष्मीनारायण मंदिरों को एकजुट कर बनाया जाए ताकि संस्था का वजन बढ़े।

उस समय इन भाइयों ने समाज के वरिष्ठ श्री प्रेमजीभाई पूंजा वासाणी से भेंट की। इसलिए प्रेमजी पूंजा इन दोस्तों के साथ उमिया माताजी वांढाय के तत्कालीन अध्यक्ष जेठा लालजी चोपड़ा और कुछ अन्य नेताओं से मिले। ये सभी को पसंद आया. यहीं से लक्ष्मीनारायण धर्म प्रचार समिति का गठन हुआ। जिसके पहले अध्यक्ष श्री प्रेमजी पूंजा वासाणी थे और प्रथम महासचिव श्री अखाई प्रेमजी मनाणी, विथोण थे।

परिणामस्वरूप, उमिया माताजी वांढाय सभी एकत्र हुए और वहां से 04 फरवरी 1996 को सनातन धर्म मे प्रचम जागरूकता लाने वाले नारायण रामजी लिम्बानी के गांव विराणी–मोटी एक धार्मिक यात्रा का आयोजन किया गया । पहली सभा विराणी मोटी में हुई. फिर 12 फरवरी 1996 को भीमजी केशरा लिम्बनी के गांव कोटडा–जडोदर में एक और सभा आयोजित की गई । उसके बाद गांव–गांव ऐसी सभाएं होने लगीं।

इस लक्ष्मीनारायण धर्म प्रचार समिति के दूसरे अध्यक्ष जेठा लालजी चोपड़ा बने , जिनके नेतृत्व में देशलपर में संस्कार धाम की स्थापना की गई, जिसका नाम अखिल भारतीय लक्ष्मीनारायण सनातन समाज रखा गया। सनातन ज्ञाति के सभी लक्ष्मीनारायण मंदिरों को एक सूत्र के तहत संगठित करने के लिए 11 मई – 2011 को संस्कार धाम की स्थापना की गई थी। – सौजन्य: श्री करसनभाई प्रेमजी मेघानी, नाना–अंगिया, गांधीधाम और श्री रामजी भीमजी डायाणी, धावड़ा, जोरावरनगर।

168.3. कच्छ के सभी गाँवों में स्थानीय समाजो द्वारा समय–समय पर लक्ष्मीनारायण मंदिर और उमिया माताजी मंदिर बनवाए गए।

168.4. इसके अलावा, कच्छ के बाहर के शहरों और यहां तक कि गुजरात के गांवों में भी, सनातन ज्ञाति ने भगवान लक्ष्मीनारायण और उमिया माताजी के मंदिर बनवाए। एक अनुमान के अनुसार, पूरे भारत में लक्ष्मीनारायण और उमिया माताजी के लगभग 250 मंदिर सनातन ज्ञाति द्वारा संचालित हैं।

169.**जाति सम्मेलन और जाति प्रथाएँ:** केन्द्रीय समाज ने अब तक 5 ज्ञाति अधिवेशन का आयोजन किया है। (नारायण रामजी के दौर में हुए तीन जातीय सम्मेलनों के अलावा)।

1. वर्ष 1960 में पहला अधिवेशन (71)
2. वर्ष 1977 में दूसरा अधिवेशन (1)
3. वर्ष 1985 में तीसरा अधिवेशन (1)
4. वर्ष 1993 में चौथा अधिवेशन (1)
5. वर्ष 2010 में पांचवां अधिवेशन (10)

उपरोक्त सभी सम्मेलनों में जातिगत रीति–रिवाजों को पारित किया गया। इसके अलावा बीच में 2 बार जातीय प्रथाएं भी पारित की गईं. एक बार दिनांक 24 मई 1971 (62) और दूसरी बार दिनांक 12 अगस्त 2006 (2)।

169.1. **अनुच्छेद 18 और 19:** किसी भी जाति का संविधान उसके रीति–रिवाज हैं। सनातनियों ने समय–समय पर अपने रीति–रिवाजों में परिवर्तन करके जाति को प्रगति में सबसे आगे रखा है। उल्लेखनीय संशोधनों में मुख्य संहिता के अनुच्छेद 18 और 19 शामिल हैं।

अनुच्छेद 18: बाह्य आचरण के विषय में था। जिसका उद्देश्य जन्म से लेकर मृत्यु तक हिंदू रीति–रिवाजों का पालन करना है। अर्थात मृत्यु के बाद मृतक के शरीर का दाह–संस्कार करना, न कि दफनाना। (दूसरा अधिवेशन) (63) .

अनुच्छेद 19: समाज मे, न्याय समिति के माध्यम से सामाजिक और धार्मिक प्रश्नों का निवारण करना था। कोर्ट का सहारा न लें. इस धारा का उद्देश्य झूठे अदालती मामले दायर करके सनातियों को परेशान करने वाले सतपंथियों को रोकना था। (तीसरा अधिवेशन) 64।

ये दोनों धाराएँ क्रांतिकारी थीं। क्योंकि इन धाराओं ने लोगों को जाति में सतपंथ के विरुध बहुत जागृति आई।

धार्मिक गतिविधि: वैसे तो जाति को समय–समय पर कई साधु संतों से योगदान प्राप्त हुआ है। लेकिन उनमें से
170.मुख्य महत्वपूर्ण योगदान नीचे वर्णित संतों का था।

170.1. **<u>संत दयालरामजी:</u>** संत ओधवराम महाराज के बाद यदि कच्छ कड़वा पाटीदार जाति के किसी संत ने सबसे अधिक सेवा की तो वे संत दयालरामजी ही थे। संत ओधवराम महाराज के शिष्य थे और संत ओधवराम महाराज के निधन के बाद, संत दयालरामजी उनके उत्तराधिकारी के रूप में वांढाय आश्रम के हरिहर संप्रदाय के छठे गादीपति बने। संत ओधवराम महाराज के आदेशानुसार संत दयालराम महाराज बड़ी मेहनत के कच्छ एंव गुजरात के गांवों में प्रचार करने गये 28:पेज 149।

170.2. **<u>संत शांतिरामजी:</u>** संत दयालराम के बाद संत शांतिरामजी गादी पर बैठे। उसका शरीर क.क. पाटीदार जाति का था. वह अरल गांव का रहने वाले थे. जाति को संगठित एवं धार्मिक रूप से चुस्त बनाने के उद्देश्य से उन्होंने वांढाय में उमिया माताजी का मंदिर बनवाया। क. पा. सनातन ज्ञाति को बिना किसी आशा के कृष्ण को अर्पित कर दिया 28:पृष्ठ 159 । इस पर एक विस्तृत लेख इस पुस्तक में बाद में दिया गया है।

170.3. **<u>संत वालरामजी:</u>** संत ओधवराम महाराज ने हरिद्वार में जिस कच्छी लालरामेश्वर आश्रम की स्थापना की थी, वे लगातार इस बात को लेकर चिंतित रहते थे कि आश्रम की व्यवस्थापक जिम्मेदारी किसे सौंपी जाए। उस आश्रम का प्रबंधन संत वालरामजी महाराज को सौंप दिया गया। संत ओधवराम महाराज के निधन के बाद, कच्छी लालरामेश्वर आश्रम ने त्याग और तपस्या के माध्यम से बहुत विकास किया 4: पृष्ठ 146।

170.4. **<u>स्वाध्याय:</u>** पांडुरंग शास्त्रीजी द्वारा की गई स्वाध्याय गतिविधि का भी समाज के लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ा। यह धार्मिक और आध्यात्मिक उत्थान के लिए उनकी गतिविधि थी, जिससे समाज को लाभ हुआ 27:पृष्ठ 48 । इस पर एक विस्तृत लेख इस पुस्तक में आगे में दिया गया है।

171. **<u>सामूहिक विवाह की शुरूआत:</u>** शादियों में होने वाले दिखावटी खर्चों से बचाने और समाज को आर्थिक बोझ से मुक्ति दिलाने के लिए 1977 के ज्ञाति अधिवेशन में सामूहिक विवाह का आयोजन शुरू करने का निर्णय लिया गया और इस पर विशेष जोर दिया गया। समाज के इस दृष्टिकोण को मूर्त रूप देने के लिए उमिया माताजी वांढाय कार्यकारिणी ने 02 नवंबर 1980 को निर्णय लिया । निर्णय लिया गया कि किसी भी क्षेत्र के जाति के लोग 251 रुपये की राशि देकर सामूहिक विवाह में शामिल हो सकते हैं। तदनुसार, वर्ष 1981 से उमिया माताजी ने वांढाय में सामूहिक विवाह प्रारंभ हुए 4:पृष्ठ 200 । स्थानीय स्तर पर, दयापर में सामूहिक विवाह की शुरुआत 1982 में कच्छ में सत्संग समाज द्वारा की गई थी 133:पेज 22 । और 25 नवम्बर 1987 से कच्छ के बाहर नागपुर में शुरू हुआ। उसके बाद अन्य स्थानों पर भी सामूहिक विवाह प्रारम्भ किये गये।

172. **<u>न्याय समिति:</u>** जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, रतनशी खिमजी के शासनकाल के दौरान, सामाजिक व्यवस्था स्थापित करके गेढेराओ के शासन को काफी हद तक समाप्त कर दिया गया था। बिंदु देखें (150.20). आख़िरकार, एक चीज़ जो अभी भी बाकी थी, वह थी विवाह विच्छेद विषय। इस संबंध में भी,

उनके अधिकार को समाप्त करते हुए, पूर्ण लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुसार, समाज ने 15 सितंबर 1985 3:पेज 1 के लिखित नियमों के साथ एक न्याय समिति का गठन किया। इस प्रकार अत्याचारियों की शक्ति का अंत हो गया।

173.**<u>जाति के समाचार पत्र:</u>** जाति में समय-समय पर समाचार पत्र प्रकाशित होते थे 4:पृष्ठ 207। जिनके नाम इस प्रकार हैं.

1. पाटीदार उदय	– कराची	– वर्ष 1924 से 1925 तक
2. जागृति	– धनसुरा	– वर्ष 1965 से 1983 तक
3. आज़ाद कलम	– भुज	– वर्ष 1971 से 1980 तक
4. पाटीदार संदेश	– अहमदाबाद	– 1981 से निरंतर
5. पाटीदार सौरभ	– नखत्राणा	– 1993 से निरंतर
6. उमा दर्पण	– भुज	– 1996 से निरंतर
7. लक्ष्मीनारायण दर्शन	– देशलपर	– 2011 से निरंतर
8. पाटीदार बंधु	– पाटण	– वर्ष 2008 से 2014
9. सनातन धर्म पत्रिका	– नखत्राणा	– वर्ष 2014 से निरंतर

इसके अलावा, बड़े स्थानीय समाजों ने भी अपने स्वयं के समाचार पत्र प्रकाशित किए (सूची के लिए देखें जागृति सितंबर 1972 अंक , पृष्ठ 1 56:सितंबर-1972 संस्करण-पृष्ठ 1 (522 में से 375)) । जैसे नागपुर से पाटीदार पत्रिका, हिम्मतनगर से शोभा, मुंबई से पाटीदार प्रगति, दक्षिण भारत से हमारे समाज का वर्तमान आदि। ऐसे पत्र समय और मांग के अनुसार चलु-बंध होते रहे हैं, लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि ज्ञाति इस विषय में जागृत है, जो जाति की बौद्धिक प्रगति का द्योतक है।

174.**<u>कल्याणकारी योजनाएँ:</u>**

174.1. **<u>निराधार सहाय योजना:</u>** निराश्रित परिवारों को हर महीने वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

174.2. **<u>छात्र सहायता योजना:</u>** जरूरतमंद छात्रों को शिक्षा के लिए ऋण सहायता प्रदान की जाती है।

174.3. **<u>प्रमुख श्री राहत निधि:</u>** प्राकृतिक आपदाओं, भारी बारिश, आग आदि से होने वाले आर्थिक नुकसान से उबरने के लिए समाज के सदस्यों को ऋण सहायता दी जाती है।

174.4. **<u>युवा सुरक्षा कवच (YSK):</u>** परिवार के युवा कमाऊ बेटे/बेटी की मृत्यु पर परिवार को वित्तीय सहायता प्रदान करने की योजना युवासंघ के माध्यम से चलाई जाती है।

175.**<u>युवा संघ:</u>** केन्द्र समाज की स्थापना के बाद युवा संगठन का गठन सबसे महत्वपूर्ण कदम था। इस मामले में कोलकाता के युवाओं ने मोर्चा संभाला. वर्ष 1972 से संगठन बनाने की गतिविधि आरंभ हुई और वर्ष 1977 में संगठन अस्तित्व में आया। इस मामले पर एक अलग लेख इस पुस्तक में आगे दिया गया है।

23 सनातनी केंद्रीय समाज - चरण 1: संगठन को मजबूत करना

176.**<u>क्रांति दल:</u>** इस संगठन का गठन वर्ष 1991 में समाज के भोले–भाले और कमजोर वर्गों पर अन्य जातियों और गुप्त उद्देश्य वाले सरकारी अधिकारियों द्वारा उत्पीड़न का मुकाबला करने, युवाओं को संगठित करने, ऐसे अत्याचारों का उचित रूप से मुकाबला करने और असामाजिक तत्वों को अपनी शक्ति दिखाने के लिए किया गया था। इस मामले पर एक अलग नोट इस पुस्तक में बाद में दिया गया है।

176.**<u>महिला संघ:</u>** महिला संघ का गठन वर्ष 1997 में हुआ। इस संगठन के गठन के साथ ही सामाजिक संगठन के तीन पहलुओं की संरचना का कार्य पूरा हो गया। समाज की दो भुजाएँ, एक युवा और दूसरी महिलाएँ, संगठित रूप से समाज से जुड़ीं। अतः समाज की शक्ति बहुत बढ़ गयी। इस मामले पर एक अलग लेख इसी किताब में आगे दिया गया है.

178.**<u>52 गोत्री परिवार:</u>** नखत्राणा में सभी 52 गोत्री ऋषि मंदिरों का एक भव्य परिसर बनाने की योजना बनाई जा रही है, जिसका उद्देश्य जाति के 52 गोत्री परिवारों को सनातन के मिशन से जोड़ना है। इस संबंध में सभी सनातनी गोत्री परिवारों को विश्वास में लिया जाएगा और उचित समन्वय बनाकर आगे बढ़ाया जाएगा।

179.**<u>क्षेत्र प्रणाली:</u>** भारत भर में विभिन्न स्थानों पर बिखरी हुई जातियों को एक स्थान से व्यवस्थित करना बहुत कठिन हो गया। जितने गाँव, उतने समाज कहा जा सकता है। समाज का प्रशासन सुचारु रूप से चले इसके लिए प्रशासनिक व्यवस्था में भारी परिवर्तन किये गये। भारत भर में स्थानीय समाजों को केंद्रीय समाज से जोड़ने के लिए वर्ष 2005 से धीरे–धीरे स्थानीय समाज और केंद्रीय समाज के बीच संचार के लिए ज़ोन स्तर की शुरुआत की गई। आज पूरे भारत में सभी स्थानीय समाजों को क्षेत्रफल के अनुसार 25 जोनों में बांटा गया है और ये 25 जोन को 6 खंडों में विभाजित किया गया।

180.**<u>सफलता:</u>** सन् 1938 में जब सनातनी समाज की स्थापना हुई तो उसके पास कुछ भी नहीं था। केवल एक नई जाति, एक नये समाज का जन्म हुआ। उनके पास अपना कार्यालय भी नहीं था. जाति की आर्थिक स्थिति अत्यंत ख़राब थी. हालाँकि, इतने कम समय में विकास और समृद्धि में जाति का योगदान शायद किसी भी अन्य जाति से बेजोड़ है।

जब आपके कार्यों का विरोध करने वाले विरोधी उन्हीं कार्यों में अपने ही समाज में आपकी सफलता की नकल करने लगें तो समझ लें कि आपकी सफलता वास्तविक है। सनातनियों के विरोधी भी अब सनातनियों की नकल करने लगे। जो लोग उन मामलों में कट्टर विरोधी थे, जो मानते थे कि हम मर जायेंगे लेकिन आपका काम नहीं होने देंगे, वे अब नकल करने लगे। सनातनी समाज की सद्भावना/नाम का लाभ उठाने के लिए सतपंथ समाज के सदस्य भी स्वयं को सनातनी कहने लगे। उनके समाज के नामों में भी सनातन शब्द जोड़ा जाने लगा। यह यहाँ इसलिए लिखा गया है ताकि आप समझ सकें कि ऊपर से सनातन समाज की सफलता कितनी महान है।

181.**कमियाँ और खामियाँ:** कहते हैं अच्छे काम में हजार रुकावटें आती हैं। केन्द्रीय समाज की सफलता और विकास में भी कुछ कमियाँ और खामियाँ रह गईं या डाल दी गईं। जब हम निरीक्षण करने बैठते हैं तो यदि हम कमजोरियों और कमियों के बारे में बात नहीं करते हैं तो अवलोकन अधूरा माना जाता है।

23 सनातनी केंद्रीय समाज - चरण 1: संगठन को मजबूत करना

181.1. **शिक्षा पर अधिक ध्यान:** शिक्षा आवश्यक है। लेकिन केवल शिक्षा ही पर्याप्त नहीं है. समाज ने यह सोचने की भूल की कि यदि शिक्षा आ जायेगी तो सभी जातिगत समस्याएँ अपने आप हल हो जायेंगी। समाज और धर्म एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यदि धर्म नहीं है तो समाज भी नहीं है। इसलिए समाज के बच्चों को धर्म और समाज के इतिहास का ज्ञान देना आवश्यक है। इस सिद्धांत को किनारे रख दिया गया. दूसरी ओर सतपंथी क्या कर रहे हैं? उस पर भी किसी ने ज्यादा ध्यान नहीं दिया. किसी ने इस ओर ध्यान नहीं दिया कि सतपंथी किस प्रकार सनातनियों की सफलता को पलटने का खेल खेल रहे हैं और इसका जाति पर कितना दूरगामी प्रभाव पड़ेगा 71:पेज 5।

181.2. **अति आत्मविश्वास:** सतपंथ अब अल्पमत में है, कितने दिन टिकेगा ? इसलिए उन्हें अकेला छोड़ दीजिए. आइए हम अपनी लाइन को लंबा करें। वे लोग धीरे–धीरे सनातन काल में आ जायेंगे। एक (झूठा) माहौल बनाया गया कि जैसे ही शिक्षा आएगी, कुरिवाज और अंधविश्वास अपने आप दूर हो जाएंगे 71:पृष्ठ 91।

ऐसा नहीं है कि सतपंथ में रातों–रात परिवर्तन होने लगे और किसी ने सनातनी को सचेत नहीं किया। जब बदलाव शुरू हुए तो जागृति मासिक के अप्रैल 1972 अंक में पृष्ठ 7 पर सनातनी भाइयों शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ, जिसमें लेखक इन बाहरी बदलावों के बारे में कहता है कि ये बदलाव बाहरी हैं, अंदर सब कुछ वैसा ही है 56:अप्रैल 1972, पृष्ठ 7 (522 में से 151)।

एक और उदाहरण है. जागृति मासिक के सितम्बर 1972 अंक में पृष्ठ 15 पर समाज दर्पण शीर्षक से एक लेख प्रकाशित हुआ था। जिसमें सतपंथ में आए बदलावों और रोटीबेटी के सतपंथ से संबंधों के कारण उत्पन्न होने वाली समस्याओं की ओर इशारा किया गया था 56:सितंबर 1972, पृष्ठ 15 (522 में से 389)।

लेकिन, सनातनी झूठे आत्मविश्वास (अति आत्मविश्वास) का शिकार होकर सतपंथ पर नजर रखना छोड़ दिया 27:पेज 33।

181.3. **झूठे मुकदमे जारी:** सतपंथी सनातनियों को परेशान करने के इरादे से गांव–गांव उनके खिलाफ झूठे मुकदमे दायर करते रहे। सतपंथियों के साथ एकता बनाए रखने के उनके प्रयासों को सनातनियों की कमजोरी माना गया 27:पृष्ठ 36।

केंद्र समाज के बुजुर्गों पर गलत केस का मामला

मूल मामला कोटड़ा (ज.) का है। गांव के सभी पाटीदार एकजुट होकर सनातन समाज में विलीन हो गये। इसलिए, जैसा कि गाँव ने निर्णय लिया, पुरानी सतपंथ संपत्ति को गाँव के लक्ष्मीनारायण समाज में मिला दिया गया। उसके अनुसार सभी लोग मिलजुल कर रहते थे। लेकिन कुछ सतपंथियों और उनके समर्थकों को यह पसंद नहीं आया.

ग़लत मामले का एक उदाहरण

इसलिए कोटडा (ज.) के नेताओं पर अनेक झूठे मुकदमे बनाये गये। कोटडा (ज.) के नेता इस मामले को लेकर अक्सर केंद्रीय समाज में अपनी बात रखते थे.

उस समय खिमजी लखमशी लिम्बानी केंद्रीय समाज के अध्यक्ष थे। वर्ष 2001 में एक बैठक में ऐसी ही चर्चा के बीच सतपंथी अरजण भगत – आनंदसर वाला – बीच–बीच में चल रही बैठक में टोक देते थे। आख़िरकार, उन्हें रोकने के लिए खिमजीभाई ने अरजणभाई को बैठक छोड़ने का आदेश दिया। यहीं से मामला शुरू हुआ.

इसीलिए केंद्र समाज के अध्यक्ष खिमजीभाई लखमशी लिम्बानी, शिवदास गोविंद, वेलुभाई सलाट, ईश्वर भगत और अन्य बुजुर्गों के खिलाफ झूठा मामला दर्ज किया गया। झूठा आरोप लगाया गया कि ये बुजुर्ग 24 अक्टूबर –2001 को पिराना आये और मारपीट/तोड़फोड़ की।

जब ये सभी बुजुर्ग अहमदाबाद कोर्ट में पेश हुए तो जज को भी लगा कि ऐसे बापा क्या मारपीट कर सकते है। इसलिए उन्होंने कहा कि तुममें से जो सबसे छोटा हो, उसे आना चाहिए. इसमें ईश्वरभाई भगत के नाम का उल्लेख किया गया था और अन्य सभी को व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होने से छूट दी गई थी। और समय–समय पर सभी इन झूठे मुकदमों से बरी भी होते रहे।

समझने वाली बात यह है कि अगर केंद्रीय समाज के बुजुर्गों पर ऐसे सरासर झूठे मुकदमे बना रही है तो आम लोगों को सतपंथी कैसे डराकर उन पर अत्याचार करते होगे। यह आपको सोचना होगा।

क्योंकि सनातनियों पर ऐसे कई गलत केस हुए हैं।

181.4. **<u>इतिहास को भुला दिया गया:</u>** केवल शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करने के कारण, जाति के लोगों, सतपंथ के इतिहास और इसके खिलाफ संघर्ष को काफी हद तक भुला दिया गया। नई पीढ़ी इतिहास से पूरी तरह अनभिज्ञ रही। हम सबको एक होना चाहिए, धर्म को लेकर कोई झगड़ा नहीं होना चाहिए, जैसे भारत में धर्म निरपेक्ष है, ऐसे समाज में जो जिस धर्म का पालन करना चाहता है, उसको पालन करने देना चाहिए – इस पर किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए। सतपंथ भी सनातन धर्म है। धर्म एक व्यक्तिगत चीज़ है. समाज और धर्म एक दूसरे से भिन्न हैं, इसलिए समाज में जो भी व्यक्ति जिस धर्म का पालन करना चाहे वह कर सकता है। सनातन समाज में सतपंथ का पालन हो सके इस आशय से ऐसी बातों के माध्यम से मिथ्या वातावरण तैयार किया गया है। इस कार्य में उन्हें सफलता मिली क्योंकि हमारी नई पीढी ने इतिहास को भुला दिया गया था 27:पृष्ठ 66 27:पृष्ठ 237।

181.5. **<u>केन्द्रीय समाज का कार्य केवल शिक्षा के लिये है:</u>** जाति में यह माहौल बना दिया गया कि केन्द्रीय समाज का कार्य केवल शिक्षा के लिये है। इसका धर्म से कोई लेना–देना नहीं है. एक उदाहरण (झूठा) देते हुए कहा गया कि नखत्राणा के छात्रावास में भगवान का कोई मंदिर नहीं है। इसलिए वहां केवल शैक्षणिक कार्य ही किया जाना चाहिए।

जैसा कि इतिहास को भुला दिया गया है, इस पर किसी का ध्यान नहीं गया है कि छात्रावास के उद्घाटन की रिपोर्ट में ही कहा गया है कि कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय समाज का नया संविधान भी पारित किया गया था। और इसी कार्यक्रम में जाति के नये रीति–रिवाज भी पारित किये गये। कार्यक्रम में पिराना सतपंथ के परित्याग पर जोर देने वाले अंश भी शामिल हैं। ऐसे भाषण भी हैं कि यह छात्रावास संत ओधवराम महाराज के अधूरे कार्यों को पूरा करने का एक संकल्प है। यह बात धीरे–धीरे भुला दी गई कि सतपंथ के विरुद्ध लड़ाई में अपने प्राणों की आहुति देने वाले बुजुर्गों द्वारा बनाई गई केंद्रीय सोसायटी सतपंथ को बढ़ावा देने के लिए नहीं है। छात्रावास का अंशदान एकत्र करने हेतु सभा में कहा गया था कि भविष्य में धार्मिक कार्य छात्रावास के माध्यम से किये जायेंगे (मिनट्स दिनांक 10– अगस्त –1959), यह भी लोग भूल गये 71 ।

ऐसा माहौल काफी समय तक बना रहा. इस कारण नये अनभिज्ञ कार्यकर्ताओं ने सहज ही स्वीकार कर लिया कि केन्द्रीय समाज का कार्य धर्म का विषय नहीं है।

181.6. **<u>सतपंथी घुस आए:</u>** सनातनियों (देह शुद्धि की हो या नहीं) के बीच खाने–पीने के व्ययहार की बात होने लगी ताकि वे एक–दूसरे से मिल–जुल सकें। सतपंथी से किसी भी प्रकार का व्यवहार करना वर्जित था। लेकिन समय के साथ मूल उद्देश्य भुला दिए जाने से यह सुविधा अधिकाधिक स्वतंत्रता में बदल गई।

इस अच्छे अर्थ में कि सतपंथियों के एक साथ रखने से सुधार होगा, कई स्थानों पर सतपंथियों को सनातन संस्थाओं में शामिल भी किया गया। इसके अच्छे परिणाम भी मिले. अनेक सतपंथी बिना किसी छल–कपट से पूरी निष्ठा से सनातनी बन गये। परन्तु सनातनियों की इस भावना का कुछ हद तक दुरुपयोग किया गया 27:पेज 51 ।

कुछ सतपंथी, मेली मुराद के साथ सनातन समाज में विलीन हो गये। उस समय आगेवानो को उन पर संदेह नहीं हुआ क्योंकि आगेवानो का मुख्य लक्ष्य केवल शिक्षा पर केंद्रित था 27:पृ. 48 ।

181.7. **<u>सतपंथियों का सनातनी समाज पर कब्ज़ा करने का प्रयास:</u>** सनातनी समझ गए कि वो भी हमारा भाई है, इसे साथ रखेंगे तो यह धीरे–धीरे सुधर जाएगा। लेकिन सतपंथी सनातन समाज में घुस गए, धीरे–धीरे सनातन समाज के ऊंचे पदों पर पहुंच गए और सनातन समाज की बागडोर अपने अधीन करने लगे 27:पृष्ठ 64।

धीरे–धीरे सनातन समाज में यह कथा रची गई कि ये समाज सनातनी–सत्पंथी दोनों उपजातियों का मिश्रण है। वर्तमान केन्द्र समाज केवल शिक्षा की एक संस्था है। देखिये यहां हॉस्टल के अलावा कुछ भी नहीं है. वहां कोई मंदिर नहीं है. यह सिर्फ सनातनियों का संगठन नहीं है. यह संस्थान केवल शिक्षा के लिए है। यह झूठा माहौल बनाया गया कि यह संस्था कोई समाज नहीं है 27:पेज 67।

181.8. <u>मीडिया अपनी भूमिका निभाने में विफल:</u> जब नेता कुछ गलत करते हैं या कोई गलती करते हैं, तो उस गलती को जनता के सामने लाना एक सतर्क मीडिया का काम है। लेकिन इस दौर में अधिकतर मीडिया अपनी सकारात्मक भूमिका नहीं निभा सका 27:पेज 37।

181.9. <u>धर्म के प्रति उदासीनता:</u> सनातन समाज में धीरे–धीरे धर्म का प्रचार–प्रसार बंद हो गया। यदि हम सनातन का प्रचार करेंगे तो बगल में बैठे सतपंथी को बुरा लगेगा। हमें धर्म का प्रचार–प्रसार नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचेगी। ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गयी.

धीरे–धीरे स्थिति ऐसी आ गई कि समाज ने सनातन धर्म की जय, भगवान लक्ष्मीनारायण की जय आदि बोलना बंद कर दिया। क्योंकि यह जय बोली जाती है, इसलिए सतपंथियों को सतपंथ धर्म की जय, इमामशाह की जय आदि बोलने लगे। सनातनी कभी भी ऐसा नहीं होने देगें 27:पेज 52।

सनातन के साधुओं को सामाजिक आयोजनों में भी बुलाया जाना बंद हो गया। क्योंकि जब सनातनी साधुओं को बुलाने की बात आई तो सतपंथी भी सतपंथ साधुओं को बुलाने की शर्तें रखने लगे।

इसलिए तेरी भी चुप, मेरी भी चुप का रास्ता अपनाया जो एक बड़ी गलती थी। सनातन समाज में सतपंथियों का हस्तक्षेप/दादागीरी सहन नहीं करनी चाहिए थी 27:पेज 51।

181.10. <u>स्वाध्याय और आर्य समाज का दुरुपयोग:</u> कुछ सतपंथी सनातन का लेबल चाहते थे, लेकिन सनातनी की पकड़ से बाहर रहना चाहते थे। उन्हें बाहर से तो सनातन का रूप धारण करते थे, परंतु भीतर से उन्हें सतपंथ का अनुसरण करना पड़ा, ऐसे लोगों ने समाज के स्वाध्याय प्रवाह और उसकी उदारता का दुरुपयोग किया। इसी प्रकार आर्य समाज के साथ भी दुर्व्यवहार किया गया। ऐसा खासतौर पर कंपा इलाके में देखने को मिला. इस प्रकार सतपंथियों ने पिछले दरवाजे से सनातन समाज में प्रवेश किया। यहां एक बात स्पष्ट रूप से समझने की है कि यह कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि सभी स्वाध्यायी और आर्य समाजी ऐसे ही होते हैं। जिस प्रकार केन्द्रीय समाज का दुरुपयोग हुआ, उसी प्रकार स्वाध्याय और आर्य समाज का भी दुरुपयोग हुआ।

181.11. **<u>पूज्य संत वालराम महाराज के साथ धोखाधड़ी:</u>** सतपंथियों ने संत वालदासजी का दुष्प्रचार करना शुरू कर दिया[123] महाराज सतपंथ का स्वागत करते हैं और सतपंथ के गादीपति करसन काका के सहयोग से कच्छ में भ्रमण करते हैं, उनसे मिलते हैं, आदि। जबकि तथ्य यह है कि ;

साबरकांठा के कुछ भाइयों के अनुरोध पर, वालरामजी महाराज ने खेडब्रह्मा में एक कन्या के छात्रावास का उद्घाटन किया। वहां मौजूद कुछ भाइयों ने इस बात पर जोर दिया कि उन्हें खुद जाकर पिराना देखना चाहिए। उसके अनुसार फोन से संपर्क स्थापित किया और उसी के अनुसार पिराणा चले गए।

फिर मार्च 1989 में करसन काका कच्छ, देशलपर–वांढाय आए। तभी उनके कुछ अनुयायी वालराम महाराज को यह कहते हुए लेने आये कि करसनदास महाराज उन्हें याद कर रहे हैं। सामान्य शिष्टाचार और भोलेपन के कारण, करसन काका से मिलने गये। वहां उन्होंने बिना उनकी जानकारी के करसन काका के साथ उनकी फोटो खींच ली और यह प्रचार करने लगे कि वालरामजी महाराज भी सतपंथ धर्म को स्वीकार करते हैं.

इस संबंध में संत वालराम महाराज ने दिनांक 02– जुलाई –1989 को एक लिखित स्पष्टीकरण जारी कियौ 147 । उसमें उन्होंने कहा था कि हमारी राय में पिराना संप्रदाय सौ फीसदी इस्लामिक धर्म है, चाहे इसका कोई भी नाम या लेबल हो. इसका सनातन या वैदिक या हिंदू धर्म से कोई लेना–देना नहीं है।

फिर भी पिराणा संस्था ने 03 मई 1997 को जारी दशाब्द महोत्सव स्मृति ग्रंथ के पृष्ठ 98 पर देशलपर–वढाय में करसन काका के साथ वालदास महाराज की एक तस्वीर प्रकाशित की और नीचे लिखा कि प. पूज्य वलदासजी महाराज ने हर्षभेर के साथ कुछ गाँवों का दौरा किया। प. पूज्य करसनदासजी महाराज के साथ, शांति के संदेश और धार्मिक एकता के उद्देश्य को प्रभावी बनाने के लिए यथार्थ प्रयास किए गए। 123:पेज 98

हमें यह समझना होगा कि जब संतों के साथ इस तरह का छलपूर्ण व्यवहार किया जा रहा है जिसमें पिराणा की मूल संस्था सीधे तौर पर शामिल है तो आम सनातनी और लोगों के साथ कैसा व्यवहार किया जाएगा? इस बारे में हर किसी को सोचना होगा. ये तो सिर्फ एक उदाहरण है।

123 वलदासजी = वलरामजी। हरिहर परंपरा में साधु के जीवित रहते उसके नाम में (दास) जोड़ा जाता है और उसकी मृत्यु के बाद (राम) जोड़ा जाता है।

23 सनातनी केंद्रीय समाज - चरण 1: संगठन को मजबूत करना

182.**<u>सनातनी के समाज को नष्ट करने का प्रयास:</u>** इस अवधि में ही सनातन के समाज और संगठन को नष्ट करने का प्रयास किया गया और लचीलेपन के प्रयोजनों के लिए इसका बचाव कैसे किया गया, इसके बाद अलग से वर्ष 1985 का ताकिया – हिंदू उपस्थिति बल्कि अंदर से इस्लाम और सफाई अभियान – सनातन धर्म जागरण समिति का आंदोलन आदि प्रकरणों में वर्णित है।

183.**<u>निष्कर्ष:</u>** ऊपर वर्णित कमियों के बावजूद, सनातन का केंद्रीय समाज जबरदस्त सफल रहा, इसमें कोई संदेह नहीं है। सोचिए सनातनियों की सफलता ने विरोधियों के मन में कितना आतंक भर दिया होगा कि उन्हें अपना अस्तित्व बचाने के लिए सनातन समाज में घुसपैठ करनी पड़ी। हालाँकि घुसपैठ से कुछ क्षति हुई हो, यहाँ तक कि सनातन का अभियान धीमा भी हो गया हो, सनातन का अभियान अत्यधिक सफल रहा ऐसा कह सकते हैं।

जैसे–जैसे लोगों को पता चला कि सतपंथ वास्तव में हिंदू धर्म नहीं बल्कि मुस्लिम धर्म है, और सनातन का समाज बहुत व्यवस्थित, हिंदू धर्म, उच्च संस्कार और सभी अच्छी चीजों में बहुत श्रेष्ठ है, और वास्तव में बहुत अच्छा काम करता है जैसा कि होता आया है, लोगों ने सतपंथ छोड़ दिया। इस प्रकार सतपंथ छोड़कर सनातन में शामिल होने वालों का सिलसिला अनवरत जारी रहा।

इसका परिणाम जाति की मूल अभियान के रूप में कैसे निकला, इसका उल्लेख नीचे किया गया है, जो स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि समाज को मजबूत करने और अपने पैरों पर खड़े होने के लिए आवश्यक संस्थाएं, सुविधाएं, वातावरण आदि बनाने में सनातन काफी हद तक सफल रहा है।

प्रहर 6

1985 से 2023

38 वर्ष

सफ़ाई अभियान

सनातन समाज को तितर-बितर कर,
सतपंथ धर्म में वापस ले जाने की साजिश को
नाकाम कर समाज को **स्वच्छ करने का अभियान..**

24

1985 का ताकिया – दिखने में हिंदू लेकिन अंदर से इस्लाम

184. **सतपंथ छोड़ने वाले लोगों का प्रवाह:** सनातनी केंद्र समाज की जबरदस्त सफलता के कारण सतपंथ छोड़ने वाले लोगों का प्रवाह बढ़ गया। सतपंथ छोड़ने वाले लोगों की संख्या पिराणा सूत्रधारों के लिए बड़ी चिंता का विषय बन गई । धीरे–धीरे वर्ष 1985 तक पिराणा की हालत बिगड़ती गई और गंभीर स्थिति में पहुंच गई।

पिराणा सतपंथ की बिगड़ती स्थिति को सुधारने के लिए 1985 के आसपास निर्णय लिए गए और तदनुसार 1990 के दशक में जनता में बड़े बदलाव देखने को मिले। ये परिवर्तन इतने घातक थे कि अगले 20 वर्षों तक सनातन समाज इन परिवर्तनों के पीछे के खेल को समझ ही नहीं पाया 69 प्रकाशन के विचार खंड का 46:3रा पृष्ठ 123 11 ।

पिराना सतपंथ को जीवित रखने के लिए, अनुयायियों की घटती संख्या और घटती आय को रोकने की तत्काल आवश्यकता थी। पिराना की आय बढ़ाने के लिए जरूरी था कि उसके फॉलोअर्स बढ़ें। लेकिन 1985 आते–आते सतपंथ के मूल इस्लामी स्वरूप का ज्ञान कच्छ कड़वा पाटीदार (क.क.पा.) जाति के घरों तक पहुंच चुका था। इस्लाम के सहयोग से क.क.पा. जाति के लोगों को अब लज्ञा का अनुभव हुआ। इसलिए एक ऐसे समाधान की आवश्यकता थी, जिससे बड़ी संख्या में लोग पिराना सतपंथ से जुड़ें और इसमें गर्व की भावना महसूस करें। 27:पेज 33 और 355

ताकिया के पुन: प्रयोग से बाह्य परिवर्तन: इस उपाय को क्रियान्वित करने के लिए एक बार फिर इस्लाम के
185. महत्वपूर्ण हथियार अल–ताकिया जिसे संक्षेप में तकिया कहा जाता है, का प्रयोग किया गया।

सतपंथ के अस्तित्व को खतरे में देखकर सतपंथ के गुप्ती समुदाय के नेता यानी गादीपति प्रमुख काका ने पीरजादा शम्सुद्दीन बावा खाकी के मार्गदर्शन में सतपंथ में बाह्य हिंदू सुधार करना शुरू किया ।

इसका उद्देश्य यह था कि सतपंथ के अनुयायियों को सनातन के भाइयों की निंदा न सहनी पड़े और जो अनुयायी सतपंथ को मुस्लिम धर्म समझकर छोड़ गए थे, वे सतपंथ में लौट सकें। इसने सतपंथियों को रूढ़िवादी हिंदू के रूप में अपनी पहचान का दावा करने और इस्लाम से कोई प्रभाव नहीं होने का दावा करने की अनुमति दी। 27:पेज 356 से 359 138:पेज 150।

24 1985 का ताकिया - दिखने में हिंदू लेकिन अंदर से इस्लाम

186.**<u>तीन प्रकार के परिवर्तन किये गये:</u>** ताकिया का प्रयोग करके पिराना सतपन्थ में तीन मुख्य प्रकार के परिवर्तन किये गये।

186.1. <u>सतपंथ धर्मग्रंथों का अनुवाद:</u> चूंकि सतपंथ एक इस्लामी धर्म है, इसलिए इसके मूल ग्रंथों में कई इस्लामी शब्द शामिल हैं। उन इस्लामिक शब्दों का अनुवाद किया गया और उनकी जगह हिंदू शब्दों को रख दिया गया। ठीक वैसे ही जैसे बाइबिल या कुरान का अनुवाद हिन्दू भाषा में तैयार किया जाता है। ऐसे अनुवादित धर्मग्रंथों को हिंदू धर्म के धर्मग्रंथों के रूप में प्रस्तुत किया गया। पहली नज़र में लोगों को कोई इस्लामी शब्द नज़र नहीं आया इसलिए उन्हें लगा कि यह सच है 50: पृष्ठ 220 से 227।

हालाँकि, उन ग्रंथों में इष्टदेव मुर्तज़ा अली तालिब (हिन्दू नाम – निष्कलंकी नारायण) और आद्य गुरु सैयद इमामशाह बावा की पूजा जारी रही। बस पूजा की भाषा बदल दी. हिंदुओं को भ्रष्ट करने वाले सतपंथ–दशावतार ग्रंथों को निरस्त नहीं किया। अपने भगवान और गुरु को कभी नहीं बदला। वह मुसलमान बने रहे 27:पेज 357 50:पेज 216 140:पेज 105, 106, 108, 110, 111, 112 158:पेज 231 से 233 ।

186.2. <u>हिंदू साधु संतों का दुरुपयोग:</u> हिंदू साधु संतों का विश्वास जीतने की कोशिश की गई। जैसा कि बंद दरवाजे के पीछे साधुओं से सुना गया था , हिंदू साधुओं और संतों से कहा गया था कि वे हमारे साथ सहयोग करें ताकि सतपंथी मुसलमान न बन जाए। हम लोगों को हिंदू बनाना चाहते हैं. हमारी इन धार्मिक पुस्तकों को देखो जिनमें से हमने इस्लाम के तत्वों को हटा दिया है और अब केवल हिंदू तत्वों को शामिल किया है।

सतपंथ के ग्रंथों का गहराई से किसी ने अध्ययन नहीं किया। तकिया के बारे में कोई नहीं जानता था. हिंदू साधु संतों को इस गहरी साजिश का अंदाजा नहीं था. उन्हें लगा कि अगर कोई मुसलमान से हिंदू बन जाता है तो दोबारा सोचने की जरूरत नहीं है, ये बस हो जाता है. सनातन की कच्छ कड़वा पाटीदार जाति से किसी ने राय नहीं ली.

इसलिए, हिंदू साधु संत, जो अच्छी तरह से जानते हैं कि सतपंथ एक मुस्लिम धर्म है , लेकिन केवल इस आशा में कि सतपंथी हिंदू बन रहे हैं और धर्म का एक महान कार्य उनके हाथों से किया जा रहा है, सतपंथ का समर्थन करने के लिए तैयार हो गए। ऐसे भ्रम में पिराणा से साधुओं को मिलने वाला दान भी एक छोटी भूमिका निभाता है।

पिराणा में समय–समय पर हिंदू साधु संतों की सभा बुलाई जाती है। इस मौके पर मंच से हिंदू संत यह प्रस्तुत कर रहे हैं कि सतपंथ हिंदू धर्म का ही हिस्सा है. 50:पेज 216 27:पेज 36 69 123 11 163 158:पेज 231 से 233।

186.3. **<u>हिंदू संगठनों का दुरुपयोग:</u>** आरएसएस, वीएचपी, बजरंग दल आदि हिंदू संगठनों से वही बातें कही जो हिंदू साधु संतों से कहते थे। हिंदू संगठन भी खुश थे कि मुस्लिम धर्म को हिंदू धर्म में परिवर्तित किया जा रहा है 27:पृष्ठ 205 158:पृष्ठ 231 से 233 138:पृष्ठ 148 और 149।

इसी के अनुरूप शुरुआत में हिंदू संगठनों के कार्यक्रम होने लगे. उनकी गतिविधियों के शिविर लगने लगे। सुनने में आया है कि पिराणा संस्था ने उनके कार्यक्रमों का खर्च उठाना भी शुरू कर दिया है 27:पेज 242 27:पेज 153 27:पेज 968 158:पेज 232।

इन संगठनों के मार्गदर्शन में, पिराणा में हिंदू उपस्थिति को बढ़ाया गया था और इन संगठनों के कार्यकर्ताओं ने यह दावा करना शुरू कर दिया कि उन्होंने एक मुसलमान स्थान को हिन्दुओं का कब्जा करके बहुत अच्छा काम किया है 50: पृष्ठ 230 ।

187.<u>साधु संतों और हिंदू संगठनों ने नहीं सोचा था:</u> जब हिंदू साधु संतों और हिंदू संगठनों ने पिराणा सतपंथ का समर्थन किया, तो उन्होंने सोचा भी नहीं था कि उनका सहयोग इतना दूरगामी होगा। उन्होंने कभी भी श्री अखिल भारतीय कच्छ कड़वा पाटीदार समाज, को विश्वास में लेकर किसी भी प्रकार की बातचीत नहीं की। 27:पेज 39 ।

188.<u>तकिया से अनभिज्ञ:</u> हिंदू साधु संत या हिंदू संगठन ज्यादातर तकिया से अनभिज्ञ थे। इसलिए, यह उनकी कल्पना में नहीं था कि उनके खेल का इस्तेमाल उनके (हिंदुओं) खिलाफ किया जा सकता है।

189.<u>इस्लामी बीज से अनभिज्ञ:</u> हिंदू साधु संतों और संगठनों ने केवल सतपंथ की बाहरी प्रथाओं पर काम किया। किसी ने सतपंथ के इस्लामी बीज निकालने का काम नहीं किया। यदि इस्लामी बीज को संरक्षित रखा गया तो इसमें कोई संदेह नहीं कि भविष्य में किसी समय सतपंथ इस्लाम के वास्तविक स्वरूप में लौट आएगा।

190. **<u>परिवर्तनों का प्रभाव:</u>** ऊपर वर्णित तीन प्रकार के परिवर्तनों ने पिराणा को वह दिया जो वह चाहता था। वह लोगों के बीच यह स्थापित करने में काफी हद तक सफल रहे कि सतपंथ हिंदू धर्म का एक हिस्सा है। इसी छवि के कारण वह पिराणा छोड़ने वाले सतपंथी को भरमाने में सफल रहे। भरमाने शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया है क्योंकि सतपंथ ने यह कहकर लोगों को धोखा दिया कि यह हिंदू धर्म था, भले ही वह इस्लाम था। परिणामस्वरूप लोग यह समझने लगे कि यदि सतपंथ हिंदू धर्म है तो सतपंथ छोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं है।

ऐसे धोखे से किसका नुकसान हुआ ? हिंदू या मुसलमान का ? मुसलमान किसी भी सम्प्रदाय के प्रति आकर्षित नहीं थे। इसके बजाय हिंदू सतपंथ की ओर आकर्षित हुए और आधे हिंदू और आधे मुस्लिम बन गए। सवाल यह है कि क्या हिंदू साधु संत और हिंदू संगठन हिंदुओं को सतपंथ की ओर आकर्षित करना चाहते थे ? यदि नहीं, तो आगे (नीचे) जो हुआ उसके लिए कौन जिम्मेदार है ?

सनातनी समाज से लोग शतपंथ धर्म में वापस क्यों जाने लगे ? 27:पेज 171

24 1985 का ताकिया - दिखने में हिंदू लेकिन अंदर से इस्लाम

191.**परिवर्तन से पिराणा को लाभ:** सतपंथियों ने किस प्रकार हिंदू छवि/पहचान का उपयोग हिंदुओं के विरुद्ध किया, अब हम देखेंगे 27:पृष्ठ 39 ।

191.1. शतपंत छोड़ने वाले लोगों का प्रवाह रुका: भ्रम में होने के कारण शतपंथ छोड़ने वाले लोगों का प्रवाह धीमा हो गया या रुक भी गया।

191.2. सनातन हिंदू छवि के कारण समाज में घुसे और टिक गए: सतपंथ हिंदू है, ऐसी छवि के कारण, क. क. पाटीदार जाति के सतपंथी लोगों को अन्य जातियों के बीच हिंदू धर्म में खुद को आत्मसात करने के लिए सनातन समाज में आसानी से प्रवेश करने और टीके रहने के लिए अनुकूल वातावरण मिला।

191.3. सनातन समाज को तोड़ने का प्रयास किया गया: पिराणा सतपंथ धर्म को त्यागने वालों द्वारा स्थापित सनातन समाज को सतपंथियों द्वारा तोड़ने का प्रयास किया गया। सनातनियों पर झूठे पुलिस और कोर्ट केस दायर कर उन्हें दबाने का प्रयास किया गया। सनातन ने समाज को चलाने में बाधा उत्पन्न करना शुरू कर दिया।

तो जब उन्होंने उसे रोका और कहा कि अगर तुम ऐसा करोगे तो हम साथ नहीं रह सकेंगे. तो अब आप अपने सतपंथ समाज में ही रहो, अच्छा है, यह समाज सनातनियों का ही समाज है। फिर जवाब आने लगा कि हम भी हिंदू हैं, सनातन के हैं. हमारे धार्मिक ग्रंथ देखें, हिंदू साधु संतों के प्रवचन देखें, हिंदू संगठनों का समर्थन देखें। उन्होंने अपनी बात मनवाने के लिए अदालती मामलों और सरकारी तंत्र का दुरुपयोग करना भी शुरू कर दिया। सनत का समाज चारों ओर से संकट के काले बादलों के बीच फँसा गया 27:पेज 36 ।

192.**मवाली[124] सक्रिय:** सनातन समाज में सतपंथ के एजेंट बने मावलों ने भी समाज को काफी नुकसान पहुंचाया। मवाली किसे कहा जाता है, मवाली की कार्य पद्धति आदि के बारे में अधिक जानकारी के लिए पुस्तक सतपंथ छोड़ो27:पृष्ठ 195तथा इस पुस्तक में उल्लिखित बिंदु (22.2) देखें।

सतपंथी और मवाली ने मिलकर सनातन समाज में ऐसी स्थिति पैदा कर दी कि समाज में सतपंथी के साथ प्रेम– एकता–धन–संगठन आदि का होना सर्वोपरि है। और इसकी जिम्मेदारी सनातनी पर है (सत्पंथी पर नहीं)। सद्भावना और धार्मिक तटस्थता की बात होनी चाहिए. सतपंथवालों को गलत काम करने से रोकने पर प्रेम– एकता–मिलन–संगठन टूटने का भय दिखाया जाता है। ऊपर से झूठे कोर्ट केस में फंसाने का खतरा भी दिखाना होगा. इस प्रकार सनातन के नेताओं/बुजुर्गों को चुप करा दिया जाता था।

124 मवाल = सनातन समाज में रहने से सनातन समाज को हानि होती है और सतपंथ समाज को लाभ पहुंचाने का काम होता है। एक प्रकार का स्लीपर सेलजा सकता है.

मवाली अब सनातन की विचारधारा को नुकसान पहुंचाने लगे। जैसे अनेको पुस्तकें प्रकाशित होने लगीं। समाज भक्ति सुनामी 44, समाज भक्ति सच्चाई 29, वैदिक अथर्ववेद शतपंथ एक इतिहास 154, पुस्तिकाएं 75 150, इत्यादि तथा एकता मंच वांढाय 162 प्रकाशित। पाटीदार सर्वोदय ट्रस्ट 7 जैसे संगठन भी बनाये गए।

धीरे–धीरे उनकी लॉबी इतनी मजबूत हो गई कि नेताओं ने अपनी सीटें बरकरार रखने के लिए मावलों और सतपंथियों को शरण देने की नीति अपनानी शुरू कर दी। यहाँ नीचे दो मुख्य उदाहरण दिये गये हैं।

1. **<u>सनातन शब्द का विरोध:</u>** धनसुरा जोन की एक सभा मोडासा में हुई। उस सभा में मवालीओ ने निवेदन किया कि सनातन शब्द हमारे लिए विवादास्पद है, इसलिए धनसूरा सनातन समाज के नाम से सनातन शब्द हटा दिया जाना चाहिए, कुछ इस तरह। उसी सभा में मंच से धनसुरा सनातन समाज के तत्कालीन मंत्री श्री अमृतभाई रामाणी, संचालक अशोकभाई भावाणी और उनके साथ धनसुरा के अन्य भाइयों ने संत श्री ओधवराम महाराज के दृष्टिकोण और संघर्ष का कड़ा विरोध किया। अतः सनातन शब्द पर कोई आपत्ति नहीं होने दी गई (आज भी धनसुरा समाज के नाम में सनातन शब्द गौरव के साथ जुड़ा हुआ है)। – सौजन्य: अमृतभाई रामाणी, धनसुरा और अशोकभाई भावाणी, धनसुरा।

2. **<u>रामजी करमशी नाकराणी:</u>** केंद्रीय समाज का इतिहास रहा है कि इसके अध्यक्ष कभी सतपंथ कार्यक्रम में शामिल नहीं हुए. सभी प्रमुखों ने सनातन समाज की गरिमा को बनाये रखा। लेकिन प्रखर सनातनी होने के बावजूद, रामजीभाई नवंबर 2008 में नखत्राणा में नए खाना (तथाकथित निष्कलंकी नारायण का मंदिर) के उद्घाटन के अवसर पर गए। जिससे यह संदेश गया कि सतपंथ को एक तरह से सनातन समाज ने स्वीकार कर लिया है।

रामजी करमशी आज इसे अफसोस के साथ याद करते हुए मानते हैं कि यह उनकी गलती थी. हालाँकि समाज के कई लोगों ने उन्हें इस कार्यक्रम में जाने की अनुमति नहीं दी, लेकिन उनके आसपास भीड़ ने ऐसा माहौल बना दिया कि कुछ दिनों के लिए उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई और उनसे यह बड़ी भूल हो गई। – साभार रामजी करामाशी नाकरानी और 27:पेज 64।

<u>रमेश वागड़िया के खिलाफ झूठा मामला:</u> सीए रमेशभाई वागड़िया ने अपने गांव खाभड़ी के युवाओं को
193. सनातन के इतिहास के बारे में जागरूक करने के लिए 13 अक्टूबर 2005 को एक पैम्पलेट छपवाया और वितरित किया। जाहिर है कि सतपंथियों और उनके एजेंटों को यह पसंद नहीं आया। वे सीधे तौर पर रमेशभाई का विरोध नहीं कर सके. इसलिए वर्ष 2006 में उन्होंने शिकायत दर्ज कराई कि रमेशभाई, उनके पिता और उनके निन्यानवे वर्षीय दादा, पिराणा आए थे और वहां झगड़ा किया था। अन्य लोग भी एकत्र हो गये और तीनों लोग मारपीट करते हुए कार में बैठ चले गए।

दरअसल रमेशभाई और उनके परिवार में से कोई भी कभी पिराणा नहीं गया. जिस दिन, शिकायत के अनुसार, कथित घटना हुई, वे कहीं और एक शादी समारोह में मौजूद थे। सबूत के तौर पर इवेंट से उनकी एक फोटो भी है। लेकिन वास्तव में, ऐसा प्रतीत होता है कि मामला रमेशभाई और उनके परिवार को आतंक में रखने के लिए दायर किया गया है। उसमें भी उसके निन्यानबे साल के दादाजी ने उसे पीटा ? इस आरोप से साबित होता है कि यह शिकायत पूरी तरह से झूठी और मनगढ़ंत है.

इस मामले में एक और मोड़ आ गया है. जब रमेशभाई के बड़े भाई मोहनभाई के बेटे का प्रसंग चल रहा था, तो अचानक अहमदाबाद से पुलिस रमेशभाई को गिरफ्तार करने के लिए आती है। स्वाभाविक है कि मेहमानों के बीच डर का माहौल बनाने और लोगों में डर फैलाने के लिए ऐसा किया गया. यह सब इंगित करता है कि रमेशभाई एक उदाहरण स्थापित करके सनातनियों को यह संदेश देना चाह रहे थे कि यदि तुम सतपंथ के विरुद्ध बोलोगे तो तुम्हें दंडित किया जाएगा। – सौजन्य रमेशभाई वागड़िया।

हम फिलहाल घटनाओं के क्रम को रोकते हैं। इस किताब के अगले अध्याय के बिंदु (203) में हम देखेंगे कि यह कैसे एक नया मोड़ लेता है.

194.**<u>सनातनियों के विरुद्ध परिस्थितियाँ:</u>** सनातन समाज में अर्थात् अपने ही घर में अपने विरुद्ध परिस्थितियाँ किस प्रकार निर्मित की गईं, इस विषय पर सीए रमेशभाई वागड़िया ने एक अच्छा लेख तैयार किया है, जो सतपंथ छोड़ो 27 पुस्तक के पृष्ठ 51 पर प्रकाशित है। :पेज 51 .

195.**<u>विकट परिस्थिति:</u>** सनातन के बुजुर्गों के सामने एक संकट खड़ा हो गया। 27:पेज 30 से 41

सनातन समाज के भीतर सतपंथी, जो अब ऊंचे पदों पर आसीन हो गए थे, समाज के धार्मिक कार्यक्रमों में बाधा डालने लगे। यदि आप समाज में किसी हिंदू साधु को बुलाते हैं तो आपको सतपंथ साधु को भी बुलाना चाहिए। समाज के सनातन धर्म की महिमा, भगवान लक्ष्मीनारायण की जय घोष नहीं किया जा सकता। क्योंकि उस जय के खिलाफ सतपंथ की जय, इमामशाह की जय बुलाई जाती थी.

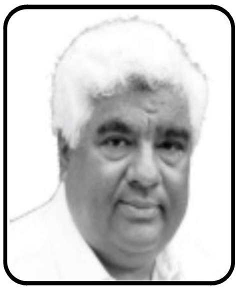
सनातन समाज के भीतर सतपंथ की महिमा सनातन को कभी सहन नहीं होती थी। यदि सनापंथी सतपंथियों को सतपंथ की महिमा का आह्वान करने से रोकेंगे तो सतपंथी समाज को चलने नहीं देंगे और झूठे मुकदमे लगाकर भगा देंगे। तो, सनत के बुजुर्गों के पास दो विकल्प थे।

1. सतपंथ धर्म को स्वीकृति दें।
2. सतपंथीयों को समाज से बाहर निकाल दें।

इसी असमंजस के बीच फंसे समाज के पदाधिकारियों ने सब कुछ समझते हुए भी कोई निर्णय नहीं लिया। लेकिन वह सतपंथ के प्रति सकारात्मक रुख अपना रहे थे। जिससे समाज के लोगों में भारी आक्रोश था.

<u>दबा हुआ आक्रोश ज्वाला:</u> जाति को इस संकट की स्थिति से उबारने के लिए सफाई अभियान शुरू किया गया 27:पृष्ठ 53। जिसके बारे में हम अगले अध्याय में देखेंगे.

25 सफ़ाई अभियान - सनातन धर्म जागृति समिति का आंदोलन


हिम्मत खेताणी


रमेशभाई वागड़िया

196. **भीषण अग्नि:** पिछले अध्याय में हमने देखा कि शतपंथ को लेकर लोगों में भयंकर आक्रोश था। सनातन समाज पर एक तरह से सतपंथ और मावलों का प्रभुत्व था। पिछले कुछ वर्षों में सतपंथियों द्वारा सनातनियों के विरुद्ध गलत कार्य करने के अनेक उदाहरण सामने आए हैं। ऐसी स्थिति में, केंद्रीय समाज के तत्कालीन अध्यक्ष श्री रामजी करमशी, सतपंथ के खाने के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित रह कर आग में धी डालने जैसा कार्य किया।

197. **सनातनी की कीमत पर सतपंथियों के प्रोत्साहन के खिलाफ शिकायत:** सीए रमेशभाई मावजीभाई वागडिया के खिलाफ झूठे मामले के बाद (बिंदु 193 देखें), धीरे–धीरे उन्हें पता चला कि ऐसे झूठे मामलों के मामले गांव–गांव और कम्पाओं में थे। और इसका खामियाजा सनातनियों को भुगतना पड़ रहा है। 02 अगस्त 2009 को संस्कार धाम (देशलपर–वांढाय) के रात्रि भोजन पश्चात कुछ चिंतित सनातनी बन्धु अनायस रूप से एकत्र हुए और इन सतपंथियों द्वारा किये जा रहे उत्पीड़न तथा सनातन समाज के आगेवानों की लापरवाही पर अच्छी चर्चा हुई।

अतः 03– अगस्त –2009 को रमेशभाई जैसे कुछ पीड़ित सनातनी बंधुओं ने केन्द्रीय समाज के वरिष्ठजनों से मुलाकात की और फिर 04– अगस्त –2009 को केन्द्रीय समाज को एक ऐतिहासिक पत्र लिखकर सनातनियों के दुख–दर्द को व्यक्त किया, जिसमें व्यवस्था का हवाला दिया गया। कुछ झूठे मामलों के उदाहरण. इस पत्र का मर्म यह था कि सतपंथियों द्वारा सनातनियों की कीमत पर सनातनियों और केंद्रीय समाज के विरुद्ध झूठे मुकदमों के माध्यम से सताया जा रहा है। जिसका उचित समाधान किया जाना चाहिए 27:पेज 56 । इसके बारे में विस्तृत जानकारी रमेशभाई वागडिया 26 द्वारा लिखित पुस्तक सनातन अभियान की चौथी क्रांति के संस्मरण में दी गई है ।

198. **सतपंथियों की स्थायी बचाव**[125]**:** यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि जब भी सतपंथी सुलह प्रक्रिया में भाग लेते हैं, यदि निर्णय उनके पक्ष में होता है, तो सब ठीक होता है। लेकिन अगर फैसला उसके पक्ष में नहीं जाता है, तो वह स्थायी बचाव का रास्ता अपनाता है कि हमें पिराणा से पूछना होगा। लोग भी इस

125 बचाव का रास्ता = जिम्मेदारी से बचने का रास्ता। बचाव का रास्ता

स्थायी खामी से बहुत तंग आ चुके थे। क्योंकि ऐसा करने से शुद्ध मन से समाधान की प्रक्रिया में शामिल लोगों और प्रक्रिया का मज़ाक में उड़ा दिया जाता था। ऐसा कई लोगों का अनुभव था.

199.**हिम्मतभाई का ऐतिहासिक भाषण:** श्री हिम्मतभाई रतनशी खेतानी ने 07 अगस्त 2009 को केंद्रीय समाज की आम बैठक में एक ऐतिहासिक भाषण दिया , जिसके परिणामस्वरूप समाज सतपंथ के खिलाफ संगठित हुआ और मावलों को हाशिए पर धकेल दिया गया। समाज के पिछले 50 वर्षों के इतिहास में सतपंथ–सनातन के मुद्दे पर इतनी स्पष्ट प्रस्तुति समाज के पिछले 50 वर्षों के इतिहास में शायद ही किसी ने दी हो। हिम्मतभाई ने अपनी राय में भावुक होकर कहा कि वर्तमान प्रमुख श्री रामजी करमशी नाकराणी ने बावा इमामशाह के तथाकथित मंदिर (खाना) नखत्राणा के उद्घाटन में जाकर समाज के रीति–रिवाजों के 18वें अनुच्छेद 2:पृष्ठ 11 का उल्लंघन किया है । जो सतपंथओं का मिनी पिराणा के रुप में निष्कलंकी नारायण मंदिर है। बिंदु देखें (169.1).

रामजीभाई पूर्णतः सनातनी हैं। लेकिन ऊपर जो नाटकबाज है, उन्होंने नाटक कर उनकी मति भ्रमित कर दी। सतपंथ को लेकर अभी जो चल रहा है वह केंद्रीय समाज और उसके नेताओं के अनुकूल नहीं है। लेकिन कोई पूछने वाला साहसी नहीं है. इस प्रकार समाज की रीति–नीति के अनुच्छेद 18 एवं 19 का खुलेआम उल्लंघन हो रहा है।

उन्होंने कटाक्ष करते हुए कहा कि हमारे पूर्वजों ने हमें सुधार कर बहुत बड़ी गलती की है. यदि हम न सुधरे होते तो आज मुसलमान बन गये होते। पांव मरोड़कर चिल्लाया होगा। सरकारी लाभ लेते हुए हमारे बुजुर्गों ने हमें (व्यंग्य में) परेशान किया। क्योंकि हम उनका अनुसरण नहीं करना चाहते.

इस भाषण की ऑडियो क्लिप ने पूरे भारत में लोगों के दिलों को झकझोर दिया। क्लिप वायरल हो गई. जिसका समाज के सनातनीओं के बीच बहुत प्रभावी और व्यापक प्रभाव पड़ा। पूरे भाषण के लिए संदर्भ सूची देखें.. 119:पेज 174 27:पेज 60।

ऐसा माना जाता है कि हिम्मतभाई के इसी भाषण से सफ़ाई अभियान आंदोलन की शुरुआत हुई।

200.**सनातन धर्म जागरण समिति का गठन:** समुदाय के नेताओं के व्यवहार से परेशान होकर, हिम्मतभाई और रमेशभाई वागडिया ने महसूस किया (सही) कि आम जनता उनकी ज्ञाति और उनके समाज के इतिहास से अनभिज्ञ है। आम लोग जागरूक होंगे तो समाज के नेता भी जागरूक होंगे। इसके लिए उन्होंने एक सामाजिक जागरूकता अभियान चलाया. तब उन्हें पता चला कि जागरूकता के साथ–साथ समाज को उन मवालीओं से भी बचाना है जो समाज में ऊंचे पदों पर पहुंच चुके हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो समाज को

स्वच्छ रखना होगा। इसीलिए इस आंदोलन को सफ़ाई अभियान के नाम से जाना जाता है। धीरे–धीरे कई लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस सफाई अभियान से जुड़ गए।

सफ़ाई अभियान आंदोलन की पहली जागरूकता बैठक 04 अक्टूबर –2009 को धनसुरा में शुरू की गई थी। धनसुरा की इस यात्रा के दौरान, उसी दिन, सनातन धर्म जागरण समिति का गठन किया गया 27:पृष्ठ 62 । जिन्होंने संपूर्ण भारत का भ्रमण कर सनातन धर्म के प्रति जागरूकता के लिए जाति सुधार अभियान चलाया।

धनसुरा के बाद पूरे भारत में विभिन्न समाजों में लगभग 65–70 सभाएं आयोजित की गईं। उनकी अंतिम जागरूकता बैठक (अभियान नहीं – अभियान आज भी जारी है) 05 अप्रैल 2011 को देहगाम में आयोजित की गई थी । रमेशभाई ने इन बैठकों के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए एक पुस्तक लिखी है, सनातन आंदोलन की चौथी क्रांति के संस्मरण 26 ।

सनातन धर्म जागरण समिति की बैठकों को जनता से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली। हिम्मतभाई, रमेशभाई और उनकी टीम के सदस्यों को सुनने के लिए लोग सैकड़ों किलोमीटर की यात्रा करते थे। समाज के कर्णधारों को अब अपना सिंहासन डोलता नजर आने लगा।

201.**<u>अपमान की चिंता नहीं:</u>** जब उन्होंने अपना अभियान शुरू किया तो उनकी स्थिति इतनी गंभीर थी कि समाज के नेता उनकी बात तक सुनने को तैयार नहीं थे। ऐसी स्थिति में यदि वे चुप रहते तो सतपंथ को सनातन समाज में सदैव के लिए स्वीकार कर लिया जाता, जो सनातन समाज के लिए आत्महत्या के समान होता। अत: उन्हें उग्र तरीके से अपनी बात करने के लिए बाध्य होना पड़ा। उनके लिए कुत्ता भौंकना है जैसे अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया गया। हालाँकि, उन्होंने अपने मान–अपमान की परवाह किये बिना समाज के लिए संघर्ष किया।

202.**<u>लोगों का समर्थन:</u>** इस स्वच्छता अभियान को विफल करने के उद्देश्य से आयोजकों को सभाएं रद्द करने के लिए कॉल आने लगे। लेकिन आम जनता उनके साथ थी. सात–आठ घंटे से लगातार बैठक चल रही थी. लोग पूरी सभा को पूरे धैर्य के साथ सुनते रहे और अंततः जब बैठक समाप्त हुई तो सतपंथ समस्या को समाप्त करने का दृढ़ संकल्प लेकर चले गए। उनका प्रभाव और उनकी बातों की सच्चाई ऐसी थी, जो लोगों के दिलों तक पहुंच गई।

203.**<u>सुलह बैठक में रमेशभाई की गिरफ्तारी:</u>** ऐसे समय में जब सफाई अभियान जोरों पर था, सीए रमेशभाई वागड़िया (बिंदु में बाएं (193)) के खिलाफ झूठे मामले के लंबित केश के मामले में एक नया मोड़ ले लिया।

203.1. उपरोक्त बिंदु (197) में उल्लिखित पत्र पर कार्रवाई करने के लिए एक सनातन समिति का गठन किया गया, जिसे रमेशभाई ने केंद्रीय समाज को दिया था। और उस सुलह समिति के समक्ष दोनों पक्षों (सनातन और सतपंथ दलों) के 5–5 जिम्मेदार नेताओं ने मामलों पर अपने विचार रखे, इस प्रकार सुलह प्रक्रिया शुरू हुई। इस समाधान समिति में पैनल के रूप में ज्यादातर मवाली शामिल थे।

203.2. समाधान प्रक्रिया के अनुसंधान में, 27 फरवरी 2010 को केन्द्रिय समाज के मुख्य कार्यालय, नखत्राणा के छात्रावास में एक सुलह बैठक आयोजित की गई । उस समय सतपंथ नेताओं में से 5 की जगह 7 लोग बैठक में आये और उनके साथ करीब 150 अन्य सतपंथ नेता बाहर थे. कोई भी समझ सकता है कि सनातनियों पर मानसिक दबाव डालने के लिए ऐसा किया गया।

203.3. जब सुलह बैठक चल रही थी तो दोनों पक्षों को एक साथ बुलाया गया. फिर जब रमेशभाई को बुलाया गया और रमेशभाई अपने कमरे से बाहर आये और बैठक कक्ष में गये, तो सतपंथ के नेता रतनशी लालजी वेलानी ने रमेशभाई का हाथ उठाया और कहा कि यह रमेशभाई वागड़िया हैं, जिन्होंने 150 सतपंथ सदस्यों की भीड़ के सामने शायद भीड़ में पुलिस भी मौजूद थी और रमेशभाई वागड़िया की पुलिस के समक्ष पहचान कराने के उद्देश्य से इशारा था।

203.4. जल्द ही पुलिस रमेशभाई को गिरफ्तार करने के लिए समाधान सभा हॉल के अंदर आ गई। जब सनातनियों को पुलिस आने की जानकारी हुई तो 5 मिनट के अंदर करीब 200 से 300 युवक वहां पहुंच गये. सनातन के यौवन को देखकर सतपंथियों की भीड़ भाग गयी। समाधान समिति के सदस्य भी धीरे–धीरे खिसक गये। केन्द्रिय समाज के अध्यक्ष अकेले रह गए।

203.5. आधार भूत सूत्रों से सुनने में आया कि अहमदाबाद (असलाली) से पुलिस रमेशभाई को गिरफ्तार करने के लिए पिछले दिन नखत्राणा पहुंची थी। उनके भोजन और रहने की व्यवस्था नखत्राणा के नये घर में की गई। तो सवाल यह है कि अहमदाबाद पुलिस ने रमेशभाई को पिछले दिन गिरफ्तार क्यों नहीं किया ? समाधान प्रक्रिया के बीच रिफ्तार करने क्यों पहुंची ? इसका उत्तर हम बाद में देखेंगे.

204.**<u>समाधान प्रक्रिया का दुरुपयोग:</u>** जब सुलह प्रक्रिया चल रही होती है, तो अपेक्षा यह होती है कि दोनों पक्ष एक–दूसरे को समझकर, अपने मतभेदों की दूरी को कम करके, करीब आने का प्रयास करें। लेकिन उपरोक्त घटना से पता चला कि सतपंथी ने समझौते का केवल दिखावा किया[126] किया गया। यह पाया गया कि समाधान प्रक्रिया के बहाने, उन्होंने रमेशभाई को गिरफ्तार करके सनातनियों को डराने की साजिश रची थी।

<u>केन्द्रीय समाज के साथ विश्वासघात:</u> सनातनियों के केन्द्रीय समाज ने सतपंथियों को इस उच्च भावना के
205.साथ रखा कि उनका भूला हुआ भाई, आज नहीं तो कल, सनातन में वापस आएगा, लेकिन सतपंथियों ने सनातनियों को अपना नहीं माना। सनातनी समाज में लोग केवल अपनी हिंदू पहचान स्थापित करने के लिए आते थे और मवालिओं को सनातनी समाज में शामिल करके दीर्घकालिक क्षति की भावना रखते थे। ऐसा लोगों को स्पष्ट दिखने लगा।

126 दिखावा = दिखावा = दिखावा नाटिका का

206.**<u>सतपंथ मुक्त सनातन समाज बनाने का संकल्प:</u>** रमेशभाई की गिरफ्तारी के पीछे का खेल, जब पुलिस आई तो मवाली लोग समाज के अध्यक्ष और वहां एकत्रित समाज के आम सदस्यों को अकेला छोड़कर भाग गये, मैली मुराद वाले सतपंथ सदस्य और उनके आचरण जिसको छात्रावास में उपस्थित 200 से 300 सनातनी युवाओने प्रत्यक्ष देखा।

लोग समझ गये कि यह गिरफ्तारी रमेश भाई की गिरफ्तारी का प्रयास नहीं, बल्कि सनातन आन्दोलन है। सतपंथियों द्वारा सनातनी समाज पर कब्ज़ा करने का प्रयास किया गया। ऐसा हवा की तरह क. क. पाटीदार जाति में फैल गया. परिणाम स्वरूप सनातन के युवाओं में उबाल आ गया और सभी लोग सनातन जाति को सतपंथ से मुक्त कराने के लिए कृतसंकल्प हो गये।

207.**<u>सतपंथियों का केन्द्रीय समाज में कोई स्थान नहीं –सिद्ध:</u>** केन्द्रीय समाज को सतपंथियों से मुक्त कराने के संबंध में केन्द्रीय समाज के पदाधिकारियों का तर्क था कि समाज के संविधान में कहीं भी सनातन धर्म का उल्लेख नहीं है । इसलिए हमारे हाथ बंधे हुए हैं और हम केंद्रीय समाज को सनातनी समाज घोषित नहीं कर सकते।

अतः 13 फरवरी 2010 को केन्द्रीय समाज के ट्रस्टियों एवं पदाधिकारियों के साथ सनातन धर्म जागरण समिति की एक बैठक आयोजित की गई। यह बैठक सनातन धर्म जागरूकता समिति के लिए बहुत महत्वपूर्ण थी। क्योंकि यदि केंद्रीय समाज के ट्रस्टी पदाधिकारियों को समझाने में विफल रहे तो सनातन धर्म जागरूकता अभियान विफल हो जाएगा। इस बैठक की सफलता और विफलता पूरी तरह से समाज की सनातनी समाज के रूप में पहचान पर निर्भर थी।

उस बैठक में केंद्रीय समाज के नेताओं ने तर्क दिया कि इस समाज का कोई धर्म नहीं है और इस समाज को धर्म से कोई लेना–देना नहीं होना चाहिए। यह एक धर्मनिरपेक्ष समाज है. तो इस समाज में सनातन धर्म को मानने वाला व्यक्ति भी सदस्य बन सकता है और सतपंथ धर्म को मानने वाला व्यक्ति भी सदस्य बन सकता है। इस संबंध में उन लोगों का तर्क यह था कि; **ना तो समाज के नाम पर और ना ही समाज के संविधान में सनातन धर्म का कोई जिक्र है. इसलिए हमारे हाथ बंधे हुए हैं और हम सनातन जागृति समिति के इस तर्क को स्वीकार नहीं कर सकते कि केंद्रीय समाज सनातनी समाज है।**

लेकिन, सौभाग्य से, सनातन धर्म जागृति के दोनों नेता, हिम्मतभाई और रमेशभाई, केंद्रीय समाज के नेताओं के इस मजबूत तर्क को ध्वस्त करने में सफल रहे। उन लोगों ने बड़े–बुजुर्गों को सफलतापूर्वक यह विश्वास दिला दिया कि केंद्रीय समाज केवल सनातनियों का समाज है। इसमें सतपंथियों का कोई स्थान नहीं है। इस विषय पर विस्तृत जानकारी सतपंथ छोडा 27:पेज 66 पुस्तक के पृष्ठ 66 में बहुत सुंदर ढंग से दी गई है।

25 सफ़ाई अभियान - सनातन धर्म जागृति समिति का आंदोलन

208.**<u>निर्णायक मोड/क्रांतिकारी परिवर्तन:</u>** 13 फरवरी 2010 की ऊपर उल्लिखित बैठक की सफलता इस सफाई अभियान के लिए क्रांतिकारी कदम था। इस बैठक के बाद केन्द्रीय समाज ने मान लिया कि वह केवल सनातनियों की समाज है और इस समाज में सतपंथियों का कोई स्थान नहीं है। अत: सनातनियों का मातृ संगठन, जो सफाई अभियान का विरोधी था, अब समर्थन में आ गया।

209.**<u>श्वेत पत्र:</u>** सनातन धर्म जागरण समिति की मेहनत रंग ला रही है। धीरे–धीरे स्थानीय समाज और जोन से भी समर्थन मिलने लगा। लोगों का दबाव था कि केन्द्रीय समाज अपनी सनातन की पहचान स्पष्ट करे। 19 मार्च 2010 की एक बैठक में , मुंबई ज़ोन ने एक मसौदा (प्रस्तावित) श्वेत पत्र तैयार किया और इसे अपनी सनातन पहचान घोषित करने के लिए केंद्रीय समाज को भेजा। और केंद्र समाज ने इस पर कार्रवाई की और श्वेत पत्र 27:पृष्ठ 47 4:पृष्ठ 247 दिनांक 25 मार्च 2010 को जारी किया।

जिसमें यह घोषित किया गया कि यह केंद्र समाज सनातनियों का है और इसका धर्म सनातन हिंदू धर्म है। जैसा कि श्वेत पत्र में कहा गया है, केंद्रीय समिति के सभी सतपंथी सदस्यों की सदस्यता रद्द कर दी गई और शेष सभी आजीवन सदस्यों को पुनः सदस्य बनने निर्देश दिया गया। और यह भी घोषणा कर दी गयी कि सतपंथी केन्द्रीय समाज के स्वर्ण महोत्सव में भाग नहीं ले सकेंगे।

210.**<u>श्वेत पत्र विरोध रैली:</u>** इस श्वेत पत्र के विरोध में सतपंथियों ने 01 मई 2010 को नखत्राणा में एक रैली निकाली। इस रैली में लोगों को इकट्ठा करने के लिए गुजरात के कंपाओं इलाके से सतपंथियों को लाने के लिए विशेष बसों की व्यवस्था की गई थी। लेकिन उनकी रैली विफल रही. रेली को अंदर बोर्डिंग मे अनुमति नहीं थी। उन्हें गेट के बाहर से ही वापस भेज दिया गया।

211.**<u>संविधान में संशोधन:</u>** श्वेत पत्र के बाद केन्द्रीय समाज ने भी अपने संविधान में संशोधन किया। नाम परिवर्तन नहीं हुआ क्योंकि संगठन चैरिटी कमिश्नर के साथ पंजीकृत था (क्योंकि यह एक लंबी प्रक्रिया है)। लेकिन सनातन हिंदू धर्म के मुद्दे को उद्देश्यों, गतिविधियों, सदस्यता प्राप्त करने की शर्तों, सदस्यता रद्द करने के नियमों आदि में शामिल करके केंद्रीय समाज के संविधान को स्पष्ट किया गया।

212.**<u>स्वर्णिम महोत्सव कार्यक्रम:</u>** केन्द्रीय समाज की स्थापना की 50वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में स्वर्णिम महोत्सव 09 मई 2010 से 11 मई 2010 तक आयोजित किया गया था । पहली बार सनातनियों को लगा कि यह समाज उनका है क्योंकि सतपंथियों को इस कार्यक्रम में भाग लेने की अनुमति नहीं थी। जय लक्ष्मीनारायण और सनातन धर्म की जय धोष फिर से शुरू हुआ। सनातनी का जुनून अकल्पनीय था।

213.**<u>स्वर्णिम के संग चले समर्थ पाटीदार:</u>** केंद्रीय समाज के स्वर्णिम मोहोत्सव कार्यक्रम में पूरे भारत से कई लोगों ने छोटे–बड़े आयोजन कर अपना सहयोग दिखाया। कार्यक्रमों में से एक ''स्वर्णिम ने साथवारे चल्या कड़वा पाटीदार...समर्थ पाटीदार''.[127] नामक एक नाटक थाजाति के सारस्वत परिवार द्वारा तैयार

127 वीडियो = https://abkkpsamaj.org/go/fn126

यह नाटक जाति के धार्मिक इतिहास पर था। इस नाटक ने लोगों के दिलों को इस तरह छुआ कि मंडप में 10,000 से अधिक दर्शक धैर्य और उत्साह में डूबे रहे। इस नाटक को कई लोगों ने टीवी चैनल पर देखा।

इस नाटिका ने सनातन आंदोलन की चेतना को जन–जन तक फैलाया। इस नाटक की 10,000 से अधिक सीडी बिकीं । इस नाटक के बाद समाज के बुद्धिजीवी वर्ग का समर्थन मिला. जैसे–जैसे नाटिका से सनातन की जुनुनी ऊर्जा बढ़ती गई, समय–समय पर मिश्रण में चलने वाली संस्थाओं ने शुद्धि को अपनाया और केंद्रीय समाज को बड़ी ताकत दी। इसके बाद, सनातन एजुकेटर्स , सनातन मेडिकोज , सनातन एडवोकेट्स , सनातन सीए और सीएस जैसे संगठनों ने केंद्रीय समाज की सनातन विचारधारा को आगे बढ़ाने के लिए काम किया। इस विषय पर अधिक जानकारी देने वाला एक लेख इस पुस्तक में बाद में दिया गया है।

<u>पाँचवाँ जाति सम्मेलन:</u> 5वाँ जाति सम्मेलन 12 मई –2010 को आहूत किया गया। चूंकि यह सम्मेलन सभी
214. कच्छ कडवा पाटीदारों के लिए था, अत: सतपंथी भी उपस्थित थे। इस सम्मेलन में जातिगत रीति–रिवाजों को पारित किया जा रहा था। जब अनुच्छेद 18 (हिन्दू रीति–रिवाजों का पालन) और अनुच्छेद 19 (सामाजिक और धार्मिक विवादों को अदालत में न ले जाना) आये। तब सतपंतियों ने विरोध करते हुए कुर्सियां तोड़ दीं और शिष्टाचार का उल्लंघन किया। इसकी शिकायत पुलिस में भी की गई थी.

<u>असली पाटीदार:</u> इस आंदोलन का एक ऐसा चरित्र है जो कहीं नहीं बल्कि हर जगह है. एक ऐसा किरदार जिसे
215. देखा तो नहीं जा सकता, लेकिन जिसकी आवाज़ हर जगह है। एक ऐसा शख्स जो कहीं नहीं है, लेकिन उसके विचारों की चर्चा जाने–अनजाने हर कोई कर रहा है। ये असली पाटीदार कौन है ये कोई नहीं जानता. वह ईमेल के जरिए ही लोगों के संपर्क में रहते हैं।

इस असली पाटीदार ने सनातन आंदोलन में बहुत बड़ा योगदान दिया है। सोशल मीडिया अभी भी अपनी प्रारंभिक अवस्था में था। हिम्मतभाई खेतानी और रमेशभाई वागडिया ने पूरे भारत में बैठकें कीं और लोगों को सतपंथ के बारे में सटीक जानकारी दी। उस समय रियल पाटीदार ने बिल्कुल नया तरीका अपनाया. उन्होंने ईमेल का बहुत अच्छा उपयोग किया.

Real Patidar
Unravel Truth

सतपंथ के इस्लामी मूल से लेकर सतपंथ के बाहरी हिंदू स्वरूप तक, बहुत ही व्यवस्थित तरीके से, इस तरह से कि कोई भी आम आदमी समझ सके, प्रमाण सहित लेख वास्तविक पाटीदारों द्वारा तैयार किए गए और ईमेल के माध्यम से भेजे गए। इस ईमेल का सनातनी विशेषकर युवाओं को बेसब्री से इंतजार था। इस ईमेल के कारण सनातन आंदोलन की बातें, जो पहले बैठकों तक ही सीमित रहती थीं, अब सतपंथियों के घर के अंदर तक पहुंचने लगीं। परिणामस्वरूप सतपंथी के युवा भी जागरूक होने लगे। एक

दूसरे के सामने सवालों के जवाब दिए गए. ईमेल के जरिए सतपंथियों और सनातनियों के बीच जवाब–जवाब शुरू हो गया। इसलिए ईमेल पर एक तरह का सूचना–युद्ध छिड़ गया।

कई लोगों के जुड़ने के कुछ दिनों बादरियल पाटीदार नाम से एक वेबसाइट भी लॉन्च की गई, जहां जागरूकता के लिए भेजे गए सभी ईमेल अपलोड किए जाते हैं। समय के साथ सतपंथ की छुपी सच्चाई को वीडियो के माध्यम से वेबसाइट पर अपलोड किया गया है । परिणामस्वरूप, युवा बहुत जागरूक हो गए और अब उनके पास दस्तावेजी साक्ष्य हैं, जो पहले उनके पास नहीं थे। कुछ सालों से उन्होंने खास खबर के नाम से व्हाट्सएप पर सूचनाएं भेजना भी शुरू कर दिया है .

रियल पाटीदार के योगदान के बारे में संक्षेप में बताते हुए उन्होंने अभियान को बौद्धिक ताकत दी है. उनके योगदान के मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं ;

1. <u>तकिया</u>[128]: इस्लाम की एक खतरनाक रणनीति, अल–ताकिया (AL-TAQIYYA) सतपंथ में इसका प्रयोग जनता के सामने आया। सतपंथी के खेल जो पहले लोगों की समझ में नहीं आते थे, अब तकिया जानने के बाद पूरी बात ठीक से समझ में आने लगा।

2. <u>सत्य प्रकाश:</u> पिराना सतपंथ का व्यवस्थित इतिहास, और इसके जन्म से लेकर वर्तमान तक के संपूर्ण इतिहास को कवर करने वाली पुस्तक सत्य प्रकाश 119 दी । इस पुस्तक में पिराना सतपंथ द्वारा अपनाई गई रणनीति को उजागर किया गया है और लोगों को समझाया गया है। इस पुस्तक का प्रकाशन भी कंठी विभाग के आगेवानो द्वारा किया गया है.

3. <u>इस्लामिक बीज:</u> सतपंथ में क्या खराबी है ? प्रत्युत्तर में, लोगों के पास बाहरी विशेषताओं जैसे दफन अनुष्ठान, आधी रात की पूजा आदि के उदाहरण हुआ करते थे। लेकिन स्पष्ट रूप से नहीं बता सके कि ठोस रूप से गलत क्या है. जब असली पाटीदार ने सतपंथ में मौजूद इस्लामिक बीजों को स्पष्ट शब्दों में दुनिया के सामने पेश किया और जो लोग बेखबर थे उसे समझ में आने लगा कि खतरनाक बीज है।

a. इमामशाह
b. निष्कलंकी नारायण
c. सतपंथ के शास्त्र, तथा
d. पिराणा के इमामशाह का मकबरा/दरगाह

सतपंथ के इस्लामी बीजों के बारे में रियल पाटीदारों की जागरूकता के कारण, पहले के सतपंथियों द्वारा बाहरी परिवर्तन करके सनातन में प्रवेश करने का तरीका सब बंद हो गया। या फिर सनातन

128 तकिया = https://abkkpsamaj.org/go/fn128–1 या https://abkkpsamaj.org/go/fn128–2

की कुछ बातें मानकर ये कहना कि देखो हम भी सनातन के हैं. लेकिन अब जब परिवर्तन की बात आती है तो सनातनवासी बिना किसी हिचकिचाहट के यह देख रहे हैं कि क्या उपर्युक्त इस्लामी बीज सतपंथ से निकला है? यदि नहीं, तो सतपंथ मुस्लिम धर्म है, कोई कितना भी हिंदू होने का दिखावा करे, कोई फर्क नहीं पड़ेगा। इससे सतपंथ के विरुद्ध लड़ने में सनातनियों का आत्मविश्वास बहुत बढ़ गया।

4. **<u>लाइब्रेरी:</u>** रियल पाटीदार की वेबसाइट (https://www.realpatidar.com/library) पर सभी के लिए एक मुफ्त ऑनलाइन लाइब्रेरी है।[129] उपलब्ध कराया गया है। इस लाइब्रेरी में बहुत महत्वपूर्ण दस्तावेज़, किताबें,शोध थीसिस, अदालती दस्तावेज़, सरकारीगजेटियर, वीडियो आदि शामिल हैं। क. क. पाटीदार जाति के पुराने एवं दुर्लभ दस्तावेज, शंकराचार्य के पत्र, विश्वकोश,अंतरराष्ट्रीय लेखकों के लेख एवं पुस्तकें, विश्वविद्यालय की पुस्तकें आदि सभी प्रकार की जानकारी उपलब्ध है। इस पुस्तक में भी सुविधा एवं सहजता की दृष्टि से अधिकांश सन्दर्भ रियल पाटीदार लाइब्रेरी की पुस्तकों से जुड़े हुए हैं।

5. **<u>लेख:</u>** ऊपर उल्लिखित सभी मामले और क. पा. जाति में होने वाली घटनाओं पर कड़ी मेहनत से तैयार किए गए, सरल भाषा में लेख भी वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। उनके लेखों में दी गई जानकारी की गुणवत्ता और सटीकता बहुत ही पेशेवर स्तर की है। ऐसे लेखों के माध्यम से सतपंथ की रणनीति और उसके इरादों को प्रमाण सहित प्रस्तुत किया गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इन लेखों ने लोगों के मन, विचार और बुद्धि पर गहरा सकारात्मक प्रभाव डाला है, जिससे आंदोलन को बढ़ावा मिला है।

रियल पाटीदार के बारे में हम एक बात स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि नारायण रामजी लिम्बाणी के बाद यदि सतपंथ के ग्रंथों और उसकी रणनीति का दरवाजा खोलने का कोई काम हुआ है तो सबसे प्रभावी काम रियल पाटीदार ने किया है। इस आंदोलन के सभी चरणों में असली पाटीदारों का प्रभाव देखने को मिलता है. ये वो हीरो या किरदार है जिसका काम ही उसकी पहचान है.

216. **<u>पूरे भारत में समाजों का समर्थन:</u>** केंद्रीय समाज के बाद, पूरे भारत और सभी झोन में स्थानीय समाज सफाई अभियान में शामिल हुए। धीरे–धीरे स्थानीय समाजों को भी सतपंथ मुक्त घोषित किया जाने लगा। कई समाजों ने अपने संविधानों और नामों में भी संशोधन किया। नाम के साथ सनातन शब्द जोड़ा गया। संविधानों में भी संशोधन किया ताकि संगठन केवल सनातनियों का हो। जाति सुधार आंदोलन के अनुरूप प्रत्येक समाज ने अपने नये नीति नियम बनाये और आंदोलन को मजबूत किया।

129 रियल पाटीदार लाइब्रेरी = https://abkkpsamaj.org/go/fn129–1 या https://abkkpsamaj.org/go/fn129–2

25 सफ़ाई अभियान - सनातन धर्म जागृति समिति का आंदोलन

217.**<u>युवा संघ का केसरी पत्र:</u>** केन्द्रीय समाज के श्वेत पत्र जारी होने के बाद 01 जुलाई –2010 को जारी आदेश के अनुसार युवा संघ ने भी अपने पूरे संगठन को स्थानीय युवा मण्डल से केन्द्रीय युवा मण्डल तक मुक्त करने का निर्णय लिया। केसरी पत्र दिनांक 20– जुलाई –2010 27: पेज 74 ने एक आदेश जारी किया। जिससे समाज के युवा भी जागरूक हुए और जाति सुधार के दृष्टिकोण से जुड़ गये।

218.**<u>संस्कार धाम का उद्घाटन:</u>** सनातन समाज द्वारा बनाए गए भगवान श्री लक्ष्मीनारायण भगवान के मंदिरों को एकजुट करने, उनमें एकता लाने और एक मजबूत बनाने के लिए देशलपर–वांढाय में संस्कार धाम का निर्माण किया जा रहा है। समाज में धर्म मजबूत संगठन तैयार किया गया।

लेकिन लोगों में उतना उत्साह नहीं था। संस्था की स्थापना के लिए आवश्यक दान का प्रवाह भी बहुत कम था। कितने मंदिर बनाओगे? लोग स्वाभाविक रूप से उससे नीरस थे। उन्होंने लक्ष्मीनारायण मंदिरों के केंद्रीय स्थान के रूप में संस्कार धाम के महत्व को नहीं समझा। सनातन धर्म जागृति ने सफाई अभियान चलाकर संस्कार धाम का खूब प्रचार–प्रसार किया। संस्कार धाम से जुड़ने, इसके उद्घाटन कार्यक्रम में शामिल होने के लिए लोगों को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है।

परिणामस्वरूप 11 मई 2011 से 14 मई 2011 तक आयोजित संस्कार धाम के उद्घाटन कार्यक्रम में भारी उत्साह और लोगों की बड़ी उपस्थिति देखी गई।

219.**<u>नारायण कथा:</u>** सनातन अभियान को बढ़ावा देने के लिए यह महसूस किया गया कि यदि सनातन के इतिहास की छोटी–छोटी घटनाओं को नाटक के साथ–साथ फिल्म के माध्यम से भी प्रस्तुत किया जाए और सनातन की कहानी को एक ही सत्र में प्रस्तुत किया जाए। व्यासपीठ पर बैठे एक कथावाचक के साथ संगीतमय कथा से सभी युवा और समाजजन इसे पसंद करेंगे और इसके माध्यम से अपने इतिहास से अवगत हो जाएंगे। इसी विधि से श्री नारायण कथा का प्रारम्भ हुआ।

इस काम की जिम्मेदारी तलोदवाले की है. डॉ. वसंत ढोणु और उनकी टीम ने बहुत अच्छा आयोजन किया. उनकी टीम ने पूरे भारत में यात्रा की और 18 नारायण कहानियाँ बनाईं।

इसका इतना अच्छा परिणाम हुआ कि इस सनातनी नारायण कथा ने समाज के युवाओं और जाति बंधुओं में नई ऊर्जा का संचार किया और समाज के सनातन आंदोलन को एक बड़ा समर्थन दिया। इस कहानी के माध्यम से अनेक ढीली मनोवृत्ति वाले जाति के लोगों के हृदय में सनातन की शक्ति का संचार हुआ। उस समय के बुजुर्गों के समर्पण की तस्वीर प्रस्तुत कर उन्हें वर्तमान सामाजिक योजनाओं में भी बड़ी संख्या में आसानी से जोडा जा सका। इस प्रकार, श्री नारायण कथा सनातन आंदोलन में श्री समाज के लिए एक अग्रदूत साबित हुई।

220.**<u>सफलता – हजारों लोगों की वापसी:</u>** ऊपर वर्णित प्रमुख प्रयासों के साथ–साथ कुछ प्रसिद्ध नामी–अनामी सनातनियों के लगातार प्रयासों से हजारों सतपंथियों की घर वापसी में सफलता मिली। ऊपर बताई गई बातें उदाहरण हैं. इसका मतलब यह नहीं कि दूसरे नेताओं का काम कम महत्वपूर्ण है. सभी के संयुक्त प्रयास से अभियान सफल रहा। यदि समय की कमी के कारण कोई महत्वपूर्ण योगदान छूट गया हो तो हम विनम्रतापूर्वक क्षमा चाहते हैं।

कच्छ, कंपा क्षेत्र और बाहर के कई समाजे धीरे–धीरे सनातन घोषित करने लगे। अधिकतर सतपंथी सदस्यों को मना लिया गया और उनका दिल जीतकर उन्हें सनातन समाज में शामिल कर लिया गया। अन्य जिन्होंने बात नहीं मानी उन लोगों को सनातन समाज से निकाल दिया गया।

221.**<u>दक्षिण भारत क्षेत्र में एक साथ सैकड़ों लोग सनातन में आये:</u>** ऐसा ही एक उदाहरण दक्षिण भारत क्षेत्र का है। 14 जनवरी 2020 को 140 परिवार यानि सैकड़ों लोग एक साथ सनातन में आये।

222.**<u>मांडवी छात्रावास कांड:</u>** कहते हैं अच्छे कार्यों में कई बाधाएं आती हैं। सफाई अभियान की दिन–रात की सफलता से ईर्ष्यालु कुछ लोगों ने सतपंथियों के साथ मिलकर कानूनी दांव–पेंच खेलते हुए केंद्रीय समाज के मांडवी स्थित लखु वीरजी ढोलू कुमार छात्रावास (बिंदु 165.8 देखें) पर कब्जा करने की साजिश रची। जिसके खिलाफ केंद्रीय समिति कानूनी लड़ाई लड़ रही है।

मामले की गंभीरता को समझते हुए, उमिया माताजी वांढाय ने मामले पर दोनों पक्षों को सुना, सबूतों का गहराई से अध्ययन किया और 22 अगस्त 2018 को समाधान पंच की रिपोर्ट 21 दी, जिसमें स्पष्ट रूप से कहा गया है कि मांडवी हॉस्टल का है केन्द्रीय समाज.

मांडवी छात्रावास कांड के दोषियों ने जाति और समाज को बहुत क्षति पहुंचायी है. इतिहास हमें बताता है कि जो व्यक्ति समाज और जाति को नुकसान पहुंचाता है, उसे और उसके परिवार को बहुत बुरी पीड़ा झेलनी पड़ती है। भाग्यलक्ष्मी माता की कृपा इन पर नहीं रहेगी। उन्हें अपने अच्छे दिनों में इसका पता नहीं चलता, लेकिन जब बुरे दिन आते हैं, तो भगवान उनके साथ नहीं होंगे।

223.**<u>सनातनियों की संपत्ति हड़पने के उदाहरण – नवावास–रवापर और विराणी–गढ़:</u>** प्रेम –एकता–संप–संगठन जैसे शब्दों के मायाजाल में फंसकर सनातनियों और सतपंथियों की संयुक्त संपत्तियों को सतपंथियों ने झूठी अदालत के माध्यम से जबरन अपने कब्जे में ले लिया। झुठे मुकदमे और पुलिस केश करके उदाहरणों में नवावास (रवापर) और विराणी (गढ़) के गांव शामिल हैं। यह बात ध्यान देने योग्य है 27:पेज 39।

<u>सतपंथी रतनशी लालजी वेलानी का झूठा दावा कि वे केन्द्रीय समाज के प्रमुख हैं:</u> सनातनी जाति सुधार
224.के कार्य में आगे बढ़ रहे थे। उस समय सतपंथ के एक प्रमुख नेता रतनशी लालजी वेलानी ने सार्वजनिक पत्रों में विज्ञापन दिया कि वह श्री अखिल भारतीय कच्छ कड़वा पाटीदार समाज (केंद्रीय समाज

का नाम) के अध्यक्ष हैं। जैसे कच्छ मित्र के भुज संस्करण में दिनांक 16 अक्टूबर 2014 – पृष्ठ 15, दिनांक 20 अक्टूबर 2014, दिनांक 24 सितम्बर 2014 – पृष्ठ 11, दिनांक 13 अगस्त 2017 – पृष्ठ 13, दिनांक 25 अगस्त 2017 – पृष्ठ 15, दिनांक 20–अगस्त–2021 – पृष्ठ 17 आदि। मूल केन्द्रीय समाज की वार्षिक बैठक के दिन ही ऐसी घोषणा की। अंतर केवल इतना है कि उनका स्थान नखत्राणा का छात्रावास न होकर नखत्राणा का खाना उर्फ निष्कलंकी मंदिर है। अगले दिन अखबारों में फोटो के साथ खबर भी छपती है कि रतनशी लालजी वेलाणी की अध्यक्षता में समाज की आम बैठक हुई. यह घोटाला कुछ सालों तक चलता रहा. यहां तक कि चैरिटी कमिश्नर के कार्यालय में भी उन्होंने केंद्रीय समाज का अध्यक्ष होने का दावा किया.


પ્રમુખશ્રી રતનશી લાલજી વેલાણી

જાહેર જનતા જોગ

અખિલ ભારતીય કચ્છ કડવા પાટીદાર સમાજ-નખત્રાણા

આથી અમો અખિલ ભારતીય કચ્છ કડવા પાટીદાર સમાજના સભ્યો તથા સરકારી કચેરીઓ તેમજ [illegible] સંસ્થાઓને આ જાહેરાતથી ખુલાસો કરી જાણ કરીએ છીએ કે [illegible] સંસ્થાએ કોઈપણ વ્યક્તિને કોઈપણ જાતની કાયદેસર કાર્યવાહી તેમજ કાયદાકીય કાર્યવાહી અથવા કોઈપણ [illegible] કરવા સમાજના તેમજ અન્ય કોઈપણ વ્યક્તિને સમાજે સત્તા સોંપેલ નથી. તેમ છતાં કોઈ વ્યક્તિ પોતાના નામથી કાર્યવાહી કરશે તો તે સમાજને બંધનકર્તા રહેશે નહીં અને અનધિકૃત ગણાશે. અગાઉના હોદ્દેદારોએ સત્તા આપેલ હશે તે પણ અનધિકૃત ગણાશે. હવેથી કોઈપણ કાર્યવાહી કરવા માટે પ્રમુખશ્રી [illegible] જ કરવામાં આવશે. જે સર્વે નોંધ લેવી. સમાજમાં સંપ અને સંગઠનથી સેવાના કાર્યો કરી સમાજનો સર્વાંગી વિકાસ કરીએ.

સૌનો સાથ એજ સમાજનો વિકાસ...

લિ. પ્રમુખશ્રી, રતનશી લાલજી વેલાણી

कच्छ मित्र – दिनांक 16–अक्टूबर–2024 पेज 15

फिर एक बार रतनशी लालजी उन बैंकों में गए जिनमें केन्द्रीय समाज के खाते हैं और कहा कि मैं केन्द्रीय समाज का अध्यक्ष हूं, इसलिए मेरे अलावा किसी और के हस्ताक्षर स्वीकार नहीं किये जाने चाहिए। उनकी बातों में आकर कुछ बैंकरों ने वास्तव में कुछ समय के लिए अपने बैंक खाते निलंबित कर दिए।

ऐसे कई उदाहरण हैं. लेकिन यह उदाहरण यहां इसलिए दिया गया है ताकि लोगों को एहसास हो कि सतपंथ समाज के शीर्ष नेताओं ने केंद्रीय समाज और सनातनियों को परेशान करने में प्रमुख भूमिका निभाई है।

केन्द्रिय समाज की एक कार्यकारी सभा 14 से 16 जनवरी – 2012 को सिंगोटा (शेनकोट्टई, तमिलनाडु) में आयोजित की गई थी । बैठक में गांव के बाहर से सैकड़ों लोगों को शामिल होना था. लेकिन केंद्रीय समाज के कार्यकारिणी सदस्यों को परेशान करने के लिए उस गांव के सभी होटल, नाई आदि को गलत तरीके से बुक कर ब्लॉक कर दिया गया. केन्द्रीय समिति के कार्यकारिणी सदस्यों को काफी असुविधा उठानी पड़ी।

<u>समझाने का आखिरी प्रयास – उंझा का फैसला:</u> जाति के नेताओं ने महसूस किया कि हमें सतपंथियों को
225. मनाने का एक आखिरी प्रयास करना चाहिए। इसलिए उन्होंने उमिया माताजी उंझा के बुजुर्गों को अपनी जाति की समस्या के बारे में बताया। उंझा के आदरणीय बुजुर्ग मणिभाई ममी, जो स्वयं एक जाति सुधारक और कच्छ कड़वा पाटीदार जाति के धार्मिक इतिहास के अच्छे जानकार हैं, और अन्य नेताओं के प्रयासों से, उंझा की मध्यस्थता के माध्यम से तीन वर्षों तक दोनों पक्षों को सुना गया। दोनों पक्षों की ओर से साक्ष्य दिये गये.

25 सफ़ाई अभियान - सनातन धर्म जागृति समिति का आंदोलन

225.1. **फैसला:** सतपंथी यह साबित करने में असफल रहे कि सतपंथ हिंदू धर्म है। सनातनी सिद्ध कर सके कि सतपंथ मुस्लिम धर्म है। आख़िरकार तीन साल बाद 08– अक्टूबर –2017 को उंझा के आगेवानो ने सनातनी के पक्ष में फैसला सुनाया 27:पेज 128 ।

फैसले का सार यह था कि ;

1. इमामशाह मुसलमान हैं. सतपंथी इस्लाम का कोई भी कार्य और समारोह नहीं करेंगे
2. सतपंथ को मानने वालों को पूरी तरह से हिंदू धर्म के भगवान और भगवान के अवतार की पूजा करनी चाहिए।
3. सतपंथ समाजवालों को हिंदू धर्म के ग्रंथ पढ़ना।
4. एक–दूसरे के खिलाफ दायर अदालती मुकदमों को 60 दिनों के अंदर वापस लेना. (केस सतपंथी द्वारा ही किया गया है।)
5. निष्कलंकी नारायण हिंदू धर्म की मान्यता के विरुद्ध है।

225.2. **फैसले का क्रियान्वयन:** फैसला सुनाये जाने के बाद इसे लागू करने का प्रयास किया गया. लेकिन हर बार की तरह, सतपंथ के लोगों ने फैसले का पालन करने के लिए केवल दिखावा किया और झूठे बहाने बनाए ताकि फैसले को लागू न किया जा सके।

225.3. **पूर्ण विवरण:** उंझा के फैसले की पूरी प्रक्रिया का विस्तृत विवरण सीए चंद्रकांत कांतिलाल पटेल/छाभैया द्वारा लिखित पुस्तक मां उमिया का आदेश सतपंथ छोडो 27 में प्रकाशित है। जिसमें देश–विदेश से जुटाए गए साक्ष्य, आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित 4 ए 4 पीठों द्वारा दिए गए प्रमाण पत्र, सरकारी दस्तावेज, अदालती फैसले, विश्वविद्यालय की किताबें, शोध थीसिस , सरकारी गजेटियर आदि शामिल हैं। क. क. पाटीदार साक्ष्यों में पुराने एवं दुर्लभ जातीय दस्तावेज़, विश्वकोश, लेख एवं अंतरराष्ट्रीय लेखकों की पुस्तकें आदि शामिल हैं, जिससे स्पष्ट होता है कि सतपंथ एक मुस्लिम धर्म है। यह पुस्तक उन मित्रों को जरूर पढ़नी चाहिए जो इसमें रुचि रखते हैं और अध्ययन कर रहे हैं।

226. **सतपंथी वांढाय में साथ रहे लेकिन अंत में धोखा दिया:** उमिया माताजी ऊंझा फैसले के बाद भले ही सतपंथियों ने क्रियान्वयन की दिशा में एक भी कदम नहीं उठाया, लेकिन सनातनी सद्भावना बनाने के लिए 2018 में सतपंथियों के 3 बड़े नेताओं को उमिया माताजी वांढाय में ले गए। उन्हें ले जाते समय सतपंथियों ने वचन दिया कि हम और हमारी सारी जाति सतपंथ छोड़कर सुधर जायेंगे और हिन्दू बन जायेंगे। लेकिन उनमें से किसी ने भी काम नहीं किया। उंझा के फैसले की सार्वजनिक रूप से निंदा करते हुए विज्ञापन प्रकाशित किए। 27:पेज 191 अत: अंततः उन्हें वांढाय से हटा दिया गया।

227. **सतपंथी से नाता तोड़ना:** सनातन समाज के लोगों का धैर्य टूट गया क्योंकि सतपंथियों को सनातन समाज में मिलाने के लिए कई लोगों ने कई प्रयास किये और जो भी मौके मिले, उनका इस्तेमाल हमेशा

सनातन के खिलाफ किया गया। अब सनातनियों ने सनातन समाज को सतपंथियों से सभी संबंधों से मुक्त करने का निर्णय लिया।

227.1. <u>**विशेष बैठक:**</u> चूंकि सतपंथियों द्वारा उमिया माताजी उंझा के प्रस्तावों का पालन नहीं किया जा रहा है, इसलिए आगे क्या कदम उठाया जाना चाहिए, यह तय करने के लिए 26 अगस्त –2018 को नखत्राणा छात्रावास में बैठक रखी गई। क. क. पाटीदार जाति के तीन प्रमुख संस्थाएं केंद्रीय समाज, उमिया माताजी वांढाय और संस्कार धाम के साथ एक संयुक्त विशेष बैठक बुलाई गई थी। जिसमें देशभर के हर जोन, घटक (स्थानीय) समाज और अन्य नेताओं व बुद्धिजीवियों को बुलाया गया था.

उस बैठक में सर्वसम्मति से 8 प्रस्ताव तय किये गये. सतपंथ छोड़ो पुस्तक के पृष्ठ 188 में पढ़ सकते है 27:पृष्ठ 188 । इन प्रस्तावों का मुख्य सार यह था कि ;

1. <u>**सामाजिक और धार्मिक आयोजन:**</u> सतपंथ के साथ कोई भी सामाजिक या धार्मिक आयोजन न करें. सनातनियों के कार्यक्रमों में उन्हें न बुलाएं। साथ ही सनातनियों को सतपंथ के कार्यक्रमों में शामिल नहीं होना चाहिए।

2. <u>**संयुक्त समितियाँ एवं संस्थाएँ:**</u> सतपंथियों के साथ चलने वाली जो भी संयुक्त समाजे या संस्थाएँ हैं, उन्हें सुविधानुसार स्वतंत्र कर उन संस्थाओं एवं समितियों को पूर्णतः सनातनी बनाना चाहिए।

3. <u>**परिवार और नियाणी के आयोजन:**</u> परिवार (नुख) और नियानी के नाम पर सतपंथी के साथ कोई संयुक्त कार्यक्रम करने नहीं।

<u>सतपंथी से नये रिश्ते न बनायें</u>

दिनांक 21 जुलाई 2013 अहमदाबाद में जोन के घटक समाजों द्वारा पालन किये जाने वाले नीति नियम बनाने हेतु बैठक में सतपंथी के साथ नये विवाह नहीं करने तथा पुराने संबंधों को कैसे निभायें इस संबंध में नियम बनाये गये, जो आज लागू हैं. 5



विवाह या नये रिश्तेदारी के संबंध में

227.2. अन्य संस्थाओं एवं समाजों को साफ़ करने की प्रक्रियाएँ अभी भी जारी हैं। कुछ का काम तेज है, कुछ का अभी भी थोड़ा ढीलापन है। लेकिन एक बात तय है कि आज नहीं तो कल सभी संयुक्त संगठनों और समाजों का सनातनी बनना तय है।

25 सफ़ाई अभियान - सनातन धर्म जागृति समिति का आंदोलन

228. <u>सतपंथियों ने खुद को बाह्य रूप से हिंदू धर्म में दिखावा करने (हिंदू बनने के लिए नहीं) के अपने प्रयास जारी रखे:</u>

228.1. **<u>मिश्रित संस्कृति:</u>** सतपंथ मिश्रित संस्कृति के वातावरण में ही जीवित रह सकता है। शुद्ध हिंदू संस्कृति के वातावरण में सतपंथ जीवित नहीं रह सकता। यह बिल्कुल स्पष्ट है कि जाति का एक बहुत बड़ा वर्ग अर्थात सनातन समाज कभी भी सतपंथ को स्वीकार नहीं करेगा। इसलिए वे हमेशा एक मिश्रित संस्कृति बनाने का प्रयास करते रहते हैं।

> अब उनके पास एक ही रास्ता बचा है, वह है हिंदू धर्म की आड़ में एक मिश्रित संस्कृति का निर्माण करना, प्रेम –एकता–संप–संगठन की आदर्शवादी बातों के सहारे समाज में ऐसा माहौल बनाना, जहां की मान्यताएं पूरी हो सकें. सतपंथ और सतपंथ के शास्त्रों का पालन किया जा सके। ऐसी मिश्रित संस्कृति खड़ी करना चाहते है।

अतः जब प्रेम– एकता–मिलन–संगठन आदि की बात की जाती है तो वह बातें केवल अपने फायदे के लिए होती हैं, वास्तविक अर्थों में नहीं। समझने वाली बात है.. यदि यह सत्य होता तो सतपंथी सनातन हिंदू धर्म में विलीन हो गए होते और प्रेम –एकता–संप–संगठन का सच्चा परिचय दे रहे होते।

आख़िर अगर आप अपने आप को हिंदू कहते हैं तो सनातन समाज में शामिल होने में क्या दिक्कत है. लाखों लोग सतपंथ छोड़कर सनातन समाज में विलीन हो गये। किसी को कोई आपत्ति नहीं हुई. लेकिन अगर ऐसा नहीं होता है तो जाहिर है कि उनकी आस्था हिंदू धर्म में नहीं बल्कि किसी और धर्म में है।

228.2. जो लोग हिंदुओं को धोखा देकर मुसलमान बनाते हैं वे हिंदुओं के लिए खलनायक हैं। ऐसी स्थिति में कोई भी हिन्दू समाज खलनायक को नायक के रूप में स्वीकार नहीं करेगा। जबकि दूसरा समाज इस खलनायक को नायक मानता है. फिर दो समाजों के बीच सच्चा प्रेम– एकता–सद्भाव कैसे हो सकता है? यह स्वाभाविक है कि जब एक समाज किसी खलनायक की प्रशंसा करता है तो दूसरे समाज की भावनाएं आहत होती हैं।

आज के युवाओं को खासतौर पर सोचना चाहिए कि क्या वे अपने इतिहास के खलनायक को अपना नायक मानने के लिए तैयार हैं? यदि नहीं तो फिर उस खलनायक को गलत ढंग से प्रस्तुत कर नायक बताने का प्रयास कौन कर रहा है? वह हिंदुओं के लिए आज का सच्चा खलनायक तो वही है।

229. <u>सुधार की आड़ में इस्लामी बीजों को मजबूती से पकड़े हुए:</u> जब उनसे पिराना सतपंथ में इस्लामी तत्वों के बारे में सवाल किया गया, तो उन्होंने अपनी हिंदू पहचान को बनाए रखने के लिए इसमें सुधार किया। लेकिन इस्लामी बीजों में वह सुधार क्यों नहीं करते? जैसे कि ;

25 सफ़ाई अभियान - सनातन धर्म जागृति समिति का आंदोलन

229.1. **<u>पिराणा सतपंथ का इस्लामिक बीज:</u>** पिराणा सतपंथ का इस्लामिक बीज निम्नलिखित 4 चीजों में है, इन्हें हटाएं नहीं ?

1. इमामशाह
2. निष्कलंकी नारायण (अर्थात मुर्तजा अली तालिब का हिंदू नाम)
3. सतपंथ के ग्रंथ
4. पिराणा की इमामशाह दरगाह

229.2. **<u>पिराणा के अलावा अन्य स्थानों में सुधार:</u>** पिराणा सतपंथ के लगभग 100 तथाकथित मंदिर हैं। पिराणा में सैयद हैं, तो आइए इसे एक पल के लिए छोड़ दें। तो पिराफा के अलावा बाकी 100 सतपंथ मंदिरों से इस्लामिक बीज निकाले जा सकते हैं. तो हटा क्यों नहीं ?

चलो, पूरी तरह तैयार मत हो जाओ। तो उनमें से अधिकांश तो तैयार हो जायेंगे न ? तो बदलाव क्यों नहीं किये जा रहे ? ये समझने वाला सवाल है.

229.3. **<u>सतपंथ के शास्त्र:</u>** सतपंथ के शास्त्रों को बदलने से कोई नहीं रोक सकता। क्योंकि कौन से धर्मग्रंथ को बेचना है और पढ़ना है, इस पर कोर्ट भी रोक नहीं लगा सकती। फिर सतपंथ के ग्रंथों के स्थान पर पीराणा और अन्य स्थानों पर हिंदू धर्म के मूल ग्रंथ नहीं पढ़े जाते तो क्या समझा जाए ?

229.4. **<u>निष्कलंकी नारायण:</u>** निष्कलंकी नारायण शिया इस्लाम के देवता अली का नाम है। कोई भी उसे पूजा करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता. इसके बजाय आपको हिंदू धर्म के किसी भी देवता की पूजा करने से कौन रोकता है ?

ऐसे कई सवाल और मुद्दे हैं. अगर आप ध्यान करेंगे तो आपको बहुत कुछ समझ आएगा।

230. **<u>पिराणा को हिन्दु दिखावा एवं ऊंची दीवार और 54 कुंडी यज्ञ:</u>** जैसा कि ऊपर उल्लिखित बिंदु (225) में बताया गया है, ऊंझा के फैसले के बाद और सतपंथियों द्वारा फैसले को लागू न करने की काफी आलोचना हुई। कच्छ में कड़वा पाटीदार जाति के लोग सतपंथ छोड़कर सनातन में जाते रहे। इसलिए इसे रोकने के लिए कुछ करने की सख्त जरूरत थी।

230.1. **<u>इमामशाह दरगाह के बगल में 13 फीट ऊंची दीवार:</u>** दिनांक 30 जनवरी 2022 इमामशाह दरगाह को कवर करने वाली लगभग 13 फीट ऊंची दीवार एक ही दिन में खड़ी की गई थी। लगभग 15 से 20 दिन का काम एक ही दिन में रात–रात भर करने के पीछे क्या कारण हो सकता है ?

आपने सुना होगा कि यह पूरी योजना के साथ किया गया है, ताकि मुसलमान दीवार रोकने के लिए अदालत का स्थगन आदेश न ले सकें। लेकिन क्या मामला इतना सीमित है ?

उस दीवार के दूसरी तरफ क्या है ? और इसका व्यवस्थापक कौन है ? क्या आप जानते हैं कि दीवार के एक तरफ इमामशाह की दरगाह है, दूसरी तरफ मुस्लिम कब्रिस्तान और मस्जिद है। और उन कब्रिस्तानों और मस्जिदों का प्रबंधन कौन करता है ? आपको जानकर हैरानी होगी कि पिराणा में जो संस्था इमामशाह की दरगाह की देखभाल करती है, वही कब्रिस्तान और मस्जिद की भी देखभाल करती है।

फिर सवाल तो पूछा ही जाना चाहिए कि अगर दीवार के दोनों तरफ का मालिक/रखरखाव एक ही है तो बीच में अचानक 13 फीट ऊंची दीवार बनाने की क्या जरूरत है? 13 फुट ऊंची दीवार बनाकर किसे बेवकूफ बनाया जा रहा है ? सतपंथी या मुस्लिम सैयद ? स्वाभाविक है कि सतपंथी ही धोखा खायेंगे। क्योंकि सतपंथियों को (झूठा) विश्वास दिलाना कि इमामशाह की दरगाह हिंदू धर्म की गद्दी है। ताकि सतपंथी पिराणा न छोड़ें। इसके अलावा, समय के साथ, अन्य हिंदू भी पिराणा में शामिल हो सके और सतपंथी बन जाए, यह समझने वाली स्पष्ट बात है।

230.2. **<u>पिराणा में मूर्तियाँ और दीवार:</u>** दीवार के निर्माण के बाद 11 से 13 मार्च 2022 तक पिराना में आरएसएस की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा आयोजित की गई । इसमें आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत को शामिल होना था . उनकी सुरक्षा व्यवस्था की आड़ में, आम लोगों को कुछ दिनों के लिए मंदिर में प्रवेश करने और छोड़ने पर प्रतिबंध लगा दिया गया और कुछ हिंदू मूर्तियों को इमामशाह की दरगाह के बगल में रातोंरात स्थापित कर दिया गया।

विष्णु के प्रमुख 10 अवतारों में बुद्ध (बुद्ध) अवतार तक पहले 9 अवतार हैं और शिया इस्लाम के अनुसार 10वां अवतार मुर्तजा अली हैं।[130] तालिब का अर्थ है निष्कलंकी अवतार के हिंदू रूप में एक मूर्ति। उमिया माताजी की मूर्ति है, लक्ष्मीनारायण भगवान की मूर्ति है, करसन काका की मूर्ति है, इमामशाह की भी मूर्ति है (लेकिन इमामशाह की पहचान छिपाने के लिए मूर्ति के नीचे सद्गुरु महाराज का नाम लिखा गया है), वेद व्यास हैं ऋषि की मूर्ति है, वशिष्ठ ऋषि की मूर्ति है, अमरतेज ऋषि की मूर्ति है। और अंत में शिया इस्लाम द्वारा पूजे जाने वाले देवता, निष्कलंकी नारायण, मुर्तज़ा अली तालिब के हिंदू रूप का एक छोटा मंदिर है।

आपने देखा होगा कि प्रेम-एकता-संप-संगठन आदि की आड़ में हिंदू देवताओं के साथ-साथ मुस्लिम देवताओं और मुस्लिम इमामों की हिंदू रुप की मूर्तियां भी डाल दी गई हैं।

ऐसा करके यह छवि बनाने की कोशिश की जाती है कि सभी हिंदू वादी काम पिराना में हो रहे हैं।

इससे कौन धोखा खाता है ? हिंदू या मुसलमान ? सोचना..

130 अली = फुटनोट नं देखें। नं 8

अब प्रश्न यह होना चाहिए कि सतपंथ के धर्मग्रन्थों में कब मूर्तिपूजा का विधान है या वर्जित है (पहले बताए गए बिन्दु देखें (56.1), (56.2.2), (56.2.6.1), (56.2.9), (57.1.29), (57.2.14). फिर ये मूर्तियां पिराणा में इमामशाह की दरगाह के बगल में क्यों लगवायी गई ?

और अगर मूर्तियां स्थापित करनी ही थीं तो इमामशाह दरगाह के कब्रिस्तान के बगल में क्यों ? पिराना में काफी जगह है, दरगाह से दूर किसी पवित्र स्थान पर क्यों नहीं ? दरगाह एक कब्रिस्तान में स्थित है जो हिंदुओं के लिए अपवित्र है, तो ऐसे कब्रिस्तान में क्यों ?

यहां दूसरी बात यह है कि विवाद यह नहीं है कि सतपंथ हिंदू देवताओं में विश्वास करते हैं या नहीं। विवाद यह है कि सतपंथियों ने इमामशाह आदि इस्लामी अंश छोड़ा या नहीं ?

विवाद

इमामशाह की दरगाह और ऊपर वर्णित मूर्तियों के क्षेत्र तक आने–जाने का रास्ता एक ही क्यों है ? मूर्ति क्षेत्र और मंदिर क्षेत्र के बीच कोई दीवार क्यों नहीं है ?

मूर्ति क्षेत्र में आने वाले ज्यादातर सतपंथी होते हैं, जिनकी हिंदू बेटियां और मुस्लिम लड़के दरगाह क्षेत्र में आते हैं (मुस्लिम महिलाएं दरगाह में नहीं आती हैं)। दोनों क्षेत्रों में एक ही मार्ग है। फिर, जब पूरे भारत में हिंदू समाज लव जिहाद की समस्या से जूझ रहा है, तो ऐसी जगह क्यों बनाई गई जहां हिंदू लड़कियों के साथ लव जिहाद किया जा सके ? हिंदू बेटियों की सुरक्षा का क्या ?

यदि वास्तव में पिराणा गैर–मुसलमानों और हिंदुओं के लिए था, तो यह स्पष्ट है कि विवादों से बचने और शांति बनाए रखने के लिए पिराणा में इमामशाह दरगाह और मूर्ति क्षेत्र के बीच एक ऊंची दीवार बनाई गई होगी। दोनों इलाकों का रास्ता भी अलग किया जा सकता है. लेकिन ऐसा न करने के पीछे क्या कारण है ? आपको यह समझना होगा.

ऐसे कई सवाल हैं. लेकिन आप बात समझ गए हैं, तो चलिए आगे बढ़ते हैं।

230.3. <u>पिराना में 54 कुंडी यज्ञ – एक आम हिंदू की तरह:</u> इस प्रकार, पिराणा में तथाकथित परिवर्तनों को प्रचारित करने की आवश्यकता है, केवल तभी जब परिवर्तनों के पीछे के प्रयास की भरपाई की जाए। तो एक ऐसा आयोजन किया गया जो आम तौर पर हिंदुओं को पसंद आता है. यज्ञ कार्यक्रम. 54 कुंडी विष्णु महायोग कार्यक्रम 17, 18 और 19 अक्टूबर –2022 को।

फिर वही तरीका. कुछ हिंदू साधु संतों और हिंदू धार्मिक संगठनों की मदद की गई। निष्कलंकी नारायण मूर्ति की तथाकथित प्राण प्रतिष्ठा भी की गई। लेकिन किसके द्वारा? ब्राह्मणों के हाथों? जिन

ब्राह्मणों पर सतपंथ के ग्रंथों के अनुसार प्रतिबन्ध या निषेध लगाया गया हो। शतपंथ ग्रंथों में ब्राह्मणों का घोर अपमान किया गया है। पहले बताए गए बिंदु देखें (56.2.2), (56.2.4), (56.2.5), (56.2.6.1), (56.2.0). शतपंथ के ग्रंथों में ब्राह्मणों को भुलक्कड़, पथभ्रष्ट, विश्वासघाती, हल्का, हीन आदि दिखाया गया है। और सतपंथियों को कहा गया है कि यदि तुम ब्रह्म मांगोगे तो तुम्हें नारायण नहीं मिलेंगे। यहां ब्राह्मणों के हाथों प्राणप्रतिष्ठा करायी जा रही है. तो क्या समझें ? किसे धोखा दिया जा रहा है ? आपको यह समझना होगा.

231. **<u>इस्लामिक विचारधारा जीवित है:</u>** पिराना में तथाकथित सुधारों से जुड़े आरएसएस, बीजेपी, वीएचपी, बजरंग दल, साधु समाज आदि के नेताओं से बात करने पर पता चलता है कि उन्हें गलत घमंड है कि हम पिराना को हिंदू बना रहे हैं। उन लोगों ने पिराना का बाहरी स्वरूप तो हिन्दू बना दिया, लेकिन वे पिराना सतपंथ की इस्लामी विचारधारा के बीज को नष्ट नहीं कर सके। बीज के लिए बिंदु (229) देखें। यह स्पष्ट है कि भविष्य में एक दिन जब इस्लाम के लिए अनुकूल समय आएगा, यह बीज अंकुरित होगा और आरएसएस, साधु संतों आदि की मेहनत बेकार साबित होगी।

इस्लामिक विचारधारा को हटाया नहीं जा सका

232. **<u>विचित्रता या गंभीरता:</u>** यह एक ऐसा संगठन है जो स्वयं को हिंदू कहता है, लेकिन लोगों को सतपंथ छोड़कर हिंदू धर्म में जाने से रोकने का हर संभव प्रयास करता है। समझोगे तो आश्चर्य नहीं, आश्चर्य के पीछे छिपी गंभीर बातें समझोगे। बहुत से लोग ऐसा मानते हैं.

तीव्रता

<u>सतपंथीओ की समाधान रणनीति:</u> जब भी कोई विवाद या समस्या होती है और उसे सुलझाने के लिए
233. समझौता या सुलह बैठक आयोजित की जाती है, तो सामान्य अपेक्षा यह होती है कि विवाद के बीज को हमेशा
के लिए खत्म करने का ईमानदार प्रयास किया जाना चाहिए।

लेकिन कच्छ की कडवा पाटीदार जाति का इतिहास और अब तक का अनुभव यही रहा है कि जब भी सतपंथियों के साथ सुलह की बातचीत होती है तो उनकी ओर से निम्नलिखित रणनीति देखने को मिलती है.

233.1. सतपंथियों को हिंदू बनने के लिए समझौता नहीं करना है । इसलिए सनातनियों द्वारा शुद्ध हिंदू बनाने के जितने भी उपाय बताए जाते हैं, उनमें कोई न कोई बहाना बनाकर खुद को अलग-थलग कर लेता है।

233.2. चाहे उनका प्रयास हो या येनकेन प्रकारेण, सनातन समाज सतपंथ धर्म को हिंदू धर्म का अंग स्वीकार कर दे । ताकि वे हिंदू समाज के भीतर गुप्त रूप से अपने इस्लामी धर्म का पालन कर सकें।

233.3. चर्चा या सुलह प्रक्रिया के नाम पर, ऊपर उल्लिखित दूसरे बिंदु (बिंदु 233.2) के अनुसार, सनातनियों को सतपंथ स्वीकार करने के लिए मनाने का हर संभव प्रयास करें। लेकिन अगर आप पहले (बिंदु 233.1) मुद्दे में फंस जाते हैं, तो बातचीत का विषय गलत दिशा में ले जाया जाता है और बात-चित अवरुद्ध कर देते हैं।

234. **<u>वांढाय में उमिया माताजी की सामूहिक घर वापसी का अंतिम प्रयास:</u>** सतपंथियों द्वारा सनातनियों के लगातार उत्पीड़न और झूठे अदालती मुकदमों से पूरी जाति तंग आ चुकी है। अब पूरे भारत से सतपंथ से नाता तोड़ने और इस समस्या का स्थायी समाधान करने की मांग जोर-शोर से उठने लगी है। ऐसा अनुरोध कई वर्षों से किया जा रहा था। संत ओधवराम महाराज का सतपंथियों से किसी भी प्रकार का संबंध न रखने का आदेश था। अत: जाति के नेताओं को भी अब लगने लगा है कि सतपंथ समस्या को स्थायी रूप से समाप्त करने के लिए सतपंथियों के लिए सनातन समाज के दरवाजे बंद कर देने चाहिए। तदनुसार, अगली तारीख 14 मई -2023 को इतिहास में पहली बार कच्छ कड़वा पाटीदार सनातन जाति का पहला सनातन अधिवेशन आयोजित किया जा रहा है। उस अधिवेशन में सतपंथ के लिए दरवाजे बंद करने का निर्णय लिया जाएगा।

<u>इस बैठक में उपरोक्त बिंदु (233) में बताई गई रणनीति का अवलोकन किया गया:</u>

234.1. **<u>वांढाय में बैठक:</u>** दरवाजे बंद करने के फैसले से पहले सनातनियों को लगा कि सतपंथियों को एक आखिरी मौका दिया जाना चाहिए ताकि वे हिंदू धर्म अपना लें और जाति न टूटे. इसके लिए 08 फरवरी 2023 को उमिया माताजी वांढाय के नेतृत्व में एक बैठक आयोजित की गई। पूरे भारत से बुद्धिजीवियों और शतपंथ के खिलाफ लड़ने वालों को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। उन्हें बताया गया कि कच्छ के सभी सतपंथी सतपंथ छोड़कर सनातन में शामिल होना चाहते हैं, इसलिए हमें एक साथ आना होगा।

234.2. **<u>सभा में नया मोड़:</u>** लेकिन, जब मुलाकात हुई तो बातचीत में नया मोड़ आ गया. वहां सतपंथियों द्वारा प्रस्तुत किया गया कि हमने पिराना में कई परिवर्तन किये हैं। (दीवारें और मूर्तियाँ जैसा कि ऊपर बताया गया है)। हम आरएसएस, विहिप, भाजपा, साधु संगठन आदि से मान्यता मिली हैं। हमने पिराणा से मुसलमानों को हटा दिया है. क्योंकि हम हिंदू हैं, हमें सनातन में विलीन कर दो, ऐसी गुगली बाल जैसी बात कहने लगे।[131]

234.3. **<u>सनातनी नहीं फंसे:</u>** सनातनी उनकी बातों में नहीं आये कि वे इस गुगली के लिए तैयार हैं। उन्होंने एक ही सवाल पूछा कि क्या आपने इमामशाह छोड़ दिया. जवाब मिला कि हमने इमामशाह का नाम बदलकर सद्गुरु रख दिया है. लेकिन हम इमामशाह को छोड़ने वाले नहीं हैं. हममें से कुछ लोग कट्टर हैं,

131 गुगली = प्रतिद्वन्द्वी को परास्त करना। रूपक क्रिकेट के खेल में गुगली बॉल सेलिया गया है

इसलिए हम इमामशाह को नहीं छोड़ सकते। तो सनातनी ने कहा कि जैसे हम छोड़कर आये, वैसे ही तुम भी छोड़कर आओ। दूसरों को उनके हाल पर छोड़ दो. लेकिन सतपंथियों ने इस समाधान को मानने से इंकार कर दिया और कहा कि हम इमामशाह को नहीं छोड़ेंगे। इतना कहने के बाद सभी सनातनी लोग एक स्वर में बोले, फिर आज की बैठक का कोई मतलब नहीं है।

234.4. **<u>अदालती मामलों का खतरा:</u>** बाद में बातचीत में जब अदालती मामलों की बात आई और व्यावहारिक समाधान निकलने की बात सामने आई तो सनातनियों ने कहा कि पहले विश्वास का माहौल बनाना चाहिए। इसलिए सतपंथियों को पहले सनातनियों के खिलाफ अदालती मुकदमे वापस लेने चाहिए (याद रखें सनातनियों ने सतपंथियों के खिलाफ कोई मुकदमा दायर नहीं किया है)। सनातनियों की ओर से इस तरह की बातें करने के बाद सतपंथियों ने कहा कि यदि आप हमें सनातन समाज में शामिल नहीं करेंगे तो हम अतिरिक्त मुकदमा करेंगे। यह कहकर उसने दोनों समाजों को हटाने की धमकी दी। सनातनी ने तुरंत उसकी तुच्छता की निंदा की।

234.5. **<u>सनातन समाज को तोड़ने का प्रयास:</u>** उसके बाद सतपंथियों ने सनातन समाज को तोड़ने की चाल चली। उन्होंने उमिया माताजी वांढाय संस्था को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि हम 27 से 30 मार्च 2023 तक वांढाय में होने वाले अमृत महोत्सव कार्यक्रम में 1 करोड़ रुपये दान करने के लिए तैयार हैं . हम वांढाय के सदस्य हैं। वांढााय गैर–सांप्रदायिक है (जो गलत है, वांढाय सनातनियों की एक संस्था है, जिसका इतिहास हमने पिछले बिंदु (150.24) में देखा था)। इसलिए केंद्रीय समाज के नियम यहां लागू नहीं होते.

हम सबको मिलकर विकास करना है. आइए राजनीतिक क्षेत्र में मिलकर आगे बढ़ें। उन्होंने (वास्तविक नहीं) उदाहरण दिया कि सेंघाणी ने अलग चुनाव लड़ा और हार गए।

उमिया माताजी वांढाय के नेताओं ने सतपंथियों की इस चाल को तुरंत समझ लिया और उनकी बात जड़ मुल से उखाड़ दी। उमिया माताजी वांढाय के अध्यक्ष हंसराजभाई, संस्कारधाम के अध्यक्ष गंगारामभाई और अन्य नेताओं ने उत्तर दिया कि सनातन की विचारधारा और अभियान केवल केंद्रीय समाज का नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज का है। क.पा. जाति का है. जैसे जाति नीतियां सभी जाति संगठनों पर लागू होती हैं, वैसे ही वे उमिया माताजी वांढाय पर भी लागू होती हैं। पता चला है कि यह बात उमिया माताजी वांढाय की मिनट बुक में दर्ज है।

234.6. **<u>उमिया माताजी वांढाय – सनातन अभियान के साथ दृढ़:</u>** इस समय ध्यान देने वाली बात यह है कि उमिया माताजी वांढाय की कार्यकारिणी सनातन अभियान के साथ मजबूती से खड़ी है और सतपंथियों से दान स्वीकार न करने के उनके फैसले को पूरी जाति से धन्यवाद प्राप्त हुआ।

25 सफ़ाई अभियान - सनातन धर्म जागृति समिति का आंदोलन

235. **<u>सतपंथ समस्या को ख़त्म करने के लिए सनातनी मक्कमता:</u>** जैसा कि उमिया माताजी वांढाय में ऊपर बताया गया है, धमकियों के माध्यम से घर लौटने के अंतिम प्रयास पर सतपंथी की प्रतिक्रिया पूरी जाति में चर्चा का विषय बन गई। उसके बाद सारी जाति एक हो गयी, मांग उठने लगी कि ;

235.1. अब कोई यह नहीं कह सकता कि सतपंथियों को घर वापस लाने के लिए सनातनियों ने पर्याप्त प्रयास नहीं किये।

235.2. सनातनियों की ओर से सदैव समस्या के समाधान का प्रयास किया जाता रहा है। लेकिन सतपंथ की ओर से सतपंथ की समस्या को बरकरार रखने के लिए नये–नये तरीके और षडयंत्र (षड्यंत्र शब्द इसलिए है, क्योंकि सनातन समाज में विलीन होने की बात करते हैं लेकिन इस्लाम को छोड़ना नहीं चाहते। इस्लामिक पकड़ बनाने के नये–नये उद्देश्य चला रहे हैं।

235.3. पिछले लगभग 250 वर्षों से सनातनी सतपंथियों का समझाने के प्रयास करते आ रहे हैं। अब समय बदल रहा है. कितने और दिन खोजते रहोगे और सिर झुकाकर उनकी साजिशों से बचते रहोगे। ऐसे कार्य करने वालों को सम्मान की बजाय समाज–विनाशक, झगड़ा–फसाद करने वाले आदि की आलोचना सुननी पड़ती है, जिसे बंद करना चाहिए।

235.4. उमिया माताजी वांढाय में सतपंथियों ने जिस तरह से व्यवहार किया और उनकी रणनीति का पालन किया उससे यह स्पष्ट है कि उनकी नियति सनातन में आना नहीं है।

अत: लोगों ने यह बात उठानी शुरू कर दी कि सतपंथियों के लिए सनातन जाति के द्वार सदैव के लिए बंद कर दिये जायें।

प्रहर 7

2023 से अबतक

वास्तविक एक संतुष्टिदायक घर वापसी

घर वापसी आंदोलन का अंतिम चरण..

सतपंथ मानसिकता से मुक्ति की शुरुआत..

संत ओधवराम बापा की इच्छा ही बहुत है..

सतपंथियों के लिए दरवाजे बंद करो..

26

सतपंथियों के लिए दरवाजे बंद
चरण 2: मानसिकता को शुद्ध करना

236. **<u>सामान्य स्थिति की बहाली – चरण 2:</u>** अब समय आ गया है कि सनातन के लोगों को प्रचलित सनातन मानसिकता पर सतपंथ द्वारा उत्पन्न अशांति से स्थायी रूप से मुक्त किया जाए। लेकिन ऐसा करने में एक बड़ी बाधा है, सतपंथ के लिए सनातन समाज के खुले दरवाजे। यदि जाति सतपंथ विषय को भूलकर अपने विकास और उन्नति पर अधिक ध्यान देती है तो किसी न किसी कारण से सतपंथ को लेकर विशेष सदस्यों द्वारा विवाद खड़ा कर दिया जाता है और नेता विवाद के भंवर में फंस जाते हैं। सनातनियों के विकास के लिए सतपंथ के विवादों को हमेशा के लिए बंद करना बहुत जरूरी है। इसलिए जाति के नेताओं ने बहुत सोच–विचार कर आगे बढ़ने का बीड़ा उठाया है. नीचे दी गई टेबल से आप समझ सकते हैं कि वह काम क्या है।

4. स्थिति का सामान्यीकरण	विनाश विवरण	सुधार करना
4.1. एक नये समाज की स्थापना – 2 चरणों में		
<u>चरण 2:</u> **<u>मन को शुद्ध करना:</u>** पिराना सतपंथ से जुड़ा हुआ लोगों की मानसिकता का मोह तोड़ें, उस मानसिकता को शुद्ध करें सनातनी की रचना. तो वह सनातन की जाति के लिएगौरव, स्वाभिमान, गरिमा का स्तर बढ़ता है और पहचान जागृत होती है भविष्य में किसी दिन वह जाति फिर दूसरे धर्म की ओर आकर्षित हो गयीऐसा न हो ताकि क. पा. सनातन जाति और उसकी सनातनी विचारधारा का विनाश कभी नहीं हो सकता.	**24**	**शुरुआत**

<u>मानसिकता से मुक्ति:</u> मन की मुक्ति तो करनी है लेकिन इस अवस्था में क्या करना है? जिस तरह भारत
237. सरकार देश को अंग्रेजों की गुलामी की मानसिकता से मुक्त कराने के लिए अभियान चला रही है, उसी तरह कुछ करने की जरूरत है। अर्थात अंग्रेजी गुलामी और मुगल अत्याचारों के प्रतीकों को हटाना होगा।

विदेशियों/खलनायकों के नाम पर रखे गए शहरों के नाम बदलकर भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म के नायकों और वीरांगनाओं के नाम पर रखे जाते हैं। इस तरह सदियों पुरानी सैन्य परंपराएं, यहां तक कि सेना के गीत भी बदल दिए गए हैं.

सनातनी जाति के बुजुर्गों और बुद्धिजीवियों को अब लगता है कि यदि जाति से सतपंथ समस्या को हमेशा के लिए दूर करना है तो सनातन जाति के दरवाजे सतपंथ के लिए हमेशा के लिए बंद कर देने चाहिए। सतपंथ जाति अब से सनातनियों के लिए दूसरी जाति बनकर रहेगी। कोई अपनी जाति नहीं होगी।

238.**<u>निर्णय का अस्थायी विरोध:</u>** सरकार द्वारा लिये गये ऐसे निर्णयों के पीछे का महत्व सभी समझते हैं। लेकिन देश में कुछ लोग एकता संप, संगठन, भाई चारा, अन्याय आदि की आड़ में सरकार के ऐसे फैसलों का विरोध करते हैं।

अत: आशा की जानी चाहिए कि कुछ समय तक सनातन की जाति में भी इस प्रकार का विरोध रहेगा। लेकिन यह बिल्कुल स्पष्ट है कि सनातन के अभियान के दृढ़ संकल्प के सामने यह विरोध अधिक समय तक नहीं टिकेगा। क्योंकि जाति के लोग इस मुहिम के साथ हैं. अब लोग सतपंथ समस्या से हमेशा के लिए छुटकारा पाना चाहते हैं।

239.**<u>लंबे समय से चली आ रही मांग:</u>** सतपंथियों के लिए दरवाजे बंद करने की मांग लंबे समय से चल रही है। ऐसी बातें बैठकों या अनौपचारिक चर्चाओं में सुनने को मिलती हैं. पुराने रिकार्डों पर नजर डालने पर हमें वर्ष 1972 में भी ऐसी मांग का एक मामला नजर आया। जागृति मासिक पत्रिका के मई –1972 अंक में पृष्ठ 10 पर भी दरवाजे बंद करने की बात छपी थी 56:मई–1972, पृष्ठ 10 (522 में से 203)।

240.**<u>सनातनियों की परिपक्वता का परिचय:</u>** सतपंथियों के लिए दरवाजे बंद करने का निर्णय गहन चिंतन की मांग करता है। सत्पंथ, सामाजिक स्थिति, अनुनय प्रयासों का प्रभाव, दरवाजे बंद करने के संभावित परिणाम आदि के संबंध में कई बातें ध्यान में रखनी पड़ती है। इसके साथ ही यह भी ध्यान रखना होगा कि सनातनियों को सतपंथियों के उत्पीड़न से कैसे बचाया जाए, उनकी घर वापसी के लिए कितने दिन इंतजार किया जाए, अपने विकास को कितने दिन रोका जाए आदि।

विधर्म में फंसे लोगों को हिंदू धर्म में वापस लाना प्रत्येक हिंदू का कर्तव्य है। परंतु यदि उस कर्तव्य का पालन करते हुए शुद्ध हिंदू समाज को बड़ी या दीर्घकालिक क्षति होती है, तो ऐसी घर वापसी व्यर्थ है।

नुक्सान नहीं होना चाहिए

जैसा कि ऊपर बताया गया है, सनातन जाति के नेताओं ने सभी विषयों पर गहनता से विचार करके, अत्यंत संयम एवं गंभीरता रखकर अपने विचारों की परिपक्वता का परिचय दिया है। इस पर सभी ज्ञातिजनों को गर्व है.

241. **<u>दरवाजा बंद करने का समय आ गया है:</u>** जैसा कि ऊपर कहा गया है, यदि घर वापसी का अच्छा उद्देश्य शाश्वत समाज को नुकसान पहुंचा रहा है, तो ऐसे घर वापसी की कोई आवश्यकता नहीं है। सफाई अभियान – सनातन धर्म जागरूकता समिति का आंदोलन अध्याय में हमने देखा है कि अब घर वापसी के लिए इंतजार करना सनातन समाज के हित में नहीं है। साथ ही सनातन के ज्यादातर लोग अब दरवाजा बंद करने की सदियों पुरानी मांग को और जोर–शोर से उठा रहे हैं।

241. **<u>संत ओधवराम महाराज का आदेश:</u>** इस मामले में आगे बढ़ते समय सनातन जाति के संस्थापक संत ओधवराम महाराज के आदेश और दृष्टिकोण पर भी विचार करना चाहिए। इस विषय का अध्ययन करने पर पता चलता है कि संत ओधवराम महाराज सदैव सतपंथ से सभी प्रकार का व्यवहार बंद करने की सलाह देते थे। इस संबंध में 2 दस्तावेज़ विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।

242.1. परम पूज्य संत ओधवरामजी महाराज की स्वरचित पुस्तक... ईश्वर विहारी विलास खंड 2 (संस्करण 2 – प्रकाशन वर्ष 1943) पृष्ठ 362 में कच्छ कड़वा पाटीदार बंधुओं के लिए पालन करने योग्य 23 नियम दिए गए हैं। जिसके 23वें नियम में सतपंथी से सभी संबंध तोड़ने का उल्लेख है, जो इस प्रकार है ;

> (23) कड़वा पाटीदार भाइयों को ऊपर बताए गए नियमों के अनुसार व्यवहार करना चाहिए। जो ऊपर कहे हुए नियमों के अनुसार आचरण नहीं करते और द्वेषवश उस संप्रदाय का पालन करते हैं, सनातन धर्म के अनुसार आचरण करने वाले सुधारक बंधुओं को उनसे कोई संबंध नहीं रखना चाहिए और उनका त्याग कर देना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से ही कडवा पाटीदार जाति का वास्तविक उद्धार है। 121 :पृष्ठ 362

242.2. दिनांक 16 दिसंबर 1943, परम पूज्य संत ओधवराम महाराज के पटशिष्य संत दयालरामजी महाराज की उपस्थिति में बोरडी कंपा में । क.क. पाटीदार का आपको याद होगा कि जातीय सम्मेलन हुआ था। बिंदु देखें (150.23). इस सम्मेलन में जातीय रीति–रिवाजों का प्रतिपादन किया गया। रीति–रिवाज से आदेश दिया गया कि ;

> इस संस्थान में आने वाले को सतपंथी के साथ खाना–पीना पूरी तरह से बंद कर देना चाहिए 83:पेज 13 6:पेज 423

243. **<u>नारायण रामजी लिम्बाणी का अभियान:</u>** नारायण रामजी के अभियान से यह भी स्पष्ट था कि जब तक पिराणा सतपंथ जाति का उन्मूलन नहीं होगा, तब तक हिंदू विलुप्त होने का खतरा है 114:निवेदन 6:पृष्ठ 154।

244. **<u>अन्य जातियों के अनुभव:</u>** अतीत में सतपंथ को मानने वाली अन्य जातियों के अनुभवों को ध्यान में रखा गया है।

244.1. **<u>लोहाणा जाति:</u>** लोहाना जाति सबसे पहले सतपंथ में सम्मिलित हुई। इमामशाह के दादा पीर सदरुद्दीन लोहाणा ज्ञाति को सच्चे हिंदू धर्म के नाम पर सतपंथ में ले लिया। आज वे लोग सतपंथ को अपनाकर पूर्ण मुसलमान अर्थात् खोजा मुसलमान बन गये हैं। लेकिन हिंदू लोहाना जाति का अपने मुस्लिम जाति भाइयों से कोई संबंध नहीं है। अत: उनकी जाति में सतपंथ को लेकर कोई विवाद नहीं है।

244.2. **<u>रबारी जाति:</u>** रबारी जाति में कुछ लोग सतपंथ धर्म का भी पालन करते हैं। वह जाति भी अधिकतर सतपंथियों से रोटी–बेटी का रिश्ता नहीं रखती।

244.3. **<u>लेवा पाटीदार:</u>** मराठी लेवा पाटीदार समुदाय ने भी सतपंथ का अनुसरण करते हुए 15 मई 1919 और 22 दिसंबर 1922 137:पेज 94 और 96 को अपने भाइयों को जाति से बाहर करने का संकल्प लिया । सतपंथी इन प्रस्तावों के विरुद्ध न्यायालय भी गये। सबसे पहले सतपंथियों को सफलता मिली। लेकिन जब विवाद बॉम्बे हाई कोर्ट तक पहुंचा तो सतपंथी असफल हो गए. इस विषय में पूरी जानकारी मराठी भाषा की पुस्तक सत्पंथ रहस्य 137 में दी गयी है । एक और मराठी पुस्तक है जिसका नाम है सतपंथ विजय 91 , जिसमें अधूरी जानकारी है, जिस पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

244.4. **<u>वांकानेर के मुस्लिम कड़वा पाटीदार:</u>** आज वांकानेर के आसपास के क्षेत्र में कड़वा पाटीदार मुसलमान बन गये हैं। कोई भी हिंदू कडवा पाटीदार जाति इससे जुड़ी नहीं है. तो इस वजह से कडवा पाटीदार जाति में कोई दिक्कत नहीं है.

244.5. **<u>मिश्रित जातियाँ:</u>** जो जाति धर्म के मामले में मिश्रित होती है, उस जाति में रोटी–बेटी प्रथा के कारण इस्लाम शुद्ध सनातनियों के घरों में भी घुस जाता है। क्योंकि जो लोग इस्लाम का पालन करते हैं उन्हें उस जाति में स्वीकार किया जाता है। देखने में आता है कि वे प्रेम– एकता–संप–संगठन आदि शब्दों के मायाजाल में फंसे हुए हैं। गुजराती समाचार पत्र दिव्य भास्कर का मुंबई संस्करण 29 दिसंबर –2022 को प्रकाशित हुआ[132] के पेज 2 पर निचले हिस्से में राजस्थान के काठात समुदाय की ऐसी मिश्रित संस्कृति के बारे में लेख छपा है और दफ़नाने की रस्म पर विवाद का भी ज़िक्र है.

132 संस्करण = संस्करण का अर्थ यहां मुंबई संस्करण है.

26 सतपंथियों के लिए दरवाजे बंद चरण 2: मानसिकता को शुद्ध करना

245. **<u>स्वयं के अनुभव:</u>** क. क. पा. इस जाति के अपने अनुभव भी ध्यान देने योग्य हैं।

245.1. उंझा की कड़वा पाटीदार जाति: उंझा के बुजुर्ग सतपंथ का पालन करते थे। सतपंथीओ से नाता तोड़कर वे आज इस समस्या से बच गये हैं। अगर उनका रिश्ता जारी रहता तो उंझा आज इस समस्या से जूझ रही होती. अधिक जानकारी के लिए इस पुस्तक में बिंदु (74) देखें।

246. **<u>दरवाजे बंद करने के कुछ मुख्य कारण:</u>** ऊपर वर्णित अनुभव पुस्तक में पहले उल्लिखित बिंदुओं को संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं।

246.1. जिन जातियों ने सतपंथ से नाता तोड़ लिया है या नाता नहीं रखा है, उन्हें आज सतपंथ से कोई दिक्कत नहीं है।

246.2. मिश्रित संस्कृति वाली जातियों में क. क. पाटीदार जाति की तरह सतपंथ को लेकर भी समय–समय पर विवाद उठते रहते हैं।

246.3. क. क. पा. यह जाति विवाद लगभग 250 वर्षों से अर्थात केशरा परमेश्वरा के समय से चला आ रहा है। और कितना इंतज़ार करना होगा ?

246.4. 95% लोग सनातन धर्म में आ चुके हैं, तो शेष 5% के न आने का कोई कारण नहीं है। 5% लोग 95% लोगों को परेशान करना उचित भी नहीं है।

246.5. सनातनियों ने वर्षों तक सतपंथियों को अच्छे सद्भाव से रखा। लेकिन बदले में उन्हें धोखा मिला. उन्होंने सनातन की पहचान ली और अपना इस्लाम बरकरार रखा।

246.6. सतपंथियों द्वारा सनातनियों का उत्पीड़न, उनकी आवाज़ को दबाने के लिए झूठे अदालती मुकदमे और झूठी पुलिस शिकायतें, सनातनियों की संपत्तियों को जब्त करना आदि जारी रहा।

246.7. जब भी कोई सुलह या समाधान प्रक्रिया अपनाई जाती है, तो उस प्रक्रिया का दुरुपयोग किया जाता है। कहीं न कहीं सनातनी को बांटने का प्रयास किया जाता है।

246.8. और कितने दिन तक सनातनी जागरूकता सभाएं करेंगे और समझाते फिरेंगे कि सतपंथ हिंदू धर्म नहीं है।

246.9. आज के आधुनिक समय में सतपंथी भलीभांति जानते हैं कि इमामशाह मुसलमान थे और उन्होंने हिंदुओं को मुसलमान बनाने के लिए ही सतपंथ की स्थापना की थी। इतना जानते हुए भी यदि वे सनातन में नहीं आना चाहते तो यह उनकी इच्छा है। अब हमें समझाने की जरूरत नहीं है.

246.10. यदि समाज में मिश्रण होगा तो जाति की बेटियां (नियानियां) धोखा खा जाएंगी क्योंकि वे सतपंथ के बारे में नहीं जानतीं। अब बेटीओं को ऐसी स्थिति में नहीं डालना चाहिए कि कल को बेटी को लगे कि सब कुछ जानने के बावजूद मेरे परिवार ने मेरा रिश्ता मुस्लिम धर्म को मानने वाले लोगों से कराया.

246.11. जिस तरह से पिराणा में बदलाव हुए हैं, इन बदलावों से ऐसा लगता है कि मासूम लड़कियां आसानी से इस्लामिक लव जिहाद का शिकार बन सकती हैं। क्योंकि इमामशाह की दरगाह पर केवल मुस्लिम पुरुष ही आते हैं। वह दरगाह और तथाकथित निष्कलंकी मंदिर एक ही परिसर में हैं और दोनों में प्रवेश का द्वार एक ही है। इसे ऐसे समझा जा सकता है कि अगर कोई यह प्रचार कर रहा है कि अब मुस्लिम पिराणा नहीं आते है तो यह पूरी तरह से गलत और भ्रामक प्रचार है।

246.12. पिराणा में चाहे कितने भी तथाकथित परिवर्तन किये जायें, उन परिवर्तनों में केवल हिन्दू ही फंसते है। ऐसा बदलाव क्यों नहीं किया जाता ताकि कोई मुसलमान हिंदू बन जाए?

परिवर्तन

246.13. यदि पिराणा के परिवर्तन वास्तव में अच्छे और सच्चे हैं, तो उन परिवर्तनों के साथ सतपंथी एक दिन हिंदू क्यों नहीं बन गया? उल्टा हिंदू से सतपंथी बन गया. सनातन जाति को ऐसे परिवर्तनों से बचाने की सख्त जरूरत है।

इस प्रकार सभी विषयों पर गहन विचार करने के बाद केंद्रीय समाज ने नव प्रस्तावित जातीय रीति-रिवाजों में सतपंथियों के लिए सनातन समाज के दरवाजे हमेशा के लिए बंद करने की बात लिखी।

247. <u>**फिर उठेगी क्रांति:**</u> आज भले ही हम दरवाजे बंद कर रहे हैं, लेकिन यह तय है कि कल सतपंथी लोगों के बीच से भगवान लक्ष्मीनारायण फिर प्रकट होंगे और उनमें फिर सनातन धर्मभाव जाग उठेगा। सतपंथ फिर से टूट जायेगा. और उससे एक दिन पिराणा सतपंथ का विरोध बढ़ेगा, ऐसी बातें जनता में सुनने को मिल रही हैं.

2.5 सतपंथी बचे: बुजुर्गों और कई लोगों से सुना है कि इमामशाह ने कहा है कि सतपंथ में एक दिन केवल 2.5
248. मुमना ही जीवित रहेंगी 94:पेज 12। यह मुहावरा रूप 2.5 मुमना है, जो सनातन में कभी नहीं आएगा। यह तो समझ में आता है कि अब उनके लिए दरवाजे खुले रखने की जरूरत नहीं है.

249. <u>सनातन के पहले अधिवेशन में दरवाजे बंद करने का निर्णय:</u> क. क. पा. जाति के इतिहास में पहली बार सनातन अधिवेशन 14 मई –2023 को होने जा रहा है। उस दिन क. क. पा. सनातन की ज्ञाति रीति रिवाज लागु किए जायेंगे। (सनातन शताब्दी महोत्सव 11 से 13 मई 2023 तक है और इसके बाद 14 मई 2023 को ज्ञाति अधिवेशन होगा।)



इस सम्मेलन के लिए निर्धारित ज्ञाति रीति–रिवाजों की एक प्रति[133] पहले ही सभी स्थानीय समाजों और विभागों को भेज दिए गए हैं। उम्मीद है कि सत्र में इस संबंध में कोई ठोस निर्णय लिया जायेगा. और अगर किसी कारणवश दरवाजा बंद करने की तारीख आगे बढ़ा भी दी गई तो भी एक बात तो साफ है कि आज नहीं तो कल ये फैसला हो ही जाएगा.

250. <u>सही अर्थों में घर वापसी:</u> क. क. पा. समाज के घर वापसी अभियान से सतपंथओ के लिए के लिए दरवाजे बंद करने का निर्णय के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा।[134] सिद्ध हो जायेंगे.

यह पूर्ण घर वापसी का अंतिम चरण है। इस पड़ाव को पार करके ही घर वापसी का काम सही मायने में पूरा होगा। कच्छ कड़वा पाटीदार जाति इस अंतिम चरण को सफलतापूर्वक पार करके संपूर्ण हिंदू समाज को वास्तव में गौरवान्वित करेगी और वापसी कराने वालों के लिए एक अत्यंत आवश्यक मार्गदर्शक उदाहरण भी प्रदान करेगी।

भारत में ऐसे बहुत कम उदाहरण हैं जहां किसी ने अपने दम पर जाति के भीतर से विधर्म के खिलाफ लड़ाई लड़ी हो और इस पुस्तक में वर्णित चरण–दर–चरण वास्तविक घर वापसी को पूरा किया हो और इसका एक व्यवस्थित इतिहास भी लिखा हो। और यह स्पष्ट है कि कच्छ कड़वा पाटीदार सनातन जाति का उदाहरण अब सबसे आगे रहेगा।

133 नमूना जाति रीति–रिवाज = https://abkkpsamaj.org/go/fn133
134 मील का पत्थर = मील का पत्थर

27

निष्कर्ष

251. **<u>जाति पतन के कारण:</u>** र. क. क. पा. जाति के पतन का मुख्य कारण यह था कि वह अपने धर्म की रक्षा नहीं कर सकी। उन्होंने अपने ऊपर हुए वैचारिक विध्वंस के हमले को नहीं पहचाना। इसका प्रतिरोध[135] करने की बजाय उन्होंने सहयोग किया. अतः यह समझना आवश्यक है कि जाति/समाज को विचारधारा के विनाश से कैसे बचाया जा सकता है। इस पर विशेषज्ञों की जो राय सामने आई, वह नीचे दी गई है।

252. **<u>निराशा के प्रसार को पलटना:</u>** जब विचारधारा का विनाश होने लगे तो आत्म–संयम सबसे उपयोगी होता है। आत्मसंयम सिखाना धर्म का काम है। धर्म हमें भौतिक मूल्य सिखाता है[136] अच्छा है, लेकिन यह मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं है। जीवन का उद्देश्य केवल भौतिक सुख भोगना नहीं है, यह उससे भी बढ़कर कुछ है।

दूसरे धर्म के भ्रामक प्रचार–प्रसार में नहीं पड़ना चाहिए। उनके प्रोपगंडा की पोस खोलना और उनके प्रचार से हमारा प्रचार श्रेष्ठ होना चाहिए ताकि समाज हमारे साथ आदर और सम्मान का व्यवहार करे।

253. **<u>समाज:</u>** समाज को इतना मजबूत, साहसी और सतर्क होना चाहिए कि वह बाहरी विचारों को अपने समाज में न आने दे। यदि ऐसा किया जा सका तो विचारधारा के विनाश में वर्णित सभी चरण तुरंत रुक जायेंगे।

254. **<u>समाज को धर्म से जोड़े रखें:</u>** समाज को धर्म से जोड़े रखें। धर्म एक ऐसी चीज़ है जिसे आप खा नहीं सकते, छू नहीं सकते या पहन नहीं सकते। लेकिन धर्म वह चीज़ है जो समाज को व्यवस्थित रखता है, चलाता है और उसकी रक्षा भी करता है।

255. **<u>धर्म विमुख:</u>** इतिहास हमें बताता है कि जिन सभ्यताओं ने अपना धर्म खो दिया, वे इस धरती से अलग हो गईं। मोहनजोदडो, मिस्र[137], बेबीलोन आदि इसके उदाहरण हैं।

135 प्रतिरोध =प्रतिरोध
136 भौतिक मूल्य = भौतिक मूल्य। मूल त्तवों से बनी वस्तुएँ।
137 मिस्र = मूल मिस्र। वर्तमान मिस्र में इस्लाम धर्म है।

27 निष्कर्ष

256. **समाज का विघटन (विखंडन):** कोई भी आधुनिक तकनीक या कंप्यूटर समाज को विघटन और अंततः विनाश से नहीं बचा सकता। लेकिन धर्म बचा सकता है. यद्यपि आप सदैव धर्म को सिद्ध नहीं कर सकते।

क्या आपने किसी ऐसे व्यक्ति को देखा है जो 2x2 = 4 के लिए अपनी जान देने को तैयार हो, क्योंकि यह सत्य है। क्या आपने कभी ऐसे व्यक्ति को देखा है जिसने इसे साबित करने के लिए अपनी जान दे दी हो ? कोई नहीं मिलेगा. लेकिन ऐसे लाखों लोग हैं जो आज़ादी, आराम, पैसे और हर उस चीज़ के लिए मर जाएंगे जो धर्म और भगवान के बराबर है। यह उनके लिए सम्मान की बात है. धर्म जो भौतिक नहीं है, फिर भी समाज को चलाता है और जीने में सहायक है, उनके लिए मर मिटने वाले बहुत मिलेंगे।

जिस क्षण हम 2x2 = 4 को अपने जीवन का मार्गदर्शक सिद्धांत बना लेते हैं, हम बर्बाद हो जाते हैं। भले ही यह सत्य हो और दूसरी ओर ईश्वर भी हो, जिसे सिद्ध नहीं किया जा सकता। हम केवल अनुभव और विश्वास कर सकते हैं। अतः जीवन का लक्ष्य धर्म होना चाहिए।

257. **धर्म न छोड़ें:** यदि समाज को बचाना है तो धर्म को कभी न छोड़ें। साथ ही धर्म को भ्रष्ट न होने दें. भ्रष्ट धर्म को भी नहीं अपनाना चाहिए ऐसा शास्त्रों में कहा गया है कि ;

धर्मो रक्षति रक्षितः
धर्मों की रक्षा:

– महाभारत, वनपर्व, अध्याय 313/128
– मनुस्मृति 8.15

धर्म का महत्व

अर्थ: धर्म की रक्षा करने से रक्षक की रक्षा होती है।

28

Bibliography

Format: [Creator Name, if any]. [Year of publication, if any]. [Section of Book, if any]. ***[Book Name].*** [Page Nos of Section, if any). [Publisher Name, if any).

1. ABKKP Samaj. 1993. ABKKP Samaj -4th Adhiveshan -Report (Includes brief note on 2nd and 3rd Adhiveshan) [287]. ABKKP Samaj.

2. ABKKP Samaj. 2006. ABKKPS Gnati Reet Rivaj Niyam [299]. ABKKP Samaj.

3. ABKKP Samaj. 2007. ABKKPS Nyay Samiti Dharadhoran [297]. ABKKP Samaj.

4. ABKKP Samaj. 2010. Kachchhna (Kutchna) Kadva Patidarono Itihas [46]. Akhil Bharatiya Kutch Kadva Patidar Samaj Swarnim Mahotsav Ayojan Samiti.

5. ABKKP Samaj. 2013. ABKKPS Ahmedabad -Satpanth ange 11 tharavo [1000]. ABKKP Samaj.

6. ABKKP Samaj. 2023. Abhilekh 2023. ABKKP Samaj.

7. ABKKP Samaj and Patidar Sarvoday Trust. 2012. Mandvi Hostel Scam FAQs and Reply [848]. ABKKP Samaj and Patidar Sarvoday Trust.

8. ABKKP Saraswat Parivar. 2010. Swarnimna Sathvare Chalya Samarth Patidar [251]. ABKKP Samaj.

9. Akbarally Meherally. 1991. A History of The Agakhani Ismailis [20]..

10. Akhil Bharatiya Kutch Kadva Patidar Samaj (ABKKPS). 2010. ABKKPS -Swarnim Mahotsav - 5th Adhiveshan Smruti Granth [183]. Akhil Bharatiya Kutch Kadva Patidar Samaj.

11. Akhil Bharatiya Sanatan Satpanth Seva Mandal. 2012. Dashabdi Mahotsav -Sant Sammelan & Nanakdas Maharaj (Kaka) -Smruti Granth [310]. Satpanth Prakashan Samiti.

12. Akhil Vishva Satpanthi Dharmiya Sangh, Kolkata. 1994. Pancham Ved -Bhag-1- Mahapujana Mantro [6]. Self.

13. Akhil Vishva Satpanthi Dharmiya Sangh, Kolkata. 1996. Pancham Ved -Bhag-2- Dasavatar [7]. Self.

14. Akhil Vishva Satpanthi Dharmiya Sangh, Kolkata. 1996. Pancham Ved-Bhag-3-Atharvediya Ginan [8], Self.

15. Akhil Vishva Satpanthi Dharmiya Sangh, Kolkata. 1997. Pancham Ved-Bhag-3.1-Allah Hindu Dev - Kaba Dham Makleshwar Mahadev [9]. Self.

16. Akhil Vishva Satpanthi Dharmiya Sangh, Kolkata. 1998. Pancham Ved-Bhag-4-Satpanth Dharmni Ruprekha [10]. Self.

17. Akhil Vishva Satpanthi Dharmiya Sangh, Kolkata. 1998. Pancham Ved-Bhag-5-Momin Geeta-Gotra Imamshah [11]. Self.

18. Akhil Vishva Satpanthi Dharmiya Sangh, Kolkata. 2001. Pancham Ved-Bhag-7-Muhmaamad Avatar [13]. Self.

19. Akhil Vishva Satpanthi Dharmiya Sangh, Kolkata. 2006. Pancham Ved -Panch Dev-Dev Ahmad [14]. Self.

20. Akhil Vishva Satpanthi Dharmiya Sangh, Kolkata. --. Pancham Ved -Bhag-6-Mahapooja Mantro [12]. Self.

21. Arbitration Panel appointed by Umiya Mataji Vandhay. 2018. Mandvi Hostel Judgement by Umiya Mataji Vandhay [1042]. Arbitration Panel appointed by Umiya Mataji Vandhay.

22. Azim Nanji. 1972. The Nizari Ismaili Tradition in Hind and Sind [681]. Islamic Studies, McGill University.

23. Azim Nanji. 1978. Nizari Ismaili Tradition in Indo Pakistan Subcontinent [754]. Caravan Books.

24. Bhuj Swaminarayan Sadhus. 1945. Bhuj Swaminarayan Sadhu Against Diksha to KKP Sadhu [1066]. Bhuj Swaminarayan Sadhus.

25. Bombay High Court. 1866. Aga Khan or Khoja Case - Bombay High Court Judgement [344] AIR (All India Reporter).

26. CA Ramanik / Ramesh M Vagadiya. 2023. Sanatani Chalvalni 4thi Krantina Sansmarano..

27. Chandrakant Patel. 2019. Maa Uma no Aadesh Satpanth Chhodo [1018]. ABKKP Samaj.

28. Chandubhai Ratanshi Jadeja. 1986. Ishwar Vihari Vilas - Bhag 1 and 2-4th Edition [975] Kutch Kadva Patidar Samaj, Umiya Mataji Sansthan, Vandhay, Kachchh.

29. Devji Mavji Limbani. 2015. Samaj Bhaktini Sachchai [758]. Devji Mavji Limbani.

30. Dionne Bunsha. 2004. Frontline -Chains of Pirana -A short article about recent changes in Pirana [242]. Frontline Magazine.

31. Dominique Sila Khan. 2002. The Tale of Hidden Pir -ISIM (375). ISIM.

32. Dominique Sila Khan. 2003. Muslim Saints and Hindu Rulers -and Taqiyya [376]. Institute of Ismaili Studies.

33. Dominique-Sila Khan. 2004. Crossing The Threshold [70]. I B Tauris.

34. Dr Mangubhai Ramdas Patel. 2009. Kadva Patidar Parishadoma Sudharvadi Abhigam-1918 to 1960 [260]. Patidar Hitwardhak Trust.

35. Dr Navinchandra A Acharya. 1983. Gujaratna Dharmsampraday (129), University Granth Nirman Board, Gujarat State.

36. Dr Niranjan Rajguru. 2020. Bijmargi Gupt paat Upasana (1100) Gujarat Sahitya Academy, Gandhinagar.

37. Farhad Daftary. 1988. Ismailiono Tunk Itihas [56]. N M Thakkar, Mumbai.

38. Farhad Daftary. 2007. The Ismailis Their History and Doctrine [692]. Cambridge University Press.

39. Ganpatram Trambakram Dwivedi, Swaminarayan Mandir, Ahmedabad. 1945. Swaminarayan Bhuj Mandir -Approval of Diksha to Sadhus from KKP [1041). Ganpatram Trambakram Dwivedi, Swaminarayan Mandir, Ahmedabad.

40. Govind H Desai. 1911. Census of Baroda State (363). Govt of Baroda State.

41. Gujarat State Gazetteer. 1984. Ahmedabad District Gazetteer [179]. Government of India.

42. Gujarati Vishvakosh Trust. 1990. Gujarati Vishvakosh -Vol 2 [219]. Gujarati Vishvakosh Trust.

43. Gujarati Vishvakosh Trust. 2006. Gujarati Vishvakosh -Vol 11 [220]. Gujarati Vishvakosh Trust.

44. Hansraj Sankhala. 2013. Samaj Bhaktini Tsunami [315]. Hansraj Sankhala.

45. Imam Shah. 1923. Moto DasAvatar-[24]. Mukhi Lalji Devraj.

46. Imam Shah. 1994. Satpanth Yagna Vidhi -1st Edition [154]. Satpanth Seva Prakashan Samiti.

47. Imam Shah. 2010. Shreemad Dasavatar [284), Satpanth Sahitya Prakashan, Faizpur.

48. Imam Shah. To Check. Satpanth Manuscript 11-Pooja Vidhi & Others [161]..

49. Imam Shah Bawa. 2017. Satpanth Dasavatar (962). Satpanth Prakashan Samiti.

50. Imtiaz Ahmad & Helmut Reifeld. 2004. Lived Islam in South Asia (222). Social Science Press.

51. Ishtiaq Hussain Qureshi. 1998. Muslim Community of Indo-Pakistan Subcontinent [793], Renaissance Publishing House, New Delhi.

52. Ismaili.net. 1866. Khoja Case of 1866 - A Paraphrase (Aga Khan Case) [345]. Ismaili.net.

53. James M. Campbell, ed. 1899. Muslim & Parsi of Gujarat -Gazetteer of Bombay Presidency- Vol IX-Part II [108). Vintage Books.

54. John Norman Hollister. 1953. The Shia Of India Vol-VIII [678]. Luzac & Co.

55. Kaka Gordhanbhai Nagindas. 2010. Alivanshi Harivansh [78]. Kaka Gordhanbhai Nagindas, The Athia Trust Samast Panch Committee, Pirana.

56. Kantibhai K Patel. 1972. Jagruti [189]. Jagruti.

57. Kantilal M Patel. Patidar Vishwakosh [326]. Shri Akhil Gujarati Kadva Patidar Parishad.

58. Kasimali Durveshali, Pirana. 1954. Satpanth Shastra Yane Moksh Gatino Sacho Marg [47]. Patel Lalji Nanji, Gadhkampa.

59. Khimji Nagji Limbani Mastar Parivar. 2022. Maastar -Biography of Khimji Master [1137]. Khimji Nagji Limbani Mastar Parivar.

60. KKP Dhansura Samaj. 1954. Kadva Patidar Sanatan Samaj Gujarat at Dhansura - Hirapur Adhiveshan Report and Constitution [1154]. KKP Dhansura Samaj.

61. KKP Gnati Bandhu from Ugamna Panchada residing in Karachi. 1936. Pirana Satpanth Patidar Gnati Bhaione Vinanti Patra [830]. KKP Gnati Bandhu from Ugamna Panchada residing in Karachi.

62. KKP Samaj. 1971. KKP Samaj-Gnati Reet Rivaj [294). KKP Samaj.

63. KKP Samaj. 1977. KKP Gyanti Reet Rivaj [1156]. KKP Samaj.

64. KKP Samaj. 1985. Kutch Kadva Patidar Samaj Gnati Reet Rivaj [738]. KKP Samaj.

65. KKP Sanatan Samaj. 1945. Khedoi Laxminarayan Temple Inauguration -Draft Minutes (1054). KKP Sanatan Samaj.

66. KKP Sanatan Samaj. 1946. Khombhadi Laxminarayan Inauguration [1063). KKP Sanatan Samaj.

67. KKP Sanatan Samaj. 1946. Ukheda Laxminarayan Inauguration [1064), KKP Sanatan Samaj.

68. KKP Sanatan Samaj. 1946. Kadiya Athamana Laxminarayan Inauguration [1065). KKP Sanatan Samaj.

69. KKP Sanatan Samaj. 1995. Satpanth Sadhu Sammelan -Stop Improper Rituals [748]. KKP Sanatan Samaj.

70. Kutch Kadva Patidar Community. 1937. Laxminarayan Mandir -Nakhatrana & Maganpura - Inauguration Report [781]. Kutch Kadva Patidar Community.

71. Kutch Kadva Patidar Samaj. 1963. Patidar Vidyarthi Bhavan Opening/Inauguration Souvenir & 1st Adhiveshan of ABKKP Samaj (215). Kutch Kadva Patidar Samaj.

72. Kutch Kadva Patidar Sanatan Samaj. 1944. KKP Sanatani Samaj -Constitution & Report [210]. Kutch Kadva Patidar Sanatan Samaj.

73. Kutch Kadva Patidar Sudharak Yuvak Mandal. 1940. Ratri Shala Report [827]. Kutch Kadva Patidar Sudharak Yuvak Mandal.

74. MS Commissariat. 1938. A History Of Gujarat -Vol1 [585]. Longmans Green & Co.

75. Manoj Tulsi Shivdas Nakrani. 2012. Manoj Tulsi Nakrani - Mari Vinanti [913]). Manoj Tulsi Shivdas Nakrani.

76. Narayan Ramji Limbani / Contractor. 1918. Patel Fakirdas Gopaldas ne Javab [729], Narayan Ramji Limbani / Contractor.

77. Narayan Ramji Limbani / Contractor. 1921. Khulla Patro nu Avlokan -Bhag 1 [776]. Narayan Ramji Limbani / Contractor.

78. Narayan Ramji Limbani / Contractor. 1922. Desh Pardeshma Sthapayela Yuvak Mandalo nu Avlokan Kulla Patro nu Avlokan (774). Narayan Ramji Limbani / Contractor.

79. Narayan Ramji Limbani / Contractor. 1922. Khulla Patro nu Avlokan -Bhag 2 [777], Narayan Ramji Limbani / Contractor.

80. Narayan Ramji Limbani / Contractor. 1922. Narayan Bapa's Speech on Das Avtaar-07-Oct- 1922 (Series 25)..

81. Narayan Ramji Limbani / Contractor. 1927. Satpanthiona Sadhiyarane Sapato [779]. Narayan Ramji Limbani / Contractor.

82. Narayan Ramji Limbani / Contractor. 1934. Dhanlaxmibenne Smarananjali [338]. Narayan Ramji Limbani/Contractor.

83. Narayan Ratanshi Patel -Shantipura Kampa. 1943. Borditimba -Kutch Kadva Patidar Gnati Sammelan [786]. Bordi Timba Vijay Mandal.

84. Narayanji Ramji Contractor / Limbani. 1921. Pavitra Veddharmano Prakash Ane Pirana Satapanthna Pakhand (600). Narayanji Ramji Contractor / Limbani.

85. Narayanji Ramji Contractor / Limbani. 1924. Ek Prastavik Nibandh [206]. Narayanjibhai Ramjibhai Contractor/Limbani.

86. Narayanji Ramji Contractor / Limbani. 1924. 3rd KKP Gnati Parishad-held between 18 to 22-Apr-1924-Ghatkopar [201). Narayanji Ramji Contractor / Limbani, Secretary of Kutch Kadva Patidar Parishad.

87. Narayanji Ramji Contractor / Limbani. 1925. Pirana Satpanthni Pol Sambandhi Saiyad Bawasaheb Ahmad Ali Khakhi Ne Jawab [212]. Narayanji Ramji Contractor / Limbani.

88. Narayanji Ramji Contractor / Limbani. 1926. Pirana Satpanth ni Pol ane Satya no Prakash [1]. Self.

89. Narayanji Ramji Contractor / Limbani. 1926. Pirana Satpanthni Pol Sambandhi Saiyad Bavasaheb Ahmadali Khakine Javab [602]. Narayanji Ramji Contractor / Limbani.

90. Nathabhai Gohil. 2018. Baramati Sampradaya: Kutch-Saurashtrana Meghavaja Samsjama Chalti Baramati Upasana [1199]. Navabharat Sahitya Mandir, Ahmedabad.

91. Natoo Devram Mahajan. 1926. Satpanth Vijay [147]. Self.

92. Odhavram Bapa. 1956. Odhavram Bapa Will - Kutchhi Lalram Ashram - Haridwar [697]. Odhavram Bapa.

93. Patel Devshi Ramji Gogari, Dist Guna, Gwalior. 1945. Umiya Mataji Vandhay Mandir - Inauguration on 02-Apr-1944 (211). Kutch Kadva Patidar Sanatan Samaj.

94. Patel Gopal Somji Bhagat. 1968. Puchhela Prashno -Gopal Somji Bhagat [39]. Patel Gopal Somji Bhagat.

95. Patel Gopal Somji Bhagat. 1983. Sansanto Jabdatod Javab -Swaminarayan [197], Gopal Somji Bhagat.

96. Patel Gopal Somji Bhagat. 1983. Kesara (Parmeshwara) Mukhi Sankhalanu Sankshipt Jivan Ane Karya [57]. Kutch Kadva Patidar Satsang Samaj.

97. Patel Gopal Somji Bhagat, 2005. Kesara (Parmeshwara) Mukhi Sankhalanu Sankshipt Jivan Ane Karya [58]. Kutch Kadva Patidar Satsang Samaj.

98. Patel Jivraj Vasta Contractor. 1926. Kirti Dhwaj (213), Patel Jivraj Vasta Contractor.

99. Patel Shivgan Kanji Velani. 1987. Sandesho [118), Patel Shivgan Kanji Velani.

100. Pir Sadruddin. 1925. DasAvatar -by Sadruddin [663]. Hussain Sherif.

101. Pir Shamshuddin. 1921. Mulbandh No Achhodo Yane Hans Hansali Ni Varata (597), Mukhi Lalji Devraj.

102. Pirzada Syed Shamshuddin Ahmad Ali Khaki. 2006. Satpanthi Yagna Vidhi Arthat Vari Yagna Poojana Mantro (26). Pirzada Syed Shamshuddin Ahmad Ali Khaki, Pirana Gurkul Education Trust.

103. Pirzada Syed Sikander Ali -Copied by. 1910. Satpanth Manuscript 28-Mulband-Original [178]..

104. Purshottam Dharmguru Maharaj. 1989. Mahatma Shri Sadguru Imam Shah Maharaj Jivan Vruttant [21]. Jagannath Purshottam Maharaj, Faizpur.

105. Purshottam Lallubhai Parekh. 1912. Kunbi Kshatriya Utpatti Ane Itihas (1st Edition) [1129]. Purshottam Lallubhai Parekh.

106. Purshottam Lallubhai Parekh. 2015. Kunbi Kshatriya Utpatti Ane Itihas [716]. Umiya Mataji Sansthan, Unjha.

107. Raiyya Nagji Chaudhary / Patel of Nakhatrana. 1936. Mubarakbadi (835), Raiyya Nagji Chaudhary / Patel of Nakhatrana.

108. Raiyya Nagji Chaudhary / Patel of Nakhatrana. 1937. Shu Pirana Satpanth Hindu Dharm Tharashe [833]. Raiyya Nagji Chaudhary / Patel of Nakhatrana.

109. Raiyya Nagji Chaudhary / Patel of Nakhatrana at Karachi. 1937. Piranapanthi Patidar Bhaione Janvajog [831]. Raiyya Nagji Chaudhary / Patel of Nakhatrana at Karachi.

110. Ramsingh Rathod. Kachchhnu Sanskruti Darshan...

111. Ratanshi Khimji Khetani. 1918. Dana Bunder-Jaher Sabha (198), Kunbi Ratanshi Khimji Khetani / Patel, Virani Moti, President of the meeting.

112. Ratanshi Khimji Khetani. 1920. KKP Gnati Jaher Sabha -Virani Moti (207). Ratanshi Khimji Khetani, President.

113. Ratanshi Khimji Khetani - Viraniwala. 1919. Kutch Deshna Piranapanth Kadva Kanbi Dana Bunder-Jaher Sabha in Mumbai [767]. Ratanshi Khimji Khetani - Viraniwala.

114. Ratanshi Shivji Nakrani. 1922. 2nd KKP Gnati Parishad-held between 07 to 09-Oct-1922 at Karachi [200]. Parishad Secretary, Ratanshi Shivji Nakrani, Ranchhod Lane, Karachi.

115. Ratanshi Shivji Patel. 1924. Patidar Uday -1 to 11 Editions [45]. Ratanshi Shivji Patel.

116. Ratanshi Shivji Patel from Ravaparvala. 1925. Oshani Nu Oshad Athava Bhaktini Bhadvai [204]. Swadharm Vardhak Gnati Hitchintak Mahamandal.

117. Ratanshi Shivji Patel from Rvapar. 1932. KKP Gnati Sudharak Yuvak Mandal - Report [203]. Ratanshi Shivji Patel, Secretary.

118. Ravji Kanji Patel (alias Anami Antaratma), Likhi Kampa, Himmatnagar, Gujarat. 1965. Manhar Gyan [18]. Arjan Kanji Patel & Devji Kanji Patel, Santoshpura Kampa, Himmatnagar.

119. Real Patidar. 2011. Satya Prakash -v2 [184]. Real Patidar.

120. Rowena Robinson & Sathianathan Clarke, ed. 2011. Religious Conversions in India -ISBN: 9780195663297 [705]. Oxford University Press.

121. Sant Odhavramji Maharaj. 1943. Ishwar Viharivilas -Bhag 1 & 2-2nd Edition [784]. Mistri Manji Jairam, Madhapar and Mistri Hirji Vishram, Hajapar.

122. Satish Chandra Misra (Mishra). 1964. Muslim Communities in Gujarat [598]. Asia Publishing House.

123. Satpanth Prakashan Prachar Samiti. 1997. Dashabdi Mahotsav -Sant Sammelan & Karsandas Maharaj (Kaka) -Smruti Granth [311]. Satpanth Prakashan Samiti.

124. Satpanth Prakashan Samiti, Pirana. 2009. Satpanth -Bhagwat Dasavatar [264]. Satpanth Prakashan Samiti, Pirana.

125. Satpanthi Mukhi Kanji Ratna. 1956. Satpanth Prakash Arthat-DasAvatar [687]. Saiyed Shamshuddin Bawa Khaki.

126. Savji Ramji Kaka. 1982. Bhankheli Pooja Vidhi Tatha Gyan [2]. Savji Ramji Kaka, the Chairman of The Imam Shah Bawa Roza Santhan Committee Trust of Pirana.

127. Secretary Patel Shivji Kanji. 1926. Kutiloni Kutilta Upar Search Light [1034) Kutch Kadva Patidar Gyati Sudharak Yuvak Mandal, Karachi.

128. Shafique Virani. 1995. The Voice of Truth -Life and Works of Sayyid Nur Muhammad Shah [94]. Islamic Studies, McGill University.

129. Shambhudan Gadhvi. Kachchh Darshan..

130. Shivji Kanji Parasiya. 1920. 1st KKP Gnati Parishad-held between 08 to 11-Aug-1920 at Karachi [199]. Shivji Kanji Parasiya, Nakhatrana, Secretary of the Yuvak Mandal.

131. Shivji Kanji Parasiya. 1926. KKP Gnati Sudharak Yuvak Mandal -Report (202). Shivji Kanji Parasiya, Nakhatrana, Secretary of the Yuvak Mandal.

132. Shivji Kanji Parasiya, Secretary of Kutch Kadva Patidar Gnati Sudharak Mandal, Karachi. 1937. Kaka Ravji Laxmanne Khas Chetavani [832]. Shivji Kanji Parasiya, Secretary of Kutch Kadva Patidar Gnati Sudharak Mandal, Karachi.

133. Shri Akhil Bharatiya Kutch Kadva Patidar Satsang Samaj. Kutch Kadva Patidar Samajma Satsangna Paglan..

134. Shri Kutchi Kadva Patidar Sudharak Yuvak Mandal. 1920. Pamphlet -Shu Sadgor Nahi Jage [771]. Shri Kutchi Kadva Patidar Sudharak Yuvak Mandal.

135. Shri Kutchi Kadva Patidar Sudharak Yuvak Mandal. 1921. 786 Vinanti Patra - Karachi - Pamphlet Pro Satpanth and its reply Anti-Satpanth [773]. Shri Kutchi Kadva Patidar Sudharak Yuvak Mandal.

136. Shri Purshottam Gurudharma Maharaj, Faizpur. 1971. Imam Shah Maharaj Jivan Vruttant [187]. Shri Purshottam Gurudharma Maharaj, Faizpur.

137. Sonu Tukaram Patil. 1936. Satpanth Rahasya - Also see Satpanth Vijay (691). Sonu Tukaram Patil.

138. South Asia, Vol. XXII, Special Issue (1999), pp. Dominique-Sila Khan and Zawahir Moir. 1999. Coexistence and Communalism the Shrine of Pirana in Gujarat [25]. South Asia, Vol. XXII, Special Issue (1999), pp. 133-154.

139. Syed Ahmad Ali Khaki. 1978. Satpanth Prakash Arthat-DasAvatar [3]. By Shamshuddin Bawa Khaki On behalf of Satpanth Sahitya Seva Mandal.

140. Tazim R Kassam & Francoise Mallison, ed. 2010. Ginans Texts and Contexts [223]. Primus Books.

141. Teena Purohit. 2012. The Aga Khan Case [308]. Harvard University Press.

142. The Imam Shah Bawa Roza Sansthan Committee Trust. 1939. Constitution of Imam Shah Bawa Roza Sansthan Committee Trust -No E738 [245]. The Imam Shah Bawa Roza Sansthan Committee Trust.

143. Umiya Mataji Sansthan Unjha. 1983. Umiya Mataji 18mi Shatabdi Mahotsav Smruti Granth [314]. Umiya Mataji Sansthan, Unjha.

144. Umiya Mataji Sansthan Unjha. 2013. Umiya Mataji 18mi Shatabdi Mahotsav Smruti Granth (235). Umiya Mataji Sansthan, Unjha.

145. Umiya Mataji Sansthan Vandhay. 2010. Umiya Mataji Sansthan Vandhay-Smruti Granth (303). Umiya Mataji Sansthan, Vandhay.

146. Unknown. 2012. Satpanth Pooja Vidhi Tatha Gyan [17]. Unknown.

147. Valdas Maharaj, 1989. Valdas Maharaj -Satpanth is a Muslim Religion [249]. Valdas Maharaj.

148. Valji Jivraj Limbani. 1942. Kartavya Panthe [128]. Valji Jivraj Limbani.

149. Valji Vadiya. 2010. Valji Vadiya -Maval Niti video [562]. Valji Vadiya.

150. Valuma/Vanitaben Arjan Chhabhaiya, Darsadi, Borivali. 2013. Valuma-Jago Patidar [914]. Valuma / Vanitaben Arjan Chhabhaiya, Darsadi, Borivali.

151. Varsha Joshi and Satish Chandra, eds. 2002. Culture, communities, and change [816]. Rawat Publications, Jaipur - Institute of Rajasthan Studies.

152. Virani Moti Kadva Patidar Sanatan Samaj. 2014. Virani -Laxminarayan Temple Silver Jubilee -Smaranika [756]. Virani Moti Kadva Patidar Sanatan Samaj.

153. Virani Patidar Samaj, 2004. Laxminarayan Mandir Hirak Jayanti Mahotsav Smaranika-Virani Moti (900). Virani Patidar Samaj.

154. Vishram Ratanshi Rudani. 2013. Vaidik Atharved Satpanth Itihas Ek Jhalak [619]. Vishram Ratanshi Rudani.

155. William Rashbrook. Black Hills of Kachchh..

156. Wladmir Ivanow. 1936. The Sect of Imam Shah in Gujarat -Journal of Bombay Branch of Royal Asiatic Society -Vol 12 (Old) (42). Bombay Branch of Royal Asiatic Society.

157. Wladmir Ivanow. 1948. Collectanea (5). Ismaili Society

158. Zawahir Moir and Dominique-Sila Khan. 2010. South Asia -New Light on the Satpanthi Imamshahis of Pirana [74]. Journal of South Asian Studies.

159. 1490. Satpanth Manuscript 29-Mulband (Fake) - Set of 3 books. [306]..

160. 1922. Satyapad Bodhini - Imam Shah & Bai Budhai [27]. Syed Bawa Saheb Ahmad Ali Khaki, Pirana.

161. 2009. Sufi Sant Shri Sadguru Shri Imam Shah Maharaj Jivan Vruttant [32]. Satpanth Prakashan Samiti, Pirana.

162. 2012. Ekta Manch ni Pol -2 files [479]..

163. 2012. Sandesh [330]..

164. Char Yugna Poojana Mantroni Yadi [23]. Satpanth Prakashan Samiti, Pirana.

।। जय लक्ष्मीनारायण ।। ।। जय मां उमिया ।। ।। जय सनातन ।।

खंड 1 यही पूर्ण होता है।